श्री यशपाल जैन के गद्य साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की हिन्दी विषय में
पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2007

निदेशक :
डॉ. मनुजी श्रीवास्तव
रीडर एवं विभागाध्यक्ष-हिन्दी
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी

शोधार्थिनी :
कु. अलका वर्मा

शोध-केन्द्र

बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी (उ.प्र.)

श्री यशपाल जैन के गद्य साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन
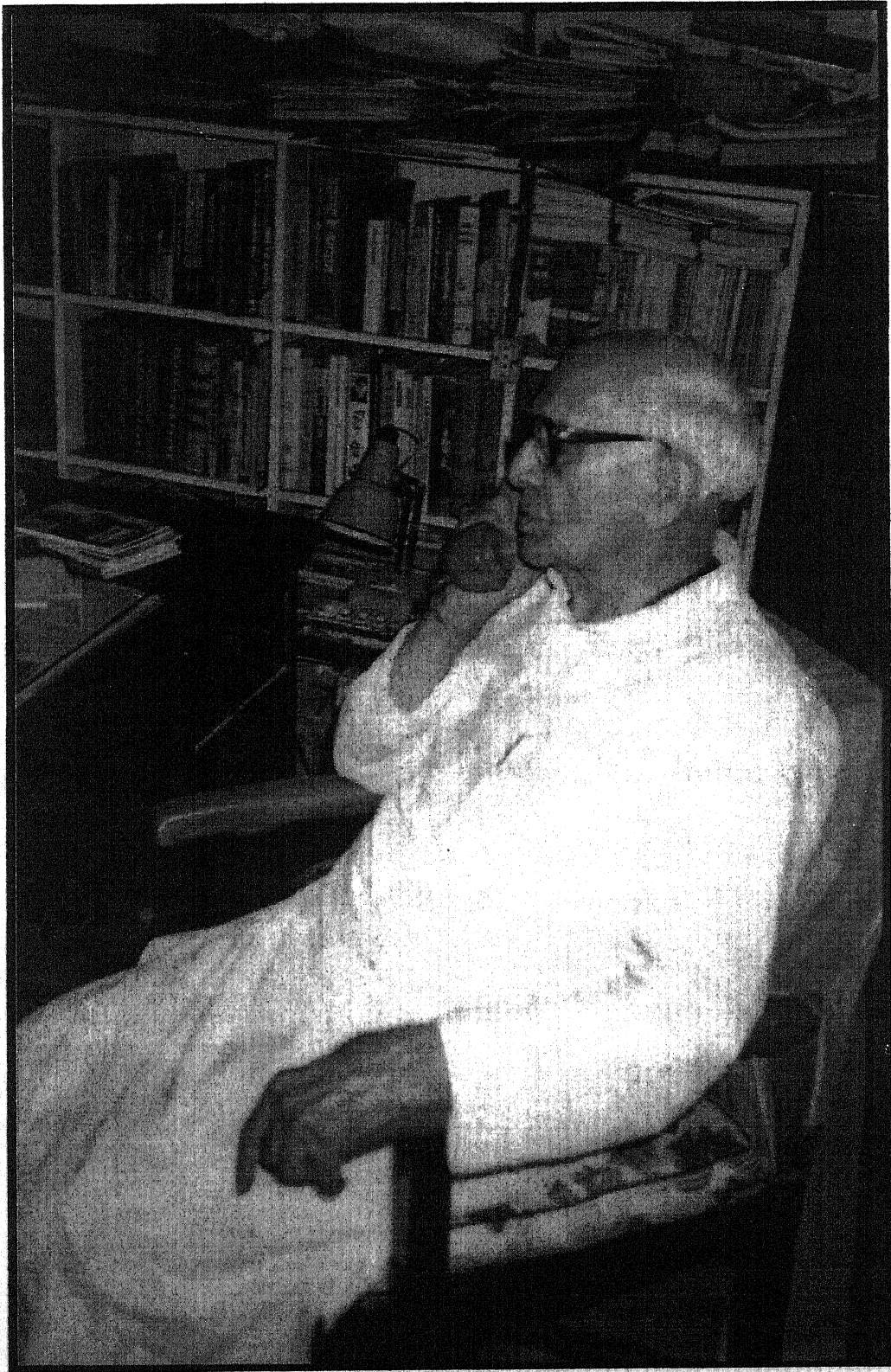
डॉ मनुजी श्रीवास्तव
एम.ए. (हिन्दी, राजनीतिशास्त्र), पी.एच.डी.
रीडर एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी
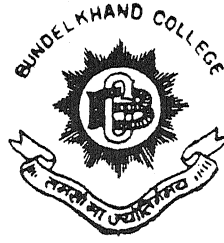
निवास : 1362/ई. सिविल लाइन,
सीपरी बाजार, झाँसी–3
फोन : (0517) 2447669
9415005979 (मो.)

दिनांक : 15. 4. 07

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कु. अलका वर्मा ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा स्वीकृत शोध विषय **''श्री यशपाल जैन के गद्य साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन''** पर निरन्तर मेरे सम्पर्क में रहकर अनुसंधान कार्य किया है। इस उपक्रम में इन्होंने विश्वविद्यालय परिनियमावली के सभी उपबन्धों का पूर्ण पालन किया है। यह इनका मौलिक अनुसंधान कार्य है। मैं इस शोध–प्रबन्ध को विशेषज्ञों के समक्ष प्रस्तुत करने की अनुमति के साथ शोधार्थिनी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक - १५ अप्रैल २००७

(डॉ. मनुजी श्रीवास्तव)
शोध निदेशक

प्राक्कथन

हिन्दी में विभिन्न साहित्यकारों के रचना--ससार के विषय मे शोध--परक अध्ययन होता रहा है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध भी इसी दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है। विगत सात दशक की अवधि में गाँधीवादी विचारक एवं साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने विशेष ख्याति अर्जित की। मानवीय मूल्यों पर अडिग आस्था रखकर निस्पृह–भाव से सेवा करने वाले आधुनिक साहित्यकारों में श्री यशपाल जैन का नाम आज विशेष आदर एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, जीवनी, यात्रा–वृतान्त, रेडियोरूपक, कवितायें, बाल–साहित्य आदि विभिन्न विधाओं से हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की है। श्री जैन के द्वारा संकलित, सम्पादित और अनूदित साहित्य के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट योगदान किया गया है। मानवीय मूल्यों पर आधारित साहित्य सृजन करने वाले आधुनिक साहित्यकारों की श्रेणी में यशपाल जी निश्चय ही अग्रणी हैं। उच्चकोटि के साहित्यकार के पद तक पहुँचने के लिये यशपाल जी को जिन विषम् परिस्थितियों से गुजरना पड़ा था और जितनी श्रम–साधना करनी पड़ी थी, पाठक को उसका ज्ञान उनके जीवनगत् अनुभवों के परिचय से ही हो सकता है।

इस प्रबन्ध में यशपाल जी के गद्य साहित्य की सम्यक् विवेचना करने से पूर्व उनके व्यक्तित्व पर समुचित प्रकाश डाला गया है। साधारण तथा सहृदय पाठक लेखक की रचनाओं को पढकर ही उसके विषय में अपनी धारणा बना लेते है। यदि उसे लेखकों से आत्मीयता स्थापित करने का अवसर सुलभ हो, तो वह न केवल दृष्टिकोण से बल्कि उन लेखकों की दृष्टि से भी उनकी रचनाओं को परखने का प्रयास करेगा, तभी वह किसी लेखक के विषय में समुचित मन्तव्य दे सकता है। लेखक की रचनाओं में जिस विचार–धारा को पाठक खोजता है, वह लेखक की सामयिक परिस्थितियों और जीवनगत् अनुभवों के आधार पर ही निर्मित होती है। अतः लेखक के व्यक्तित्व और उसके रचना–संसार का परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

प्रस्तुत प्रबंध के प्रथम अध्याय में, श्री यशपाल जैन की जीवनी, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि और प्रारम्भिक जीवन, उनकी शिक्षा, विवाह, कार्यक्षेत्र, रहन–सहन का स्तर, देश--विदेश में प्रवास एवं उनका उल्लेखनीय प्रभाव और साहित्यिक व्यक्तित्व के विषय में शोध--पूर्ण अध्ययन किया गया है। पुस्तकीय सामग्री के अतिरिक्त लेखक के साथ व्यतीत किये गये क्षणों की अनुभूति ने निष्कर्षों को अधिक प्रामाणिकता प्रदान की है। साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण करने से पूर्व, यशपाल जी के जीवन का एक भाग समाज–सेवा, स्काउटिंग और यू.टी.सी. में सैनिक प्रशिक्षण के बीच गुजरा है। अनेक विशिष्ट अवसरों पर स्काउट मास्टर के रूप में स्काउटों को बाहर ले जाने में श्री जैन ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

द्वितीय अध्याय में, यशपाल जी की निबन्ध–सृष्टि का सैद्धान्तिक एवं तात्विक विवेचन किया गया है। यशपाल जी ने अधिकांशतः विचारात्मक कोटि के निबन्धों का सृजन किया है, जिनमें राष्ट्रीय संस्कृति एवं सामाजिक एकता के महत्व को उद्‌घाटित किया गया है। विषय के आधार पर उनके निबन्धों के रूप, शैली और गठन पर भी विचार किया गया है। श्री जैन के निबन्धों में गाँधी वादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। गम्भीर से गम्भीर विषय को यशपाल जी ने सरस बनाने का प्रयास किया है, उद्धहरण शैली निबन्धों में आकर्षण उत्पन्न कर देती है। यशपाल जी की निबन्ध–शैली की यह विशेषता है कि उसमें नीरसता और शुष्कता नहीं है। पाठक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये उनके निबन्धों को पढ़ सकता है।

तृतीय अध्याय में, यशपाल जी के कथा–साहित्य एवं उपन्यास साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यशपाल जी की कहानियाँ (बोध–कथायें, सामाजिक कहानियां एवं मनोवैज्ञानिक कहानियां) कथ्य प्रधान है। अतः वर्णित कथ्य के आधार पर उनका वर्गीकरण किया गया है। श्री जैन ने वर्तमान जीवन की छोटी–बड़ी सभी समस्याओं का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया है, इसलिये उनकी कहानियाँ विविध विषयों से संबंधित हैं। कहानियों के अन्तर्गत नारी–पात्रों को भी

स्थान प्राप्त हुआ है, इन्हें सामाजिक परिवेश में यशपाल जी ने ज्यों का त्यों चित्रित किया है। अधिकांश कहानियों में भाव पक्ष मर्मस्पर्शी है परन्तु अभिव्यक्ति प्रायः लचर एवं परम्परागत रूप को प्रदर्शित करती है, अतः स्पष्ट कहा जा सकता है कि यशपाल जी ने कहानी के रचना–विधान को विशेष महत्व नहीं दिया है। औपन्यासिक कृतियों का संक्षिप्त परिचय देकर तत्वों के आधार उनकी समीक्षा प्रस्तुत की गई है। श्री जैन ने अनुभूत जीवन की घटनाओं के आधार उपन्यास रचना करके पाठक को कटु–सत्यों से अवगत कराने का प्रयास किया है। उपन्यासों की संवाद–योजना यथार्थ के अत्यधिक निकट है, कहीं–कहीं सैद्धान्तिक वाद–विवाद ने उन्हें नीरस और अरोचक बना दिया है। वातावरण सृष्टि प्रायः साधारण स्तर की है, पाठक यशपाल जी की विचार पद्धति से अवगत् होने के बाद ही उनकी कृतियों को आनंद के साथ पढ सकता है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत, यशपाल जी के संस्मरण–साहित्य एवं जीवनी साहित्य का तात्विक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। श्री जैन को अपने जीवन–पथ में अनेकों महान विभूतियों के निकट सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ, जिनकी मधुर–करूण स्मृतियाँ उनके संस्मरण–साहित्य में उपलब्ध हुई हैं। निसंदेह आपने उक्त साहित्य में भाषा का प्रयोग जन–सामान्य को दृष्टिगत् करते हुये किया है। यशपाल जी द्वारा सृजित जीवनियाँ तात्विक दृष्टि से सफल कृतियाँ हैं, साथ ही इनमें भक्ति–भाव की बहुलता दर्शनीय है। जीवनी नायक के अन्तः–वाह्य व्यक्तित्व को सफलता के साथ लेखक ने उद्‌घाटित किया है। पाठक तस्मय होकर इन्हें पढ़ जाता है।

पंचम अध्याय में, यशपाल जी के यात्रा–साहित्य पर गहन–चिंतन–मनन किया गया है। यात्रा–वृत्त लेखन आपके सर्जनात्मक साहित्य का मुख्य एवं प्रधान अंग रहा है। यशपाल जी को इसमें विशेष सफलता की प्राप्ति हुई है। देश–विदेश में जो भ्रमण इन्होंने किया है, उसका सुन्दर वृत्तान्त अपने समन्वित रूप में यात्रा सम्बन्धी पुस्तकों में उपलब्ध है। इन कृतियों को पढकर पाठक भारत के विभिन्न भागों तथा विदेश की यात्रा का आनंद घर बैठे प्राप्त कर सकता है। यशपाल जी

के मानवीय दृष्टिकोण की झलक उनके यात्रा–सम्बन्धी साहित्य में स्पष्ट दिखायी देती है। सैलानी यशपाल की यह देन, हिन्दी–साहित्य की उत्कृष्टतम् उपलब्धि है।

षष्ठ अध्याय में यशपाल जी द्वारा संकलित, सम्पादित और अनूदित साहित्य का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अभिनंदन ग्रंथ सम्पादक के रूप में यशपाल जी का नाम विशेष श्रद्धा एवं आदर के साथ लिया जाता है। "जीवन–साहित्य" पत्रिका ने आपको पत्रकार रूप में प्रतिष्ठित किया है। साहित्यक दृष्टि से श्री जैन द्वारा अनूदित कृति "विराट" विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। लेखक द्वारा सभी महत्वपूर्ण अनूदित कृतियाँ मूल रूप में अंग्रेजी भाषा की रचनायें हैं, यथा "विराट" स्टीफन ज्विग कृत "द आइज् ऑफ अनडाइंग ब्रदर" का एवं "जिंदगी दाँव पर" स्टीफन ज्विग की विख्यात रचना "ट्वन्टी फोर आवर इन ए लाइफ" का हिन्दी अनुवाद है।

अध्याय सात में, यशपाल जी के सम्पूर्ण साहित्य को दृष्टि में रखते हुये उनकी भाषा–शैली का विश्लेषण किया गया है। यशपाल जी ने भाषा की सजाने सँवारने का विशेष प्रयास नहीं किया है। उन्होंने सीधी, सरल औा सहज भाषा का प्रयोग किया है, लेकिन उनकी कुछ निजी विशेषतायें अनायास ही पाठक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं। अतः उन सबको दृष्टि में रखते हुये स्वतन्त्र अध्याय में यशपाल जी की भाषा–शैली का अध्ययन व विश्लेषण अनिवार्य समझा है।

उपसंहार में, हिन्दी–साहित्य में श्री यशपाल जैन का स्थान निर्धारित करते हुये साहित्य को उनकी देन का मूल्यांकन किया गया है। अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत यशपाल जी की पुस्तकों की सूची एवं हिन्दी और अंग्रेजी के सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची दी गयी है।

आभार

शोधग्रन्थ की पूर्णता पर सर्वप्रथम शोध निदेशक डॉ. मनुजी श्रीवास्तव, हिन्दी विभागाध्यक्ष बुन्देलखण्ड कालेज एवं संयोजक हिन्दी पाठ्यक्रम समिति बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने अपने सुझावों से पूर्ण मनोयोग के साथ, सतत् जागरूक होकर विषय का ज्ञान कराने में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया। उनकी सहज अहेतुकी कृपा ही मेरा सबल सम्बल रही है।

अपने पूज्य माताजी एवं पिताजी का अपरिमित वात्सल्य, सहयोग एवं उनका वरदहस्त मुझे पग पग पर प्रेरणा देता रहा जिससे मैं शोधकार्य निर्विघ्न रूप से समाप्त कर सकी उनके प्रति आभार व्यक्त करने को मेरी वाणी एवं शब्द कम पड़ जाते हैं।

अपने अनुज श्री निशान्त वर्मा को मैं विस्मृत नहीं कर सकती जिनके सहयोग से मुझे पग पग पर विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय का योगदान मिल सका। मैं उनके लिये कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना परम कर्त्तव्य समझती हूँ। इस शोध यात्रा में अनेक ऐसे व्यक्ति, संस्थायें, पुस्तकालय हैं जिनका नामोल्लेख करना सम्भव नहीं मैं उन समस्त सहयोगियों के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरी इस शोध यात्रा को इस शोध ग्रन्थ तक पहुँचाने का श्रेय अनेक महानुभावों एवं पूज्यजनों को है जिन्होंने मेरे लिये अनेक पत्र--पत्रिकायें एवं सन्दर्भग्रन्थ एकत्र किये जो कि मेरे लिये अत्यावश्यक थे। उन सभी के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

अन्त में श्री आलोक गुप्ता को धन्यवाद देकर आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने पूर्ण मनोयोग से मेरे शोधग्रन्थ को टंकित, फोटोकापी एवं वाइन्ड कराकर मुझे सहयोग प्रदान किया।

शोधार्थिनी

अलका

(कु. अलका वर्मा)

श्री यशपाल जैन के गद्य साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

द्वितीय अध्याय

तृतीय अध्याय

चतुर्थ अध्याय

पंचम अध्याय

षष्ठम अध्याय

सप्तम अध्याय

अष्टम अध्याय

प्रथम अध्याय
यशपाल जी का जीवन परिचय

प्रस्तावना :

किसी भी लेखक अथवा साहित्यकार के रचना संसार को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि लेखक अथवा साहित्यकार के विचार एवं भावनायें उसके जीवन की ही प्रतिछाया होती है। वह युग की परिस्थितियों एवं समाजगत् भावनाओं से विमुख होकर साहित्य सृजन में सफल नहीं हो सकता, उसने किन परिस्थितियों और किन भावनाओं, विचारों से प्रेरित होकर साहित्य का सृजन किया है। यह जानने के लिए वास्तविक जीवन का परिचय आवश्यक है।

श्री यशपाल जैन जैसे यशस्वी साहित्यकार और चिन्तक का व्यक्तित्व सीधा सरल, सहज और पारदर्शी था। श्री यशपाल जैन के सरल तथा साहित्यक व्यक्तित्व के सम्बन्ध के विषय में सुश्री देववती शर्मा का कथन है –

उनके व्यक्तित्व में साहित्यकार और एक सहृदय का मणिकांचन संयोग है। इतने बड़े साहित्यकार होते हुये भी उन्हें घमण्ड छू भी नहीं गया है। क्या कहानी, क्या निबन्ध, क्या यात्रा सम्बन्धी लेख सभी में इनके निर्मल और संवेदनशील हृदय की झाँकी मिल जाती है"[1] स्वयं श्री यशपाल जैन भी मानते हैं। अपने वैयक्तिक तथा साहित्यक जीवन में मैंने सदा इस बात का प्रयत्न किया है कि मानव–मानव के बीच की संकीर्णता परिधियाँ टूटें और हर व्यक्ति अनुभव करे कि दूसरे के भी हृदय है। जैसे उसका अपना"[2]।

इससे स्पष्ट है कि श्री यशपाल जैन की मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था है। वह आस्था उनके जीवन और स्वभाव का अभिन्न अंग है। उनके व्यक्तित्व को उसकी समग्रता में समझने के लिए

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 259
2. मेरी जीवन धारा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 192–193

जीवन के विभिन्न पक्ष यथा—जन्म—स्थान, माता—पिता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, रहन—सहन, वेशभूषा, स्वभाव, मनोवृत्ति, साहित्यिक विशेषतायें, कैसे लिखते हैं ? क्यों लिखते हैं? किस प्रकार लिखना प्रारम्भ किया ? तथा विचार धारा आदि सब विषयों का विवेचन आवश्यक है।

उपर्युक्त समस्त पक्षों का साहित्यकार के जीवन से अकाट्य एवं अविभाज्य सम्बन्ध है। अतः समस्त पक्षों को पृष्ठभूमि में ही रखकर ही साहित्यकार के रचना—सागर की समुचित समालोचन सम्भव है। प्रायः सभी साहित्यकार जीवनकाल की परिस्थितियों तथा वातावरण से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। इसी भाँति श्री यशपाल जैन को भी अपने जीवन गत अनुभवों तथा परिस्थितियों से पूर्णरूपेण प्रेरणा प्राप्त हुई है। अपने जीवन के वर्षों को जिस तरह सरलता, साहसिकता और क्रियाशीलता से अब तक निभाया है। उससे लगता है कि उसने इन्हें तरुण से तरुणतर बनाया है, भविष्य में भी आने वाले वर्षों में साहित्यकार अपने मार्ग को प्रशस्त किये हुये, साहित्य की सेवा के लिये वचनबद्ध है। इस साहित्यकार के रचना—संसार की विवेचना और व्याढया करने से पूर्व इनके जीवन पर प्रकाश डालना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन की सुविधा के लिये सम्पूर्ण विवेचना का विभाजन तीन भागों में किया गया है। जीवन चरित्र, व्यक्तित्व और साहित्यकार यशपाल।

1. जीवन चरित्र :

क— पारिवारिक पृष्ठभूमि और प्रारम्भिक जीवन :—

श्री यशपाल का जन्म 1 सितम्बर 1912 ई. को अलीगढ़ जिले के अंतर्गत बीझलपुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री श्याम लाल जैन बीझलपुर ग्राम के पटवारी थे। और माता श्रीमती लक्ष्मी देवी निश्छल स्वभाव एवं विशाल हृदय वाली धार्मिक महिला थी। इन दिनों पटवारी ग्राम का प्रमुख व्यक्ति माना जाता था। आपके पिता की दूरपास जमींदारी थी, जमींदारी प्रतिष्ठा और शक्ति दोनों

का केन्द्र हुआ करती थी। घर में अनाज भरा रहता था। नौकर चाकर कार्य करते थे। किसी प्रकार का अभाव न था, चारों ओर प्रभाव व्याप्त था, यशपाल जी के चार भाई स्व0 श्री हजारी लाल जैन, श्री कुशपाल जैन, श्री वीरेन्द्र प्रभाकर और डॉ. राजेन्द्र पाल जैन तथा एक बहन स्व. श्रीमती प्रभा जैन हैं। जिनमें स्व. हजारी लाल जैन को छोड़कर अन्य सभी श्री यशपाल जैन के अनुज हैं।

श्री जैन का बाल्यकाल देहात में बीता। यहीं से उनके प्रारम्भिक जीवन निर्माण का सूत्रपात हुआ। सम्भवतः ग्रामीण परिवेश उनके अनुकूल ही रहा जिसका उनको सम्पूर्ण रूप से लाभ प्राप्त हुआ। बाल्यावस्था में श्री यशपाल जैन के मन पर ग्रामीण वातावरण की बड़ी गहरी छाप पड़ी। दृष्टव्य है। ''ग्रामीण जीवन का जो सुखद चित्र मेरे मन पर उस समय अंकित हुआ, वह कभी धुंधला नहीं पड़ा यह कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति न मानी जाय कि आज मैं जो कुछ कहूँ उसके पीछे बचपन के मेरे संस्कारों का बहुत बड़ा हाथ है।''[1] पैतृक सम्पत्ति से भी आप अत्यधिक समृद्ध, साधन–सम्पन्न, प्रतिष्ठित कुल की सन्तान रहे चूँकि पिता ग्राम के जमींदार होने के कारण साथ पटवारी भी थे, जिनका ग्राम में अत्यधिक सम्मान था। स्वभाव से तेज होने के कारण आपके पिता जी की ख्याति दूर–दूर तक थी, अतः यह विरासत यशपाल जी को पैतृक रूप में प्राप्त थी। यशपाल जी के पिता स्वभाव से जितने कठोर थे, उतने ही परिवार वत्सल भी थे उनकी यही भावना रहती थी कि बच्चों को अच्छी से अच्छी शिक्षा और संगति प्राप्त हो, इसका सदा वे ध्यान रखते थे, स्वयं श्री जैन की इस सम्बन्ध में दक्ति है – ''हम बच्चों का बचपन बड़े ही अनुशासन में बीता पढ़ाई के बारे में पिताजी बड़े सख्त थे, जब वह रात गये बाहर से उठकर अन्दर आते थे, तो बहुत बार हमें जगाकर पहाड़े या पाठ सुनते थे, कभी–कभी हमारी ठुकाई भी हो जाती थी।[2]

अनुशासन का महत्व यशपाल जी के सार्वजनिक जीवन में सदैव से रहा–बीझलपुर छोटा सा ग्राम था वहाँ पढ़ाई की समुचित व्यवस्था न होने के कारण यशपाल जी पड़ोस के ग्राम की पाठशाला में पढ़ने जाया करते थे, ग्राम की पढ़ाई पूर्ण कर लेने के उपरान्त आपने आगे की स्कूली

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 353
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 409

पढ़ाई विजयगढ़ नामक कस्बे में जाकर प्राप्त की। यह कस्बा भौगोलिक दृष्टि से बीझलपुर की सीमाओं को स्पर्श करता है। यद्यपि आपने स्कूली वातावरण में जितना सीखा, उससे कहीं अधिक अपने घरेलू वातावरण से सीखा, इस प्रकार उनके मन के अन्दर जो मानवीय मूल्य प्रारम्भिक काल में पल्लवित हुए, वे ही आज साकार रूप में सम्मुख आये हैं।

संकट का समय यों सभी के जीवन में आता है। श्री यशपाल जैन की माता श्रीमती लक्ष्मी देवी जैन धर्मनिष्ठ, प्रेम और परोपकारिता की मूर्तिरूप थी, वे स्वयं सम्पन्न कुल की सन्तान थीं, जैन धर्म को बड़ी श्रद्धालु दृष्टि से देखती थीं। भारत के प्रायः सभी प्रमुख जैन तीर्थों के उन्होंने दर्शन किये थे। व्रत और त्योहारों के प्रति उनके मन में अगाथ श्रद्धा रहती थी परन्तु धर्म को उन्होंने कभी संकीर्ण परिथि में नहीं बांधने दिया, वे स्वयं धर्म को अपने जीवन में धारण किये हुए थी, शिक्षा की दृष्टि से आपकी माँ एक या दो दर्जे तक ही पढ़ी थी लेकिन उन्होंने हिन्दी पढ़ने व लिखने का इतना अभ्यास कर लिया था कि धार्मिक पुस्तकें व अन्य पुस्तकों का अध्ययन भी कर लेती थीं, यह उनकी लगनशीलता का ही परिणाम था।

व्यक्ति आता है, चला जाता है। लेकिन शाश्वत मूल्य कभी नष्ट नहीं होते वे अमर होते हैं। 29 अक्टूबर सन् 1969 को जब आपकी माताजी अचानक बीमार पड़ी, तो फिर पुनः स्वस्थ नहीं हो सकीं और 28 नवम्बर 1969 को मंगलवार के दिन उनकी जीवन लीला समाप्त हो गयी। आपकी माता एक ऐसी पुण्यात्मा थी, जिनकी भौतिक काया भले ही नष्ट हो गयी, लेकिन उनका यशः शरीर कभी काल से पराभूत नहीं हुआ इतना ही नहीं अपनी सम्पूर्ण जीवन यात्रा में ज्यों-ज्यों वह अग्रसर होती गयी उनकी धर्मनिष्ठा प्रेम, परोपकारिता का दायरा और भी फैलता चला गया, माँ की मृत्यु के तीन वर्ष उपरान्त ही 83 वर्ष की अवस्था में आपके पिता श्री श्याम लाल जैन का निधन हो गया।

यशपाल जी के प्रारम्भिक जीवन में माता-पिता के विभिन्न संस्कारों का विशेष महत्व रहा है,

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 353

जिन्होंने श्री जैन को मानवीय मूल्यों के प्रति सदैव जागरूक बनाये रखा, स्वयं यशपाल जी का कथन है, "आदमी के निर्माण में वैसे बहुतों का हाथ होता है। मैं भी अपने जीवन पर निगाह डालकर देखता हूँ, तो बहुतों के उपकार से अपने को दबा हुआ पाता हूँ। सबसे अधिक ऋण तो माता-पिता का है। जिन्होंने मुझे जन्म दिया",[1] माता-पिता की मृत्यु के बाद श्री यशपाल जैन की अनुभूति और भी गहरी होती चली गयी, वे सदैव अभिजात्य तथा अभावग्रस्त वर्गों के बीच की खाई दूर करने के लिए सदैव विद्रोही बनने का प्रयत्न करते रहे, जिसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए हैं। सम्भवतः यह प्रेरणा आपको अपने परिवार के उच्च आदर्शों से ही प्राप्त हुयी है।

ख : शिक्षा :-

ग्रामीण वातावरण में रहने के कारण यशपाल जी का बाल्यकाल देहात में बीता, अतः बाल्यकाल के प्रथम चरण की शिक्षा, ग्राम के समीप स्थित विद्यालय में ही सम्पन्न हुयी थी, श्री जैन का मन बचपन में पढ़ाई में कम वरन् खेलकूद, शरारत आदि में अधिक लगा करता था, इसका अर्थ यह नहीं लगाया जा सकता कि आप प्रारम्भिक चरण की शिक्षा में कमजोर रहे, आप बाल्यावस्था में शरारत में जितने तेज थे, उतने ही कुशाग्र पढ़ने-लिखने में भी थे। विद्यालय में हमेशा आपकी धाक रहती थी, गणित आपका प्रिय विषय रहा है, उन दिनों उर्दू का चलन था, आपने उर्दू सीखी एवं हिन्दी का गहन अध्ययन किया।

यशपाल जी की शैक्षिक पृष्ठभूमि मूलरूप से सन् 1921 से प्रारम्भ हुयी। बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न होने के कारण अपने शैक्षिक गतिविधियों को सुचारु रूप से गतिमान बनाये रखा तथा साथ ही साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भी भाग लिया, सुलेख, खेलकूद, नाटक आदि प्रतियोगिताओं जिनमें प्रमुख स्थान रहा करता था, नाटकों के प्रति आपका रुझान कुछ अधिक ही रहा। इस सम्बन्ध में आपके उद्‌गार कुछ इस प्रकार है -"हम लोगों ने बहुत से नाटक भी खेले, तख्त डालकर अक्षय (बुआ का पुत्र) की हवेली में मंच बना लेते थे और बिस्तर की चादरों और जनानी साड़ियों से पर्दा

---

1. निष्काम साधक - सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ - 418

बना लेते थे, मोहल्ले के बच्चे और बड़े लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी और जरा–जरा सी बात पर तालियों की गड़गड़ाहट होती थी।"[1] आपके बाल्यकाल का शैक्षिक जीवन बड़ी ही सरसता के साथ बीता। सन् 1929 में मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई की व्यवस्था विजयगढ़ में नहीं थी, अतः अब आपके सामने प्रश्न था कि या तो अध्ययन समाप्त करे या विजयगढ़ को छोड़कर अलीगढ़ अध्ययन को जाया जाये। पिता की सहमति से अलीगढ़ गये।

सन् 1930 ई. में कायस्थ पाठशाला अलीगढ़ में 9वीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त किया जहाँ आपके रहने की व्यवस्था विद्यालय के छात्रावास में की गई थी। अब अध्ययन के साथ–साथ यशपाल जी का मन स्काउटिंग की ओर भी आकर्षित होने लगा था। कुछ समय के उपरांत आपने स्काउटिंग भी करनी प्रारम्भ कर दी, मेहनत एवं लगन से अनेकों स्काउटिंग प्रतियोगिताओं में भाग लिया और उन्हें जीता भी, परिणाम स्वरूप आपको स्काउट मास्टर बना दिया गया, अब पढ़ाई के साथ–साथ श्री जैन के कन्धों पर स्काउटों के प्रशिक्षण का भी भार आ गया था, इतनी कम आयु के होने पर भी बिना विचलित हुए दोनों कार्यों को बखूबी अन्जाम दिया।

यशपाल जी ने लेखन कार्य सन् 1930 में अपने ही विद्यालय की पत्रिका से प्रारम्भ किया, उसी पत्रिका में आपका प्रथम लेख छपा था इसके बाद कविताएं, गद्यगीत इत्यादि लिखना आरम्भ किया, विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में आपने एक सामाजिक उपन्यास की रचना की, जिसकी पाण्डुलिपि आपके एक मित्र पढ़ने हेतु ले गये और उन्होंने उसे खो दिया।

श्री यशपाल जैन जिस विद्यालय और छात्रावास में अध्ययन किया करते थे वहाँ कठोर अनुशासन का वातावरण था। विद्यालय और छात्रावास का नियम था कि यदि शहर के बाहर कहीं जाना है तो हैडमास्टर से पूर्वानुमति प्राप्त करनी पड़ती थी। एक दिन अचानक आप बिना अनुमति प्राप्त किये, अक्षय (बुआ जी पुत्र) तथा एक अन्य सहपाठी के साथ प्रदर्शनी देखने हेतु बुलंदशहर चले गये। संयोग वश उसी दिन आपके एक सम्बन्धी मिलने के लिए विद्यालय जा पहुँचे, वहाँ पर

1. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 25

यशपाल जी को न पाकर वे सीधे छात्रावास जा पहुँचे, वहाँ भी अनुपस्थित देखकर उन्होंने हैडमास्टर को इस घटना से अवगत करा दिया। फिर क्या था वापस आने पर हैडमास्टर अनुशासन के अत्यधिक पक्के थे, उन्होंने यशपाल जी एवं अन्य दोनों साथियों को एक वर्ष के लिए विद्यालय से निष्काषित कर दिया।

उपर्युक्त घटना के सम्बन्ध में यशपाल जी के शब्दों का विवेचन इस प्रकार से रहा, "स्कूल और हॉस्टल का नियम हमने अवश्य तोड़ा पर हमारा अपराध इतना संगीन तो नहीं था कि जिसके लिए इतनी कठोर सजा दी जाती, आखिर लड़कों में इतनी गम्भीरता हो तो उनमें और बड़ों में अंतर ही क्या।"1 हैडमास्टर द्वारा दण्ड तो दे दिया गया परन्तु वे भी अनजाने में एक भूल कर गये थे। उन्होंने यशपाल जी को निष्काषित कर दिया था। परन्तु अन्य किसी विद्यालय में प्रवेश पर रोक नहीं लगाई थी, अतः यह भूल यशपाल जी के हित में रही, चूँकि शैक्षिक वर्ष बचाने के लिए कायस्थ पाठशाला को छोड़कर आपने डी.ए.वी. विद्यालय में प्रवेश प्राप्त कर लिया, सन् 1931 में इस विद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर धर्म समाज इन्टर कालेज में अध्ययन किया। एक वर्ष अध्ययन करने के उपरान्त परिस्थितियोंवश आप अलीगढ़ छोड़कर इलाहाबाद पहुँच गये। जहाँ पर सन् 1933 ई. में ईविंग क्रिश्चियन कालेज से इण्टर द्वितीय वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपके शैक्षिक जीवन क्रम में अलीगढ़ का जो योगदान रहा, उसकी अपेक्षा इलाहाबाद के शैक्षिक वातावरण का विशेष महत्व रहा, उस समय इलाहाबाद को हिन्दी का गढ कहा जाता था एवं राजनीति का यह प्रेरणा केन्द्र था। अनेकों गणमान्य व्यक्तियों का आना जाना लगा रहता था। प्रमुख रूप से यह स्थान पं. जवाहरलाल नेहरू का कर्म क्षेत्र रहा है। अतः आये दिन साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक समारोहों का आयोजन होता रहता था। श्री जैन तथा अन्य विद्यार्थीगण इन समारोहों को देखने के लिए अक्सर चले जाया करते थे। सम्भवतः जिसका सीधा प्रभाव आपके शैक्षिक पृष्ठभूमि पर भी पड़ता था, दृष्टव्य है, "अलीगढ़ से मेरा वहाँ आना विकास

की कई सीढ़ियाँ एक साथ ऊपर चढ़ जाना था।"[1] ईविंग क्रिश्चियन कॉलेज के वातावरण ने यशपाल जी के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया, यह कॉलेज मिशनरियों द्वारा संचालित था। जिसमें सभी के लिए समानता का व्यवहार था।

विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्राप्त हेतु सन् 1933 में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। यह विश्वविद्यालय आज भी भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों की श्रेणी में आता है। यहीं से श्री जैन ने दो वर्ष में बी.ए. (1935) तथा दो वर्ष में एल.एल.बी. (1937) की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। विश्वविद्यालयी अध्ययन के दौरान आप जिन अध्यापकगणों से प्रभावित हुए उनमें डॉ. ईश्वरी प्रसाद, डॉ. राम प्रसाद तिवारी थे। ये दोनों ही अध्यापक इतिहास पढ़ाया करते थे। इसके अतिरिक्त प्रो. शिवआधार पाण्डे एवं प्रो. रुद्र ने भी आपको अत्यधिक प्रभावित किया, ये क्रमशः अंग्रेजी एवं अर्थशास्त्र का अध्ययन कराते थे।

शिक्षा के प्रारम्भिक दौर में श्री जैन विश्वविद्यालय के यू.टी.सी. (यूनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर) में भर्ती हो गये थे। जहाँ आपने चार वर्ष तक अध्ययन के साथ–साथ सामांजस्य स्थापित करते हुये सैनिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया, जिसमें बन्दूक चलाना सीखा, लम्बे–लम्बे कूच किया, अनुशासन का पाठ पढ़ा और सबसे अहम् बात इस दौरान यह समझा कि विदेशी सत्ता को अपने देश से हटाना है।

श्री यशपाल जैन की शिक्षा पूर्ण हो जाने पर आपके सम्मुख दो विकल्प उभरकर सामने आये – प्रथम वकालत की जाये अथवा सीधा साहित्य क्षेत्र से जुड़ा जाये, और आपने दूसरे विकल्प को ही चुना। यशपाल जी ने इलाहाबाद में पाँच वर्ष व्यतीत किये थे, अतः उस स्थान से रागात्मक सम्बन्ध का हो जाना स्वाभाविक था। स्वंय स्पष्ट करते हुये श्री जैन ने लिखा है, "वहाँ मैंने जीवन सागर को पार करने के लिए तैरना सीखा था, अपनी साहित्यिक रुचि और लेखनी को धार दी थी, साहित्य सेवियों से नाता जोड़ा था और अनके परिवारों से मेरा आत्मीयता का सम्बन्ध हो गया था

1. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 34

पर सूँकि वहाँ रहकर वकालत करने का मेरा इरादा नहीं था, इसलिये इच्छा न होते हुए भी इलाहाबाद छोड़ना ही था।"[1] इलाहाबाद छोड़ने के उपरान्त आपके सम्मुख लम्बी–चौढ़ी दुनियाँ फैली थी, और उसी फैलाव में उन्हें अपना मार्ग प्रशस्त करना था। श्री जैन ने साहित्य के क्षेत्र में उतरकर उसे नये आयाम दिये। इस प्रकार शैक्षिक स्तर अपने समकालीन साहित्यकारों से अत्यधिक उच्च रहा।

ग : विवाह :–

यशपाल जी का जन्म जैन परिवार में हुआ। आपकी पत्नी श्रीमती आदर्श कायस्थ परिवार से सम्बन्धित थी। यहाँ पर यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि विवाह पारिवारिक मान्यताओं, रूढ़िवादिताओं के बन्धनों को विखण्डित करके ही सम्पन्न हुआ है। श्री जैन जब इलाहाबाद में अध्ययनरत् थे तभी से आप बाबूजी (श्री कामता प्रसाद) की बड़ी पुत्री आदर्श को अपनी जीवन संगिनी के रूप में देखने लगे थे। उस समय लॉ किया था और आदर्श ने इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। बाबू जी के परिवार से आपके घनिष्ठ सम्बन्ध प्रारम्भ से ही थे। यशपाल जी को उच्च शिक्षा हेतु अलीगढ़ से इलाहाबाद लाने का श्रेय भी बाबू जी को ही था। यशपाल जैन का आदर्श के परिवार में अत्यधिक सम्मान था, अक्सर आपका आना–जाना लगा ही रहता था।

श्रीमती आदर्श अपने माता–पिता की सबसे बड़ीसन्तान थी। आपके पिता श्री कामता प्रसाद इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत किया करते थे। उन्हें अपने पिता की योग्यता और तेजस्विता विरासत में प्राप्त हुयी थी। विवाह से पूर्व श्रीमती आदर्श ने इन्टर एवं सी.टी. परीक्षा उत्तीर्ण करके गाजियाबाद के एक विद्यालय में एक अध्यापिका का कार्य भार ग्रहण कर लिया था। सन् 1942 में किसी कार्यवश श्री यशपाल जैन का दिल्ली आगमन हुआ। जब आपको ज्ञात हआ कि आदर्श गाजियाबाद में ही रहती हैं तो आपने उन्हें दिल्ली बुला लिया जहाँ सामूहिक रूप से विचार विमर्श करने के उपरान्त विवाह करने का निश्चय किया गया। 22 जनवरी 1942 को यशपाल जी का

1. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 46

विवाह अत्यन्त सादगी के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्षेत्र – पत्रकारिता, साहित्य सृजन आदि :–

मानवीय मूल्यों में अडिग आस्था रखकर, निस्पृहभाव से यशपाल जी ने समाज एवं देश की जो सेवा की है उसका प्रमुख माध्यम उनकी लेखनी रही है। उन्होंने अनेक विधाओं में साहित्य की कहानियों, कविताओं, संस्मरणों, बोध कथाओं, निबन्धों, आत्म वृतान्तों आदि के द्वारा हिन्दी साहित्य के भण्डार को अत्यधिक समृद्ध किया है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी श्री यशपाल जैन का अत्यधिक योगदान रहा है। आपके द्वारा सम्पादित कुछ मासिक पत्र–पत्रिकाएं इस प्रकार है।

1. मिलन – 1935–36 इलाहाबाद
2. जीवन सुधा – 1938–39 दिल्ली
3. मधुकर – 1940–46 कुण्डेश्वर
4. जीवन साहित्य – 1946–सम्प्रति – नई दिल्ली

जिसमें श्री जैन अहिंसक नव रचना की मासिक पत्रिका ''जीवन साहित्य'' के सम्पादन का कार्य आज भी बड़ी कुशलता पूर्वक निभा रहे हैं। यह पत्रिका समाज को स्वस्थ एवं प्रेरणादायी सामग्री देती है। इसमें उच्चकोटि के चिंतकों, विद्वानों तथा समाज सेवियों के विचारों की अभिव्यक्ति होती है।

डायरी पत्र लेखन एवं अनुवाद के क्षेत्र में भी इनकी लेखनी ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। किन्तु संस्मरण लेखन के क्षेत्र में इन्हें विशेष सफलता और ख्याति प्राप्त हुयी, अभिनन्दन ग्रन्थ सम्पादक के रूप में इनका नाम विशेष आदर से लिया जाता है। श्री जैन की कविताएँ मानवतावाद

एवं राष्ट्रीयता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। उनमें मन और उसकी बदलती स्थितियों का विशेष रूप से चित्रण हुआ है। उपदेशात्मक इनकी कविताओं का अतिरिक्त गुण है। नैतिकता श्री जैन के कहानियों का आधार है। इनका रेडियो रूपक साहित्य शिल्प और कथ्य की दृष्टि से शिथिल होते हुए भी उद्देश्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

जीवन साहित्य में भक्तिभाव की बहुलता है। परंतु तात्विक दृष्टि से सफल वृत्तियाँ हैं। श्री जैन के यात्रा–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थलों संस्कृति, सभ्यता और साहित्य का जितना मनोरंजक और तत्थपूर्ण हुआ है, वैसा प्रायः अन्यत्र दुर्लभ है। सैलानी यशपाल जी की यह देन हिन्दी–साहित्य में चिरस्मरणीय रहेगी।

"जीवन–साहित्य" पत्रिका में आपको पत्रकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। पत्रिका के सम्पादकीय अंश द्वारा यशपाल जी ने हिन्दी शब्दावली के विकृत हो रहे स्वरूप पर कुछ इस प्रकार से कटाक्ष किया है, "दुर्भाग्य से आज भी हिन्दी में सर्वमान्य शब्दावली नहीं है। सेक्रेटरी के लिए कहीं "मन्त्री" तो कहीं "सचिव" शब्द का प्रयोग होता है। ऐसे एक दो नहीं सैकड़ों शब्द हैं। और बर्तनी को लेकर हिन्दी में घोर अराजकता है।"[1] यह टिप्पणी सन् 1978 में की गयी थी परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी सटीक प्रतीत होती है।

"सस्ता साहित्य मण्डल" नामक संस्था से सन् 1938 से जुड़कर आपने साहित्य–सृजन का कार्यारम्भ किया था। इस संस्था ने सर्दव गाँधीवादी विचारधारा को प्रश्रय दिया, श्री जैन ने इस संस्था की विचारधारा एवं राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता देखकर ही इसमें कार्य करना स्वीकार किया। वर्तमान समय तक आप इसी संस्था से जुड़े रहे और संस्था के माध्यम से अनेकों पुस्तकों, अभिनन्दन ग्रन्थ, मासिक पत्र–पत्रिका के सम्पादन एवं अनुवाद का कार्य कर चुके हैं। साहित्य आपका प्रमुख कार्य क्षेत्र रहा है। आपने मण्डल के प्रति पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से मंत्री पद का कार्य–भार ग्रहण किया। साहित्यकार यशपाल जैन के सम्बन्ध में विनोबा जी ने लिखा है कि "रचनात्मक क्षेत्र में

---

1. जीवनसाहित्य (मासिक) सं. यशपाल जैन (फर. 1978), पृष्ठ – 70–71

उन्होंने अच्छा काम किया, बढ़िया साहित्य निकाला, दिल्ली में रहते है। फिर भी उनकी अक्ल खराब नहीं हुयी।"[1]

अन्य संस्थाओं के गठन एवं सहयोग में भी यशपाल जी का सक्रिय रूप से योगदान रहा है। इनके कुछ प्रमुख संस्थाएं इस प्रकार है :–

1. हिन्दी विद्यापीठ (शैक्षिक संस्था)
2. दिल्ली राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (अहिन्दी भाषी लोगों को हिन्दी सिखाने की संस्था)
3. राष्ट्रीय पुस्तक न्याय (श्री यशपाल जैन–ट्रस्टी के रूप में)
4. राष्ट्रीय पुस्तक विकास परिषद (सक्रिय सदस्य के रूप में)

वर्तमान समय में यशपाल जैन का अनेकों साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्थाओं का जुड़ाव है। स्वयं श्री जैन का मानना है, "राजनीति में मेरी केवल इतनी रुचि है जितनी की एक लेखक के नाते होनी चाहिये, लेकिन साहित्य संस्कृति और कला को मैं किसी भी देश की आत्मा मानता हूँ और उनकी अभिवृद्धि में मेरा हमेशा सहयोग रहता है। आज उनके कार्यक्षेत्र ने विस्तृत एवं व्यापक रूप धारण कर लिया है। निश्चय ही श्री जैन का रचना संसार हिन्दी–साहित्य और देश की महानतम् उपलब्धि है।

2. यशपाल जी का व्यक्तित्व

श्री यशपाल जैन के व्यक्तित्व में शारीरिक सौन्दर्य, रंग का निखार हँसमुख आकृति और सरसवाणी, मृदुल और सरल स्वभाव तथा अकारण मैत्री भावना और अनवरत् साहित्य साधना आदि गुणों का समावेश था। आपका व्यक्तित्व "यत्राकृतिस्तत्र गुणावसन्ति" (जहां रूप है वहीं गुण निवास करते हैं) को चरितार्थ करता है। आपके समकालीन साहित्यकार श्री विष्णुहरि डालमिया ने आपके व्यक्तित्व को शब्दों में इस प्रकार बाँधा है। उनके व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि अनजाना

1. निष्काम साधक, विनोबा पवनार, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 32

व्यक्ति भी प्रथम परिचय पर उनसे प्रभावित हुएण बिना नहीं रह सकता। उनका हँसमुख स्वभाव, स्वष्टवादिता और मिलनसारिता आदि गुण उनके व्यक्तित्व को और भी गरिमामय बनाते हैं। धैर्य तो उनका भूषण ही है।"[1] निःसंदेह आपका व्यक्तित्व बहुमुखी व्यापक एवं गुणों की खान था।

किसी भी साहित्यकार का साहित्यिक व्यक्तित्व उस के व्यक्तित्व से परस्पर सम्बद्ध होता है, दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अतः एक को पूर्ण रूप से समझने के लिए दूसरे का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। श्री यशपाल जैन के व्यक्तित्व को पूर्ण रूप से समझने के लिए निम्न चरणों की चर्चा करना परम् आवश्यक है। –

क) बाह्याकृति :–

श्री यशपाल जैन का शारीरिक गठन सम्पूर्ण रूप से आर्य जाति का अंश था। ऊँचा मस्तक, हर्षोल्लास से चमकते नेत्र, गौरवपूर्ण ऊँचा कद स्वस्थ शरीर, संत-महात्मा एवं लौकिक भावों का सुन्दर सम्मिलन था।

श्री जैन जैसे असाधारण बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति ने जिस प्रकार जीवन में आये अनेकों उतार-चढ़ावों के मध्य गुजरते हुए अपने वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण किया है। उसके स्पष्ट संकेत उनकी मुखाकृति से प्रकट हो जाते हैं। आप जितना बाह्य रूप से निर्लिप्त, गम्भीर एवं चिन्तक प्रवृत्ति को धारण किये हुए प्रतीत होते थे, उतने ही अन्तरम् से कोमल एवं सरस यशपाल जी के मुखपर व्याप्त गम्भीरता एकांगी नहीं बल्कि यह समयान्तरित विषम परिस्थितियों के वे चिन्ह हैं, जो स्वयमेव अंकित हो गये हैं, जिन पर यशपाल जी का वश नहीं रहा है।

यशपाल जी जितने गम्भीर और चिन्तक दिखायी देते थे उतने ही विनोद प्रिय मिलनसार एवं मृदुभाषी भी, सम्पर्क के चन्द क्षणों के भीतर ही वे उस आत्मीयता का परिचय देते हैं कि निकटवर्ती सम्बन्धी से प्रतीत होने लगते हैं। इस सम्बन्ध में श्री युगल किशोर चतुर्वेदी का कथन है, कि "जब

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 171

कभी मैं उनके सम्पर्क में आया तभी मैं उनके प्रेम पूर्ण व्यवहार तथा शिष्टता से इतना प्रभावित हुआ कि उनका प्रारम्भिक स्वल्प परिचय शनैः–शनै– प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होता चला गया एक लब्धप्रतिष्ठ लेखक, प्रवीण पत्रकार तथा सफल साहित्यकार होते हुए भी वह इतने शिष्ट, विनीत इतने मिष्टभाषी और इतने मिलनसार हैं कि जो कोई एक बार भी उनके निकट सम्पर्क में आता है, वह सर्दव के लिए उनका प्रेमी और प्रशंसक बन जाता है।"[1] यशपाल जी बातों में सरलता, स्पष्टता, उदारता, सादगी एवं दृढ़ता समाहित है।

आप अपने अतिथियों का स्वागत अत्यंत गर्मजोशी से करते थे। मंद–मंद मुस्कान से अतिथियों का स्वागत कर पात्रानुकूल आसन गृहण करने का आग्रह करते, अपनों से छोटों को अपनी बगल में कुर्सी पर बैठाते, और पीठ ठोंक कर उसे आशीर्वाद देते, अपने से बडों को अपने सामने की कुर्सी पर ससम्मान आसन ग्रहण कराते। आपका अतिथि सत्कार निराला जी के समकक्ष था। निराला जी अपने अंतरंग अतिथि को एक चपाती अपने हाथ से सेंक कर खिलाते थे। यशपाल जी भी अपने अतिथियों का स्वागत प्रायः चाय की प्याली यदाकदा शीतल जल से अवश्य कराते थे। इस प्रकार वह अतिथि के प्रति भारतीय परम्परा का पालन करते।"

ख) रहन–सहन :–

श्री यशपाल जी के वर्तमान जीवन के रहन–सहन और प्रारम्भिक जीवन के रहन–सहन में कोई विशिष्ट अन्तर नहीं है। प्रारम्भ में आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर भी अत्यंत साधारण स्तर के व्यक्ति रहे हैं, और वर्तमान में भी "सादा जीवन और उच्च विचार" के सिद्धान्त को अपने जीवन में उतारे हुए हैं। परन्तु आज जिस स्तर पर वे पहुँच गये हैं उससे यह अनुमान लगाना कठिन हो जाता है कि इस व्यक्ति ने कभी जीवन में आये उतार–चढ़ावों का भी सामना किया होगा।

उन्होंने इलाहाबाद में शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात् दरियागंज, दिल्ली में अपने मामा श्री जैनेन्द्र कुमार के सानिध्य में रहते हुए जीवनारम्भ के चार वर्ष व्यतीत किये। तत्पश्चात् कुण्डेश्वर

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी (व्यक्तिगत संस्मरण–श्री युगल किशोर चतुर्वेदी), पृष्ठ – 197

(टीकमगढ़) मध्यप्रदेश में श्री बनारस दास चतुर्वेदी के साथ छः वर्ष बिताये, इन छः वर्षों को लेखक अपने जीवन के सर्वोत्तम वर्ष मानता है। सन् 1946 में आपका पुनः दिल्ली पुनरागमन हुआ और तब से वर्तमान समय तक यहीं हैं। श्री यशपाल जैन 7/8, दरियागंज, नई दिल्ली में स्थित किराये के मकान में दूसरी मन्जिल पर निवास करने वाले मध्यम वर्गीय स्तर के नागरिक हैं। जीवन की सुख–सुविधाएं उन्हें अभिमानी नहीं बना सकीं बल्कि उनका विश्वास है कि –

"हमारे हाथ में कितनी ही सत्ता क्यों न आ जाये कितने ही ऊँचे पद पर हम क्यों न आसीन हो जायें, धन–धान्य से क्यों न भर जायें लेकिन यदि माववीय मूल्यों पर हमारी आस्था नहीं है और मानव हित को हम उचित महत्व नहीं देते तो हमारी उपलब्धियाँ व्यर्थ हैं, अभिशाप हैं।"[1]

यशपाल जी जिस मकान में निवास करते थे वह तीन कमरों बाला साधारण सुसज्जित मकान है। आपने लेखन एवं अध्यापन कार्य करने के लिये सबसे बाहर वाले कमरे का चयन किया जिसमें प्रकाश की समुचित व्यवस्था है, कमरे में दरवाजे की सामने की ओर एक बड़ी मेज व कुर्सी पड़ी हुयी है। जिसका उपयोग श्री जैन लेखन कार्य के समय करते हैं, दीवारों पर दृष्टि डालने पर चारों तरफ मात्र पुस्तकें ही पुस्तकें दृश्यमान होती हैं। जिन्हें अत्यधिक व्यवस्थित ढ़ंग से रैकों में सजाया गया है, उस कमरे का अवलोकन करने पर हमें ऐसा आभास हुआ कि हम किसी पुस्तकालय के अन्दर उपस्थित हैं।

"कमरे के एक कोने पर अलमारी के अन्दर बापू जी की अवाक्ष प्रतिमा रखी हुयी है जो बरबस अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर लेती है। प्रतिमा यशपाल जी के गान्धीवादी होने की मान्यता को पुष्ट करती है। कमरे के बाहर बालकनी में पंक्तिबद्ध गमले की कतारें हैं, जो पेड–पोधों से विशेष रुचि की परिचायक हैं।"[2]

ग) दिनचर्या :–

यशपाल जी की सार्थक जीवन–चर्या प्रातः 5.00 बजे प्रारम्भ हो जाती थी। सर्वप्रथम वह

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 419
2. श्री जैन के लेखन कमरे का अवलोकन करने पर (दिनांक 10–10–1997)

टहलने जाते, तदुपरान्त नियमित कार्य से निवृत्त हो पूजन करते। इनके घर पर ही मन्दिर निर्मित है, जिसमें महावीर, ईसा, बुद्ध, रामकृष्ण, मुक्तानंद इनकी स्वर्गीय पत्नी आदर्श जी के चित्र प्रतिष्ठित हैं। इनकी पूजा में ध्यान एवं कीर्तन पद्धति का विशिष्ट स्थान है। पूजा के समय कीर्तन की टेप बजाते हुये ध्यानस्थ हो जाते, स्पष्ट है कि इनकी सब धर्मों में समान आस्था थी, इनको प्रत्येक कार्य समय एवं व्यवस्थित रूप से करने में विश्वास था, यहाँ तक कि जूते रैक पर पंक्तिबद्ध रखे हों, घरेलू प्रयोग के सामान्य औजार–पेंचकस, प्लास, चाबियाँ आदि एक बोर्ड पर व्यवस्थित ढंग से लटके रहते हैं।

अध्ययन प्रिय यशपाल जी का निजी पुस्तकालय था और वे अपने अध्ययन लेखन का कार्य वहीं बैठकर पूरा करते थे। लिखते–लिखते अध्ययन करते–करते थकावट अनुभव करने पर आप कुर्सी पर पालथी मारकर बैठ जाते हैं, अथवा मेज पर पैर फैलाकर स्फूर्ति ग्रहण करते हैं। थकान के क्षणों में चाय की प्याली इन्हें विशेष प्रिय थी। नियमित रूप से कुछ न कुछ लिखना इनकी दैनिक चर्या का अंग था।

प्रातः 7 बजे से 8 बजे हल्का नाश्ता करने के उपरान्त दोपहर का भोजन करके ही "सस्ता साहित्य मण्डल" के लिए जाते थे। प्रायः जन सामान्य की तरह थ्री व्हीलर का प्रयोग करते थे।

श्री जैन शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति थे। हल्का सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन इन्हें प्रिय था। अधिकाशतः घर में डाइनिंग टेबिल पर ही भोजन करते यह किसी भी प्रकार व्यसन से सर्वथा दूर थे, उत्सवादि में सामूहिक भोजन के अवसरों पर पंक्ति में बैठकर पत्तल पर भोजन करना इन्हें अधिक रुचिकर था। जैन मतावलम्बियों के अनुरूप ही रात्रि भोज सूर्यास्त से पूर्व करने का प्रयास करते थे। स्वदेश में हो या विदेश में भोजन तथा दिनचर्या में परिवर्तन इन्हें मान्य नहीं था। गाँधीवादी होते हुये भी इस क्षेत्र में आपने समझौता नहीं किया।

घ) वेशभूषा एवं आचार–व्यवहार :–

श्री यशपाल जैन का जैसा शारीरिक गठन था उसी के अनुरूप आपने सदैव सादी एवं सुरुचिपूर्ण वेशभूषा का चयन किया। गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण खादी पहनने का संकल्प लिया।

गर्मी में सफेद धोती कुर्ता तथा सर्दी में बंद गले का कोट–पैंट काले फ्रेम का चश्मा। गर्मी में चप्पल तथा सर्दी में नेवीकट जूता धारण करते यशपाल जी तर्क–शक्ति–सम्पन्न व्यक्ति थे और वे न्याय संगत बात के लिए बड़े से बड़े अधिकारी अथवा राजनीतिज्ञ से भिड़ने में भी पीछे नहीं हटते। अपने तर्कों से अपनी बात मनमाने के लिए विवश कर देते यह उनके सफल पत्रकार होने का भी एक गुण है।

गम्भीरता यदि उनके व्यक्तित्व का एक अंग है। तो विनोद प्रियता दूसरा, यहाँ तक कि नवागन्तुकों से भी परास्परिक वार्तालाप के बीच कुछ समय बाद आप विनोदी स्वभाव के प्रतीत होने लगते हैं। साहित्यिक क्षेत्र में अनेक पत्रिकाओं एवं अहम्–भावना का प्रदर्शन नहीं मिलता, आक्षेप और आरोप करने वाले व्यक्तियों को आप बड़ी सर्तकता और आत्मविश्वास के साथ उत्तर देते हैं। आत्म प्रशंसा की भावना से विहीन आपका व्यक्तित्व समाज को निरन्तर आत्मभिव्यक्ति की विशिष्ट सामग्री से समृद्ध करता रहा है। गम्भीर कार्य करते समय किसी प्रकार का कोलाहल आपके कार्य में बाधक नहीं होता। आपको मिथ्याडम्बर तथा बाहरी टीप–टाप में विश्वास नहीं। माँ की मितव्ययी प्रवृत्ति का प्रभाव यशपाल जी में यथातथ्य विद्यमान है, उापसे व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर आप अति सामान्य साधारण विचारों वाले सरल प्रवृत्ति के व्यक्ति प्रतीत होते।

ड) रुचि :–

साधारणतया कहा जाता है कि किसी व्यक्ति की रुचि का मापदण्ड उसकी प्रतिभा होती है।

श्री यशपाल जैन की रुचि को यदि हम इस मापदण्ड से मापने का प्रयास करें तो निश्चय ही खरी उतरती है। तथा बहुमुखी भी है, बाल्यकाल से ही इनकी अध्यापक के प्रति गहरी रुचि थी, इसके अतिरिक्त कबड्डी, गिल्ली डन्डा, तैराकी में भी इनकी गहरी अभिरुचि रही है। फुटबाल खेलना बहुत अच्छा लगता था, इनके पिता का कथन है कि –

"इलाहाबाद से उसने (श्री यशपाल जैन) वकालत पास की, लेकिन वकालत की नहीं उसका रुझान लिखने की तरफ था, पढ़ाई के दिनों से ही वह कवितायें, लेख और कहानियाँ लिखता रहा था।"[1] श्री जैन के अध्यापन कार्य एवं लेखन कार्य के दौरान चाय की प्याली नई गति का संचार करती है। अन्य किसी प्रकार के व्यवसन से सर्वथा दूर हैं। धोती, कुर्ता, जाकेट आपकी पसंदीदा पोशाक हैं, डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया का कथन है कि –

"श्री यशपाल जी प्रकृष्ट पर्यटक हैं, महा पंडित राहुल जी के उपरान्त विश्व की सर्वाधिक दूरी नापने वाले प्रसिद्ध पर्यटक श्री यशपाल जी का नाम महत्वपूर्ण है। सारे भारत में अनेक बार घूमने के साथ विश्व के लगभग 42 देशों का प्रवास किया है। "[2]

बच्चों के प्रति आपका विशेष लगाव रहा। श्री जैन बच्चों के साथ उनकी रुचियों के अनुरूप ही व्यवहार करते थे। यह उनके भतीजे रवि जैन के कथन से स्पष्ट हो जाता है–

"ताऊ जी को ताश खेलने का भी शौक था, विशेषकर हम बच्चों के साथ जब हम सब बच्चे दरियागंज जाते थे तो कहानी प्रतियोगिता होती थी और जो बच्चा प्रथम आता था उसे कोई–न–कोई पुस्तक इनाम में देते थे।"[3]

श्री जैन के घूमने की प्रवृत्ति बचपन से ही थी जो संत महात्माओं से मिलना एवं उनकी संगति करना भी आपकी रुचियों के अन्तर्गत ही था। घूमना और लिखना–पढ़ना आपके जीवन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु रहा, डायरी लेखन में आपकी रुचि सन् 1940 से रही है, जिसमें उनकी दैनिक घटनाओं

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 272
2. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 176
3. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 303

का विशेष रूप से उल्लेख रहता है। यह कार्य आज भी बदस्तूर जारी है। राजनीति के प्रति आपकी रुचि केवल इतनी है जितनी एक लेखक के नाते होनी चाहिये।

च) देश–विदेश में प्रवास एवं उनका उल्लेखनीय प्रभाव :–

यशपाल जी ने हजारों लाखों मील की यात्रायें की थी। आपने इस यात्रा प्रवास के दौरान, स्वदेश की यात्रा की तथा साथ ही साथ अनेकों देशों की यात्राओं पर अनेकों बार गये। इन यात्राओं में इस बात का प्रयत्न किया कि वे सदैव दूसरों की अच्छाइयाँ देखों और अपने समाज की अच्छाइयाँ उन्हें दिखायें। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर जी ने आपके यात्रारत् स्वभाव के कारण आपको "चिरयात्री" की संज्ञा से विभूषित किया है और इसी सन्दर्भ में श्रद्धेय काका साहेब कालेलकर जी ने तो बड़े पते की बात कही है –

यशपाल जी ने विदेशों में जो अच्छाइयाँ देखी हैं उन्हें कृपण की भाँति अपने तक सीमित नहीं रखा, मुक्त भाव से दूसरों को भी दिया है। देश–विदेश की यात्राओं के विषय में उन्होंने जितना लिखा है उतना बहुत कम लेखक लिख पाये हैं।"[1]

देश में :–

यशपाल जैन ने सन् 1946 से पहले (छात्र जीवन में) और उसके पश्चात् स्वदेश की कई बार परिक्रमा की इसके पीछे आपका मुख्य उद्देश्य यही रहा है कि यात्रा करने के बहाने सम्पूर्ण भारत के दर्शन कर लिये जायें। आपकी सैलानी प्रवृत्ति के विषय में श्री जय देव त्रिपाठी ने इस प्रकार से उल्लेख किया है –

"श्री जैन मात्र यहीं नहीं हैं अपितु यात्रा उनके जीवन का एक अंग है। भ्रमण और पर्यटन के प्रति उनमें अत्यधिक आकर्षण है।"[2]

आपने उत्तराखण्ड के समस्त धामों बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री और गौमुख की

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 13
2. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 13

यात्राएं की, अमरनाथ भी गये और दक्षिण के छोर पर स्थित कन्याकुमारी एवं धनुषकोटि के मध्य के समस्त तीर्थ एवं दर्शनीय तीर्थों एवं दर्शनीय स्थलों का भ्रमण किया, यात्रा से वापस आने पर आपके ऊपर इन यात्राओं का प्रभाव कुछ इस प्रकार से पड़ा कि इन यात्राओं के विवरण पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुए।

इसके अतिरिक्त सन् 1958 में कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर असम में गुवाहाटी, शिलांग, चेरापूंजी, काजीरंगा आदि स्थानों का भ्रमण किया। आपकी स्वदेश यात्राओं की ओर अधिक स्पष्ट करते हुए श्री भागीरथी कानोडिया (कोलकाता) ने आपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं। ''वे यात्रा महज यात्रा के लिए नहीं करते, बल्कि जहाँ भी जाते हैं वहाँ की संस्कृति, वहाँ के साहित्य की, वहाँ के जनजीवन की, वहाँ के दर्शनीय स्थलों की ओर, वहाँ अतीत में जो बड़े लोग हुए हैं उनकी व्यौरेवार जानकारी हासिल करते हैं।''[1]

श्री जैन ने 3 से 17 जून, 1974 में नागदा, माउण्ट आबू, उदयपुर, चित्तौड़ में पन्द्रह दिन का प्रवास भी किया।

स्वदेश यात्रा के अंतर्गत, यशपाल जी पर विभिन्न सांस्कृतिक वातावरण, सभ्यताओं आदि का गहरा प्रभाव पड़ा है। देश की एकता का जो समन्वित रूप उभर कर सामने आया, उसने आपके अन्तर्मन को अत्यधिक प्रभावित किया। आपके स्वदेश से सम्बन्धित यात्रा विवरणों में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

आध्यत्मिक महापुरुषों के प्रति यशपाल जी के मन में सदैव से आकर्षण रहा, इसी आकर्षण के कारण हिमालय प्रवास के दौरान अनेकों संत महात्माओं से मिले, पाण्डिचेरी के श्री अरविन्द आश्रम में भी गये, जहाँ पर श्री जैन ने उनके आध्यात्मिक विचारों को ज्ञात करने की चेष्टा की, साथ ही साथ उद्‌बोधक बातों का हृदयंगम भी किया, आपके साहित्य में जो आध्यात्मिक प्रभाव झलकता है, वह इसी परिणाम का सूचक है।

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 37

विदेशों में :–

श्री जैन विदेशों में प्रवास के दौरान कई–कई हफ्ते तक रहे हैं। वहाँ जाकर आपने गाँधी विचार सरित् प्रवाहित कर मानवता का उपकार किया है। आपने विभिन्न देशों की अनेक बार यात्राएं की हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि श्री जैन ने अपने जीवन काल में लगभग सम्पूर्ण संसार की यात्रा कर ली थी, सम्भवतः इसी कारण प्रसिद्ध साहित्यकार स्व. श्री बनारसी दास चतुर्वेदी ने आपको दृष्टिगत करते हुए लिखा है कि –

"राहुत सांस्कृत्यायन और डॉ. रघुवीर के बाद तीसरे हिन्दी लेखक हैं, जिसने देश–विदेश की इतनी यात्राएं की हैं।"[1] विदेशों में प्रवास के सम्बन्ध में जब यशपाल जी से प्रश्न किया गया कि , भारत के बाहर आपको कौन सा देश अच्छा लगा ? तब प्रश्न के उत्तर में आपने कहा, "जीवन संघर्ष और परिश्रम की दृष्टि से मुझे रूस और जर्मनी अच्दे लगे। हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्राचीनता की दृष्टि से चैकोस्लोवाकिया, प्राकृत सौंदर्य की दृष्टि से स्विटजरलैण्ड, कला की दृष्टि से इटली, अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति की दृष्टि से फ्रान्स, लोकतन्त्रीय दृष्टि से डेनमार्क और फिनलैण्ड ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया।"[2] इस वक्तव्य से स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है कि आपकी विदेश यात्राओं के दौरान दृष्टि कितनी सूक्ष्म रही है।

श्री यशपाल जैन अनेकों विदेश यात्राओं एवं प्रवासों को कलमबद्ध भी किया है, "रूस में छियालिस दिन, "पड़ोसी देशों में" "सागर के आर–पार" इत्यादि पुस्तकें इसी का उदाहरण हैं। सर्वप्रथम सन् 1957 में यशपाल जी "युवक समारोह" में भाग लेने के लिए रूस गये थे। चार मास के इस प्रवास के अन्तर्गत चैकोस्लोवाकिया, स्विटजरलैण्ड, इटली, फ्रान्स, इंग्लैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, फिनलैण्ड, लेनिनग्राद, मास्को आदि की यात्राएँ की। सन् 1960 में आपने दूसरी विदेश यात्रा की। इस यात्रा का उद्देश्य वर्मा में "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" के वार्षिक महोत्सव में सम्मिलित होना था, जहाँ यशपाल जी डेढ़ मास ब्रह्मदेश में रहे, अन्तंर थाईलैण्ड, कम्पूचिया, दक्षिण वियतनाम, सिंगापुर,

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 381
2. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 381

मलाया होते हुए वापिस आ गये। इस बार आपके साथी श्री विष्णु प्रभाकर जी भी साथ थे।

इन यात्राओं के उपरान्त सन् 1963 एवं 1964 में आपने क्रमशः लद्दाख (8 दिन) और नेपाल में भ्रमण किया। प्रवासी भारतीयों की स्थिति के निरीक्षण तथा अध्ययन के लिए (बिरला जी के आग्रह पर) आप सन् 1965 में अदन, सूडान, इथियोपिया, केनिया, सुगाण्डा, तंजानिया, मलावी, दक्षिण रोडेरिशा (जिम्बाम्बे), जाम्बिया, जजीबार, मेडेगास्कर, मारीशस, फीजी, कोकोज द्वीप, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर तथा थाईलैण्ड गये। आपकी इस यात्रा के सम्बन्ध में कुछ प्रवासी व्यक्तियों द्वारा निम्न रूप में टिप्पणी की गयी –

"मैंने उन्हें ठोस निष्कपट और सहज पाया और मुझे उनके योगदान, उनकी निःस्वार्थ कर्तव्य परायणता और अपने देश की भाषा संस्कृति और परम्परा के प्रसाद के लिए उनकी मिशनरी लगन की सम्यक जानकारी मिली।"[1] –(प्रवासी भारतीय –जय नारायण राय)

"यशपाल जी रोजहिल (मारीशस) नामक शहर में एक परिवार के यहाँ ठहरे हुए थे। उनसे मेरी भेंट उनके यहाँ आने के दूसरे दिन हुयी और दो चार हिन्दी प्रेमी उपस्थित थे। पहली ही मुलाकात में वह हमसे एकदम घुलमिल गये थे, लगता था हमारे चिर परिचित हैं। उनकी भारतीय वेशभूषा और उनकी सादगी उल्लेखनीय थी। उनके सहवास में हम भूल गये थे कि मारीशस में हैं। हमारे बीच बैठे यशपाल जी हमें भारत में होने का आभास दे रहे थे।"[2]

–(प्रवासी भारतीय– सोमदत्त बखौरी)।

इन विदेश यात्राओं के अतिरिक्त अन्य अनेकों विदेश यात्राओं को श्री यशपाल जैन गये। वहाँ आपका शानदार स्वागत किया गया। अनेकों देशों में रेडियो, टीवी पर आपकी वार्ताएं एवं अन्य कार्यक्रम प्रसारित किये गये। सन् 1968 से लेकर वर्तमान समय तक की कुछ प्रमुख विदेश यात्राएं इस प्रकार से रहीं हैं –

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 329
2. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 324

1. सन् 1968– "चित्रकला संगम के शिष्ट मण्डल के नेता के रूप में (मास्को ताशकंद तथा समरकंद की यात्रा)

2. सन् 1972 – सप्तनीक श्री जैन कैनेडा के लिए प्रस्थान

   (27 मई) (इसी दौरान अमरीका, सूरीनाम, गयाना तथा ट्रिनीडाड एवं टोवेगो की यात्रा का आमंत्रण मिला)

3. सन् 1980 – पुनः कैनेडा प्रस्थान

   (21 जुलाई) (जहाँ कैनेडा में लन्दन प्रस्थान, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की यात्रा)

4. सन् 1981 – "जापान बुद्ध संघ" के आमंत्रण पर (विश्व शान्ति सम्मेलन में गाँधी विचार धारा

   (18 अप्रैल) तथा जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में)

5. सन् 1983 – "चाइना सोसाइटी" के निमंत्रण पर (भारत–चीन मैत्री संघ के प्रतिनिधि मण्डल में)

आपकी विदेश यात्राओं की संख्या इतनी अधिक है कि उन्हें संक्षिप्त एवं क्रमवार रूप में दर्शाना असम्भव सा प्रतीत होता है। श्री जैन द्वारा विदेशों में जिन सभाओं, गोष्ठियों में भाग लिया। उनमें बोलने के लिए आपके पास चार मुख्य विषय थे। साहित्य, भारतीय संस्कृति, गाँधी विचारधारा और प्रवासी भारतीय।

वर्तमान समय में यशपाल जी विश्व के लगभग सभी देशों की यात्राएं कर चुके हैं। इस दौरान आपने मानवीय मूल्यों को कभी विघटित नहीं होने दिया। इसके प्रति आप सदैव सजग रहे, आपके ऊपर इस दौरान अनेकों पाश्चात्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों ने प्रभाव छोड़ा परन्तु आपने उन्हें अपने

ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया। इन यात्राओं से श्री जैन को दुहरा लाभ हुआ, एक तो जो दुनियाँ में हो रहा है वह उन्हें देखने का मौका मिला, दूसरा यह कि विदेशों में भारत की दृष्टिकोंण प्रस्तुत करने की सुविधा प्राप्त हुयी।

यशपाल जी ने विदेश प्रवास के दौरान सादा जीवन ही अपनाया। उन्होंने विदेशी वेषभूषा का अनुकरण कभी नहीं किया। वे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को ही सर्वश्रेष्ठ रूप में देखते रहे। फीजी की राजधानी सूवा में एक प्रवासी भारतीय ने आपसे कुछ इस प्रकार से उद्घाटित किया, "यशपाल जी आपके यहाँ आने से सबसे अधिक लाभ तो हमें हुआ, इस देश में कुर्ता-धोती और हिन्दी का मान बढ़ा है।"[1] यशपाल जी सादा जीवन उच्च विचार को ही चरितार्थ करते रहे हैं। आपका मानना है कि "प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है, मानव एवं प्रकृति दोनों ही मेरे लिए पेरणा के अक्षय स्त्रोत हैं। इसी प्रेरणा के वशीभूत होकर मैंने सारे देश की कई बार परिक्रमा की है। और विश्व के लगभग 42 देशों में घूमा हूँ।"[2]

छ) पुरस्कार तथा अभिनन्दन :-

श्री यशपाल जैन एक प्रसिद्ध साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित रहे। आपको विभिन्न देशों-प्रदेशों के कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों, प्रशंसा पत्रों, अभिनन्दन ग्रन्थों, उपाधियों आदि से सम्मानित किया जा चुका है। आपने अपने जीवन में कभी भी प्रचार का सहारा नहीं लिया है। बड़े से बड़े राजनेताओं, उद्योगपतियों, समाज सेवियों से श्री जैन के घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं परन्तु उन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति हेतु कभी कोई याचना नहीं की। श्री यशपाल जैन का कथन है कि , "मेरा परम् सौभाग्य है कि मैंने जो कुछ थोड़ी बहुत सेवा की, उससे कई गुना अधिक सम्मान मुझे मिला। बचपन में सुलेख के लिए जो पेड़े मिले थे, उन्होंने जाने-अनजाने मेरे अवचेतन पर यह बात बिठा दी थी कि परिश्रम करना हमारा कर्तव्य है।"[3]

श्री यशपाल जैन को अनेकों पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें कुछ उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों पर प्राप्त

---

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 342
2. मेरी जीवनधारा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 193
2. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 181

हुए हैं। आपको दो बार "सोवियत–लैण्ड–नेहरू" पुरस्कार के लिए चुना गया। इसके अतिरिक्त अन्य प्राप्त पुरस्कार निम्नलिखित हैं –

सन्	पुस्तक का नाम	पुरस्कृत करने वाली संस्था
1968	"रूस में छियालिस दिन"	सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार (प्रथम बार)
1977	"सेतु निर्माता"	–वही– (द्वितीय बार)
1961	"हारिये न हिम्मत"	केन्द्रीय सरकार द्वारा पुरस्कृत
1965	"पड़ोसी देशों में"	ए.प्र. सरकार द्वारा पुरस्कृत
1965	"राष्ट्र की विभूतियाँ	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्वीकृत
1965	"आलोक की रेखाएँ"	आगरा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में स्वीकृत

आपके द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिकायें, 'मिलन', 'जीवनसुधा', 'मधुकर', जीवन–साहित्य' के सम्बन्ध में देश–विदेश से सौकड़ों प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए। विदेशों में साहित्य प्रसार के लिए श्री जैन को कई बार सम्मानित किया गया था –

सन्	संस्था का नाम	उपाधि / अभिनन्दन
25 नवम्बर 1970	"जैन सभा" नई दिल्ली द्वारा	साहित्य रत्न
18 मई 1971	"उ.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा	साहित्य–वारिथि
1975	"वीर निर्माण भारती मेरठ द्वारा	विद्या–वारिथि
सितम्बर 1992	तत्कालीन रक्षामंत्री श्री जगजीवन राम द्वारा (श्री जैन के षष्ठि पूर्ति के अवसर पर)	समन्वय साधु साहित्यकार (अभिनन्दन ग्रन्थ)
23 अप्रैल 1985	लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ द्वारा	निष्काम साधक (अभिनन्दन ग्रन्थ)

यशपाल जी ने पुरस्कारों, उपाधियों के अतिरिक्त अनेक गरिमामय पदों पर संचालन का कार्य भी किया, ''भारतीय साहित्य परिषद'' नई दिल्ली के अध्यक्ष पद पर (सन् 1973) तथा ''सस्ता साहित्य मण्डल'' नई दिल्ली में मंत्री पद पर (1975 से) आप आसीन रहे।

सम्भवतः उपर्युक्त वर्णित पुरस्कार, अभिनन्दन ग्रन्थ, प्रशंसा पत्र, उपाधियां आदि, यशपाल जी को न भी प्राप्त होती तो भी वे अनवरत् रूप से साहित्य साधना करते रहते, एंसा अनुमान आपके दीर्घ समय से मूक भाव द्वारा साहित्यरत् रहने से लगाया जा सकता है। आपने एक स्थान पर स्वीकार किया है, ''यह सब नहीं होता तब भी मैं अपने अंगीकृत मार्ग को नहीं छोड़ता, आखिरकार उस मार्ग को मैंने किसी दबाव में आकर नहीं चुना था।''[1] निश्चय ही श्री यशपाल जैन साधारण स्तर से ऊपर उठे थे, किन्तु व्यर्थाभिमान ने उन्हें कहीं भी स्पर्श नहीं किया।

3. साहित्यकार यशपाल :—

साहित्यकार का जीवन एक ऐसे साधक का जीवन होता है जो समाज को सतत् कुछ न कुछ देता रहता है। उसे प्राप्ति की लेने की चाह नहीं करता। यशपाल जी का जीवन एक ऐसे ही साहित्यकार, एक ऐसे ही साधक का जीवन था, वे जो भी लिखते थे, विचार पूर्वक लिखते थे। दृष्टि सत् साहित्य पर रहती, प्रेरणा मूलतः गाँधी जी से मिली जिसे वे अपने अन्तर में अक्षय निधि के रूप में संजोये रहते। शैली सरल और हृदयग्राहीहोती, भाषा में कहीं भी कृतिमता नहीं आने पाती। अनुवादक तथा सम्पादक के रूप में भी आपने यश अर्जित किया।

श्री जैन का साहित्यिक व्यक्तित्व वेदना और कष्ट की अग्नि में तयकर निखरा है। आपने सहस और निर्भीकता की नींव पर साहित्यिक भवन की आधार शिला रखी थी। सम्भवतः इसी कारण आपके समकालीन श्री हरिशंकर आदेश जी ने अपनी काव्य पक्तियों में आपके व्यक्तित्व को इस प्रकार से अभिव्यक्त किया है –

---

1. मेरी जीवनधारा (अत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 144

"निर्भय विनय शील जनसेवक,

गाँधी भक्त साहसी वीर।

अति विनोद प्रिय विश्व पर्यटक,

लेखक सरल विचारक धीर।।"[1]

यशपाल के साहित्यिक व्यक्तित्व की विशेषताएं :-

प्रत्येक साहित्यकार के व्यक्तित्व की कुछ निजी विशेषताएं होती हैं। श्री जैन के व्यक्तित्व में भी कुछ ऐसी विशेषताएं हैं, जो वर्णनीय हैं, यथा उनके साहित्य सृजन का उद्देश्य उनकी लेखनी प्रक्रिया तथा उनके विचारों के प्रेरणा स्त्रोत आदि-आदि।

क) यशपाल के साहित्य सृजन का उद्देश्य :-

किसी भी साहित्यकार के विषय में यह प्रश्न करने पर कि, वह क्यों लिखता है। साधारणतया: दो-तीन बातें उभरकर सामने आती हैं- जीवन निर्वाह के लिए आत्म सन्तुष्टि के लिए समाज तक आपने व्यक्तिगत अनुभवों और विचारों को प्रेषित करने के लिए।

यशपाल जी आपने शैक्षिक जीवन से ही साहित्य सृजन करने लगे थे। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त आपने मामाजी (श्री जैनेन्द्र कुमार) के सानिध्य में लेखन कार्य आरम्भ किया। श्री जैनेन्द्र कुमार हिन्दी जगत में उच्च स्थान पर प्रतिस्थापित है कि उन्होंने हिन्दी जगत को नई शैली एवं विद्या से सम्पन्न किया है। जीवकोपार्जन व्यक्ति की प्रमुख समस्या सदैव से रही है। यशपाल जी भी इसे स्वीकारते हैं। आपका कथन है, कि "अक्समात् एक समस्या मेरे सामने आई। मामाजी लिखते तो थे, पर उन दिनों लेखों और कहानियों के लिए बहुत कम पैसा मिलता था, चीजें सस्ती जरूर थीं, खर्चा बँधा था और आमदनी अनिश्चित थी, अक्सर ऐसा होता था कि घर में पैसा नहीं होता था, और कहीं से पैसा आने की सम्भावना भी नहीं होती थी, तब क्या हो ? मैंने सोचा कि मुझे ऐसा

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ - 270

काम करना चाहिए, जिससे पैसा मिले।"[1] इस कथन से स्पष्ट होता है कि लेखक लिखने के व्यवसाय को कमाई के प्रलोभन से नहीं अपनाता, वह केवल समाज की मौजूदा आर्थिक व्यवस्था में निर्वाह के लिए कमाना चाहता है। लेखक चाहता है, कि जब वह समाज की कला को समृद्ध करने के लिए समाज कल्याण की प्रवृत्ति से श्रम करता है, तो उसके परिणाम उसे निर्वाह भी मिले।

लेखक जीवन निर्वाह की समस्या को एक बड़ी समस्या मानता है परन्तु अन्तिम नहीं जिसके हल हो जाने पर वह अपनी साहित्यिक प्रतिभा का अवलोकित द्वारा बन्द नहीं करता बल्कि नवीन उत्साह के साथ साहित्य सृजन में जुट जाता है। उदरपूर्ति की समस्या हल हो जाने के बाद व्यक्ति को अपने व्यवसाय से आत्मा सन्तोष का अनुभव होता है। उसे एक प्रकार की प्रसन्नता होती है। क्योंकि वह जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं के पूर्ण हो जाने पर एकाग्रचित्त होकर, एक ओर ही लग जाता है, उसे पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त होती है। उसका मन उसमें रम जाता है।

इस सन्दर्भ में यशपाल जी का मानना है कि, "निश्चय मानिए कि अपनी दिशा न छोडने और चुपचाप चले–चलने का मुझे बेहद सन्तोष है। रवीन्द्र नाथ ठाकुर की "एकला चलो, एकला चलो रे" रचना मुझे बेहद पसन्द है। जो दुनियाँ के साथ नहीं चलते, उन्हें अकेला ही चलना पड़ता है। वस्तुतः उनकी सफलता अकेले चलने में है।"[2]

साहित्य सृजन के एद्देश्य को स्पष्ट करते हुए यशपाल जी का कथन है, कि "साहित्य की मुख्यतः यही प्रयोजन है कि वह ऐसे उदात्त विचार प्रदान करे जो पाठकों के जीवन को ऊर्ध्वगामी बना सकें।"[3] आपने कभी भी किसी प्रकार के वाह्य दबाव के कारण साहित्य रचना की नहीं है। आपके अनुसार, "चिरंजीवी साहित्य वही होता है, जो अनंतर से उपजता है, और जिसके सृजन में लेखक ही अपनी प्रेरणा होती है। बाहरी डन्डे के जोर पर जो साहित्य लिखा जाता है, वह बड़ा निष्प्रभाव होता है। अधिक दिन टिकता नहीं," [4] आप किसी वाह्य दबाव में साहित्य सृजन के पक्षधर नहीं हैं।

1. मेरी जीवनधारा (अत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 50
2. मेरी जीवनधारा (अत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 176
3. मेरी जीवनधारा (अत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 188
4. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 386

श्री यशपाल जैन, ''जिओ और जीने दो'' में विश्वास करते हुए समाज में निरन्तर होने वाले नित–नवीन परिवर्तनों से जो कुछ अनुभूतियाँ और विचार ग्रहण करते रहे, उन्हें अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को अर्पण करते रहे। जितने भी कड़वे–मीठे अनुभव आपने इस जीवन से प्राप्त किये एवं जो कुछ भी उचित–अनुचित एस समाज में देखा उसे कलम की शक्ति के द्वारा समाज को प्रदान किया, आपके साहित्य सृजन का प्रमुख उद्देश्य यही रहा कि नैतिक मूल्यों का ह्रास न होने पावे अर्थात् सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा बराबर बनी रहे। श्री यशपाल जैन ने अपने सृजनात्मक कार्य से सन्तोष अनुभव किया और नित्य प्रति अपने विचारों और अनुभवों का समाज में लोकार्पण करते रहे।

ख) यशपाल जैन की लेखन प्रक्रिया :–

प्रत्येक साहित्यकार की कुछ निजी विशेषताएं होती हैं। जो उसे साधारण व्यक्ति की श्रेणी से प्रथक कर देती हैं। यशपाल जी का व्यक्तित्व असाधारण होते हुये भी आपको लेखन कार्य के लिए विशेष परिस्थिति अथवा वातावरण की आवश्यकता नहीं होती, वे घर के नियमित वातावरण में प्रकृति की सुरम्य स्थली में, ''सस्ता साहित्य मण्डल'' जैसी संस्था के कार्यकाल में सर्वत्र साहित्य–सृजन करते रहे।

इन सबके अतिरिक्त लेखन कार्य करते समय भी यदि कोई आगन्तुक का आगमन हो जाये तो भी वे सहर्ष स्वागत कर पुनः लेखन कार्य का सकते हैं। आगन्तुक का आगमन उनकी लेखन प्रक्रिया में बाधक नहीं बनता है। यह बात प्रसिद्ध लेखिका एवं अनुवादक वासवदत्ता जी के संस्मरण से स्पष्ट हो जाती है, ''सहमते–सहमते उनसे बात करने के लिए विचारों को मन में संजोते हुए मैंने उनके कमरे में प्रवेश किया, सामने ही यशपाल जी बैठे हुए थे, बड़े स्नेह से उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा, सफेद धोती–कुर्ता, बड़ी–बड़ी आँखें, सोचने की मुद्रा और बीच–बीच में कुछ लिखने के

क्रम को जारी रखते हुए उन्होंने पूँछ, "आप अनुवाद करना चाहती हैं।" उनके उस वाक्य में इतनी आत्मीयता थी कि मैं अपनी सारी बातें कह–सुनाने के लिए विवश हो गई।"[1]

एक समय था, आज से लगभग 65 वर्ष पूर्व जबकि श्री जैन संघर्ष के दौरान गुजर रहे थे। उस समय भी आपके लिखने कर समय निश्चित था। वे दिन ने "सस्ता साहित्य मण्डल में अनुवाद, सम्पादन प्रूफ आदि देखने का कार्य किया करते थे। तथा शाम को मण्डल के कार्यालय से सीधे विद्यापीठ पहुँच कर रात्रि दस बजे तक वहाँ लेखन कार्य अनवरत् किया करते थे, इस पीठ का उद्देश्य हिन्दी प्रचार एवं प्रसार को बढ़ावा देना था। आपने सदैव अपना लेखन कार्य स्वयं किया है, बल्कि उस समय भी जब आपका प्रारब्ध था के दौरान श्री जैनेन्द्र कुमार (मामा जी) के लेखन कार्य में भी सहयोग कर दिया करते थे।

श्री जैन की विशेषता है कि वे भावावेश या भावोद्रेक के लिए विशेष परिस्थिति की खोज में नहीं रहते हैं। विचारों का आधारभूत संगठन उनके पास हर समय विराजमान रहता है। डॉ. युद्धवीर सिंह जी का कथन है कि –

"साहित्य के क्षेत्र के अतिरिक्त वह पक्के देशभक्त और उन थोड़े से व्यक्तियों में से हैं जिन्हें कभी तक पूज्य गाँधी जी और उनकी विचार धारा पर श्रद्धा और विश्वास है, वह हवा के साथ बहने वाले नहीं हैं, बल्कि तूफान का मुकाबला करने वालों में हैं,"[2] आपकी लेखन प्रक्रिया में गाँधीवादी विचारधारा का स्पष्ट परिणाम देखने को मिलता है।

साधारणतया जब दो व्यक्ति एक दूसरे से वार्तालाप करते हैं, तो दोनों का ध्यान परस्पर एक दूसरे पर केन्द्रित होता है, यशपाल जी के विचार में साहित्यकार के लिए ऐसा कोई बन्धन नहीं है। वह नवागंतुक से अथवा चिर–परिचित व्यक्ति से वार्तालाप के बीच भी कल्पना की ऊँची उढ़ानें भरने में समर्थ हो सकता है, वार्तालाप के विषय में विघ्न भी नहीं नड़ता और उन्हें कहानी अथवा अन्य

1. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (व्यक्तिगत संस्मरण वासवदत्ता), पृष्ठ – 164
2. निष्काम साधक, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 72

रचना सामग्री को तैयार करने में भी कोई कठिनाई प्रतीत नहीं होती है, यही विशेषतायें हैं। जो साहित्यकार को साधारण व्यक्ति से प्रथक करती हैं,। कई बार देखने में ऐसा प्रतीत होता है कि कोई उनसे बात कर रहा है, और वे सोचने की मुद्रा में हैं, बात भी उापकी सुन ली और सोचना भी जारी रहता है, सम्भवतः आपको ऐसी परिस्थिति में भी लेखक प्रक्रिया हेतु कोई न कोई प्रेरणा अवश्य प्राप्त हो जाती है, जो साहित्य सृजन का माध्यम बन जाती है।

ग) यशपाल जी की रचना के प्रेरणा स्त्रोत :–

साहित्य रचना करने के लिए साहित्यकार को किसी न किसी रूप में प्रेरणा प्राप्त होती है और वही उसकी साहित्यिक रचना का आधार बन जाती है। प्रेरणा के अभाव में साहित्य रचना करना ही नहीं असम्भव है, हाँ समय के साथ –साथ उसकी प्रेरणा का स्वरूप परिवर्तित होता रहता है, क्योंकि कालों एवं परिस्थितियों में साहित्यकार की सूक्ष्म दृष्टि नित नवीन परिवर्तनों पर टिकी रहती है, और वह उसी के अनुसार अपने साहित्य का निर्माण करता है।

श्री यशपाल जैन उच्च आदर्शवादी साहित्यकार हैं, उन्होंने विचार सागर को बूँद–बूँद कर अनेक निर्झरियों से भरा है और मौलिकता उत्पन्न की है, उनके प्रेरणा स्त्रोतों का मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है, जो निम्नलिखित है।

श्री यशपाल जैन के प्रेरणा स्त्रोत

साहित्यकार	राजनीतिज्ञ	दार्शनिक (साधु–सन्त)
शरत चन्द्र	महात्मा गाँधी	महात्मा गाँधी
देवकी नन्दन खत्री	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	विनोवा भावे
जैनेन्द्र	म्यूरिल लस्टिर	काका कालेलकर
बनारसी दास चतुर्वेदी	पुरुषोत्तदास टन्डन	स्वामी मुक्तानंद
रवीन्द्रनाथ ठाकुर	जय प्रकाश नारायण	मुनि विद्यानन्द
जगदीश चन्द्र माथुर	इन्दिरा गाँधी	आचार्य रजनीश

अमरनाथ झा	मोरारजी देसाई	हरिभाऊ उपाध्याय
गोर्की		प्रो. जे कृष्णमूर्ति
टालस्टाय		युवाचार्य महाप्रज्ञ
स्टीफन जे.		
रोमियो रोना		
प्रेम चन्द्र		
महादेवी		

उक्त साहित्यकार, राजनीतिज्ञ, साधु–सन्त यशपाल जी की प्रेरणा हैं, देवकी नन्दन खत्री की साहित्य तो उन्होने अपने विद्यार्थी काल में ही पढ़ा था। जैनेन्द्र साहित्य भी पढ़ा किन्तु उन्होंने कहा कि, "उनके साहित्य में धीरे–धीरे दार्शनिक का भार बढ़ता जा रहा था, वह उन्हें अधिक रुचिकर नहीं लगा,"[1] स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर उन्होंने लेख आदि लिखकर अपनी श्रद्धा प्रकट की है, गाँधी जी का प्रभाव तो उनके समस्त जीवन एवं साहित्य पर स्पष्ट रूप से झलकता है।

यशपाल जी ने जहाँ महापुरुषों के जीवन से और विचारों से प्रेरणा गृहण किया है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिज्ञ, सांस्कृति धर्म आदि के क्षेत्र भी आपके प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। हिमालय आपकी स्त्रोत का अच्छा स्त्रोत रहा है। इस सम्बन्ध में आपने स्वयं स्वीकार किया है कि "एक बात मैं अपने आपको अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूँ, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मुझे अनेक महापुरुष मिले, उनका स्मरण करता हूँ, तो बड़ी धन्यता अनुभव होती है, राजनीति साहित्य, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, कला आदि का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है। जिसमें एक से बढ़कर एक विभूतियाँ न मिली हो, उनका रास्ता बड़े कसाले का था, पर उन्होंने उस पर चलने की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में मुझे प्रेरणा दी, असंख्य व्यक्तियों का प्रेम पार्थय बना और मैं मजबूती से उस रास्ते पर चलता गया,"[2] इन सबके अतिरिक्त आपकी प्रेरणा का स्त्रोत अपने विचार भी थे, किसी उपयुक्त और विश्वसनीय विचार के उदय होने पर आप शीघ्र ही कहानी का "प्लाट" निर्मित कर लेते हैं। आप किसी घटना के लिए

1. श्री यशपाल जैन से भेंटवार्ता का एक अंश – दिल्ली
2. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 177

अनुकूल परिस्थितियों की और पात्रों के चयन में भी मर्मस्पर्शी उपन्यास "चट्टान नहीं पिघलती" में दृष्टिगत किया जा सकता है।

प्रारम्भ में श्री जैन की रचनायें अन्तर्मन की अनुभूतियों को अत्यन्त रोचक ढ़ंग से अभिव्यक्त करने की अदम्य उत्कंठा को दर्शाता है, जो कहानियों के रूप में उभरा, किन्तु समयान्तर में सम्मान एवं यश प्राप्त लेने के उ़परान्त आपकी अर्न्तदृष्टि उदयनीय साहस के साथ किसी समस्या के समाधान की ओर खिंच जाती है, जिससे उनकी लेखनी को एक नवीन दिशा एवं नवीन प्रेरणा प्रदान की और अब उनका मत है कि, "आज मनुष्य का इन्सान नींद में है, उसे जगाने की आवश्यकता है, हम किसी भी क्षेत्र में काम करते हैं, हमें अब आगे इसी दिशा में प्रयत्न करना है, एक बार इन्सान जाग जायेगा तो आज की बहुत सी व्याधियाँ अपने आप समाप्त हो जायेगी, सत्तात्मक राजनीति, पदलोलुपता, स्वार्थ परायणता, अर्थलिप्सा और स्वार्थ की व्यापी दूषित मनोवृत्ति, मानवीय चेतना के उदय होते ही स्वस्थ दिशा में मुड़ जायेगी,"[1] यशपाल जी ने समाज को नैतिक मूल्यों में हो रहे परिवर्तन के प्रभाव का बोध कराया, वे इन मूल्यों के पतन को रोकने का भी हर सम्भव प्रयास अपनी लेखनी के माध्यम से आजीवन करते रहे।

इस प्रकार श्री जैन को वर्तमान में बात को रोचक ढ़ंग से कहने में आत्मसन्तुष्टि प्राप्त नहीं होती है, बल्कि नित्यप्रति विकास की ओर अग्रसर इस जीवनधारा के किसी भी मार्मिक स्थल अथवा विषम समस्या को लेकर विचार उत्पन्न हो सकता है, और वहीं उनकी प्रेरणा मुख्य स्त्रोत बन सकता है, यर्थाथ जीवन से पृथक होकर विचारों की कल्पना कर सकता उनके लिए असम्भव था।

---

1. मेरी जीवनधारा (आत्मकथा) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 177

द्वितीय अध्याय

यशपाल जी का निबन्ध साहित्य :–

साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा निबन्ध विचार प्रकाशन का अधिक सुगम साधन है, इसमें लेखक को विचाराभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता और सुविधा होती है, वह चिन्तन–मनन, तर्क–वितर्क, व्याख्या विश्लेषण, वर्णनविवरण के द्वारा विचार–प्रतिपादन करता है, यद्यपि उसे यहाँ किसी प्लाट को गढ़ने या भूमिका बाँधने की आवश्यकता नहीं होती, फिर भी वह विचारों को ठोस और तर्क सम्मत रूप देने के लिए उपन्यासकार की भाँति पात्रों की सृष्टि भी कर सकता है। इससे न केवल उसका दृष्टि कोंण अधिक स्पष्ट, रोचक और प्रभावशाली बन सकता है, बल्कि गम्भीर विषयों में शुष्कता और नीरसता की सम्भावना भी नहीं रहती।

बाबू गुलाबराय के अनुसार ....

"निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"[1]

किसी भी साहित्यकार की प्रतिभा का मूल्यांकन "निबन्ध" की कसौटी पर ही सम्भव माना जाता है। इसका कारण यह है, कि निबन्ध जहाँ एक ओर "व्यक्ति" की मानसिकता चेतना और भावात्मक अनुभूति का लिखित रूप है, वहीं दूसरी ओर "जन विकास का यथार्थ पत्रक भी, निबन्ध में गद्य के सम्पूर्ण बल, तीव्रतम प्रवाह अमित प्रवाह, शरीर सकोंच और विस्तार की परख होती है, निबन्ध गद्य को अधिक से अधिक प्राणवान बनाती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ....

"यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबन्ध गद्य की कसौटी है।"[2] हिन्दी निबन्ध

---

1. काव्य के रूप – गुलाबराय, पृष्ठ – 221
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ – 482

के विषय में जयनाथ "नलिन" का मत है, "हिन्दी निबन्ध किसी भी साहित्य के गद्य विकास का मानदण्ड है।"[1]

यूरोप के निबन्धकारों ने निबन्ध को अनेकों प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है, यदि "मोन्टेन" निबन्ध में आत्मभिव्यक्ति पर बल देता है तो "बेकन" निबन्ध को बिखराव युक्त चिन्तन कहकर सम्बोधित करता है।

अंग्रेजी विद्वान "हडसन" के अनुसार ....

निबन्ध कुछ इने–गिने पृष्ठों के लघु विस्तार में होना चाहिए जिसमें सार गर्भित ठोस विचारों का निर्देशन हो।"[2]

निबन्ध की परिभाषा के विषय में अनेक मत–मतान्तर हैं। इसकी पूर्ण तथा सर्वसम्मत परिभाषा गढ़ना एक दुष्कर कार्य है, पूर्वोक्त सभी परिभाषाओं में प्रायः एक धारणा शब्दान्तर में अभिव्यक्त हुई है, अतः पिष्ट–प्रेषण में न जाकर डा. जयनाथ "नलिन" की परिभाषा जो वस्तुतः साफ सथुरी तथा सम्बन्धित विशेषताओं को समाहित किये हुये है, का उद्धता करते हुये विराम लेना उपयुंक्त होगा।

किसी विषय पर स्वाधीन चिन्तन और निश्च्छल अनुभूतियों का सरस, सजीव और मर्यादित गद्यात्मक प्रकाशन ही निबन्ध है।"[3]

यशपालजी का निबन्ध साहित्य (सैद्धान्तिक एवं तात्विक विवेचन) :–

वस्तुतः श्री जैन कथाकार एवं यात्रावृतांत के रचनाकार हैं, यात्रावृत्त उनके लेखन का प्रधान अंग रहा, लेकिन उन्होंने समय–समय पर अपने विचारों, अनुभूतियों और दृष्टिकोंण को व्याख्या विश्लेषण, तर्क–वितर्क की ठोस निबन्धात्मक पद्धति के द्वारा भी पाठक तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

यशपाल जी ने अधिकतर तर्क–प्रधान विचारात्मक निबन्धों की रचना की है, उन्होंने अपने युग

---

1. हिन्दी निबन्धकार – डा. जयनाथ "नलिन" – पृष्ठ – 02
2. एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी आफ लिटरेचर, पृष्ठ – 331
3. हिन्दी निबन्धकार – डा. जयनाथ "नलिन" – पृष्ठ – 10

की विश्रृंखलित, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक समस्याओं पर चिन्तन और मनन किया है। परम्परागत रूढ़िबद्ध विचारों का उन्मूलन किया है, मानव संस्कृति और सभ्यता के विकास के अवरोधक तत्वों का विरोध किया है।

श्री जैन के निबन्धों में "अहिंसा के आयाम", "भारत की मिली–जुली संस्कृति", "राष्ट्रीय एकता का अधिष्ठान", "विज्ञानवाद और अध्यात्मवाद का समन्वय" तथा "तट के बन्धन" इत्यादि निबन्ध उल्लेखनीय हैं।

1. अहिंसा के आयाम :–

यशपाल जी का यह निबन्ध विवरणात्मक कोटि का निबन्ध है। इस निबन्ध में उन्होंने वैदिक काल से लेकर आज के वैज्ञानिक युग तब में व्याप्त अहिंसा की ओर संकेत किया है और अहिंसा के सोपान वैदिक काल के विश्वामित्र, परशुराम आदि के अहिंसा सम्बन्धी प्रयासों का उल्लेख करते हुए भगवान बुद्ध एवं महावीर के प्रयासों पर प्रकाश डाला है। इनके अतिरिक्त ईसा, वैष्णव बारकरी सम्प्रदाय, युग पुरुष गाँधी की अहिंसक विचार धारा से भी पाठकों को प्रस्तुत किया है तथा यथा स्थान उनके अहिंसा सम्बन्धी विचारों को भी प्रस्तुत किया है। कलिंग युद्ध के प्रसंग में (एक लाख व्यक्तियों के मारे जाने से) सम्राट अशोक की परिवर्तित अहिंसावादी विचारधारा की ओर भी संकेत किया है।

लेखक का दृष्टिकोंण निराशावादी न होकर आशावादी है, उन्होंने इस निबन्ध के अंत में लिखा है ....

"लेकिन हम यह न भूलें कि अहिंसा की जड़ें बहुत गहरी हैं। उन्हें उखाड़ फेंकना सम्भव नहीं है। उसका विकास निरन्तर होता गया है और उसकी प्रगति रुकेगी नहीं। हम दो विश्व युद्ध देख चुके हैं और आज भी शीतयुद्ध की विभीषिका देख रहे हैं, विजेता और पराजित दोनों ही अनुभव

कर रहे हैं कि यह अस्वाभाविक स्थिति अधिक समय तक चलने वाली नहीं है। यातायात के साधनों ने दुनियाँ को बहुत छोटा कर दिया है और छोटे–बड़े सभी राष्ट्र यह मानने को तैयार हैं कि उनका अस्तित्व युद्ध में नहीं प्रेम से ही सुरक्षित रह सकता है, पर उनमें अभी इतना साहस नहीं है कि वर्ष में 364 दिन संहारक अस्त्रों का निर्माण करें और 365 वें दिन उन सारे अस्त्रों को फेंक दें। अहिंसा अब नये मोड़ पर खड़ी है, और संकेत करके कहरही है, कि विज्ञान के साथ आध्यात्म को जोड़ो और वैज्ञानिक अविष्कारों को रचनात्मक दिशा में मोड़ो। जीवन का चरम लक्ष्य सुख और शान्ति है, उसकी उपलब्धि संघर्ष से नहीं सद्भाव से होगी। अहिंसा में निराशा को स्थान नहीं है। वह जानती है कि ऊषा के आगमन से पूर्व रात्रि के अन्तिम प्रहर का अंधकार गहनतम् होता है। आज विश्व में जो कुछ हो रहा है, वह इस बात का सूचक है कि अब शीघ्र ही नये युग का उदय होगा और संसार में यह विवेक जागृत होगा कि मानव तथा मानव नीति से अधिक श्रेष्ठ और कुछ नहीं है। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों वह दिन आयेगा जब राष्ट्र नया साहस बटोर पायेगें और वीर शासन के सर्वोदय तीर्थ तथा गाँधी के रामराज्य की कल्पना को चरितार्थ करेंगें।"[1] आलोच्य निबन्ध में लेखक ने संस्कृतनिष्ठ विषयानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। उर्दू के शब्दों का प्रयोग अव्यल्प है परन्तु उनका रूपेण अभाव नहीं है। दर्द, हाँथ, फरसा, मौत, हिचक, शयद, अमल इत्यादि शब्दों का प्रयोग यथास्थान हुआ है, मुहावरों का प्रायः अभाव है, एकमात्र मुहावरा "आँख मिचौली" प्रयुक्त हुआ है। लोकोक्तियों का प्रयोग भी हुआ है। जैसे "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" इस विषय में तत्सम् शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान हुआ है, जैसे श्रेष्ठता, स्वीकार, अनर्थकारी, उर्ध्वगामी आदि।

लेखक ने निबन्ध को सरसता प्रदान करने के लिए प्राकृत, अपभ्रंश के उद्धरणों को अपनी भाषा में स्पष्ट किया है। विषय को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने सारांश देने की शैली का प्रयोग किया है। जैसे ......

"जो अहिंसा किसी समय केवल तपश्चरण की वस्तु मानी जाती थी उसकी उपयोगिता जीवन

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (अहिंसा के आयाम– यशपाल जैन), पृष्ठ – 493–94

तथा समाज में व्याप्त हुई है। उसके लिए जहाँ कोई सामूहिक प्रयास नहीं होता था वहाँ अब बहुत से लोग मिलजुलकर काम करने इन प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम दृष्टिगोचर होने लगा जिन मनुष्यों और जातियों ने हिंसा का त्याग कर दिया, वे सभ्य कहलाने लगीं उन्हें समाज में अधिक सम्मान मिलने लगा।"[1]

लेखक ने अपनी विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिये सांस्कृतनिष्ठ का आवरण त्याग कर संवादों का प्रयोग किया है, ...

"यदि कोई चूहा कहे कि वह बिल्ली पर आक्रमण नहीं करेगा उसने उसे क्षमा कर दिया है। तो वह अहिंसक नहीं माना जा सकता। वह दिल्ली में बिल्ली को कोसता है पर उसमें दम नहीं कि उसका कुछ बिगाड़ सके, इसी से कहा है – "क्षमा वीरस्य भूषणम्" यही बात अहिंसा के विषय में कही जा सकती है। कायर या निर्वीय व्यक्ति अहिंसक नहीं हो सकता।"[2]

इस निबन्ध के वाक्य पाठकों की आकांक्षा पूर्ति करने में सफल हैं। उदाहरणों का उतार–चढ़ाव इस निबन्ध की उल्लेखनीय विशेषता है, आंतरिक भाषा का पूर्णतः अभाव है, यह निबन्ध प्रायः शब्दों की पुनरावृत्ति दोष से मुक्त है।

2. भारत की मिलीजुली संस्कृति :–

विवेच्य निबन्ध में श्री यशपाल जैन ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है, यह निबन्ध विचारात्मक निबन्धों की कोटि में स्थापित किया जा सकता है, उनका मत है कि –

"भारत की भूमि बड़ी उर्वर है। जो बोओगे, वही पाओगे, भारतीय संस्कृति कहती है। "अपने को और समाज को सुखी बनाना चाहते हो, प्रेम के बीज बोओ प्रेम की एक फसल मिलेगी कि जीवन धन्य हो जायेगा।"[3] निबन्ध में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का बहुमूल्य है। उर्दू या अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रायः अभाव है। विषय को स्पष्ट करने के लिए भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, ईसा,

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (अहिंसा के आयाम– यशपाल जैन), पृष्ठ – 492
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (अहिंसा के आयाम– यशपाल जैन), पृष्ठ – 492
3. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (भारत की मिली जुली संस्कृति– यशपाल जैन), पृष्ठ – 494

मुहम्मद, गुरुनानक तथा महात्मा गाँधी आदि उक्तियों का प्रयोग किया गया है, जैसे ..

"थोड़ा सा खमीर सारे आटे को खमीर बना देता है।" (ईसा)

लेखक ने गौतम बुद्ध, तुलसीदास आदि के जीवन की घटनाओं को लेकर भी विषय का स्पष्ट करने का प्रयास किया है ....

"अपने जीवन में अद्धैत की साधना के दृष्टान्त पढ़कर हमारा मन रोमान्ति हो उठता है। एक शेरनी भूखी और बीमार है। भगवान बुद्ध उसके मुँह में अपना पाँव दे देते हैं। वृक्ष काटने वाले के सामने तुलसी गर्दन कर देते हैं। कयाल जंगल में घास काटने जाता है अचानक उसे अनुभूति होती है कि "मत काट" उसके हाथ से हंसिया गिर पड़ता है। ऋषियों के आश्रम में हिरन–सिंह के आयल खुजलाता है और साँप नेवले का आलिंगन करता है। यह थी अद्धैत की महिमा, प्रेम का प्रभाव, संस्कृति की साधना।"[1]

उपमा अलंकार का प्रयोग इस निबन्ध में सरसता प्रदान करता है। भारतीय सरस्कृति की उपमा एक उपवन, वाद्यवृन्द, माला तथा फूलदान से की है। भारतीय संस्कृति की उच्चता के लिए गौरीशंकर की ऊँची चोटी से तुलना की है। श्री जैन ने यथास्थान प्रचलित लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है, जैसे "वसुधैव–कुटुम्बकम्"।

यशपाल जी का विश्वास है कि भारतीय संस्कृति का अर्थ है– सहानुभूति, विशालता ज्ञान एवं विज्ञान का समन्वय।

3. राष्ट्रीय एकता का अधिष्ठान :–

आलोच्य लेख राष्ट्रीय एकता प्रतिपादित करने के उद्देश्य से लिखा गया है। लेखक की मान्यता है कि –

"जब तक मानव खडित व्यक्तित्व समग्रता को प्राप्त नहीं करेगा तब तक राष्ट्रीय एकता का

---

3. निष्काम साधक -- सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (भारत की मिली जुली संस्कृति-- यशपाल जैन), पृष्ठ -- 496

स्वप्न चरितार्थ नहीं होगा।''[1]

लेखक की स्पष्ट उक्ति है कि ''राजनैतिक प्रयत्नों से राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी यह सन्देहास्पद है, लेकिन मनुष्य के टूटे हुये व्यक्तित्व को जोड़ने, उसमें उद्वैत की भावना विकसित करने और समष्टि के हित में व्यष्टि के हित की अवधारणा से राष्ट्र संगठित होगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं बिना नेक बने राष्ट्र कभी एक हो ही नहीं सकता।''[2]

निबन्ध में यशपाल जी ने अर्थ को बड़ा विकराल रूप धारण किये दर्शाया है। उनका कहना है कि आज अर्थशास्त्री भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि देश के स्वाधीन होने के बाद अमीर और अधिक अमीर हुआ गरीब और अधिक गरीब हुआ। आजकल धन की समानान्तर अर्थ–व्यवस्था खुले आम अपना काम कर रही है। बल्कि उजली अर्थ–व्यवस्था से अधिक शक्तिशाली है। इस अर्थनीति के उद्दाम प्रवाह को यशपाल जी ने राष्ट्रीय एकता में बाधक दर्शाया है।

यह निबन्ध विचारात्मक निबन्धों की कोटि का है। लेखक ने विषयानुकूल संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है। तत्सम् शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है, जैसे – सनातन, अक्षुण्ण, प्रतिष्ठापित, प्रयाण, वर्चस्व आदि। उर्दू शब्दों में गरीबी, इन्सान, खुले आम आदि उल्लेखनीय हैं। सम्पूर्ण निबन्ध में अंग्रेजी के ट्रस्टीशिप शब्द का प्रयोग केवल एक स्थान पर हुआ है। लोकोक्ति, मुहावरों का नितान्त अभाव है। ऋषि उक्तियों के प्रयोग ने निबन्ध में गम्भीरता उत्पन्न कर दी है। किन्तु उनके अर्थ को स्पष्ट कर दिया गया है। जैसे ''सर्वे सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः'' (सभी सुखी हो, सभी स्वस्थ हो)।

4. विज्ञानवाद और अध्यात्मकवाद का समन्वय :–

विवेच्य निबन्ध समस्या प्रधान निबन्ध है जिसे विचारात्मक निबन्ध की कोटि में रखा जा सकता है। इस निबन्ध में श्री यशपाल जैन ने विज्ञानवाद और आध्यात्मवाद अर्थात पश्चिम और पूरब

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (राष्ट्रीय एकता का अधिष्ठान– यशपाल जैन), पृष्ठ – 496
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (भारत की मिली जुली संस्कृति– यशपाल जैन), पृष्ठ – 498

की मान्यताओं पर गम्भीरता से विचार करते हुये दोनों के समन्वय पर बल दिया है, उनके अनुसार ....

"विज्ञान के पोषकों ने विज्ञान को वाद बना दिया है, अध्यात्म के समर्थकों ने अध्यात्म का वाद बना दिया है। वाद प्रायः विवाद को जन्म देते हैं, वाद की तंग सीमायें टूट जाती हैं तो विवाद का मार्ग स्वतः ही बन्द हो जाता है। मानव जीवन के लिये वर्तमान परिस्थितियों में विज्ञान जितना अनिवार्य है, उतना ही अनिवार्य अध्यात्म है। रोटी शरीर को पोषण देती है, लेकिन मनुष्य रोटी खाने के लिए नहीं जीता, जीवन का उद्देश्य उससे कहीं अधिक महान है। भगवान महावीर के शब्दों में जीवन का उच्चतम ध्येय है, "जिओ और जीने दो" इसी को गाँधी ने "सर्वोदय" की संज्ञा दी थी। विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय इसी ध्येय की पूर्ति में सहायक होगा।"[1]

निबन्ध की भाषा और अधिक स्पष्ट करने के लिए लेखक ने उदाहरणों, लोकोक्तियों का प्रयोग किया है, तथा अन्तर्गत भावों को स्पष्टता प्रदान की है। आधुनिक युग के विज्ञानवाद ओर अध्यात्मवाद के तथ्य को उन्होंने बड़ी योग्यता से प्रतिपादित किया है। उदाहरणों के अन्तर्गत उन्होंने सेना के अधिकारी की पत्नी की मानसिक स्थिति का उल्लेख किया है जो युद्ध से भयभीत है और चीखने चिल्लाने लगती है। इस निबन्ध में एक अन्यत्र एक धर्मकथा का आश्रम लिया गया है, जो विषय को स्पष्ट करने के लिए किया है।

लोकोक्तियों के अन्तर्गत विष पियो और अमृत दो, खाओ पियो और मौज करो, जीओ और जीने दो उल्लेखनीय हैं।

विषय को स्पष्टता प्रदान करने के लिए उन्होंने विचारों के सागर को चन्द पक्तियों के गागर में भरने का प्रयास किया ...

"स्पष्ट है कि बिना विज्ञान के अब हमारा काम नहीं चल सकता, यह भी स्पष्ट है कि विज्ञान

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (विज्ञानवाद और अध्यात्म का समन्वय– यशपाल जैन), पृष्ठ – 502

प्रगति के इस चक्र को हम उल्टा नहीं घुमा सकते, हमारे वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा जागृतिक जीवन के साथ विज्ञान इतना घुलमिल गया है कि अब उसे अलग नहीं किया जा सकता है।"[1]

लेखक के द्वारा यथास्थान संस्कृत की उक्तियों का प्रयोग भी किया गया है। उदाहरणार्थ – "सर्वे सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः" इन पक्तियों के अतिरिक्त संस्कृतनिष्ठ शब्दावली को भी यथास्थान प्रयोग किया गया है। जो विषयानुकूल है। उदाहरण के लिए – सृष्टि, परिप्रेक्ष्यों, आक्रान्त, सच्चिदानन्द, अक्षय स्पृहणीय, अमोद्य अस्त्र आदि।

निबन्ध के अन्तर्गत आये उर्दू शब्दों का प्रयोग निबन्ध में प्रवाह उत्पन्न करता है। यथा बेबस, बेहाल, बाबा आदम आदि।

5. तट के बन्धन :–

आलोच्य निबन्ध में श्री यशपाल जैन ने नदी और किनारों के रूपक के माध्यम से आत्मानुशासन के महत्व को प्रतिपादित किया है। इसके लिए उन्होंने महर्षि व्यास, ऋग्वेद, महात्मा गाँधी, स्वामी मुक्तानन्द, रवीन्द्र नाथ ठाकुर के माध्यम से अनुशासन का प्रयोजन स्पष्ट किया है, दूसरों की स्वतंत्रता में अपनी स्वतंत्रता जितना मान देना अनुशासन का उद्देश्य है, लेखक के मतानुसार,

"मानव और मानव समाज के संचालन के लिए अनुशासन अनिवार्य है, बिना अनुशासन के जीवनयात्रा निरापद रूप से सम्पन्न नहीं हो सकती।"[2]

लेखक महसूस करता है कि अनुशासन के बिना संयमित नहीं रहा जा सकता है। वह मानता है कि अनुशासन का अर्थ आत्म संयम, अपने पर शासन यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं रह जाती जो कि अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रख सकता किसी भी क्षेत्र में अनुशासन का पालन नहीं कर सकता है। निबन्ध में श्री जैन ने एक स्थान पर इंगति किया है ..

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (विज्ञानवाद और अध्यात्म का समन्वय– यशपाल जैन), पृष्ठ – 499
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (तट के बन्धन– यशपाल जैन), पृष्ठ – 504

''कुछ लोग कहते हैं कि अनुशासन का बहुत ही दुष्परिणाम होता है। वह व्यक्ति के विकास को कुंठित कर देता है। आदमी का मन मुक्त होना चाहिये, लेकिन जो लोग इस बात को मानते हैं वे भूल जाते हैं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह समाज का अभिन्न अंग है यदि एक का मन मुक्त रहेगा तो दूसरे का मन भी क्यों मुक्त नहीं रहेगा ? और दो स्वतंत्र मन वाले व्यक्ति प्रायः आपस में टकराते हुए पाये जाते हैं।''[1]

निबन्ध के द्वारा श्री जैन ने दर्शाया है कि ....

''जब नदी की धारा स्वेच्छा से तटों के बन्धनों को स्वीकार कर लेती है और प्रसन्न भाव से बहती है तो लोक कल्याण होता है, लेकिन जब मनमानी करने लगती है तो विनाशलीला होती है। यहाँ यह स्वतः स्वष्ट हो जाता है कि मानव हो या प्रकृति दोनों के जीवन में अनुशासन की अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

निबन्ध की भाषा संस्कृतनिष्ठ और गम्भीरता लिए हुए है। संस्कृत के शब्दों में ... मनीषा, पुरातन, अनुशासन, पर्व, ऋगुवेद, हृदयंगम, प्रश्रय, प्रशस्त, प्रयोजन आदि अनेकानेक है। इनके अतिरिक्त लेखक ने संस्कृत उक्तियों का भी सफल प्रयोग किया है... ''प्रति यः शासमिन्वति'', इनके अर्थ को स्पष्ट कर दिया गया है।

लेखक द्वारा प्रयुक्त उर्दू शब्दों के कारण निबन्ध में सरसता उत्पन्न हो गयी। उर्दू शब्दों में मनमानी, नतीजा, इशारे, दबाव, गहरी छाप, कानून आदि महत्वपूर्ण हैं। अल्पमाला में लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है, यथा – पेड़ बबूल का लगाते हैं और आशा आम पाने की करते हैं। पाप का घड़ा भरने पर टूट जाता है, यदा कदा .... "तड़के" जैसे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी इस निबन्ध में हुआ है।

निष्कर्ष :– निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यशपाल जैन के अधिकांश निबन्ध

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (तट के बन्धन– यशपाल जैन), पृष्ठ – 503

विचारात्मक निबन्धों की कोटि के निबन्ध हैं जिनमें उन्होंने भारतीय संस्कृति के महत्व को प्रतिपादित किया है। मुख्यतः उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ गम्भीरयुक्त है। अल्पमाला में उर्दू तथा अन्य भाषाओं के शब्दों के मुहावरे लोकोक्तियों के द्वारा लेखक ने गम्भीर विषय को लालित्य प्रदान करने का प्रयास किया है। अंग्रेजी शब्दों का प्राग्यः अभाव दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण शैली निबन्धों में आकर्षण उत्पन्न कर देती है। लेखक ने उदाहरणों का चुनाव पौराणिक एवं धार्मिक ग्रन्थों के अतिरिक्त महापुरुषों के जीवन चरित्रों से भी किया है। लेखक के विचारों पर महावीर और महात्मा गाँधी का प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। इनका निबन्ध साहित्य यह भी स्पष्ट करता है कि लेखक भारतीय संस्कृति का अनन्य भक्त है।

यशपाल जी के इतने निबन्धों की चर्चा विवेचना करने के पश्चात् भी यह कहना कठिन है कि श्री यशपाल जैन एक कुशल निबन्धकार है। यात्रावृत्त लेखन आपके सर्जनात्मक साहित्य का मुख्य एवं प्रधान अंग है और निबन्ध रचना उससे अभिन्न एक गौण अंग। यहाँ यह निर्भान्त रूप से कहा जा सकता है, कि हिन्दी साहित्य श्री श्री वृद्धि के लिए निबन्धकार के रूप में श्री यशपाल जैन का योगदान सहायक सिद्ध हुआ है।

तृतीय अध्याय

श्री यशपाल जी का कथा एवं उपन्यास साहित्य

1. कहानियाँ :–

हिन्दी गद्य के आर्विभाव के साथ–साथ उसमें अनेक साहित्य रूपों के उद्‌भव और विकास का सूत्रपात हुआ। हिन्दी कहानियाँ भी उन्हीं साहित्य–रूपों में एक है। यह विद्या जीवन के किसी एक संक्षिप्त प्रसंग की मार्मिक झलक दिखाने के ध्येय के साथ ही जन्मी और विकसित हुई, "एक क्षण में घनीभूत जीवन–दृश्य का अंकन" इनका उद्देश्य बन गया और जीवन के किसी मार्मिक क्षण से संवेदित होकर उसे कलात्मक एवं रोचक ढंग से रूपायित करना कहानीकार का कर्म बन गया।

मुन्शी प्रेमचन्द्र की दृष्टि में कहानी ....

"एक ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रर्दशित करना ही उद्दे

श्य रहता है, उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा–विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।"[1]

प्रसाद जी ने कहानी को एक ऐसी विद्या बताया है जिसका .....

"सौन्दर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्वारा इसकी सृष्टि करना ही लक्ष्य है।"[2]

यशपाल जी का कथा साहित्य :–

श्री यशपाल जैन ने कहानीकार के रूप में सन् 1938 से लेकर वर्तमान तक अनेकों लघु एवं दीर्घ आकार वाली कहानियों की रचना की। ये कहानियाँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ–साथ छः संग्रहों में संकलित हैं। प्रथम संकलन सन् 1938 में "नव–प्रसून" शीर्षक से

---

1. कथा प्रसून (भूमिका) – आगरा वि.वि. प्रकाशन संख्या – 85, पृष्ठ – 01
2. कथा प्रसून (भूमिका) – आगरा वि.वि., पृष्ठ – 01

प्रकाशित हुआ था। इसके उपरान्त सन् 1951 में "मैं मरूंगा नहीं" शीर्षक से द्वितीय संकलन प्रकाश में आया जिसमें – "मैं मंरूगा नहीं" "प्यार की नींव" और "महल की आजादी" आदि 23 कहानियाँ संकलित थीं।

लेखक ने अपने एक अन्य कहानी संग्रह "दायरे और इन्सान" में मानव जीवन की तल स्पर्शी कहानियों – "दायरे और इन्सान" "व्यतीत का स्वप्न तथा बिछड़े साथी" इत्यादि बीस कहानियों को सम्मिलित किया है। इस संग्रह का प्रकाशन सन् 1977 में आलेख प्रकाशन (शहादरा) दिल्ली द्वारा किया गया। इन कथा संग्रहों के बीच श्री जैन का एक बाल कथा संग्रह "जीवन–ज्योति की कथाएँ" नाम से प्रकाशित हुआ, जिसके अन्तर्गत "संत की सीख", "सहनशीलता का फल", "बीमारी का इलाज", "धर्म की बुनियाद" इत्यादि 27 कहानियों को समेटा गया है।

संस्मरणात्मक कहानियों के रूप में लेखक का "मुखौटे के पीछे" कथा संग्रह सन् 1982 में प्रकाशिम हुआ। यह संकलन अपने अन्दर की भी रचना की है। यक लघु कथायें मानव की सुप्त चेतना को जागृत करने के उद्देश्य से ही लिखी गयी हैं। कथायें आकार में लघु होने पर भी अपने विशिष्ट प्रभाव को दर्शाने में सक्षम हैं, एक भी कथा ऐसी नहीं जिसमें कोई न कोई शिक्षा निहित न हो। अधिकांश लघु कथायें पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई जिनमें कुछ इस प्रकार से हैं– "नैतिक कथायें (137 कथायें) "अमर कथायें (81 कथायें) "ज्ञान कथाएं (81 कथाएं) और आदर्श कथाएं (77 कथाएं)।

श्री यशपाल जैन द्वारा रचित लगभग सौ कहानियाँ ऐसी हैं जो अभी तक अप्रकाशित पडी हुयी हैं। जिनमें से "बालिका का हृदय", "प्रायाश्चित", "बलिदान के दिन", "वह आया", "सनसनी हवा", "दिवाली की माया", "दुर्घटना", "भाग्यचक्र", "अन्तर की आवाज", "कुदरत का अजूबा" आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचन्द्र और जैनेन्द्र के पश्चात् यशपाल जी ने कहानी परम्परा को आगे बढ़ाते हुये इस विद्या

को सुदृढ़ता प्रदान की है। आपकी रचना प्रक्रिया सौदद्रशीय है, उन्होंने एक निश्चित उद्देश्य को सम्मुख रखकर ही साहित्यिक सृष्टि की है। वैसे तो प्रत्येक प्रतिष्ठित साहित्यकार की रचना में उद्देश्य निहित होता है, परन्तु यशपाल जी की यह विशेषता है कि उनकी छोटी से छोटी कहानी त्याग, प्रेम अथवा रोमान्स से पूर्ण हो। उसमें भी एक विशेष उद्देश्य निहित होगा। उदाहरण के लिए – "प्रेमाश्रम", "व्यतीत का स्वप्न" और "कुदरत का अजूबा" आदि कहानियों को इस सन्दर्भ में दृष्टिगत किया जा सकता है।

श्री यशपाल जैन कहानीकार के रूप में समाज की वास्तविकताओं से अवगत होकर पाठक को उनके प्रति सचेत करना चाहते थे। उनकी मर्मभेदी दृष्टि समाज में होने वाले अत्याचारों विभीषिकाओं, कुरूपताओं, अन्धविश्वासों, धार्मिक आडम्बरों, अनैतिक आचरणों पर साहित्य के माध्यम से सख्त प्रहार करती है। यशपाल जी की दृष्टि में कहानी का रोचक, मनोरंजक एवं उद्देश्यपूर्ण होना भी जरूरी है, वे कहते हैं...

"छोटे–बड़े सबके मन में कहानियाँ पढ़ने की इच्छा होती है। कहानियाँ रोचक और मनोरंजक हों तो वे उनके पीछे खाना–पीना सब भूल जाते हैं। पुरातन काल से अब तक भाँति–भाँति की कहानियों की धारा इसी लोक रुचि के कारण लगातार बहती चली आ रही है।"[1]

अ) कथ्य :–

"लेखक जिस विषय का उत्कट संवेदन कहानी में उपस्थित करता है अथवा कहानी के मूल में जो भाव निवास करता है उसी को हम उस कहानी का बीजभाव स्वीकार करते हैं। मूलतः उन्हीं से कृतिकार प्रेरणा ग्रहण करता है और लिखता है। ये बीज–भाव अनेक प्रकार के और अनेक रूप के हो सकते हैं। इन्हीं की विभिन्न शिराओं को लेकर कहानी अपना रूप संगठित करती है और उसके कथानक का रूप बनकर साकार हो उठता है।"[2]

---

1. सिंहासन बत्तीसी – यशपाल जैन, पृष्ठ – 04
2. कहानी का रचना विधान – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृष्ठ – 37

इसी को अंग्रेजी विद्वान इ0 एम0 आलब्राइट ने इस प्रकार से कहा है –

" एक घटना के प्रभाव से उद्रभूत विचार से एक आविष्कृत या अनुभूत स्थिति से एक अवसर मनः स्थिति या तरंग से अथवा किसी चरित्र विषयक अवधारणा से सामन्यतः कथानक का प्रारम्भ होता है, कथानक के प्रारम्भिक बिन्दु को कहानी का कथ्य, मूलो विचार बीज या उद्देश्य कहा जा सकता है। यही बीज या मूल विचार संक्षेप में कहानी को गति प्रदान करता है। यही उसके अस्तिव का कारण है और वही उद्देश्य भी कहलाता है।

अंग्रेजी विद्वान हडसन के अनुसार –

"एक नाटकीय घटना या परिस्थित, एक प्रभावशाली दृश्य, चरित्र का कोई पक्ष, आशिंक अनुभूति जीवन का एक पक्ष, कोई नैतिक समस्या तथा इसी सूची में जोड़ने योग्य अन्य असंख्यक उद्देश्यों में से किसी एक उद्देश्य को एक पूर्णतया संतोषजनक कहानी का केन्द्र बिन्दु बनाया जा सकता है।

इस संदर्भ में कहा जा सकता है, कि श्री यशपाल जैन ने जिस समय कहानी लेखन आरम्भ किया उस समय हिन्दी साहित्य में भड़कीली कहानियों की भरभार हो रही थी मानवता की पुनः स्थापना का प्रश्न चिंतको के सामने था, ऐसे समय में श्री जैन ने अपने कहानियों के माध्यम से मानवतावाद की स्थापना का प्रयास किया, अनुभूति की सच्चाई तथा नैतिक उद्देश्य आपकी कहानियों का केन्द्र बिन्दु रहा, लेखक ने केवल "कला–कला के लिए" की दृष्टि से कहानियों का सृजन नहीं किया अपितु जीवन में घटित ह्रदयस्पर्शी घटनाओं को कहानी के धागें में पिरोया उदाहरण के लिए "मैं मरूँगा नहीं" कहानी में उन्होंने कृष्णकान्त और उसकी पत्नी शीला के मध्य कृष्णकान्त की बीमारी को लेकर तनावपूर्ण स्थिति को कथानक बनाया है। इसी प्रकार "मुक्ति का द्वार " कहानी में एक नवयुवक के मानसिक द्वन्द को कहानी के कथानक रूप में दर्शाया गया है।

श्री जैन की कहानियों के कथानक दैनिक जीवन की साधारण से साधारण घटनाओं और समस्त अचार व्यवहारों तथा आर्थिक नैतिक सामाजिक समस्याओं पर आधारित है। सामाजिक वैषम्य का उद्घाटन करने के लिए लेखक ने जिनको कहानी का रूप प्रदान किया है।

कथ्य के आधार पर यशपाल जी की कहानियों का वर्गीकरण :–

कथ्य के आधार पर यशपाल जी के कहानी साहित्य को निम्नलिखित तीन वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

(क) बोध कथायें

(ख) सामाजिक कहानियाँ

(ग) मनोवैज्ञानिक कहानियाँ

(क) बोध कथायें :– बोध कथाओं का महत्व पुरातन काल से चला आ रहा है। हमारे धर्म तथा नीति के ग्रन्थ इन कथाओं से भरे पड़े हैं, इनके ग्रन्थकार जब कभी किसी गूढ़ तत्व का निरूपण करते थे तो उसे सामान्य पाठकों के गले उतारने के लिए छोटी –2 कथाओं का सहारा लिया करते थे, चूंकि उन कथाओं में सनातन तत्वों का समावेश होता था अतः वे कभी पुरानी नहीं पड़ी, यद्यपि आज युग बदल गया है, लोगो की मान्यताओं में परिवर्तन आ गया है, फिर भी लोक कथाओं की लोकप्रियता में कोई अन्तर दृश्यमान नहीं होता है। हम कह सकते हैं, कि आज जब मनुष्य अपने ध्येय से प्रायः भटक जाता है, ये कथाएं और भी उपादेय हो जाती है, क्योंकि भटकते इन्सान को ये सही रास्ता दिखाती है और उस ओर चलने को प्रेरित करती है भविष्य में इन लोक कथाओं की लोकप्रियता और भी बढ़ने की सम्भावना है।

मानव–जीवन आज इतना व्यस्त हो गया है, कि मोटे–2 ग्रन्थ पढ़ने का समय बहुत थोड़े लोगो के पास रह गया है। बोध कथायें अधिक समय नहीं लेती है और जीवन के स्फुरित करने

के लिए बहुत कुछ दे देती है, श्री जैन के अनुसार –

"बोध–कथाओं में जीवन के ज्ञान और अनु का सार निहित होता है, उन्हे आचरण में ढाला जा सकता तो वे जीवन का काया कल्प का देती हैं।"[1]

श्री यशपाल जैन की बोध कथाओं को मुख्यतः दो वर्गो में विभक्त किया जा सकता है ....

1. नैतिक कथायें

2. लोक कथायें

नैतिक कथाओं के अंतर्गत लेखक चरित्र निर्माण सम्बन्धी कथाओं की रचना की है, चूँकि चरित्र निर्माण करने वाली कथायें कम ही लिखी गयी है, अतः श्री जैन ने इनकी रचना कर बोध साहित्य में अभिवृद्धि की है। लोक कथाओं की रचना लेखक ने केवल मनोरंजन के लिए नहीं की है। बल्कि ये कथायें मानव जीवन में शाश्वत् मूल्यों की स्थापना करती है। ये कथायें कुछ न कुछ सीखने एवं सोचने पर विवश कर देती हैं।

बोध–कथाओं का प्रतिपाद्य विषय :–

श्री यशपाल जैन की बोध कथाओं का मुख्य प्रतिपाद्य विषय–सुख–दुख श्रम का महत्व, अपलायनवाद, लालच, दूसरों की बुराई करना, सन्तोष, सहिण्णुता, अहिंसा, प्रेम, प्रगति, क्रोंध, प्रकृति, कर्तव्य परायणता, दया, भय, मन, दीर्ध जीवन, मोह निष्ठा, सच्चा, धन, त्याग, शान्ति, घमण्ड, आत्मरक्षा मानव सेवा, कर्म, चोरी, इच्छा शक्ति, दान, मानवता संस्कार समाज इत्यादि के अतिरिक्त धार्मिक एवं ऐतिहासिक महापुरूषों को भी श्री जैन ने अपनी बोध कथाओं का कथ्य बनाया है।

सुख–दुख :–

"आनंद का स्त्रोत" शीर्षक नैतिक भाषा में श्री जैन ने नगरवासियों और साधु के लधु कथानक

---

1. नैतिक कथायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 05

द्वारा स्पष्ट किया है, कि ....

"बात यह है कि तुम लोग मूर्ख हो जो सुख को बाहर खोजते हौ सुख बाहर नहीं अन्दर है।

"सही रास्ता" शीर्षक कथा में इस तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट किया गया है। साधुसेठ से कहता है.......................

अरे मूर्ख इतनी देर से क्या कर रह था तुझे ही तो रास्ता बता रहा था, देख हर आदमी के अन्दर आग होती है। उसमें प्यार की आहूति दे तो वह आनंद देती है ।

घृणा की आहूति हो तो वह जल उठती है। तू अपनी आग में रात–दिन काम कोध, लाभ मोह मद–मत्सर की लकड़ियाँ डाल रहा है, भले आदमी बीज अशान्ति के बोयेगा तो शान्ति के फल कैसे पायेगा ? अपने अन्दर को टलोल, सुख और दुख बाहर नहीं है, भीतर हैं।"[1]

संसार में अधिक सुखी कौन है ? संसार के इस प्रश्न का उत्तर ....

श्री जैन में भगवान बुद्ध और उनके शिष्य आनन्द के माध्यम से देने का प्रयास किया है। वे कहते है, कि इच्छाओं की समाप्ति ही सबसे बड़ा सुख है आनंद के प्रश्न के उत्तर में बुद्ध ने कहा कि दुबला फटे हाल जो आदमी है, वही सबसे अधिक सुखी है। क्योंकि उसने अपनी इच्छाओं का दमन कर दिया है।

"सच्चाई का बोध" कथा में एक राजा अपनी प्रजा के प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करने का भ्रम पाल लेते है किन्तु प्रजा की इच्छाओं का कोई अन्त नहीं आता था, राजा दुखी होकर बीमार पड़ जाता है, एक दिन मार्ग से गुजरते साधु से राजा अपने दुख का कारण पूँछता है, उत्तर में साधु कहता है ....

"राजन तुम्हारे दुःख का कारण तुम स्वयं हो तुम्हारें सोचने में एक बड़ी भूल है इच्छायें कमी

1. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 100

पूरी नहीं की जा सकती है, मन चंचल है, मन चचंल है उसे जितना दो उतना ही माँगता है इच्छाएं अमर बले की तरह है। वे फैलती ही जाती है सुख इच्छाओं को पूरा करने में नहीं है। उनके नियन्त्रण में नहीं है।"[1]

अहिंसा :–

"नदी की सीख कथा में एक नदी के किनारे दो बस्तियॉ थी, जिनके लोग नदी के पानी को लेकर लडने लगे, गौतम बुद्ध उन्हे समझाते हुए कहते हैं..........................

"याद रखो, हिंसा – हिंसा को बढ़ाती है, वैर वैर को बढ़ाता है, नदी से सीख लो वह किसी से लड़ती – झगड़ती नहीं, प्रेम – भाव से सदा पानी का दान करती रहती हैं।"[2]

स्पष्टतः इस कथा ने बौध जातक को कथ्य का आधार बनाया है, एक अन्य कथा में श्री जैन ने मुस्क्तिम संत राबिया और हसन बसरी के माध्यम से अहिंसा को स्थापित करने का प्रयास किया है। यही प्रयोग "बचन का प्रभाव" कथा में पुनः उद्घाटित हुआ है इसके अतिरिक्त अन्यत्र स्थान पर गाँधी जी की अंहिसावादी विचारधारा का उल्लेख श्री जैन ने इन शब्दों में किया है ....

"मैं हिंसा के मुख में अंहिसा को उसी तरह झोंक देना चाहता हूँ, आखिर कमी तो हिंसा की भूखा शान्त होगी अगर दुनिया को शान्ति से जीना है, तो मेरी, जानकारी में इसका दूसरा ओर कोई रास्ता नहीं है"।"[3]

"हिंसा का डर" शीर्षक कथा में लेखक के अंहिसावादी विचार कहानी के कथानक का कुछ इस प्रकार का रूप लेते है। .....

"गोस्त खाते हो और चाहते हो कि जानवर और परिन्दे तुम्हारे पास आवें, यह कैसे हो सकता है, कि जिन्हे तुम मारते हो वह तुमसे डरे नहीं और भागे नहीं ? जल्लाद से किसे डर नहीं लगता

1. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 16
2. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 21
3. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 79

है ?"[1]

इसी प्रकार "संत का सन्देश" कथा में सन्त विनोबा एक व्यक्ति को अहिसा के महत्व को समझाते हैं लेखक ने इस कथा में संत के द्वारा स्पष्ट किया है ....

जितने हथियार बना सको, बनाओ लेकिन 365वें दिन उन सभी हथियारों को समुद्र में फेंक दो।"[2]

श्री यशपाल जैन ने नैतिक कथाओं के अन्तर्गत "स्वतन्त्रता सग्राम" को भी कथ्य बनाया है, और इसके माध्यम से अहिंसा स्थापित करने का प्रेरणा दी है,

"देशभाक्ति के वे दिन" शीर्षक कथा में स्वतन्त्रा आन्दोलन में भाग लेने वाली बालिका पुलिस अधिकारी की गोली का शिकार हो जाती है। किन्तु झण्डे को नीचा नहीं होने देती है और न ही किसी प्रकार की हिंसा का सहारा लेती है, "तोड़ो नहीं जोड़ो" शीर्षक कथा में बुद्ध और अंगुलिमाल के प्रसंग पर आधारित है, जिसमें लेखक ने अहिंसा का प्रतिपादन किया है।

भय :–

प्रायः बड़े बच्चों के मन में भय जाग्रत कर देते है, जिसके कारण बच्चों का समुचित विकास नहीं हो पाता इस तथ्य को केन्द्र के रखकर "भूत कुछ नहीं" कथा का सृजन लेखक ने किया है, इस कहानी में बालक के मन में भूत का भय व्याप्त होता है, वह समझता है, कि नदी किनारे भूत रहता हैं। किन्तु लेखक, एक पात्र के द्वारा बालक के मन का भय निम्न शब्दों द्वारा दूर कर देती है ....

"बेटे नदी किनारे भूत–वूत कुछ भी नहीं था और न धागें में भगवान रहते है। ये तो हमारे मनाये हुए थे, आदमी को डरना नहीं चाहिए, जिसका दिल मजबूत होता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"[3]

1. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 43–44
2. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 95
3. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 38

क्रोध :–

श्री यशपाल जैन ने "गुस्से की शर्तिया दवा" शीर्षक कथा में क्रोध पर नियन्त्रण करने का सरल उपाय क्रोध से मन को हटाने से बताया है, एक अन्य कथा में विनोबा जी भी क्रोध पर नियन्त्रण करने का अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहते हैं ....

जब हमारे मन के प्रतिकूल कोई चीज आती हैं , तो हम एकदम उत्तेजित हो जाते है यदि पहले क्षण को हम टाल जायें तो गुस्से को सहज ही जीत सकते हैं, हर्ष और विषाद से हम तभी अमिभूत होते है, जबकि उनका क्षण हम परहावी हो जाता है उस क्षण को टालना शुरू में थोडा कठिन होता है, लेकिन अभ्यास से वह बहुत आसान हो जाता है।"[1]

"मन्त्री की दूरदर्शिता" शीर्षक कथा तीर्थकर महावीर के जीवन से सम्बन्धित है राजा ग्रेणिका को अपनी पत्नी चेलना पर शक हो जाता है और वह क्रोध से पागल हो कर अन्तःपुर को जला देने का आदेश दे देता है। किन्तु जब महावीर द्वारा पता चलता है, कि चेलना पवित्र है तब उसे बड़ा दुःख होता है, और उसका क्रोध शान्त हो जाता है, क्योंकि मन्त्री ने अभी तक अन्तःपुर में आग नहीं लगवाई थी ।

मोह :–

लेखक ने "रोग–कारण और निवारण" शीर्षक कथा में मोह के निवारण के मार्ग को कथ्य बनाया है, लेखक का कथन है कि ....

"मोह और मृत्यु परम मिल हैं, जब तक तुम्हारे पास मोह है मृत्यु आती ही रहेगी, मृत्यु से छुटकारा तभी मिलेगा, जब कि तुम मोह का पल्ला छोड़ोगे।"[2]

दुष्प्रवृत्ति :–

"नशे का तमाशा" कथा में शराब की दुष्प्रवृत्ति को दर्शाने का प्रयास लेखक ने किया है.....

---

1. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 95
2. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 42

महाशय, रात को आपने अच्छा तमाशा किया अपनी लालटेन छोड़ गये और हमारा पिंजड़ा उठा ले गये, लीजिये अपनी यह लालटेन और हमारा पिंजडा हमें दीजियें ।"[1]

प्रस्तुत कथा में श्री जैन ने शराब का सेवन करने वाले व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति को कथा का कथ्य बनाया हैं।

कर्तव्य परायणता :–

श्री य़शपाल जैन ने "मानवक्ताकर्तव्य" शीर्षक कथा में साधु तथा दो अन्य व्यक्तियों के माध्यम से कर्तव्य परायणता को स्पष्ट किया है साधु अपनी कुटी छोटी होने पर भी एक के बाद एक वर्षा में भीगकर आने वाले व्यक्तियों को स्थान दे देता है, इसके लिए उसे खड़े होकर रात्रि गुजरानी पड़ती है, परन्तु वह मानव कर्तव्य को सर्वोपरि मानता है उसका कथन है कि.....

"इसमें एहसान की क्या बात है, भैया । मुसीबत में एक दूसरे की मदद करना इंसान का फर्ज है, इस कुटिया में एक आदमी के सोने की जगह है, दो बैठ सकते है और तीन खड़े हो सकते है, आओ अन्दर आओ, हम तीनों जने खड़े – खड़े मौज से रात गुजारेंगे।"[2]

"कोई बेगाना नहीं" कहानी में हम लोगों क आपस में यकीन अलग–अलग होते हुए भी इन्सानियत का कर्तव्य निभाने की प्रेरणा देते हैं।

मन :–

यशपाल जी ने "मन का पाप" नामक कथा में पाप बाहर नहीं मन में घटता है तथ्य को संत एवं युवक –युवती के माध्यम से दर्शाया है, कथा में संत, एकान्त स्थान पर युवक–युवती को बैठा देख अनुमान करता है, निश्चय ही ये लोग मदिरपान कर रहें होगे परन्तु कुछ क्षणों बाद उसे अपने निर्णय पर पश्चाताप होता है, वह जिस युवक को पापी समझ रहा था वही युवक नदी में कूद कर लोगों की जीवन रक्षा करता है, युवक संत के निकट आकर कहता है ....

---

1. हमारी बोध कथायें (संग्रह) – पृष्ठ – 62
2. दिव्य जीवन की झाँकियाँ (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 17

"महाराजा भगवान की कृपा से पाँच आदमियों की तो जान बच गयी है अब केवल एक रह गया है, स्वामी जी इंसान के लिए इंसान से बढ़कर कुछ नहीं है।"[1]

"शान्ति की स्त्रोत" कहानी के द्वारा शान्ति का उद्‌गम् वैभव में नहीं, बल्कि मन की समता में दर्शाया गया है इसी प्रकार "निर्धन का पैसा" कहानी में लेखक ने दिल की विशालता को महत्व प्रदान करते हुए, उसे ही घनाढ्य माना है, इन कथाओं में मन के महत्व को ही कथानक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

श्रम का महत्व :–

लेखक ने श्रम की शोभा "शीर्षक कहानी में श्रम का महत्व प्रतिपादित्य किया है। गुर्जर नरेश सम्राट कुमार पटल अपने गुरूदेव आर्चाय हेमचन्द्र को जब एक साधारण चादर ओढ़े देखते है तो यह उन्हे रूचिकर नहीं लगता है, तब आचार्य हेमचन्द्र इस पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं ....

"राजन, तुम्हे शर्म आ सकती है, लेकिन इस चादर के पीछे जाने कितने गरीबों का परिश्रम और सच्चाई छिपी है वे दिन भर मेहनत करके सूत कातते है और उस कमाई से अपनी गुजर–बसर करते है ओढ़कर मुझे शर्म नहीं आती –उल्टे गर्व का अनुभव होता है।"[2]

राजा, आचार्य के भुख से इन शब्दों को सुन कर श्रम के महत्व को स्वीकार लेता है, और क्षमा माँगता है

"सच्ची मेहनत की करामात कथा में राजा जनता की सेवा में अपना पसीना बहता है। अतः वह राज्य सुखी एवं समृद्ध रहता है, एक अन्य कथा "श्रमदान का फल" में कुल गुरू की बात राजा की समक्ष में आ जाने पर वह गुरूकुल की आज्ञा का पालन करने को तत्पर हो जाता है।

कर्म की प्रेरणा :–

"कर्म पूजा है" शीर्षक कथा का पात्र सेना नाम का नाई है, वह लोगो की हजामत बनाता है,

---

1. आदर्श कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 55
2. ज्ञान कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 103

उसके सिर का मैल दूर करता है, अचानक उसके मन में विचार आता है, कि क्यों न अपनी बुद्धि का भी मैल दूर किया जाये, वह अपने इस धन्धे से प्रेरणा ग्रहण करता है, इसी से कहा गया है, कि कर्म ही पूजा है, कथा में इसे लेखक ने विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया, अन्य कथाओं जैसे, "भागो मत कथा कथा में लेखक ने बुराईयों से कतराने के बजाय हौसले से उनका मुकाबला करने की शिक्षा दी है, "कोशिश कानतीजा कहानी में राजा कीडे की दीवार पर चूढ़ते देखकर प्रभावित होता है क्योंकि कीड़े क बार–2 गिरने पर भी वह प्रत्यन नहीं छोड़ता है, ये दोनो कथायें कर्म के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित करती है, लेखक का दृष्टि कोंण कर्म के प्रति व्यापक है, वह कर्म की प्रेरणा जन साधारण में पहुँचाना चाहता है।

लोभ : –

"सच्ची सम्पदा" कथा में लेखक ने सेठ की धनलिप्सा पर प्रहार किया है, सास तथा बहू के छोटे से दृष्टान्त द्वारा कथा में शिक्षा दी गयी है, बहू कहती है.....................

"हमें नहीं चाहिए हमारे पास आज खाने के लिए है। अगले दिन के लिए संग्रह नहीं करते भगवान हमें रोज देता है।"[1]

इसी प्रकार "लालच का नतीजा" कहानी में एक ब्राहमण के चार लड़के है। वे भी धन के लोभ में अत्यंत कण्ट पाते है। "लालच का दण्ड" कथा के अंतर्गत बनिया अशर्फियों के लालच में शेर द्वारा घायल हो जाता है।

निन्दा :–

"सन्त की सीख" कहानी मे लेखक ने डाकू ओर गुरूनानक को कथानक के रूप में प्रस्तुत किया है, डाकू गुरूनानक से प्रभावित हो जाता है, उसका कथन है...................

"बुरा करना जितना मुश्किल है, उससे कही ज्यादा मुश्किल है, दूसरों के सामने अपनी बुराई

---

1. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 21–22

को कहना" ।"[1]

"इसी प्रकार "उद्बोधन" कथा में भगवान बुद्ध ने दुर्व्यवहार की बुराई से बचने की शिक्षा दी है, एक कथा में बिनोवा जी को लेखक ने माध्यम बनाकर महिलाओं को धीरज एवं प्रेम पूर्ण व्यवहार की शिक्षा देते हुए कहा है।

"तुम अपने आदमी को बुराई से तभी रोक सकोगी जब स्वयं अपनी बुराई को जीत लोगी, उसी की पहले कोशिश करो ।"[2]

सहिष्णुता :–

"सहनशीलता का फल कहानी में एक फकीर एक नौजवान को सहनशीलता की शिक्षा देता है, कथा में दर्शाया गया है, कि फकीर पर तम्बूरा द्वारा चोट किये जाने पर भी वह नौजवान को टूटे तम्बूरे की कीमत अपने शार्मिद के द्वारा दे आने को कहता है।

क्षमा :–

श्री यशपाल जैन "अनुपम क्षमा" शीर्षक कथा के द्वारा महाभारत के प्रसंग को दर्शाया है, द्रोपदी के पाँचों पुत्रों को अश्वत्थामा मार देता है, परन्तु स्वयं पकड़ा जाता है, द्रोपदी के सम्मुख लाये जाने पर वह क्षमा कर दिया जाता है, द्रोपदी कहती है.....................

"जिस तरह से अपने पाँचों पुत्रों की मृत्यु से शोक संसार में डूबी हुई हूँ, उसी प्रकार इनके मरने से गुरूपत्नी आहत हो जायेगी, मेरे बेटे तो गये सो गये, वे अब लौटकर आने वाले नहीं है। मेरा मन नहीं चाहता है कि अपनी तरह दूसरी माँ को संतप्त करूँ, मैं इन्हे क्षमा करती हूँ आप लोग भी ऐसी करें।"[3]

आहार :–

श्री यशपाल जैन ने "तन्दुरूस्ती का रहस्य" कथा के माध्यम से एक साधु के द्वारा हकीम को

---

1. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 103
2. अमर कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 132
3. आदर्श कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 13

अल्पाहार का महत्व समझाया है, साधू कहता है ....

"हकीम जी, आप मेरे चेलो को जानते नहीं उनकी आदत है कि जब तक उन्हें जोर की भूख नहीं लगती वे खाना नहीं खाते और जब खाते है तब थोड़ी भूख रहते ही खाना छोड़ देते है।"[1]

"इसी प्रकार अन्यत्र लेखक ने साये और पौण्टिक भोजन की हितकर बताया है।

वार्णित तथ्यों के अतिरिक्त लेखक के श्रंखलाबद्ध कथाओं में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को कहांनियों का कथानक बनाया है, जिनके अंतर्गत राजा विक्रमादित्य के वैभवशाली राज्य और उनकी उदारता का वर्णन प्रस्तुत किया गया है "बेताल–पच्चीसी" और "सिंहासन–बत्तीसी" पुस्तकें विशेषरूप से उल्लेखनीय है, पुस्तको के नाम से ही स्पष्ट हो जाता है, कि इनमें क्रमशः पच्चीस एवं बत्तीस कहानियाँ होगीं ।

कहानियों में जो बातें विस्तार से कही जाती है, वे सार रूप में इन कथाओं में मिल जाती है, तीसरे इन कथाओं को ताना बाना जीवन को उन्नत करने के लिए बुना गया है, अतः ये कथायें सहज ही उस मार्ग की प्रशस्त कर देती है, जिस पर मानवता के नाते हर इंसान को चलना चाहिए।

(ख) सामाजिक कहानियाँ :–

श्री यशपाल विभिन्न परिस्थितियों, समस्याओं, हास्य व्यंग्य, प्रेम प्रसंग, भ्रण्टाचार, नैतिक आडम्बर आदि को सामाजिक कहानियों का कथ्य बनाया है, "मैं मरूँगा नहीं" कर्फ्यू पास" "प्रेमाश्रम" व्यतीत का स्वप्न "ज्वार भाटा" गुनाह का बोझ" "महल की आजादी" "बिछड़े साथी" "तट का बँधन" "भाग्य चक्र" "कर्ज का भूगतान" "प्रायश्चित" "दायरे और इंसान" और "अल्हड़ लड़की" इत्यादि कहानियों में उपर्युक्त विविध दृष्टिकोंणों की स्पष्ट व्यंजना है।

अध्ययन की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए यशपाल जी की सामाजिक कहानियों को वर्गीकृत करने हेतु दो आधार निश्चित किये जा सकते है पाठको की वय के आधार तथा शैली –आधार।

1. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 27

नवयुवकों से सम्बन्धित कहानियाँ :–

श्री यशपाल जैन ने नवयुवकों के जीवन की अनेक समस्याओं को लेकर अनेक कहानियों की रचना की है "मैं मरूँगी नहीं" कहानी में उन्होने कृष्णकान्त और उसकी पत्नी शीला के मध्य कृष्णकान्त की बीमारी को लेकर तनावपूर्ण स्थिति को कहानी का कथानक बनाया है, पत्नी पति की बीमारी को लेकर बहुत चिंतित है, किन्तु पति का दृष्टिकोंण आशावादी है, एक कविता के पंक्ति "मैं मरूँगा नहीं" उसके जीवन की प्रेरणा बन जाती है, और उसका यह विश्वास दृढ़ हो जाता है, कि वह मरेगा नहीं कहानी के अन्त में उसका विश्वास ही उसे जीवन दान देता है। इस स्थिति का वर्णन यशपाल जी ने इन शब्दों में किया है..........................

"हमारे जीवन में कभी–2 ऐसे क्षण आते है। जब हममें भाग्य को नई दिशा में मोड़ देने की क्षमता होती है। आवश्यकता इस बात की है, कि हम उन क्षणों को पकड़ ले और दृढ़ संकल्प होकर उसके निर्देश का पालन करें।"[1]

"कर्फ्यू पास कहानी में श्री जैन ने उन परिवारों का चित्रण किया है, जिनका आधार घरेलू नौकर होते है, नितिन एवं उसकी पत्नी एक नौकर के कारण परेशानी में फँस जाते है, नितिन का कर्फ्यू पास उनका नौकर प्रयोग कर लेता है। और पत्नी यह समझती है, कि उनके नौकर को थाने में बन्द कर लिया है। उसे निर्रथक थाने के चक्कर लगाने पड़ते हैं।

1. मैं मरूँगा नहीं (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 27

यशपाल जी ने हास्य व्यंग्य के माध्यम से इस कहानी का ताना बाना बुना है। वे स्वयं लिखते है, कि रामू की बेबकूफी से इन्दु का इतना कष्ट हुआ, इससे नितिन को थोडी झुंझलाहट तो हुई मगर उसके नितिन चन्द्रशर्मा बनने और एक अच्छा खासा मजेदार झमेला खड़ा करने देने की बात पर उसे हँसी आये बिना न रही, बोला "बाकई कर्फ्यु पास" है जला देने लायक।"

"जरा सी देर में नौकर को मालिक बना देता है" इन्दु ने कृत्रिम रोष दिखाते हुए कहा " तुम बड़े बरे हो" और वह कोशिश करने पर भी होठो पर मुस्कराहट नहीं रोक सकी ।"[1]

यशपाल जी ने नवयुवक और युवतियों के प्रेम–प्रसगों को भी अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है। "प्रेमाश्रम" और "ज्वार – भाटा" इसी कोटि की कहानियाँ हैं, "प्रेमाश्रम" कहानी की नायिका सुषमा कालेज की एक छात्रा है, जो अरूण नाम के नवयुवक से प्रेम करती है, कि किन्तु कायस्थ और ब्राहमण की दीवार उनके मध्य आकर खड़ी हो जाती है, और उनके प्रेम–सम्बन्धों में जीवन नाम का नवयुवक खलनायक के रूप में जा जाता है। अंततः अरूण की मृत्यु हो जाती है और उसकी स्मृति में सुषमा एक आश्रम की स्थापना करती है जिसकी सम्बन्ध में यशपाल जी ने लिखा है ....

"प्रेम के उपासकों के लिए उसका द्वार चौबीसों घन्टे खुला रहता है और सुषमा की वाहें उनके स्वागत के लिए हर घड़ी फैली रहती हैं।"[2]

इस कहानी से स्पष्ट होता है, कि श्री जैन परम्परागत आदर्शो का मोह नहीं त्याग सके और अरूण की मृत्यु और सुषमा द्वारा आश्रम की स्थापना दिखाकर उन्होंने जहाँ एक ओर जातीय बंधनों को तोड़ने में शिथिलता दिखाई है, वही दूसरी ओर आश्रम के माध्यम से इस परम्परा को तोड़ने की प्रेरणा भी दी है।

"ज्वार –भाटा" कहानी में मुगल प्रेमी विलियम और मेरी विदेशी पात्र है, जिनका प्रेम–प्रसंग

1. कर्फ्यू पास – यशपाल जैन, पृष्ठ – 97
2. प्रेमाश्रम – यशपाल जैन, पृष्ठ – 97

लंदन में विकसित होता है सुमन जो वास्तव में स्वयं लेखक है।इस मुगल के क्रिया–कलापों पर दृष्टि रखता है और उनके प्रेम प्रंसग को कहानी का रूप देता है, लेखक ने इस कहानी में विदेशो में प्रचालित प्रेम पर इन शब्दों में खेद प्रकट किया है ....

"जिन्दगी छोटी–2 चीजों से बनती है, जो व्यक्ति छोटी–2 चीजों से सावधान नहीं रहता, वह बड़ी चीजों से कभी सावधान नहीं रह सकता।"[1]

कहानी में विलियम का ह्रदय परिवर्तन भी कराया गया है, जिसकी झलक निम्नलिखित रूप में दर्शायी गई है :–.

"अब उस नौजवान और उस युवती का तनाव दूर हो गया था, ज्वार उतर गया था, अपने भावावेश से मेरी ने जो दीवार खड़ी कर दी थी वह अभी पूरी तरह धराशायी नहीं हो पायी थी और अपने ही हाँथ से उस दीवार को तोड़ने में उसे बड़ा संकोच हो रहा था, उसके संकोच को दूर किया विलियम ने एकदम आगे बढ़कर मेरी का हाँथ पकड़ लिया और उसकी में दाना भरकर बोला इधर नहीं, चलों उधर डालेगें, वहाँ कबूतर बहुत हैं।

"बाहर मौसम साफ था भीतर भी बादल छँटकर आसमान निर्मल हो गया था, मेरी ने मुस्कराकर एक हाथ खाली करके विलियम की बाँह पकड़ ली और उसके साथ चल दी ।"[2]

आलोच्य कहानी में लेखक में लेखक ने इग्लैण्ड में प्रचालित एक लोक–विश्वास का भी सफल प्रयोग किया है, ट्रेवलगर स्कवायर में यदि किसी के कन्धों पर उड़ते हुए कबूतर आकर बैठ जाये तो उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है, कहानी के अन्त विलियम और मेरी के कन्धों पर उड़ते हुए कबूतर आकर बैठ जाते है जो इस बात का प्रतीक है कि दोनों प्रेमियो के मध्य उत्पन्न तनाव समाप्त हो गया है, दोनों की मनोकामनायें पूर्ण हो गयी हैं।

---

1. ज्वार–भाटा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 128
2. ज्वार–भाटा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 128–129

वृद्ध पात्रों से सम्बन्धित कहानियाँ :–

यशपाल जी ने वृद्ध पात्रों को लेकर भी अनेक कहानियों के रचना की है। लेखक ने इन पात्रों के मानसिक तनाव एवं उद्धेग को कहानियों में बड़ी कुशलता के साथ उतारा है, कही कहीं पर वृद्ध पात्रों के द्वारा संयमित जीवन जीने की शिक्षा भी कहानियों के माध्यम से दी है, लेखक की वृद्ध पात्रों से सम्बन्धित तीन कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं "अतीत की पूँजी" "कायाकल्प" और मुखोटे के पीछे"।

"अतीत के पूँजी" कहानी का पात्र एक प्रौढ़ जो अपने परिवार के साथ विदेश में रहता था, वह शरीर से वृद्ध होते हुए भी वृद्ध नहीं लगता उसके अच्छे स्वास्थ्य का कारण पर प्रकाश डालते हुए लेखक कहता है, कि अच्छे स्वास्थ्य का कारण उसका शारीरिक श्रम है, वह अपनी क्यारियों में पसीना बहाकर गुलाब खिलाता है, दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता है।

"कायाकल्प" कहानी भी एक प्रौढ़ पात्र प्रधान कहानी है, इस कहानी का पात्र देवी दयाल शरीर से ही नहीं अपितु मन से भी वृद्ध होता जा रहा है। इससे पूर्व एक दिन देवी दयाल जब बस से सफर कर रहा था, उसे एक नौजवान ने बुजुर्ग के नाते आदर देते हुए सीट देने का आग्रह किया । किन्तु बुजुर्ग शब्द देवी दयाल को अखर गया, उसकी पत्नी मोहनी ने समझाया परन्तु वह अपनी वृद्धावस्था से डरता था तनाव ग्रस्थ रहने लगा, फिर धीरे–2 पत्नी के समझाने पर उसका नजरियाँ बदलता चला गया देवीदयाल के रस का स्त्रोत्र जो सूख गया था, वह कुछ ही दिनों में हरा भरा हो गया था, अब वह शीशे में मुँह देखकर परेशान होने के बजाय मुस्करा उठता धेवते के साथ छः माह का बच्चा बनकर खेलने लगता मोहनी आनंदित हो उठी, दोनो पति पत्नी जीने का रहस्य जाने उनका काया कल्प हो गया, इस कहानी में श्री जैन ने वृद्धों के लिए यह प्रेरणा दी है...

"आदमी शरीर के नहीं मनोबल के सहारे चलता है, मनोबल टूटा कि आदमी भी टूट जाता है।"[1]

---

1. कायाकल्प – यशपाल जैन, पृष्ठ – 57

लेखक ने मठो में व्याप्त भ्रष्टाचार को भी कहानी का कथ्य बनाया है "मुखौटे के पीछे" कहानी का मुख्य पात्र एक पौढ़ ढोगी योगी है जो विदेशी महिला को अपने जाल में फाँस लेता है।

हेलन का जन्म अमेरिका में हुआ, अध्यात्मक के रूचि उसे भारत खीच लाई यहाँ तीर्थ आदि का भ्रमण करते हुए वह तथाकथित अभिजात्य योगी से मिली, जिसके कपटी सम्मोहन के जाल में फँस गई, जब उकसा भ्रम जाल टूटा तब तक वह गर्मवती हो गयी अतः अन्त में निराश होकर पति के साथ वापस अपने देख चली गयी जाने से पूर्व वह अपने पति पीटर से ढ़ोगी योगी के भृष्ट चरित्र का तथा अपने पाप का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख करती है पीटर उस पाखण्डी की हत्या करने पर उतारू हो जाता है। किन्तु हेलन उससे गिड़ गिड़ाकर कहती है........................

"पीटर मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, गुस्सा न करो वह पाखण्डी अपनी मौत मर जायेगा तुम तो अब आगे की सोचो में पाप के बोझ से मरी जा रही हूँ ।"[1]

मिश्रित कहानियाँ :–

इस प्रकार कहानियों के अंतर्गत श्री जैन ने मातुकता एवं जल्दबाजी में लिए गये निर्णयों और छद्रम आकर्षण को कथानक के रूप में प्रस्तुत किया प्रायः देखा गया है कि भावावेश में लिऐ गये निणर्यों के परिणाम प्रतिकूल ही निकलते हैं लेखक ने अपनी विभिन्न कहानियों में इन परिस्थितियों का सफल चित्रण किया है "तट का बंधन" "बिगड़ी आकृति" "आकृति" "दायरे और इंसान" "प्रायश्चित" "अंतर की आवाज" इत्यादि कहानियाँ इसी पृष्ठ भूमि पर आधारित हैं।

गिरधारी अपने परिवार में अपनी पत्नी के साथ रहता था उन दोनो का जीवन सामान्य गति से चल रहा था, अचानक एक रोज उनके जीवन में तूफान आ जाता हैं सबेरे उठते ही गिरधारी अपनी पत्नी को आवाज देता है, और अपने पास बिठाकर कहता है...

"सुनो जी मैं आज से हम दोनों के बीच पति –पत्नी के सम्बन्ध को समाप्त कर देना चाहता

1. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 168

हूँ आगे से हम दोनों भाई – बहन के रूप में रहेगें ।"[1]

"कुछ समय उपरान्त गिरधारी को इस भावावेश में लिये गये निर्णय में पछतावा होता है, और अब वह पुनः पति–पत्नी के रूप में रहने के लिये पत्नी मीरा के सम्मुख प्रस्ताव रखता है, परन्तु पत्नी मीरा के सम्मुख प्रस्ताव रखता है परन्तु पत्नी उसे गुरू रूप में स्वीकार कर चुकी है अतः वह कहती हैं...

"यह पाप आप कर सकते है, मैं नहीं कर सकती कान खोलकर सुन लीलिए, मैं सोच समझकर आपको गुरू के रूप में स्वीकार कर चुकी हूँ, अब किसी भी हालत में पुराना सम्बन्ध नहीं जोड़ सकती ।"[2]

कहानी के द्वारा लेखक ने स्पष्ट किया है, कि भावावेश में आकार लिया गया निर्णय कभी–2 जीवन में उथल पुथल मचा देता हैं।

लेखक की एक अन्य कहानी "बिगड़ी आकृति" की मुख्य पात्र अमला एक धनाढ्य युवती है, जो मूर्ति कार ब्रह्मपुत्र को अपने रूप जाल में फँसाना चाहती है। मूर्तिकार विधुर है जिसने अपनी पत्नी के साथ सुखमय जीवन व्यतीत किया था एक दिन अमला ब्रहमपुत्र की कलाशाला में मॉडल बनाने आती है...

"कलाकार जो निर्विकार भाव से अपने कार्य में संलग्न था अचानक चौंक पड़ा उसने अमला के जिस्म रूप को मूर्तिमान करना चाहता था । अमला उससे दूर पड़ी जा रही थी, उसकी आँखों और कपोलो की हल्की सी रेखाये आलोकित प्रेम को नहीं नारी की दुर्बलता को व्यक्त कर रही ब्रह्मपुत्र के हाथ रूक गये ।"[3]

कहानी के अन्त में ब्रहमपुत्र अमला से कहता है,...............................

"देवी जी आप आइये, अमला की मूर्ति बनाना मेरे बश में नहीं उसके जिस रूप की झाँकी मुझे

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (तट का बंधन) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 451
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (तट का बंधन) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 454
3. बिगड़ी आकृति – यशपाल जैन, पृष्ठ – 73

पानी थी, मैं पा चुका, अब आप जाना चाहे तो जा सकती है।"[1]

कलाकार को तनिक भी दुःख नहीं हुआ अपितु वह सन्तुष्ट था कि परीक्षाफल में उसके पैर नहीं डगम गाये, श्री जैन ने नारी के प्रति अपना दृष्टिकोंण इन शब्दों में प्रस्तुत किया है....

"दुर्बल नारी कमी भी मान की अधिकारिणी बनी है, जो यहाँ बनेगी 2 नारी महिमा त्याग में हैं।"[2]

इसी "गीत और मीत" शीर्षक कहानी में लेखक एक आत्म हत्या करने वाली युवती को कथा के अन्य पात्र रार्बट द्वारा जीवन दान दिलाया है, रार्बट उसे बचाकर कहता है...

"मूर्ख, भगवान की दी हुई सम्पदा को यो बर्बाद करना पाप है अपनी आँखों से पर्दा हटा, अब तक तू बाहरी दुनियाँ को देखती रही है अब भीतर की दुनियाँ को देख ।"[3]

उसके उत्तर में युवती कहती है....

"अब मुझे लगता है कि जिन्दगी मरने के लिए नहीं जीने के लिए नहीं, अकारण रो–रोकर उसे सुखा देते है और जब तक जीते है उसका बोझ ढ़ोते रहते है, सच मानिये, अगर हम जीवन का असली मर्म समझ लें तो हमें चारों तरफ सुख दिखाई देगा ।"[4]

संस्मरणात्मक कहानियाँ :–

श्री यशपाल जैन की संस्मरणात्मक कहानियों को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है ....

1. व्यक्ति पर आधिरित संस्मरणात्मक कहानियाँ ।
2. यात्रा पर आधारित कहानियाँ ।

यात्रा पर आधारित कहानियाँ को भी दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

---

1. बिगड़ी आकृति – यशपाल जैन, पृष्ठ – 75
2. बिगड़ी आकृति – यशपाल जैन, पृष्ठ – 75
3. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 77
4. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 78

अ. विदेशी यात्रा पर आधारित कहानियाँ ।

ब. स्वदेशी यात्रा पर आधारित कहानियाँ ।

व्यक्तिपरक संस्मरणात्मक कहानियों में लेखक ने स्वयं को पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है और अन्य पात्रों को कहानी में गौण रूप प्रदान किया है।

"दो कौड़ियों का सिक्का" कहानी में लेखक स्वयं कहानी का पात्र है, जिसमें उसने अपने गाँधी जी के दिनों की घटना का कहानी का आधार बनाया है इसी प्रकार "वतन की मोहब्बत" कहानी का पात्र भी स्वयं लेखक है, जिसमें उन्होनें देश–प्रेम की भावना अभिव्यक्त की हैं।

"करीम" शीर्षक कहानी में यशपाल जी पात्र रूप में उपस्थित होकर हिन्दू – मुसलमान के मध्य मानवता को स्थापित करने का प्रयास करतें है।

"बाबा की धरोहर" कहानी के अंतर्गत लेखक ने अपने बाबा की धरोहर एक बाग के बिक जाने पर अपनी मार्मिक बेदना इन शब्दों में अभिव्यक्त की है ....

"मुझे याद है कि पिता जी की सढत मनाही के बाद भी कई रोज लोगों की निगाहे छिपा कर बाग में चला गया था और अपने चिर–परिचित पेड़ो को अलिंगन में भरकर खूब रोया था, पर आज स्थिति भिन्न है, अपने उस बाग से कही अधिक विशाल कहीं अधिक सुन्दर घर में रहता हूँ चारों ओर आम, नींबू, जामून, बेल तथा अन्य अनेक प्रकार के पेड़ है, उनसे मेरा निकटतम् सम्पर्क है उनके फलों का भी उपयोग कर सकता हूँ पर ये वृक्ष मुझे अपने बाबा की धरोहर की याद दिलाते है, क्या कभी उसे लौटा सकूँगा ।"[1]

श्री जैन की विदेश यात्रा पर आधारित कहानी " जीवन सागर पर तैरती तरूणी" में हैलसिंकी "फिनलैण्ड" में उसे अजनवी तरूणी मिल जाती है, उसके साथ लेखक को अंकेले मार्ग तय करना है, लेखक को अजीबोगरीब उलझन में डाल देता है, कुछ इस प्रकार से प्रकट है....

1. मैं मरूँगा नहीं (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 213

"यह क्या हो रहा था । मेरी समझ में नहीं आ रहा, वह नितान्त अजनबी थी, परदेश में आदमी को इतना मुलाहिजा नहीं करना चाहिए, जरा सी कोई बात हो जाये तो लेने के देने पड सकते है, पर मैं क्या करूँ ? उससे पीछा छुड़ाने का अक्सर ही कहाँ था वह तेज कदमों से आगे बढ़ी और मैं अनचाहे में उसके साथ चल दिया।"[1]

"कश्मीर की कोई " शीर्षक कहानी में धर्मेन्द्र पात्र की परिकल्पना करके लेखक ने अपनी भावाशिव्यक्ति प्रस्तुत की है, धर्मेन्द्र अपनी कश्मीर यात्रा से एक लोई खरीदकर लाता है और उसे बड़े प्रेम से यत्नपूर्वक रखता है, अन्त में अपनी उस प्रिय लोई को वह एक दिन भिखारी को दे देता है, कहानी के अतिंम चरण में वह कह उठता है.........................

"जो चीज चली गयी" उसके लिए परेशान क्या होना और फिर जो कोई ले गया होगा ? उसकी जरूरत हमसे ज्यादा होगी, वह हमसे कही अधिक सम्भाल कर रखेगा ।"[2]

कहानीकार ने एक अन्य स्थान पर "प्रकाश और छाया का खेल" शीर्षक कहानी में भारत के द्वारा होस्टों की एक बस्ती में स्थित मन्दिर के माध्यम से भारतीय संस्कृति को प्रतिपादित किया है, "भारती" कहानी में एक स्थान पर कहता है।

"आखिर धर्म का अर्थ है प्रेम एक दूसरे के प्रति आदर उस दृष्टि से समन्वय आवश्यक है अन्यथा धर्म संप्रदायं बन जाते है, और उनके तंग दायरे जोड़ने से अधिक तोड़ने का काम करते है।"[3]

यहाँ पर लेखक ने भारती को कहानी का माध्यम अवश्य बनाया है, परन्तु भारती के विचारों में स्वयं की भावाभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से झलकती है, वह धर्म को संकीर्ण दायरों से ऊपर उठाने का प्रयत्न करता दृष्टिगोचर होता है।

ग. मनोवैज्ञानिक कहानियाँ :– हिन्दी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता की नींव तो प्रेमचन्द्र ने ही

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (जीवन–सागर पर तैरती तरुणी) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 427
2. मैं मरूँगा नहीं (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 167
3. मैं मरूँगा नहीं (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 5

डाल दी थी परन्तु उसका वास्तविक विकास जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय की कहानियों में हुआ हैं जैनेन्द्र कुमार पहले कहानीकार है जिन्होने अपनी कहानियाँ में दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण को प्रमुखता देकर हिन्दी कहानी की इस नयी धारा को प्रबलता प्रदान की ।

श्री यशपाल जैन के द्वारा मनोवैज्ञानिक धरातल पर लिखी गयी कहानियों में, उनकी दार्शनिक विचारधारा, मनोविज्ञान का रूप ग्रहण करती दृश्यमान होती है, जो प्रायः जन सामान्य के लिए दुरूह एवं बौद्धिक हो जाती है अधिकांश कहानियों में सामान्य चरित्रों की अपेक्षा विशिष्ट चरित्रों का प्राधान्य हो गया हैं। यहॉ स्पष्ट रूप से कहना होगा कि दर्शन और मनी विज्ञान में रूचि न लेने वाला पाठक यशपाल जी की सभी कहानियों का आनन्द नहीं ले सकता । पाठक को ये कहानियों शुष्क एवं नीरस जान पड़ेगी ।

लेखक की मनोवैज्ञानिक कहानियों के अंतर्गत "व्यतीत के स्वप्न""मुक्ति का द्वार" "कुदरत का अजूबा" और "व्योमवाला" आदि उल्लेखनीय है, इनमें लेखक की दार्शनिक विचारधार उमरकर सामने आ जाती है और यही पर उसमें मनोवैज्ञानिकता का समावेश हो जाता हैं, अतः यह कहना उचित ही होगा यशपाल जी की मनोवैज्ञानिकता का समावेश हो जाता है, अतः यह कहना उचित ही होगा यशपाल जी की मनोवैज्ञानिक कहानियाँ उनके दर्शन से आच्छादित हैं।

"व्यतीत के स्वप्न" शीर्षक कहानी की नायिका नीलिमा गुप्ता एक नवयौवना है, जो विजय नाम के एक नवयुवक से प्रेम करती है, किन्तु प्रेम में छली जाने पर वह नर्स बनकर अपना जीवन रोगियों की सेवा के लिए समर्पित कर देती है एक दिन अचानक विजय रोगी रूप में अस्पताल में आ जाता है। उसे देखकर नीलिया के ह्नदय में एक दून्द्व उत्पन्न हो जाता है उसे लगता है कि वह गिर पड़ेगी, वह उससे घृणा करती है। लेकिन रोगी के प्रति उसका दायित्व भी उसके सामने हैं। उसकी मनः स्थिति का वर्णन यशपाल जी ने इन शब्दो में किया है ....

"उस चोट की कसक अनुभव करके वह व्यथित हो उठी उसके दिल पर इतना गहरा घाव हो

गया कि वह कमी भर नहीं सका मनुष्य मात्र के प्रति उसके दिल में नफरत पैदा हो गयी, उसने नई दिशा पकड़ी और कुछ ही दिनों में वह उस घटना को ऐसे भूल गई जैसे कुछ हुआ ही न हो।"[1]

अचानक इस तरह विजय को रोगी रूप में सामने पाकर वह निर्णय लेती है..................

"नहीं, जब तक वह अस्पताल में रहेगा मैं वहॉ नहीं जाऊँगी, उसने दृढ़ता से मन ही मन कहा,वह झटके के साथ उठकर बैठ गयी, उसने कागज लिया और छुट्टी की अर्जी लिखने लगी, तभी जैसे उसके अन्तर में कोई बोल उठा, सिस्टर यह क्या कर रही है ? तू यह कैसे मूक्त रही हो कि घृणा से बड़ा कर्तव्य है, तू अपने दिल को क्यों छोटा करती है ? यह क्यों नहीं मानती कि चौबीस नम्बर के बिस्तर पर जो पड़ा है वह रोग है और तेरा फर्ज है कि रोगी की सेवा करें ।"[2]

इसी प्रकार "मुक्ति का द्वार" कहानी की लेखक ने एक नवयुवक के मानसिक द्वन्द्व को केन्द्र में रखकर रचना की है, इस कहानी का पात्र चेतन एक विदेशी युवती से प्रेम करता है और उससे विवाह भी कर लेता है, उसके पारिवारिक जीवन में उस समय आग लग जाती है, जब उसकी पत्नी की माँ भी उनके परिवार में आकार रहने लगती है। पत्नी का दृष्टिकोंण दिन पर दिन आर्थिक दायरों में संकुचित लाता चला जाता है, जिसके कारण चेतना के ह्रदय में दृन्द्वात्मक स्थिति उत्पन्न हो जाता है, और अन्य में उसका स्वाभिमान उसे घर छोड़ने के लिए विवश कर देता है, श्री जैन ने व्यक्त किया है ...

"बहुत सोचने के बाद उसने निश्चय किया कि वह उस शहर को छोड़ देगा शहर को ही नहीं, देश को भी छोड़ देगा वह उस देश की मिटट्ी से भी अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखेगा, समुद्र पार अपने उसी देश को चला जायेगा, जहाँ से वह एक दिन इस पराये देश में आया था, इस निश्चय पर उसने तत्काल अमल किया, कार बेंची, घर बेची और वह विदा लेने लगा तो उसने पाया कि वह अकेला आया था । अकेला जा रहा है, पर कोई भी उसके पास नहीं था चेतनजे अनुभव किया कि वे हॉड़–मॉस के नहीं पत्थर के थे।"[3]

1. दायरे और इंसान (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 79
2. दायरे और इंसान (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 80
3. मुक्ति का द्वार – यशपाल जैन

दोनों ही कहानियों में पात्रों के माध्यम से लेखक ने अपने दार्शनिक विचारों का प्रगटीकरण किया है, उपयुर्क्त कहानियों में श्री जैन का मनोविज्ञान के प्रति पूर्ण झुकाव तो है – परन्तु उनका मनोविज्ञान दर्शन से घिरा हुआ दृश्यमान होता है, यशपाल जी की एक अन्य कहानी में उनके दार्शनिक विचार इस प्रकार पात्रों के माध्यम से प्रगट हुये है ....

"पीटर आस्तिक है और ग्रेबियल नास्तिक ।"

पीटर ग्रेबियल से कहता है। ....

इस दुनियाँ में हम सब कठपुतलियों के समान है

अपनी – अपनी भूमिका निभाते हैं, और चले जाते हैं।"

ग्रेबियल इस कहती है ....

"कठपुतली – कठपुतली है, आदमी – आदमी है, दोनों की तुलना कैसे की जा सकती है।"

पीटर पुनः कहता है...

"जिस तरह कठपुतली को आदमी चलाता है वैसे ही आदमी भी किसी के हाथ की कठपुतली है।"

"ब्योयबाला" कहानी में लेखक स्वयं पात्र रूप में उपस्थित होता है। वह विमान परिचायिका मर्सी से वार्ता लाप करने लगता है, मर्सी भी लेखक से अभिभूत हो जाती है उसके सब्र का बाँध टूट जाता है, वह लेखक से कह उठती है ....

"मेरे चेहरे को आप सोंचते होगें कि मैं बहुत सुखी हूँ पर क्या आप मान सकेंगे कि मेरे जीवन का रस धीरे –2 सूखता जा रहा है?

लम्बी उड़ान के बाद लौटती हुई तो लगता है बदन टूट गया है, इतनी मुस्कराहट देनी पड़ती

है कि भीतर से खाली हो जाती हूँ, फिर कुछ भी करंने को जी नहीं करता बार–बार एक ही बात मन में उठती है कि मैं वह नहीं हूँ, एक दिन वह आयेगा जब असली मर्सी भर जायेगी और जो बचेगी, वह नकली मर्सी होगी।"

लेखक की इस कहानी में भी उसके मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण की स्पष्ट झलक दिखायी देती है, उसने अपनी इसी उद्‌देश्य को सम्मुख रखकर कथा की रचना की है, जिससे उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है।

इस प्रकार यशपाल जी नक जीवन के सभी क्षेत्रों से कहानियों के विषयों को चुनने का प्रयास किया है, कहानियों के विषय विवधि और उपरिमित है छोटी–बड़ी समस्याओं को लेखक ने बॉध कथाओं, सामाजिक कहानियों एवं मनोवैज्ञानिक कहानियों के अन्तर्गत अत्यन्त सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। जिनमें भारतीय सांस्कृतिक आदर्शो को भी सदा सम्मुख रखा गया है।

सभी प्रकार की कहानियों में कथ्य या मूलभाव को ही व्यंजति करने पर विशेष बल दिया गया हैं। लेखक ने कहानी को सुन्दर बनाने की चेष्टा नहीं की है लेकिन मूल भाव की अभिव्यंजना इतनी प्रभावशाली है। कि कहानी का स्वाभाविक सौन्दर्य स्वतः ही उसमें निहित रहता है। लेखक के दृष्टिकोंण से अवगत होकर पाठक जिस कहानी को भी पढ़ जाता है, उसमें उसे कहानी का आनन्द प्राप्त हो जाता है।

ब. पात्र और उनका सामाजिक परिवेश :– "समाज के व्यापक धरातल पर विचरण करने वाले साधारण और असाधारण मानव ही कहानी के सीमित परिवेश में पत्र रूप में प्रवेश करते है। ये ही पात्र कथाकार की कल्पना और अनुभूति के संयोग से जन–जीवन से सम्बन्धित समस्याओं का उद्‌घाटन करते है ये पात्र जब हमारे समाज के बीच के होते हैं, और इनसे हमारा पूरा साधारणीकरण सम्भव हो जाता है। क्योंकि ये हमारे देखे सुने और जाने पहचाने रहते है। आधुनिक

कहानी कला की धार में वस्तुतः लोकोतर पात्रों की अवतारणा बिल्कुल नगण्य है। आज का युग बुद्धिवादी युग है, इसे तर्क विवेक और विश्लेषण में अधिक आस्था है, अंधविश्वास कल्पना और निष्ठा में कम अतएव आधुनिक कहानी कला में सामान्य पात्र ही लिखे जाते है, जो मानव संघर्षो और युग चेतना के प्रतीक होते हैं।"[1]

इनसे पाठक सुगमता से तादाम्य स्थापित कर लेता है क्योंकि ये पात्र सामाजिक परिवंश में होने वाली जीवन की सरल सामान्य यर्थाथ स्थितियों औरनित्य के सुख–दुख संघर्ष – विमर्श का ही प्रतिनिधित्व करते है।

डा0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा के अनुसार...

"कहानीकार से आज के युग की माँग होती है, कि पात्र इस रूप में हमारे सामने आयें कि हमारे ही समान सुख–दुख हानि–लाभ और उत्कर्ष – अपकर्ष से भरे हो, यर्थाथता वास्तविकता और यथा तथ्य सबका यही तकाजा है कि अधिक से अधिक ईमानदारी से आज का कहानीकार अपनी कला कृति में मानव की अवतारणा करें, मनुष्य – मनुष्य की तरह हों – अपने सद् – असद् दोनों रूपों में भले ही कोई सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति हो पर यदि परिस्थिति और संस्कार को चाहिए कि उसे सच्चाई से वहाँ रहने दो ।"[2]

श्री यशपाल जैन ने मानव को उसके सामाजिक परिवेश के भीतर साधारण मानव के रूप में ही चितित किया है। उनकी कहानियों का एक भी पात्र अतिमानवी या असाधारण पात्र की कोटि में नहीं आता, उनके पात्र सामाजिक और वर्गगत होते हुए भी अपनी विशिष्टताओं से युक्त होते है, उनमें विश्वसनीयता और स्वाभाविकता निश्चित रूप से विधमान रहती है, लेखक अपनी बोध कथाओं में धार्मिक एवं ऐतिहासिक राजाओं और महापुरूषों को नायक रूप में अथवा पात्र रूप में प्रस्तुत किया है, ऐसी कहानियों में ये पात्र मानव समाज के लिए निर्धारित लक्ष्यों, आदर्शो और

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्पी विधि का विकास – डा. लक्ष्मीनारायण लाल, पृष्ठ – 335–336
2. कहानी का रचना विधान – डा. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृष्ठ – 101

सद्व्यवहारों को प्राप्त करने और कराने का यत्न करते हुए दिखाई देते हैं।

श्री जैन का पात्र चयन का क्षेत्र भारत के गाँवों से लेकर विदेशों तक फैला हुआ है, उनकी समस्त कहानियों में लगभग 65 स्त्री पात्र, 680 पुरूषों पात्र और 50 बालक तथा 176 अन्य पात्र है, सर्वाधिक संख्या पुरूष पात्रों की है, द्वितीय स्थान पर अन्य पात्र आते हैं अन्य पात्रों में इन्होंने पेड़–पौधों को भी पात्र रूप में प्रस्तुत किया है, "कैक्टस" कहानी का पात्र स्वयं कैक्टस है।

यशपाल जी के पात्रों को मुख्यतः दो भागो में विभाजित किया है सकता है – यर्थाथ पात्र एवं कल्पित पात्र यर्थाथ पात्र एवं कल्पित पात्र यर्थाथ पत्रों का चयन उन्होंने अपने आस–पास के परिवेश से किया है और काल्पनिक पात्रों का जन्म यशपाल की कल्पनाओं में होता है, इतना ही नहीं कुछ कहानियाँ ऐसी भी है, जिसमें नाम लगाकर स्वयं लेखक अपने आपकों प्रस्तुत करता है, "महकता चरित्र" शीर्षक कहानी इसका उदाहरण है, जिसमें लेखक सतीश नाम से उपस्थित रहता है। नौकर, नर्स, विमान, परिचायिका, योगी, मूर्तिकार विदेशी पुरूष एवं स्त्रियाँ, लेखक से लेकर जन्म जात शासक राजा सेठ मजिस्ट्रेट, नेता महापुरूष और देशभक्ति की ऑन पर जॉन देने वाले देशभक्त सभी लोगों की व्यथा और अनुभूति को लेखक ने इन कहानियों में समेटा है कहानी के सीमित वृत्त में जिस पात्र को जिस रूप में चित्रित किया है, वह अपना अमिट प्रभाव छोड़ जाता है।

यशपाल जी की कहानियों को पढ़कर यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि यशपाल जी ने चरित्रों के लिए नहीं अपितु सामाजिक वैषम्य का उद्धाटन करने के लिए ही कहानियों की रचना की है। उनकी चित्रण प्रणाली इतनी स्वाभाविक है, कि पात्र यर्थाथ मानव जैसा प्रतीत होने लगता है, उनका चुनाव क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है, उन्होने समाज के प्रत्येक स्तर से पात्रों का चुनाव किया है उनके पात्र वर्गगत होते हुए भी उनमें कुछ विशिष्ट गुण से पृथक कर देते है, और ऊँचा उठा देते है।

श्री जैन ने उच्च, मध्य और निम्न तीन वर्गों के पात्रों को लिया है अतः उसमें नीरसता या एकरसता नहीं आती, सम्भवतः यशपाल जी को सामाजिक वैषम्प, समसयाओं का चित्रण, मानवीय मूल्यों का उद्‌घाटन करना ही प्रिय है, और इन सबके अनुरूप ही उनके पात्र विचरण करते है, यही उनके पात्रों की सफलता है।

क. उच्च वर्ग के पात्र :– लेखक ने उच्च वर्ग से जिन पात्रों की अवतारणा की है उनमें सत्ता एवं अंहकार के मद में चूर राजा धन की आकांशा रखने वाले व्यापारी एवं सेठ, चारित्रिक दृष्टि से पतित समाज के सम्मानित नेतागण इत्यादि हैं, "सच्ची सम्पदा" "त्याग और लोभ" के सेठ लोग "कुरूक्षेत्र – धर्म क्षेत्र" "न्याय" के राजा एवं "गुनाह के बोझ" के नेता जी आदि किसी न किसी रूप में सामाजिक व्यवस्था को विघटित कर अपने स्वार्थों की पूर्ति का प्रयास करते नजर आते है यशपाल जी की दृष्टि में समाज की अव्यवस्था का मुख्य कारण ये ही पात्र है, इनकी धनलोलुपता एवं अहंकार की नीति के कारण ही समाज के अन्य वर्गो को संकट का सामना करना पड़ता है, गुनाह का बोझ" कहानी में एक नेता की सोच इस तथ्य को उजागर कर देती है, लेखक ने दृष्टव्य कराया है ....

"राम सेवक बैठा – बैठा जाने क्या सोचता रहा, सभा में किसी ने बोलते हुए कहा था, हम वह दिन देखने को लालायित है, जबकि हमारे सदर साहब सरकार में मंत्री की कुर्सी पर बैठगें जी हॉ, उन्होने ठीक ही कहा था, चुनाव आने वाले है। पैसा है तो जी पक्की है, फिर मंत्री की कुर्सी गई कहाँ है।"[1]

श्री जैन की लघु कथाओं में पात्र परिकल्पना अध्यधिक विस्तृत है जिसके लिए उन्होंने देश विदेश की सीमाओं का उल्लंधन करके गौतम महावीर को भी पात्र के रूप में प्रस्तुत कर दिया है। "जीवन का सत्य" "पसीने की कमाई" "मितव्ययिता" "एक उदबोधक पत्र" "संत की जीत" "हिंसा का डर" आदि कहानियों में इसी प्रकार के पात्रों को केन्द्रीय भूमिका प्रदान की गई है।

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – (गुनाह का बोझ) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 442

लेखक का मुख्य उद्देश्य इन पात्रो के के माध्यम से समाज में नई संवेदना आग्रह करना रहा है उन्होंने इसी उद्देश्य को परमार्जित करने के लिए इस प्रकार के चरित्रों का चित्रण किया है।

ख. मध्य वर्ग के पात्र :–

श्री यशपाल जैन ने सर्वाधिक पात्र मध्य वर्ग से लिये है, मध्य वर्ग मे व्यक्ति दो भावनाओं से बुरी तरह से ग्रस्त है एक और झूठी शान और दिखावे की प्रवृति तथा दूसरी और तनाव अन्ध विश्वास ने उनके जीवन को क्लानत बनाया हुआ है, "कायाकल्प"[1] का एक पौढ़ पात्र देवी दयाल "असतो माँ सद्गमय"[2] का प्रवीण "तट का बंधन"[3] का गिरधारी उसी झूठी शान एवं दिखावें से ग्रस्त है, देवी दयाल शरीर से वृद्ध होने पर भी यह मानने के तैयार नहीं होता है किवह वृद्धावस्था में प्रवेश कर चुका है उसे नौजवान द्वारा बुजुर्ग की संज्ञा देना अखर जाता है "असतो माँ सद्गमय" कहानी में प्रवीण प्रान्तीय सरकार के कार्यालय में ऊँचे पद पर कार्यरत है जिसके लिए उसे विदेशियों की स्वार्थपूर्ति भी करनी पड़ती है जिसके लिए वह स्वयं को गर्वान्वित करना पड़ता है।

इस प्रकार के चरित्र अवसर पाकर अपनी झूठी शान और दिखावे को ही प्रदर्शित करने में जुटे रहते है, गीत एवं मीत"[4] की युवती, मैं मरूँगा नहीं "[5] में "कृष्णकान्त की पत्नी, "व्यतीत के स्वप्न"[6] की नायिका ये सब किसी न किसी तनाव से ग्रस्त होते हैं, "गीत और मीत" कहानी की युवती के जीवन में अत्यधिक तनाव उत्पन्न हो जाने के कारण वह आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है "मुखौटे के पीछे"[7] कहानी में अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाला मुख्य एक प्रौढ़ ढोगी योगी है।

श्री यशपाल जैन, मध्य वर्ग की इस विरूपता कलुषता तथा अप्रकट को प्रकट करने हेतु ही ऐसे पात्रों की रचना की है। मध्य वर्ग के समाज को इस प्रकार के पात्रो से परिचित करना ही मुख्य उद्देश्य रहा, वह समाज को जो सब कुछ जानते हुए भी अनजान और भोला बना हुआ है उसी के बीच से पात्रों को चुनकर उनकी वास्तविक, परिस्थिति से अवगत कराना अभीण्ट है।

---

1. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन
2. असतो माँ सद्गमय – यशपाल जैन
3. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – तट का बंधन – यशपाल जैन, पृष्ठ – 451
4. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 77
5. मैं मरूँगा नही (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 27
6. दायरे और इंसान (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 80
7. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 168

ग. निम्न वर्ग के पात्र :-

इस सबके अतिरिक्त कहानियों में निम्न वर्ग के वे नारी पुरूष पात्र है जिन्हे यशपाल जी की सहानुभूति मिली है, जिनकी चरित्रों को श्री यशपाल जैन ने बड़े मनोयोग – पूर्वक निर्मित किया है सच पूँछा जायें तो यशपाल जी को इस वर्ग ने ही सर्वाधिक आकृष्ट किया है, "जीवन के खण्डहर में "कहानी का पुलिया चमारिन, कर्फ्यू पास का नौकर "अल्हड़ लड़की" कहानी की अमीरन इसी वर्ग के चरित्र है। उनमें विशिष्टता है, व्यक्तिगत भावना है लेखक के ये पात्र कहानियों में अन्य पात्रों की तुलना में विशिष्ट स्थान रखते है प्रायः यशपाल जी ने निम्न वर्ग के पात्रों को लेकर कम ही कहानियों की रचना की है। परन्तु जिन कहानियों में इस वर्ग के पात्रों का चित्रण हुआ है। वहाँ ये पात्र अपनी अलग ही छाप छोड़ देते है। कहने का आशय यह है, कि लेखक ने इन चरित्रों को कहानियाँ में बड़ी कुशलता के साथ उतारा है।

नारी यात्रा :-

श्री जैन ने नारी को उसके विविध रूपों में दर्शाया है कही उनकी नारी अत्यधिक भावुक है, कहीं ममतामयी माँ का रूप लिये है, कहीं प्रेमिका का रूप लिये हुए है, और कही और कही साहित्वक रूप को अंगीकार किये हुए है, अनेक स्थानों पर वह अत्याचार, शोषण का विरोध करती थी नजर आती है। आत्म सम्मान और अपने व्यक्तित्व से शून्य नारी की यशपाल जी कल्पना नहीं कर सकते, उनके अनुसार ....

"दुर्बल नारी कभी भी मान की अधिकारिणी बनी है। जो यहाँ बनेगी ? नारी की महिमा त्याग में है"।[1]

"व्यतीत के स्वप्न" शीर्षक कहानी की नायिका नीलिमा गुप्ता विजय नामक युवक से प्रेम करती है, परन्तु प्रेम में छली जाने पर, निराश न होकर जीवन को नई दिशा प्रदान कर नर्स बन

---

1. बिगड़ी आकृति – यशपाल जैन, पृष्ठ – 75

जाती है। और अपना सम्पूर्ण जीवन रोगियों के लिए समर्पित कर देती है, यहाँ पर नारी के त्याग को लेखक ने दर्शाया है।

यशपाल जी ने विदेशी स्त्री पात्रों को भी कहानी में प्रस्तुत किया है। परन्तु ये नारियाँ अपने जीवन में लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रायः असफल ही रही "मुक्ति का द्वार" कहानी में पाश्चाण्य सभ्यता वाली नारी का असफल जीवन उभर कर सामने आ जाता है। "व्योमबाला" "जीवन सागर" पर तैरती तरूणी "कुदरत का अजूबा" आदि कहानियों की नायिकायें सहासी एवं आत्म चेतना से युक्त है। समाज को जिस व्यवस्था की परिधि में उन्हें चितित किया गया है, उससे टक्कर लेने में वे समर्थ है। वास्तव में यशपाल जी के इन स्त्री चरित्रों का केवल नारित्व पक्ष ही सबल नहीं है। बल्कि इनका अपना मानवी व्यक्तित्व और सामाजिक अस्तित्व है, ये नारी पात्र सामाजिक परिवतनों तथा परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तित भी होती है। इनमें आत्म विश्वास है, आत्मनिष्ठा है। इन सित्रियों की पिछली झूठी मान्यतायें टूट गयी और ये अपने वर्गसंघर्ष में पूर्णतः जागरूक हो गयी है। इसलिए इनकी एक विशेषता और उभरकर आती है। वह है, क्रियाशीलता "प्रेमाश्रम" और व्यतीत के स्वप्न कहानियों में नारी की कर्मठता प्रधान है।

स. चरित्रांकन पद्धति :—

यशपाल जी की चरित्रांकन पद्धति इतनी सन्तुलित एवं प्रभाव मय है कि पात्र की समस्त विशेतायें स्वयं ही उभर कर सामने आती है उसमें विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती, वैसे तो कहानी की मौलिक परिमित में यें चरित्र चित्रण पर विशेष वक्त नहीं दिया है क्योंकि उसमें वर्णन प्रसार के लिए अवसर नहीं होता उसमें जीवन के किसी भी पक्ष का ही चित्रण होता है इसलिए यदि पात्र के रूप रंग, वेशभूषा, कुलशील, रूचि—अरूचि आदि को प्रकट करने की आवश्यकता पड़े तो कुशललेखक उसे परिस्थिति और अवकाश के विचारों से अत्यन्त संक्षिप्त पर सारगर्भित पदावली में कह देता है, यशपाल जी ने "अतीत की पूँजी" "व्योम वात्ता" कहानी खत्म हो गयी" "तट का

बन्धन" आदि कहानियों में इस बात का पूर्ण रूप से निवाह किया है, उदाहरण के लिए "व्योमबाला" कहानी में विमान परिचारिका के रूप का चित्रण दृण्टव्य है....

"उम्र उसकी कोई बीसके साल की रही देह पर रेशम की साड़ी थी छरहरा बदन था देखने में अच्छी खासी थी।"[1]

श्री यशपाल जैन ने अपने कथा साहित्य में चित्रण प्रणाली के विधानों को भी प्रयोग किया है घटना, परिस्थिति, संकेत, वार्तालाप, आत्मकथन मानसिक ऊहापोह – सबके माध्यम से पात्रों के चरित्र की गुत्थियों को सुलझाया गया है, वह है घटना और संकेत जिसका एक उदाहरण दृण्टव्य है,

"कुछ काम करती है ? भारती का अगला प्रश्न था

जी हाँ यहाँ काम के बिना गुजारा नहीं।"

"क्या काम करती है ?

मेरे एक रिश्तेदार का स्टोंर है उसमें हूँ"

"मन्दिर रोज आती है ?"

"नहीं रोज इतनी फुरसत कहाँ होती है " इतना कह कर वह महिला रूक गयी ।"[2]

यशपाल जी पात्र के चरित्र की अभिव्यक्ति के लिए उसके अनुकूल घटना को अनुस्यूत करने में पूर्णतया दक्ष हैं, कहानियों में इस प्रकार की घटनायें अप्रत्यशित होते हुए भी अस्वाभाविक नहीं होती इनमें चरित का स्वतः प्रकाशन होता ही है, साथ में कहानी का सौन्दर्य भी व्यक्त हो जाता है।

संकेत और व्यंजना पद्धति ने कहानियों में तीव्रता और प्रभावात्मकता की वृद्धि की है यशपाल जी सीधे तौर से पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को व्यक्त नहीं करते मात्र देखकर शैनैः – शैने,

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – व्योमबाला – यशपाल जैन, पृष्ठ – 422
2. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ –

उसके अनुकूल परिस्थिति की योजना करते हैं, और फिर अन्त में अत्यन्त क्षिप्र गति से पात्र की चारित्रिक विशेषतायें का उद्‌घाटन करते है जैसे – "दायरे और इंसान" कहानी में तरूण कवि अभय का चरित्र लेखक मानव चरित्र की सूक्ष्मताओं से भली भॉति अवगत है, उन्होंने चरित्रों की अवतारण निःसन्देह "यथार्थ के धरातल" से की है, मानव मन की सूक्ष्म वृत्तियों के चित्रण करने में वें पर्याप्त सफल रहें हैं।

इस प्रकार यशपाल की चरित्रांकन – पद्धति अत्यन्त प्रभावशाली और आर्कषक है तथा कहानी के स्वाभाविक सौन्दर्य को व्यक्त करने पूर्ण रूप से समर्थ है, उनके पात्र के चारित्रिक परिवर्तन का पाठक कभी भी अनुमान नहीं लग सकता यही उनकी कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है पात्र के कार्य व्यापार और लेखक की संकेतात्मक पद्धति कहानी के सौन्दर्य की अभिवृद्धि में विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

द. कहानियों का रचना विधान :–

श्री यशपाल जैन सामाजिक अर्न्तद्वन्द्व एवं वैषम्य के चित्रणार्थ सप्रयोजन कहानियों की रचना की है उनकी अधिकांश कहानियाँ किसी न किसी लक्ष्य या उद्देश्य को व्यंजित करने के लिये लिखी गयी है, फिर भी उनके कहानी साहित्य में कलात्मक आग्रह, शैलीगत विविधता या व्यापकता की कमी नहीं है, उनकी कहानी रचना का एक निजी कौशल है उसकी अपनी विशिष्टता और कलात्मक सौन्दर्य है। यशपाल जी की अनेकों लघु कहानियों में दृष्टान्तों का प्रयोग हुआ है। श्री जैन की कहानियों के रचना विधान की कथात्मक, आत्म चरितात्मक, नाटकी, अन्योपदेशिक शैली के आधार पर विवेचना करना अत्यधिक समीचीन रहेगा।

क. कथात्मक शैली की कहानियाँ :–

"इस शैली अंतर्गत कहानीकार एक कथावाचक की भाँति पूर्णतः तटस्थ होकर कहानी की

सृष्टि करती है, यह सृष्टि पूर्व वर्णानात्मक ढ़ंग की होती है, अतः समूची कहानी का सूत्रधार स्पष्ट रूप से कहानीकार होता है और इसका नायकत्व वह अथवा किसी अन्य पुरुष को दे दिया जाता है।"[1]

इसमें लेखक को वर्णन विश्लेषण का अवसर भी रहता है यशपाल जी ने इस शैली में भी कथाओं की रचना की है, "अतीत की पूँजी" "अपनी–अपनी राह" "सृण्टि का क्रम आदि में कथानक का विस्तार लेखक किसी घटना के विवरण या पात्र के चरित्र विश्लेषण के माध्यम से स्वयं करता है, इसमें नाटकीय अंश इतना उभर कर नहीं आता जैसे –

"मझोला कद, चौड़ा सीना, ऊँचा मस्तक छोटी–छोटी आँखे, कसे हुए होंठ सिर पर चाँदी जैसे बाल गठीला बदन, इन ग्रांड पा को देखकर कौन उनकी उम्र का अन्दाज लगा सकता था, फिर भी वह उस वस्ती के बुर्जगों में से तो थे ही, छोटे – बड़े सब उन्हें ग्रांड पा के नाम से ही सम्बोधित करते थे । कुछ तो उम्र के कारण और कुछ इसलिए कि ग्रांड पा सबके प्रति आत्मीयता रखते थे और हर घड़ी दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते थे ।"[2] इनमें लेखक का मुख्य कार्यकथा के माध्यम से पात्र के चरित्र का विश्लेषण करना ही होता है, इस प्रकार की कहानियाँ प्रायः कलात्मक सौन्दर्य की पूर्ति नहीं कर पाती ऐसी कहानियों को यदि कथात्मक निबन्धो की संज्ञा दी जाये तो भी अनुचित न होगा ।

ख. आत्म चरितात्मक शैली की कहानियाँ :–

श्री यशपाल जैन ने आत्म चरितात्मक शैली का बहुत प्रयोग किया हैं। "इस शैली में बात इस ढंग से कही जाती है कि जैसे कोई अपना परिचय स्वयं दे रहा है अथवा अपने जीवन से सम्बद्ध घटनायें और स्मृतियाँ स्वयं किसी से कह रही हों।"[3]

इस शैली में रचित कहानी पूर्ण वास्तविक एवं यथार्थ प्रतीत होती है, कल्पना को साकार

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्प–विधि का विकास – डा. लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ – 346
2. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 10
3. कहानी का रचना विधान – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृष्ठ – 155

सजीव और मूर्तिवत रूप में प्रस्तुत करने में यह शैली विशेष रूप से सहायक सिद्ध होती है, इससे पात्र के अन्तस्तल के अर्भूत तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति स्वाभाविकता से हो जाती है।"[1]

इस शैली का लेखक तीन प्रकार से प्रयोग कर सकता है – प्रथम, कहानी का मुख्य पात्र आरम्भ से अन्त तक सम्पूर्ण कहानी स्वयं कहता है, जैसे "गुनाह का बोझ" "मैं मरूँगा नहीं" और "कहानी खत्म हो गयी" इजिनमें कथा का मुख्य पात्र स्वयं ही सम्पूर्ण कथा बताता है। इन कहानियों में बिल्कुल आरम्भ से तो पात्र कथा को अपने मुख से बतलाने लगता है। द्वितीय कहानी के विभिन्न पात्र "आप बीती सुंनाते है और उनके समन्यय से समूची कथा बन जाती है। यशपाल जी के कहानी साहित्य में इस प्रकार की भी कहानियाँ दृष्टिगोचर होती है, तीसरे प्रकार में लेखक स्वयं आत्मभाषण के रूप में समूची कहानी पूरी करता है। दृण्टव्य है ...

"कलात्मक दृष्टि से उसका "मैं" कहानी मुख्य पात्र बन जाता है। वह अपनी आत्म कथाओं में कहानी के अन्य पात्रों को भी समेट कर चलता है।"[2]

यशपाल जी ने प्रायः ऐसी कहानियों का सृजन किया है जैसे – "अल्हड़ – लड़की" कहानी में श्री यशपाल जैन स्वयं पात्र के रूप में है...

"सामने काम का अम्बार था, मन वैसे ही हैरान हो रहा था, फिर मैं यह भी सुन चुका था कि नौकरों के इन बच्चों को कोई चीज एक बार दे देना अपने सिर पर आफत लेना है उसके बाद उनकी कोई न कोई फरमाइश रोज रहती है, अलमारी की ओर बढ़ते हुए मैनें तिरस्कार से कहा, भाग जा। चाय –वाय यहाँ नहीं है।"[3]

"मैं शैली में उनकी एकाधिक कहानियाँ है, यथा "महकता चरित्र" "जीवन सागर पर तैरणी" "बिगड़ी आकृति" इत्यादि इस शैली में लिखी गयी कहानियों में प्रभावात्मकता है भावों की सूक्ष्म पकड़ है, ह्रदयस्पर्शिता और रोचकता है, इन कहानियों में लेखक प्रस्तुतीकरण अत्यन्त आकर्षक है।

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्प–विधि का विकास – डा. लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ – 348
2. कहानी का रचना विधान – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृष्ठ – 156
3. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – (अल्हड़ लड़की) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 445

ग. नाटकीय शैली की कहानियाँ :–

लेखक की कुछ कहानियों में नाटकीय अंश को रोचक बनाने में सहायक होते है, "कर्फ्यू – पास" "मुखौटे के पीछे" कहानियों में अधिकांशतः नाटकीय गुणों का समावेश है।

"दो तट एक धारा" कहानी में फिलिप्स और सूसन के मध्य एक संवाद से यह स्पष्ट हो जाता है...

"फिलिप्स ने मुस्कराकर कहा, एक तो वह ।

बताओ दूसरा कौन – सा ?"

सूसन ने पानी में नाचते हुए उसके प्रतिबिम्ब की ओर इशारा करके कहा – "एक यह"

फिलिप्स ने उसे अपने पास खींच लिया, बोला.... "वह नहीं, यह।"

पत्नी का सारा गात सिहर उठा ।"[1]

इस उद्धहरण में चाहे विश्वसनीयता का किसी सीमा तक उल्लंधन हो गया हो, लेकिन इसमें नाटकीय की न्यूनता नहीं है।

घ. अन्ययोपदेशिका शैली की कहानियाँ :–

"इस शैली के अन्तर्गत ऐसी कहानियाँ आती है जिसे किसी प्रकार के व्यंग्यार्थ की सिद्धि होती है।"[2]

इन कहानियों में एक प्रकार का चमत्कार रहता है, कहानी में कुद कथांश भले ही हो, पर पाठक का सारा ध्यान उसी प्रपिाध व्यंग्य की ओर लगा रहता है, यशपाल जी का कौशल है कि सारी कथा तो सरल ढंग से कह जायेगें, लेकिन अनत में दृण्हान्त अथवा प्रतीक – विधान से उस समस्त कथासार को मोड़ देगें इस प्रकार की कहानियाँ पाठक पर प्रत्यक्ष रूप में अपना प्रभाव

---

1. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 44
2. कहानी का रचना विधान – जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, पृष्ठ – 156

डालती हैं जैसे – "चोट कहाँ लगनी चाहिए" और "नीति विहीनता" का "दृष्परिणाम" कहानियाँ इन दोनो कहानियों में से प्रथम कहानी का व्यंग्य अत्यन्त तीखा और पैनीचोट करने वाला है, सेठ की मिल बन्द हो जाने पर उसकी लाखों की आय बन्द हो जाती है, ऐसे समय में एक व्यक्ति मिल में निश्चित स्थान पर चोट करके उसे चालू कर देता है, परन्तु जब वह इस काग्र के लिए मेहनताना माँगता है तो सेठ को य धनराशि कुछ ज्यादा प्रतीत होती है। लेखक ने सेठ की कृपणता पर चुटकीला व्यंग्य उस व्यक्ति के माध्यम से किया है ....

"सेठ साहब, हथौडे की चोट तो कोई भी मार सकता था, पर कितने लोग है, जा यह जानते हैं कि चोट कहाँ मारनी चाहिए ?"[1]

इसी प्रकार "नीति विहीनता का दुष्परिणाम" कहानी में रामायणन के एक प्रसंग के द्वारा लेखक ने प्रतीक शैली का प्रयोग किया है....

"हनुमान कुछ देर मौन रहे, फिर भाव विहवल होकर बोले "स्वामी जी आपके हाथ से छूटेगा वह बिना डूबे नहीं रहेगा ।"[2]

इस प्रसंग का प्रतीकात्मक अर्थ है कि जा व्यक्ति नीति के मार्ग से विमुख होता है उसका पतन उवश्यम्भावी है।

कुछ कहानियों में यशपाल जीने अप्रत्यक्ष यप से भी प्रबल प्रहार किये है, यहाँ उन्होंने व्यंग्य वाक्य या व्यंग्य शब्दों का प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं किया है, परन्तु उनकी समूची कहानी पढ़ जाने के बाद जो ध्वनि निकलती है उसमें व्यग्य मिश्रित होता है, "कायाकल्प" कहानी में देवी दयाल अपने को वृद्ध होने कर भी वृद्ध नहीं मानता है, यदि उसे कोई बुर्जुर्गियत का अहसास दिलाता है तो उसे अखर जाता है, यशपाल जी ने कहानी के अन्त में दृण्टान्त रूप में स्पष्ट किया है ....

"आदमी शरीर में नहीं मनोबल के सहारे चलता है मनोबल टूटा कि आदमी भी टूट जाता है।"[3]

---

1. नैतिक कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 16
2. आदर्श कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 57
3. कायाकल्प – यशपाल जैन, पृष्ठ – 57

ये पक्तियाँ पाठक को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है, कहानी में व्यंजना से जो ध्वनि निकलती है, उसे पकड़ने में पाठक चूक नहीं सकता ।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतया यह कहा जा सकता है कि यशपाल जी के कहानी साहित्य में कथ्य की प्रधानता हैं। जिस मूल भाव या बीज भाव से प्रेरणा ग्रहण कर उनकी लेखनी चलती है। उसी के अनुरूप वह प्लाट गढ़ लेते हैं उसका फल यह होता है कि कभी तो वह प्लॉट एक संतुलित और संश्लिण्ट रचना का रूप धारण कर कहानी के रूप में पाठक के सामने आ जाता है और कभी मात्र रेखाचित्र या गद्य चित्र की कोटि का रह जाता है लेकिन दोनों विधायें लेखक के कथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ है।

श्री यशपाल जैन व्यक्ति – समाज को चतुर्दिक घेरे रहने वाली समस्याओं से प्लाट गढ़कर पुनः चिन्तन एवं बोध के आधार पर विकसित करके समाज को अर्पित कर दिया है, वे कहानी के माध्यम से मानव समाज की विकृतियों का उद्घाटन करके, मानव मूल्यों की ओर सत्य की स्थापना करना चाहते है। अर्थ, प्रेंम, धर्म, नीति – साहित्य सभी विषयों पर आधारित उनकी कहानियाँ प्रेमचन्द्र की विरासत के परिवेश में चित्रित है, यशपाल जी की दृष्टि यदि व्यापक और स्थूल समस्याओं का चित्रण करने में रमी है। तो वह सूक्ष्म मनववृत्तियों का उद्घाटन करने में भी कुशल है।

आपकी कहानियाँ मार्मिक होने के साथ – साथ गम्भीर और संक्षिप्त है, कहानियों में नारी पात्रों की संख्या पुरूष पात्रों की तुलना में कम होने का सबसे बड़ा कारण इनकी विचार धारा में बुद्ध, महावीर और गाँधी की विचार धारा का प्रभाव है, एक आध कहानी में ही श्रृगांर की झलक मिलती है अन्यथा इनकी कहानियों में करूण, शान्त एवं भक्ति रस की त्रिवेणी मुक्त रूप से

प्रभावित हुई है, सामाजिक, कहानियों में यशपाल जी ने प्रायः त्रस्त जीवन की घटनाओं के अतिरिक्त प्रेम प्रसंगो को भी अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है कहानियों में प्रेम –त्रिकोण दृश्यमान होता है "ज्वार भाटा" कहानी इसका उदाहरण है विभिन्न कथाओं के अंतर्गत लेखक ने देशी – विदेशी पात्रो की परिकल्पना की है तथा इग्लैण्ड के लो विश्वासों का सफल चित्रण प्रस्तुत किया है।

श्री जैन की बोध –कथायें, थोड़े में बहुत कुछ कह देती है......... इनमें भारतीय संस्कृति का आदर्शो को सर्वोपरि रखा गया है, निश्चय ही, ये कथायें मानव समाज के लिए प्रेरणादायी है, लेखक की मनोवैज्ञानिक कहानियाँ विविध सामजिक समस्याओं से जूझती जा रही है, ये प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उन समस्याओं के समाधान की दिशाओं की ओर संकेत करती रहती है. ओर साथ ही विकास के पथ पर भी बढ़ती रहती हैं।

उद्देश्य की दृष्टि से श्री जैन की कहानियाँ मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं जीवनी शक्ति के परिप्रेषण की दिशा में यत्नशील रही है तथा ध्वंसोन्मुख आदर्शो की पुर्नस्थापना हेतु बदलते मूल्यों एवं टूटती मर्यादा के प्रति प्रबुद्ध और भावाकुल है।

कथात्मक, आत्मचरितात्मक नाटकीय और अन्योपदेशिक शैली में लिखित उनकी कहानियों में विशेषकर अन्योपदेशिक शैली की कहानियाँ मात्रा में सबसे अधिक और प्रभावोत्पादक है, यशपाल जी के कहानी साहित्य का पूर्णावलोकन करके कहा जा सकता है कि वस्तु और शिल्प दोनो दृष्टियों से उत्तरोत्तर कालक्रम में उनकी कहानी कला में न ज्यादा विकास हुआ है और न ह्रास, इससे यह नहीं कहा जा सकता कि उनका कहानी –साहित्य छिछला या थोथा है, बल्कि उसमें तो भावों की गहराई है, अनुभूति की तीव्रता और विचार का ठोस आधार है, उसका पाट अत्यन्त विस्तृत है, इसीलिए उसमें सभी कुछ समाहित कर लेने की क्षमता है, उसमें नवीन दिशा की प्रेरणा एवं कलागत सौन्दर्य निहित है।

(ख) यशपाल जी का उपन्यास साहित्य :—

उपन्यास के तत्वों के आधार पर यशपाल जी के उपन्यासों की समीक्षा :–

1. कथानक के आधार पर समीक्षा –

चट्टान नहीं पिघलती :–

इस उपन्यास का कथानक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर कल्पना के रंगो से रंजित होकर अत्यनत प्रभावशाली एवं ह्रदयस्पर्शी बन गया है, उपन्यास के महान कलवेर में मानव जीवन की समस्याओं के जो चित्र अंकित किये गये हैं, वे एक बारगी पाठक के नेत्रों के सम्मुख चलचित्र के सदृश्य धूम जाते है, यह भम्र हो जाता है कि ये जीते जागते सजीव चित्र है अथवा एक कलाकार की सशक्त तालिका से साहित्य के पृष्ठों में उरेहे अमिट चित्र हैं।

उपन्यास की मुख्य कथा लेखक विनोद एवं उसके पड़ोस में रहने वाली किशोरपय सरोज के सघर्ष जीवन से सम्बन्धित है, इस मुख्य कथा के साथ अन्य प्रासंगिक कथायें एवं विषय एक सूत्र में पिरोये मानकों के सदृश्य हैं उपन्यास सत्रह छोटे–2 खण्डों में विभक्त है, प्रत्येक खण्ड के लेखक ने अगले आने वाले खण्ड से बड़ी कुशलता के साथ जाड़ो है, कही भी कथानक टूटता हुआ नजर नहीं आता यशपाल जी ने उपन्यास का अन्त मार्मिक एवं ह्रदय स्पर्शी चित्रों के संयोजन द्वारा किया है।

उपन्यास का आरम्भ लेखक विनोद तथा एक प्रौढ़ महिला के संयोग से होता है, आरम्भ में नाटकीय चित्रण द्वारा यशपाल जी पाठक की सहज उत्सुकता जागृत करतें है, और फिर शैने–2 रोमांचक घटनाओं के संयोजन से कथा का विकास करते है।

सरोज हजारों मील का सफर तय करके विनोद से मिलने उसके घर आती है, परन्तु विनोद के द्वारा देर से पहचानने के कारण हताश हो जाती है वह विनोद से बहुत कुछ कहना चाहती है, विनोद भी उससे कहना चाहता है, पर अचानक मिलने पर दोनों इतने अभिभूत हो जाते है, कि कुछ

कह नहीं पाते फिर अचानक सरोज के यह पूछने पर कि घर के अन्य लोग कहाँ हैं ? विनोद धीरे से उत्तर देता है –विदेश से लौटने के बाद माँ के बहुत अधिक दबाव के कारण मैंने मनीषा नाम की लड़की से शादी कर ली, किन्तु वह लड़की अन्य किसी से प्यार करने के कारण लेखक को कुछ दिन बाद छोड़कर चली जाती है।

कथानक सहज गीत से अगसर होता है, यकायक सरोज विनोद (लेखक) को अपनी जीवन नगाथा सुनाने लगती है सात वर्ष की लम्बी अवधि के दौरान मेरा विवाह लंदन में डाक्टरी करने वाले लड़के से हो जाता है पति के साथ कुछ समय रानीखेत रहने के उपरान्त लंदन चली गई, वहाँ की दुनियाँ मेरे लिए एक दम नई थी पति के साथ सामंजस्य स्थापित न कर पाने कारण सब सुख–सुविधायें होने पर भी अकेलापन महसूस करती रही, तीन वर्ष गुजर जाने बाद माँ बाप की याद सताने लगती है तभी कुछ समय बाद ज्ञात है कि माँ इस दुनिया में नहीं है और पिताजी सन्यासी हो गये है, विनोद की भी अपनी माँ की याद आ जाती है, सरोज और विनोद के पारस्परिक दुःख की कथा एक दूसरे के ह्दय का बोझ हल्का करने में समर्थ होती है, दोनों के विगत् दिनों को सुखद याद और परिणाम में पाया अवसाद् एक दूसरे के प्रति अतिशय सहानुभूति उत्पन्न करता है। उन दिनों की स्मृतिगत घटनाओं से कथानक में रोचकता तो आ गई है, लेकिन जिन स्थलों पर यशपाल जी दार्शनिक और सिद्धान्तवादी व्याख्या के फेर में पड़ गये है, वहाँ कथा में व्यवधान आ गया है। यथा...

"सरोज, किसी जमाने में शब्द की कीमत थी आज उसे कौन पूछता है ? अब तो मूल्य ही बदल गये है, जसे देश आजाद हुआ है, लोगो की सत्ता और पैसे की भूख बढ़ गयी है, राजनीति गजब ढ़ा रही है, दिल टूट रहें हैं आतंक, हिंसा भृष्टाचार, मँहगाई, आपसी झगड़े, साम्द्रायिक विद्धेष आदि से जनता हैरान हो रही है, राज नेताओ को उसकी चिन्ता नहीं वे तो कुर्सी के पीछे पड़े हैं।"[1]

सरोज भावावेश में बहकर विनोद के घर ही रहने लगती है, विनोद सरोज को एक स्थानीय

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 36

कॉलेज में नियुक्त करा देता है सरोज अब घर का कार्य सँभालने के साथ–2 कॉलेज भी जाने लगती है दोनों के जीवन का एक समान ध्येय हो जाता है, कि नव निर्माण के लिए पुराने सड़े – गड़े अन्ध विश्वासों को तोड़ना आवश्यक है, विनोद गर्मी की छुट्टियाँ में सरोज के आग्रह पर गंगोत्री जाने का कार्यक्रम बनता है, क्योंकि गंगोत्री में सरोज के पिता आश्रम बनाकर स्वामी के रूप में रहते थे, विनोद को वहाँ उससे मिलकर एक नई सहानुभूति प्राप्त होती है।

गंगोत्री से लौटने के बाद विनोद का एक मित्र जा लन्दन में रहता था उससे मिलने के लिए आता है, यही से कथानक मोड़ लेता है मित्र अचानक लंदन में रहने वाले एक डाक्टर की चर्चा करने लगता है, विनोद को लगता है कि हो न हो यह सरोज वाले डाक्टर की ही चर्चा कर रहा है, उसक जाने के बाद विनोद मानसिक द्वन्द में उलझ जाता है वह सोचने लगता है कि सरोज के लिए क्या रास्ता निकाला जाये ।

उपन्यासकार विनोद के दृष्टिकोंण को उपयुक्त एवं उचित सिद्ध करने के लिए कथा को विस्तार प्रदान करता है, उपन्यास के आगामी पृष्ठों में कालेज का वार्षिकोत्सव, आश्रम, विनोद का डाक्टर को पत्र लिखना विदेश यात्रा आदि घटनाओं का उल्लेख किया गया है।

सरोज जैसे–जैसे अपने जीवन में गतिशील होती जा रही थी विनोद का लेखन कार्य भी प्रगति के विभिन्न आयामों को पार करता जा रहा था, तभी अचानक डाक से एक विदेशी पत्र आता है, कथानक दूसरा मोड़ लेता है, पत्र डाक्टर के द्वारा लंदन से भेजा गया था, सरोज की जीवन – यात्रा में यह पत्र उथल –पुथल मचा देता है, उन दोनों की ही पत्र में इतना उद्वेलित कर दिया था कि वे उसके बारे में बात नहीं कर पा रहे थे, विनोद ने सरोज को कुछ दिन पूर्व ही लिखकर दिया था....

"जीवन धारा जब मधुर संगीत की भाँति प्रवाहित होती हो उस समय हमारे लिए आंनदित होना बड़ा आसान है, लेकिन असली मर्द ता वह है जो सर्वनाश होने की घड़ी में मुस्करा सके ।"[1]

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 99–100

परन्तु आज परिस्थिति उल्टी हा चुकी थी, सरोज विनोद के लिए उसके घर का अभिन्न अंग बन गई थी, उसके बिना रहने की कल्पना भी उसे पीडादायक सिद्ध हो रही थी, वह (विनोद) चिन्तन में डूब जाता है कि सरोज के द्वारा लिये गये निर्णय के पीछे डाक्टर को ऐसा न लगे कि विनोद का इसमें हस्ताक्षेप है वह काफी सोंच – विचार करने के उपरान्त डा0 के पत्र का उत्तर भेज देता है।

उपन्यास के अन्तिम खण्ड में स्वयं डॉक्टर का भारत में आगमन होता है, अब कथानक का केन्द्र बिन्दु डाक्टर बन जाता है, सर्घष और द्धन्द्व की स्थिति पुनः उत्पन्न हो जाती है, विनोद के दिल में फिर खलबली मच जाती है, कि डॉक्टर उससे क्यों मिलना चाहता है? अचानक डॉक्टर एक किशोरवय महिला के साथ विनोद के घर में उपस्थित होता है परन्तु डॉक्टर द्वारा स्पष्टीकरण देने पर बात साफ हो जाती है।

"विनोद बाबू सरोज के निर्णय से मुझे थोड़ा अटपटा जरूर लगा, लेकिन सच मानिये, मुझे खुशी हुयी, आदमी होना ही चाहिए, मूल्यों की उपासना करने वाले साधक से मुझे यही आशा थी।"[1]

कथानक पूर्णता को प्राप्त कर समाप्त हो जाता है, यशपाल जी ने सामाजिक समस्या को मनोवैज्ञानिक पुट देकर, तर्क के आधार पर उन्हे हल करने का सफल प्रयास किया है, उपन्यास में विशेष उतार चढ़ाव नहीं है श्री जैन के सिद्धान्तवादी बौद्धिक आग्रह के कारण कुछ सथलों पर कथा–प्रवाह शिथिल हो जाती है, अन्य स्थानों पर नाटकीय और अप्रत्याशित घटनाओं के संयोग से कथानक प्रवाहमान और रोचक बना रहता है, इसके अतिरिक्त अनेक मार्मिक प्रसंगो की योजना ने कथानक को स्वाभाविक और पठनीय बनाने में सहायक प्रदान की है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कथानक पूर्णतया संगठित एक सूत्रात्मक अविश्रखल एवं अविरल, प्रवाहमान है, लेखक ने घटनाओं और परिस्थितियों के बीच पात्रों के व्यक्तित्व का

---

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 145

सहज विकास दिखाता है, इसीलिए कथानक अत्यन्त सजीव है, सरोज का व्यक्तित्व "चट्टान नहीं पिघलती" का सार्थक अभिव्यक्ति है।

अमृत घट :–

इस उपन्यास की कथावस्तु यर्थाथ की पृष्ठभूमि पर आधारित परन्तु सीमित है, साथ ही इसमें नाटकीय प्रंसगों का प्रायः अभाव है, श्री यशपाल जैन ने अपनी विचारधारा के आधार पर देश की वर्तमान दुखस्था को समस्या के रूप में देखने का आग्रह किया है जैसा कि उपन्यास के नाम से स्पष्ट हैं। "अमृत घट" की परिकल्पना में कथा का आरम्भ एवं इति करके जैन ने अपने विचारों को अधिक सुस्पष्ट और सुसम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है, लेखक का मानना है कि अधिकांश व्याधियों का मूल कारण सत्ता और अर्थ का वर्चस्व है, जिसने प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर में से "अमृत घट" का मुँह बन्द कर दिया है और अमृत के मुक्त प्रवाह को रोककर विकृति उत्पन्न कर दी है, अतः जब तक मानव का अंतः निर्मल नहीं होता देश का वास्तविक अभ्युदय हो ही नहीं सकता लेखक ने इसी आधार को कथानक का धरातल बनाया है।

उपन्यास की मुख्य कथा प्रोफेसर प्रमोद और एक अन्य स्त्री पात्र देवयानी के जीवन पर आधारित है, प्रमोद और देवयानी के जीवन जब तक समतल भूमि पर अग्रसर होते गये उन्हे कोई कठिनाई नहीं हुई :–

लेकिन ज्यों ही "अमृत घट" की परिकल्पना का समावेश प्रमोद के जीवन में हुआ और देवयानी ने अपने आपको साथ जोड़ा, उनके जीवन कि दिशा बदल गई, उनका जैन जाता रहा, रात दिन वे देश की दशा को सुधारने के लिए प्रयत्न करते रहे वे मानव के अन्तर को निर्मल बनाकर समाजका परिष्कार करना चाहते थे और परिष्कृत समाज के द्वारा अपने देश में रामराज्य की परिकल्पना को साकार करना चाहते थे, उसी के लिए दोनो ने अहर्निश प्रयास किया ।

उपन्यास के कथानक में प्रमोद और देवयानी दो व्यक्ति नहीं है अपितु सम्पूर्ण देश का और उसकी आत्मा का प्रतिनिधित्व करते है उनकी ऑखों में उस युग के और संस्कृति के सपने हैं जिसे भारत का स्वार्णिम युग और संस्कृति का चरम शिखर माना जाता है।

दोनो पात्र दीर्धकाल तक साथना करते हैं किन्तु अंत में पाते है, कि उनकी साधना का नतीजा नहीं निकल रहा है फिर भी वे अपने मार्ग को नहीं छोड़ते, आशा की दीप्ति – ज्योति लेकर वे निरन्तर आगे बढ़ते है लेकिन राजनीति और अर्थ का उद्दाम प्रवाह सब कुछ बहा कर ले जाता है।

उपन्यास का कथानक अन्त में स्पष्ट संकेत देता है कि प्रमोद और देवयानी हिम्मत हार कर हाथ रखकर नहीं बैठते, वे आज भी निराश नहीं हैं, आज भी निष्क्रिम नहीं है, उनका प्रयास जारी है और उस दिन तक जारी रहेगा जब तक कि उनका रामराज्य का स्वप्न चरितार्थ नहीं होता उनके भीतर रखे "अमृत घट" का मुँह नहीं खुलता और अमृत का प्रवाह आरम्भ नहीं होता, लेखक गाँधीवादी मूल्यों को कथानक में विशेष रूप से उद्घाटित करता चलता है।

उपन्यास की सम्पूर्ण कथावस्तु अवलोकन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है, कि इसकी कथावस्तु सीमित और सुनियोजित है, जहाँ तक उपन्यास की परिकल्पना का प्रश्न है उसे लेखक ने स्वयं भूमिका में स्पष्ट कर दिया है कि "अमृत घट" की परिकल्पना "ईशावास्योपनिषद" के श्लोक से मिली है, लेखक यथार्थ से दूर नहीं हटा है, उसने कथा को सरस तथा रोचक न बनाकर बल्कि समस्या मूलक बनाया है यशपाल जी ने राजनीति और अर्थ के विषय को सूक्ष्म और गहन अध्ययन के आधार पर ही प्रस्तुत किया है, इसीलिए कथानक में अविश्वसनीयता और आसम्भावना को स्थान नहीं मिला है, उदाहरण के लिए उधोगपति चेतनदास के रहन–सहन आचार विचारों का बहुत की स्वाभाविक चित्रण हुआ है।

मार्मिक ह्नदयस्पर्शीचत्रों की संयोजना के साथ–साथ यशपाल जी कथानक में मानवीय मूल्यों

की स्थापना जी कथानक में मानवीय मूल्यों की स्थापना के प्रति विशेष रूप से सजग रहे है, सम्भवतः इसक कारण समाज में आंतरिक रूप से फैली विकृतियों और दुर्भावनाओं को सुस्पष्ट रूप से प्रदर्शित करने के उपरान्त भी कथानक सशक्त और प्रभावशाली बन गया है मुख्य कथानक के साथ अन्य प्रसंग भी अपने आप में महत्वपूर्ण और सौद्दश्य है उदाहरणतः प्रमोद और देवयामी के साथ–साथ स्वामी प्रज्ञानन्द और निशान्त का प्रंसग आदि, परन्तु कहीं भी कथानक की क्रमब0ता में व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ है।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि श्री जैन के इस उपन्यास का कथानक प्रचलित उपन्यासों के कथानकों की कोटि से हटाकर स्वाभाविकता सजीवता, मौलिकता आदि गुणों को समाहित किये हुए है तथा देश के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लेखक द्वारा उद्घाटित विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः समर्थ है, कथानक में मानवीय दृष्टिकोंण और परिस्थिति बोध प्रेरित चिन्तन के आधार पर उनकी परख करने का आग्रह निहित है, श्री जैन की लेखनी पर गाँधी जी के द्वारा निर्धारित जीवन मूल्यों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

पात्र एवं चरित्र– चित्रण :–

डा0 सत्येन्द्र का कथन है कि "मानवता की सामान्य भूमि पर लेखक कल्पना की कूंची से जो रंग भरता है अव्यप्ति व अतिरंजना से बनकार सजीव पात्रों को जन्म देता है, सजीव पात्र हमारे वास्तविक जगत की प्रतिकृति होते हैं जिनके चरित्र के विकास का उपन्यासकार के द्वारा साक्षात्कार कर लेता है, और औपन्यासिक योजना के द्वारा प्रस्तुत कर देता है।"[1]

श्री यशपाल जैन ने उपन्यासों के पात्रों का चयन यर्थाथ जीवन से किया है पात्रों सजीवता उत्पन्न करने के लिए उसमें मानवीय गुणों का समावेश कराया है, आपके पात्रों का विकास स्वाभाविक रूप में यर्थाथ के धरातल पर हुआ है, इन पात्रों की क्रियायें कार्य और परिणाम श्री जैन

1. समीक्षा के सिद्धांत – डा. सत्येंद्र, पृष्ठ – 136–37

के सुधारवादी दृष्टिकोंण को प्रस्तुत करते है।

कथानक में पात्र के महत्व की दृष्टि से पात्रों को दो वर्गो में रखा जा सकता है ....

क. मुख्य पात्र

ख. गौण पात्र

क. मुख्य पात्रों पर कथा पूर्ण रूप से निर्भर करती है, उनसे कथा का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, कथानक के सारे सूत्र इन पात्रों के हाथों में होते है, उनका कथानक से मुख्य रूप से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है, ये पात्र नायक – नायिका के रूप में उपन्यास में आते है तथा फल की प्राप्ति भी उन्हीं की होती है– जैसे श्री यशपाल जैन केप्रमोद, विनोद, देवयानी, सरोज आदि पात्र ।

ख. गौण – मुख्य पात्र की श्रेष्ठता को उभार कर देखने में कथा की स्वाभाविक की रक्षा करने में एवं कथा के बिखरे बन्दुओं को जोड़ने में सहायक होते है। कभी –2 ये पात्र ऐसा काय्र कर गुजरते हैं कि उपन्यास में रोचकता का वृद्धि हो जाती है।

उपन्यासकार को कोई बात प्रासंगिक रूप में कहनी हाती है तो वह इन्हीं पात्रों के माध्यम से कह लेता है जैसे यशपाल जी के स्वामी सत्यानंद रमेश बाबू, नंदू, डा० उमेश भारद्वाज, डा० निर्मला, डा० भागवत, रामू नेता प्रेमकुमार, स्वामी प्रज्ञानंद श्रीमती प्रज्ञा जैन, निशान्त, अद्वैत जी, चेतनदास, अनुपम गुप्त आदि पात्र जो गौण होते हुए भी महत्व पूर्ण और रोचक हैं।

श्री यशपाल जैन के विशिष्ट पात्र :–

श्री यशपाल जी के विशिष्ट पात्रों के विषय में विचार करते समय साधारणतया उनके चार मुख्य पात्रों की ओर ही ध्यान जाता है, उनके अन्य पात्रों में इतनी क्षमता नहीं है कि वे पाठक का ध्याान आकर्षित कर सकें। उनके कार्य और चरित्र प्रायः इतने प्रभावशाली नहीं बन पड़े हैं कि पूरा

उपन्यास पढ़ जाने के पश्चात् भी पाठक उन्हें स्मरण रख सके अतः इन पात्रों का विवेचना भी प्रासंमिक होगी ।

पुरूष पात्र :–

<u>विनोदः</u>– विनोद एक सफल लेखक है, दूसरो के प्रति सदैव उसका मानवीय दृष्टिकोंण रहता है उसने अपने समग्र जीवन में प्रेम और कर्तव्य को प्रमुखता प्रदान की है प्रत्येक व्यक्ति परिस्थितियों का दास होता है, इससे स्वयं को भी अछूता नहीं मानता वह उपन्यास में श्री जैन की धारणाओं का वाहक है। सरोज जब जीवन संघर्ष से घबराकर उसके पास आ जाती है तब वह उसे परिस्थितियों से मुकाबला करने के लिए उत्साहित करता है यथा....

"सरोज हिम्मत रखो धीरज से काम लो जीवन उतना सुगम नहीं है, जितना वह दिखाई देता है, मव–सागर में हम सब तैर रहे हैं जो थक जो हैं वे डूब जाते है तुमने अब तक साहस बनाये रखा है। तो पराजय क्यों स्वीकार करती हो ।"[1]

वह सरोज को पुनः पति के साथ भरे पूरे जीवन में देखना चाहता है जिसके लिए भरसक प्रयत्न भी करता है, उनकी यह भावना निस्वार्थ प्रेम की घोतक हैं।

लेखक ने उसके समस्त जीवन को समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए समर्पित दर्शाया है जीवन यापन के लिए जितना अनिवार्य था उससे अधिक की कमी इस पात्र ने आकांक्षा नहीं की वास्तव में ये सभी गुण उसको विशिष्टता की श्रेणी प्रदान करते है। श्री यशपाल जैन का यह पात्र उपन्यास में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वाह करता है।

प्रमोदः–

"अमृत घट" उपन्यास का यह पात्र पूर्ण रूप से गाँधी जी का अनुयायी है यशपाल जी ने उपन्यास में इसे कालेज की प्रोफेसर के यप में अवतरित किया है जीवन मॅलयों प्रति यह पात्र

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 84

अध्यधिक संवेदनशील एवं सजग है वह मानव के अंतर को निर्मल बनाकर समाज का परिष्कार करना चाहता हे, अपने ध्येय में सफलता न प्राप्त होने पर भी हिम्मत नहीं हारता बल्कि सतत् प्रयास जारी रखता है, उसका यह दृढ़ विश्वास है, कि रात्रि के बाद अवश्य भोर आयेगी जो उसे प्रेरणा देता रहता है।

अमेरिका से आई देवयानी के मुँह से भारत की बुराईयों को सुनकर उसका भावुक मन द्रवित हो उठता है प्रमोद भारत के ऐसे स्वरूप की स्पप्न में भी कल्पना करने को तैयार नहीं होता है, विदेश जाने का अवसर प्राप्त हो जाने पर भी वहाँ उसका मन अपने देश की प्रगति कैसे हो सोचता रहता है ? अमेरिका में अनकों प्रलोमनों के दिये जाने के बावजूद वह इन सबको ठुकरा कर चला आता है और अपने देश की उन्नति के लिए अनवरत् रूप से जुटा रहता है।

यह कहना उचित होगा कि उपन्यास के इस पात्र के माध्यम से श्री जैन ने देश में व्याप्त अर्थ और सत्ता के वर्चस्व को समाप्त करने के लिए जो क्रान्ती करायी है, वह पाठक ह्नदय की सुप्त चेतना को जाग्रत करने के लिए पूर्णरूपेण समर्थ है साधारण मानवीय गुणों से अंलकृत होने पर भी यह पात्र उपन्यास में लेखक की प्रगतिशीलता या दार्शनिक मान्यताओं का ही नहीं बल्कि उसकी सामाजिक चेतना का दृढ़ प्रतीक है।

स्त्री पात्र :–

<u>**सरोजः**</u>– उपन्यास के आधार पर सरोज का जो चित्र उभर कर समाने आता है वह यह कि सरोज एक उच्च शिक्षित सुन्दर, सीधी सादी लड़की है, परन्तु जीवन में आयी विषमताओं ने उसे प्रौढ़ महिला का रूप प्रदान कर दिया है वह आरम्भिक जीवन में किसी से प्रेम करती है, परन्तु परिवार के दबाव में आकार उसका विवाह किसी अन्य व्यक्ति से हो जाता है। जिसके फलस्वरूप उसके जीवन में संघर्षमय परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है सरोज आदि से अंत तक कही भी

उपन्यासकार के हाँथ की कठपुतली नहीं बन पाती बल्कि अपने सशक्त चरित्र के आर्कषण मे उलझाकर उपन्यासकार को अपने साथ खीचें लिऐ चलती हैं वह अपने जीवन में कभी हार नहीं मानती बल्कि विपरित परिस्थितियों में भी उनका सामना करती है, अपने जीवन को नई दिशा देने के उद्देश्य से वह पति गृह त्यागकर वह विनोद के पास चली आती है, सरोज में नारी सुलभ सभी गुण विद्यमान है प्रंशसा सुनकर कोमल हो उठना दूसरों का विरोध सुनकर बिना प्रतिक्रिया शान्त रहना, फिर भी फौलादी रूप में मुकाबला करती है साहस, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा उसके व्यक्तित्व के विशिष्ट गुण है, बौद्धिक रूप से यह पात्र सतर्क रहकर आत्म – हनन के स्थान पर आत्मोत्थान को प्राथमिकता प्रदान करता है सरोज जैसी नारी के उन्नयन का चित्रण लेखक की प्रगतिशीलता का परिचायक है।

देवयानी :–

"अमृत घट" उपन्यास में देवयानी अपना विशिष्ट स्थान रखती है श्री यशपाल जैन ने उसे आधुनिक व्यवहारिक मानवीय दृष्टिकोंण के आधार पर प्रगतिशील चेतना के प्रतीक के रूप में चित्रित है वह उच्च शिक्षित होने के साथ साथ अंग्रेजी की कुशल वक्ता है अपने भविष्य को सँवारने के उद्देश्य से अमेरिका तक चली जाती है परन्तु वहाँ के लोगो के जीवन को देखकर वृतप्रभ हो उठती है, उसे लगता है कि ....

"यहाँ तो सभी अकेले है सब अपना–अपना जीवन जीते है कमाई है, पर पैसा कमाना ही तो जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता।"[1]

यह विचार उसकी लाचारी और व्यथा को प्रदर्शित करते हैं वह प्रत्येक काय्र को निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत कर लेना चाहती है और परिणाम की तत्काल अभिलाषा भी रखती है जो उसकी उत्कट महत्वाकांक्षाओं की दुष्टि करता है।

---

1. अमत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 13

प्रमोद के साथ देवयानी के जुड़ने पर उसके जीवन की दिशा में परिवर्तन आ जाता है, अब वह हर पल देश की उन्नति के लिए प्रत्यनशील रहती है अपने अनेकों प्रयासों के द्वारा प्रमोद के कार्यो की गतिप्रदान करती है नारी शक्ति को संगठित करके विभिन्न स्थलों पर मनुष्यों की कुत्सित मनोवृत्यियों के विरूद्ध अभियानों का नेतृत्व भी करती है जिसमें उसे आंशिक सफलता की भी प्राप्ति होती है।

निर्विहन रूप से कहा है, कि उपन्यासकार का यह पात्र सामाजिक उत्थान के लिए सदैव कृत संकल्पित और कटिबद्ध नजर आता है, सम्भवतः यशपाल जी ने ऐसे चरित्र का उत्तरोत्तर विकास मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण के आधार पर किया है, वह चाहता है, कि नारी परिस्थितियों से संघर्ष करें, उनका सामना करे, जब तक क्षमता हो सामर्थ्य हो तब तक सक्रिय रहे और समाज के कुत्सित घिनौने रूप के सम्मुख पराजित न होकर उसमें कुछ कर दिखाने का साहस हो इस प्रकार श्री जैन ने देवयानी की आदर्श नारी के रूप में सृष्टि करके उसकी आत्मा को आधुनिक मानवीय भावनाओ से सिवत कर दिया है।

चित्रण प्रणाली :–

कल्पना और वास्तविकता के मिश्रण से लेखक पात्रों को गढ़ लेता है परन्तु उसके पात्र किस सीमा तक पाठक के ह्वदय को स्पर्श कर पाते है ? कितने स्वाभाविक और जीवंत हो सके है ? यह उसकी चित्रण – विधि पर निर्भर होता है, श्री यशपाल जैन ने अपने उपन्यासों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही चित्रण विधियों का प्रयोग किया है, कही पर श्री जैन ने स्वयं उपन्यास में उपस्थित होकर पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को उदघाटित किया है और कही पर परिस्थितियों के बीच पात्र का चरित्र स्वयं उद्घाटित किया है और कही पर परिस्थितियों के बीच पात्र का चरित्र स्वयं उदघटित और विकसित होता चलता है।

प्रत्यक्ष चरित्र विधि :–

यशपाल जी के उपन्यासों में प्रत्यक्ष चित्रण–विधि का भी प्रयोग हुआ है। सरोज के ह्रदय में उत्पन्न अन्तर्द्धन्द्व की भावना से उसके चरित्र में आता हुआ परिवर्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है...

"शायद संघर्ष अनिवार्य है, वह सोचती, अशन्ति में से ही शान्ति की प्रेरणा स्फुरित होती है विनाश निर्माण की प्रेरणा को बल देता है तो क्या जीवन के लिए अशान्ति और विनाश अनिवार्य है, नहीं, जीवन की समसरता के लिए मानसिक समता की आराधना आवश्यक है।"[1]

इसी प्रकार प्रमोद के चरित्र का उद्घाटन लेखक स्वयं करता है ....

"कालेज खुल गये लेकिन प्रमोद का मन अब नौकरी से उचट रहा था, इतने दिन पढ़ाकर उसने क्या पाया था ? समय गुजर गया था और बैंक में पैसा बढ़ गया था जीवन का एक –2 क्षण मूल्यवान है उसे सार्थक करने पर ही जीवन की सार्थकता है, यह कभी उसके दिमाग में नहीं आया भी, अतः उसे एक–एक क्षण मूल्यवान लगने लगा तो जीवन का जब तक का क्रम उसे खटकने लगा उसक अन्तर्द्धन्द्व जोरों पर चलने लगा ।"[2]

परोक्ष चित्रण विधि :–

इस पद्धति के अंतर्गत उपन्यासकार दो या तीन पात्रों के संवादो या क्रिया कलापों के द्वारा किसी अन्य या अप्रस्तुत पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालता है इस पद्धति के द्वारा किसी अन्य या अप्रस्तुत पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालता है, इस पद्धति के द्वारा पात्र के वे गुणावगुण भी पाठक के सामने आ जाते है जिन्हे वह किन्हीं कारणों से स्पष्ट नहीं कह पाता "चट्टान नहीं पिघलती" उपन्यास में सरोज के विषय में विनोद और उनके मित्र रमेश बाबू का यह संवाद दर्शनीय है...

"नहीं" विनोद बाबू, मित्र ने कहा, "न उसको सताया और न कुछ किया मुझे तो ऐसा लगता है कि इसमें सारा दोष लड़की का है, शहर की लड़कियाँ कुछ और ही तरह की होती है" ।

---

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 66
2. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 39–40

"कैसी ?"

"अरे यही कि या तो उनकी जिन्दगी में कोई चक्कर – वक्कर होता है या फिर मॉ – बाप का लाड़ – प्यार उन्हें बिगाड़ देता है।"[1]

"अमृत घट" उपन्यास में देवयानी के विषय में डा0 भागवत और प्रमोद का संवाद भी परोक्ष चित्रण विधि का दर्शाता है यथा...

"अरे हाँ मै तो यह पूँछना भूल ही गया कि डा0 प्रकाश गुप्ता की लड़की का क्या हुआ ?"

प्रमोद को अच्छा लगा कि विषय बदल गया डा0 भागवत के चेहरे की कातरता और स्वर की विवशता उसे बड़ा त्रास दे रही थी, उसने कहा..................

- आप देवयानी की पूछ रहे हैं ?

"ह – आं ।"

वह अमरीका लौट गयी उसके पत्र की राह देख रहा हूँ । आजकल में आ जाना चाहिए ।"

"बड़ी भली लड़की है।"

डा0 भागवत ने मधुर स्वर में कहा "बेचारी इतनी दूर अकेली पड़ी है।"[2]

निर्ष्कषतया यशपाल जी ने जिस रूप में चरित्रों का विकास किया और उनकी परिणति की है, वह सामाजिक यर्थाथ पर आधारित प्रगतिवादी दृष्टिकोंण की परिपृण्ट करती है उनका पात्र यर्थाथ की वास्तविकताओं से बलपूर्वक टक्कर लेता हुआ प्रतीत होता है, परन्तु अंत में क्या कर जायेगा इसका सही अनुमान लगाना कठिन हो जायेगा, वह ऐसा कार्य कर बैठता है, कि पाठक आश्चर्य चकित हो जाता है, पात्र के चरित्र की परिणित अप्रत्याशित होती है, चौका देनी वाली होती है, लेकिन असम्भव नहीं यथा "चट्टान नहीं पिघलती" मे विनोद और सरोज का अपने आपको

1. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 52–53
2. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 55–56

भारमुक्त महसूस करना प्रमोद, का "अमृत घट" उपन्यास के अन्त तक भी मानवीय मूल्यों की प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहना ।

संवाद :–

संवाद अथवा कथोपकथन की सफलता तभी सम्भव जब वह आवश्यक गुणों से युक्त हो उपयोगिता की दृष्टि से कथोपकथन में उपयुक्तता, अनुकूलता सम्बद्धता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, उद्देश्यपूर्णता का होना आवश्यक है श्री यशपाल जैन के दोनो उपन्यासों के कथोपकथन में बडी सजीवता और स्वाभाविकता है, लेकिन "अमृत घट" उपन्यास में प्रायः नाटकीयता का अभाव है जहाँ –2 कथोपकथन लम्बे है, वहाँ–वहाँ बोझीले हो गये है जहाँ – कही पात्र बोलता है वहाँ उसकी मनः स्थिति के अनुसार उसकी भाव–भंगिमा का चित्रण, यशपाल जी करते चले जाते है, इससे वार्तालाप सप्रमाण हो उठता है, "चट्टान नहीं पिघलती" में सरोज और विनोद सरस और मार्मिक संवाद का एक उदाहरण प्रस्तुत है......................

"मेरा मन तो कुछ भी खानें को नहीं है" सरोज ने अनमनी स्थिति में कहा ।

"पर मेरा मन तो है" वह हँसते हुए बोला ।

क्यों, क्या मुझे भी खाने नहीं दोगो ?"

सरोज के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई बोली "मुझे तो बनीला पसंद है आपको ?"

"जो तुम्हें पसंद है, वही मुझे पंसद है "फिर शरारती लहजे में उसने कहा "वैसे पुरूषों की पंसद स्त्रियों कुछ भिन्न होती है तो अपने लिए स्ट्राबेरी लाऊँगा ।"

विनोद बाबू आप लेखक है और लेखक की उड़ान बड़ी ऊची होती है आप ठीक कहते है कि स्त्री – पुरूषों की रूचियाँ भिन्न होती हैं लेकिन यह जगत तो भिन्नता पर नहीं, अभिन्नता पर

चलता है, सूरज चाँद, सितारे सब भिन्न है किन्तु वे एक सूत्र में बंधे है, यदि वह सूत्र टूट जाये तो सब कुद बिखर जायेगा । कथा की गतिशीलता बनाये रखने वाले संवाद जिसके माध्यम से पात्र के विगत् जीवन की घटनाओं का विवरण मिलता है, "चट्टान नहीं पिघलती" मैं सरोज बातचीत में ही विनोद को अपने विगत् जीवन की कहानी सुना देती है, डा0 उमेश भारद्वाज सरोज और विनोद के संवाद में पिरो दिया है इससे मुख्य कथा गतिशील रहती हे ओर सरोज के जीवन ओर प्रगतिशी विचारो से विनोद और पाठक अवगत हो जाते है।

यशपाल जी ने उपन्यासो में मुख्य कथा के साथ–साथ निश्चित उद्देश्य से कुछ संवादो की योजना की है, इन संवादो में कथा प्रवाह शिथिल हो जाती है और ये केवल लेखक के विचारो के ही व्यंजक प्रतीत होते है जैसे – 2 "अमृत घट" में एक स्थल पर नेता जी और प्रमोद का संवाद[1] सामाजिक व्यवस्था पर ही प्रकाश डालने के लिए नियोजित किया गया है ....

"अरे साहब, मुद्रास्फीति तो इधर काफी कम हुई है" नेता जी बीच में ही बोल उठे ।

"अरे मँहगाई ?" प्रमोद ने उनसे प्रश्न किया ।

नेता जी ने तपाक से कहा, "मँहगाई । आप तो इतने विद्वान है आपको पता नहीं मँहगाई एक नहीं अनेको कारणों से होती है" प्रमोद ने बड़ी संजीदगी से उत्तर दिया :

गाँधी जी ने कहा था देयर इज एनफ फॉर नीड, बट नॉट फॉर ग्रीड (आवश्यकता की पूर्ति के लिए हमारे पास काफी है, लेकिन लालच की भरपाई करने के लिए नहीं) आज मुठ्ठी भर लोगों ने देश के सारे साधन अपने हाँथ में केन्द्रित कर लिए है। सत्ता उसमें सहायक हो रही है इसी भष्टाचार से हत्याएँ चोरी डकैती आदि क़ा बोल बाला हो रहा है। अब सहन के बाहर हो गया है।

"तब क्या करेंगे ?" नेताजी ने तैश में आकर पूँछा ।

प्रमोद ने उसी लहजे में कहा, "आपके इस सवाल का जवाब समय देगा कहावत है –"दुनियाँ

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 121

में देर हो सकती है अन्धेर नहीं अब तो एक ही रास्ता है अन्दर के मैल को दूर करना होगा, राजनीति अर्थ नीति, समाज नीति, धर्मनीति, सबको मूल्यपरक बनाना होगा ।

"अमृत घट" के एक अन्य निम्नलिखित संवाद[1] में श्री जैन ने गाँधी जी की नीति को बड़ी कुशलता के साथ पिरो दिया है यथा....

"बस यही मेरा आपसे मतभेद है" स्वामी जी ने कहा "जिसका जो काम होता है वही कर सकता है गाँधी ने जो काम किया था उसे गाँधी जी ने भारत को मूल्य दिये, भारत को ही क्यों, सारी दुनियां बड़ी अजीब है।"

प्रमोद ने कहा, "स्वामी जी गाँधी जी महापुरूष थे । मैं उनसे अपनी तुलना नहीं करता, किन्तु यह कहना चाहता हूँ कि गाँधी जी ने क्या उत्तर दिया था ? उन्होने कहा था...

"मैं पहले अपने घर को साफ कर लूँ" जिस धरती पर हम जन्में हैं और जिस मिट्टी में हम पले है उसका भी तो हम पर अधिकार है।"

इस प्रकार के उदाहरण "अमृत घट" में अनेक स्थालों पर उपलब्ध है कही –2 पर राजनैतिक स्थिति से अवगत कराने में ये संवाद अपनी विशिष्ट महत्व रखते है लेकिन जहाँ पर इन संवादों ने राजनैतिक आलोचना –प्रत्यालोचना या सिद्धान्तवादी व्याख्या अधिक देर तक चलने लगती है वहाँ के पाठक का ध्यान आकर्षित कर लेने के कुद देरी पश्चात् नीरस लगने लगते है।

यशपाल जी के अनेक संवादो में सजीवता के साथ–साथ नाटकीयता के भी दर्शन किये जा सकते हैं। "चट्टान नहीं पिघलती" उपन्यास का यह सवांद[2] अत्यन्त अजीब और नाटकीय है...

"विनोद ने कहा, "सरोज तुम मुझे गलत मत समझना, मेरी बड़ी इच्छा है, कि तुम अपने जीवन के टूटे सत्र को फिर से जोड़ लो वह तुम्हारे भविष्य के लिए हितकर होगा" ।

"मानूं कि आपके भविष्य के लिए भी" ? सरोज की आवाज भीग गई ।

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 73–74
2. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 104

"नहीं सरोज ऐसी बाज नहीं है विनोद का चेहरा दयनीय हो उठा "मेरे जीवन में बड़े उतार – चढाव आये है मैं उनका आदी हो गया हूँ" " तो मेरे चले जाने में आपको कोई अन्तर नहीं पडेगा ? सरोज ने काँपती आवाज में कहा।

सांराशतः यह कहा जा सकता है कि श्री जैन के उपन्यासों में कथा – प्रवाह को अक्षुण्ण रखने या कथा को विविध मोड़ देने वाले संवादो का इतना आधिक्त नहीं है, जितना कि विचारों के व्यजंक या कथा – प्रवाह को शिथिल करने वाले संवादो का इस प्रकार के संवादों को सृष्टि करके यशपाल जी ने कथा शिल्प को और संवाद दोनों के ही स्वाभाविक सौदर्न्य को आधात पहुँचाया है इसके विपरीत चरित्रोघाटन के हेतु जिन संवादो के ही स्वाभाविक सौदर्न्य को आघात पहुँचाया है इसके विपरीत चरित्रोघाटन के हेतु जिन संवादों की योजना उपन्यासकार ने की है उसमें उसे सफलता मिली है इनमें परस्पर संगीत और सम्बद्धता है।

यदि श्री यशपाल जैन संवादों को आवश्यकता से अधिक लम्बे और सिद्धान्त प्रधान नहीं बनते तो सम्भवतः उनमें नीरसता नहीं आती लेकिन इसका एक कारण है – श्री जैन की मानवीय मूल्यों के प्रति दृढ़ आस्था, राजनीति एवं समाज में व्याप्त विकृतियों के प्रति उनका आक्रोश जो समय–समय पर किसी ने किसी रूप में उपन्यासों में फूटा पड़ा है जो बातें प्रकट रूप में स्वयं नहीं कहना चाहते उन्हें पात्रों के मुख से कहलवा कर वे अपना उद्देश्य पूर्ण कर लेते है वाद विवाद और विचाराभिव्यक्ति प्रधान लम्बे कथोपकथनों की अपेक्षा अन्य संवाद उत्तम है उन सवादों में ऐसा प्रतीत होता है, मानो पाठक ओर में खड़ा होकर दो व्यक्तियों की बातचीत सुन रहा है।

देश काल एवं वातावरण:–

एमिला जोला का कथन है कि "मानव का समाज से पृथक कोई अस्तित्व नहीं है, वह सामाजिक वातावरण में ही जीता है और तक उपन्यास कार का उससे सम्बन्ध है, यह वातावरण निरन्तर उसकी घटनाओं का रूप परिवर्तित करता है।"[1]

---

1. "Man is not alone but exist in society, in a social environment, and so far as we novelists are concerned this environment is constantly modifying events." - Emila Zola (Novalists on the novel : Mirial allott, Page - 303)

देशकाल काल और वातावरण को उपन्यास कला का मुख्य तत्व माना जा सकता है यह तत्व उपन्यास के कथानक तथा पात्रों दोनो के लिए समान रूप से सीमाएँ निर्धारत करता है, जिनका अतिक्रमण करने से कृति अशक्त बन जाने का भय रहता है।

श्री यशपाल जैन के उपन्यासों में समाज का व्यापक और पूर्ण चित्र मिलता है, उन्होने देश में सत्ता और अर्थ के वैषम्य असंतुलन कदाचार, हिंसा और वर्तमान समय में उठे प्रश्नों की ज्वलंतता, इन सबके वर्णन में वातावरण की सृण्टि कर दी है, उपन्यासकार ने इसे ऐसे ढंग से उद्घाटित किया है कि इसका चित्र पाठक के सामने आ जाता है, अन्ध – विश्वास, ईष्या द्वेष, भ्रष्टाचार तथा सामाजिक जीवन के व्याप्त समस्त बुराईयाँ तथा अच्छाईयों भी विस्तार के साथ मिलती है बाहर के देशों – उदाहरण के लिए अमेरिका और भारत में जो अन्तर नैतिक दृष्टि से है, उसकी ओर भी लेखक ने स्पष्ट संकेत किया है...

"अमेरिका के अपने अनुभव सुनाते हुए उसने (प्रमोद) बताया कि वहाँ भी प्रगति का मुख्य कारण लोगो का पुरूषार्थ है, वे खूब परिश्रम करते है और छोटे –2 कामों में सच्चाई और ईमानदारी का व्यवहार करते है, इसके बाद अपने देश की स्थिति पर प्रकाश डाला, बताया कि अन्तर की गन्दगी को दूर किया जाये ।"[1]

उपयुक्त वातावरण सृष्टि के लिए वर्णनात्मक चित्र आवश्यकता से अधिक लम्बे नहीं होना चाहिए, इससे कथा – प्रवाह में व्यवधान आ जाता है और चित्र की महत्ता कम हो जाती है, काीा के बीच में प्राकृतिक वर्णन की योजना करते समय श्री जैन ने संक्षिप्तता पर विशेष रूप से ध्याान दिया है लेखक के उपन्यासो में कभी–2 दो–चार पंक्तियों में ही सम्पूर्ण वातावरण मुखर हो उठता है, जैसे – "अमृत घट" में....

" कई दिन से बड़े जोर की गर्मी पड़ रही थी आज अचानक मेघाच्छन्न हो गया, गर्मी से

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 88

क्लान्त लोगों ने आकाश की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा थोड़ी देर मे वर्षा आरम्भ हो गई, लोगों ने अनुभव किया मानो उनकी पुकार इंद्र देवता ने अपने प्रेम की वर्षा की हो ।"[1]

इसी प्रकार का एक अन्य् उदाहरण "चट्टान नहीं पिघलती" में भी स्पष्ट संकेत देता है...

"नगाधिराज हिमालय उसकी हरी – भरी उपत्काएं सधन वन, कल –कल तिनादिनी भागीरथी, पक्षियों का कलरव, साधु संतों के आश्रम सबने मन को मोह लिया ।"[2]

राजनीति यशपाल जी के जीवन का अंग नहीं है परन्तु फिर ीी उपन्यासकार की सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि ने वर्तमान राजनीतिक स्वरूप को भी बड़े स्पष्ट ढंग से उपन्यास में वर्णित किया है उसका मानना है कि सारे अनर्थ की जड़ यही है "अमृत घट" में राजनेताओं के संदर्भ में उपन्यासकार पात्र प्रमोद के माध्यम से कहता है....

"यह बातचीत एक राजनेता नहीं सभी राज नेताओ की वर्तमान मनोवृत्ति की घोतक है उनके लिए अपना स्वार्थ प्रमुख है, देश गौण है आजादी के बाद स्वार्थ की अमरबेल बड़ी तेजी से देश पर छा गई है।"[3]

लेखक ने राजनेताओं को यथा तथ्य रूप में चित्रित करने का प्रत्यन किया है, यह चित्रण वातावरण को गम्भीर और यर्थाथ बनाये रखता है।

"उपयुर्क्त आधारों पर हम कह सकते है, कि यशपाल जी को वातावरण रचना में पर्याप्त सफलता मिली है क्योंकि उनके उपन्यासों में वातावरण प्रधान नहीं हैं, बल्कि वह किसी न किसी रूप में पात्र और कथानक के लिए सहायक है, प्रकृति के मनोरम चित्र (जैसे कि चट्टान नहीं पिघलती में हिमालय का चित्र) कथा में बाधक नहीं होते बल्कि वे कथानक के मध्य घुलमिल गये है अनुभव के आधार पर की गई वातावरण सृष्टि जितनी प्रभावोत्पादक बनी है, उससे अधिक हृदय गाही कल्पंना और ईशावास्योपनिषद के श्लोकों के आधार पर निर्मित वातावरण है।

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 157
2. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 41
3. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 125

उद्देश्य :-

श्री यशपाल जैन ने जीवन की समस्याओं और उनके समाधनों को उपन्यासों के मध्य प्रस्तुत किया है, उन्होंने यर्थाथ के बीच आदर्श को झाँककर देखा है एक से एक अच्छे आर्दश स्थापित करना चाहते है। अतः उनके सभी उपन्यास सोद!देश्य एवं साभिप्रमाण हे ऐसा साहित्य जिससे मानव का कल्याण न हो दृष्टि में व्यर्थ है, उन्होंने केवल मनोरंजन के लिए अपने उपन्यास सहहित्य का प्रणयन नहीं किया वे वास्तविकताओं को अपने उपन्यास साहित्य में व्यक्त करने के पक्ष में रहे है किन्तु जीवन के आदर्शो की दिशा में सदैव जागरूक रहे हैं।

उनके उपन्यासों के कुछ गौण पात्र मानवीय दुर्बलताओं से ग्रस्त तो रहे हैं किन्तु अन्त उनका ह्रदय परिवर्तन हुआ है (जैसे – "अमृत घट" उपन्यास में उधागपति चेतन दास का) और वे मानव सस्कृति के उच्च आदर्शो की ओर उन्मुख हुए है इस प्रकार मानव चरित्र की व्याख्या करने के साथ–2 जीवन के उच्च आदर्शो की स्थापना उनका परम उद्देश्य रहा है अपने काव्य में शिवत्व का जो उद्देश्य महाकवि तुलसी की दृण्टि में रहा था, जन–कल्याण का वही पावन उद्देश्य श्री जैन के उपन्यासों में भी सप्रमाण हैं।

अपने साहित्य – सृजन विषयक के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं लिखा है कि....

"साहित्य का मुख्य ध्येय मानव–जीवन का उत्कर्ष और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना होना चाहिए जो साहित्य ज्ञान देता है उसकी मै अवमानना नहीं करता उसका भी महत्व है पर वह एकांगी है संसार की सम्पूर्ण उपलब्धियाँ मानव के लिए है, मानव उनके लिए नहीं है।"

सम्भवतः यही कारण है कि श्री जैन के उपन्यासों में स्वदेश के उद्धार का सामाजिक जीवन में श्रेष्ठ आदर्शो की स्थापना का आर्थिक विषमता के निवारण और नैतिक मूल्यों के जीवन में ग्रहण करने का मुख्य उद्देश्य रहा है, जिसकी पूर्ति के उनकी सफल एवं समक्ष लेखनी सतत् प्रयत्न शील है।

निष्कर्ष :–

उपन्यास के तत्वों के आधार पर यशपाल जी के उपन्यासों का विवेचन करने के अनुसार कहा जा सकता है कि लेखक मानवीय मूल्यों का उपासक है और अपने उपन्यासों में इन्हीं मूल्यों का प्रतिपादन किया हैं, भारत की मौजूदा हालत पर ऐसे उपन्यास सम्भवतः बहुत कम प्रकाशित हुए है लेखक ने देश के अधिसंढय स्त्री पुरूषों के असंतोष को वाणी देने और अवांछनीय स्थिति को बदलने के लिए राष्ट्रव्यापी चेतनाधाग्रत करने का सफल प्रयास इन उपन्यासों में किया है।

"अमृत घट" उपन्यास को लेखक की कल्पना की उड़ान नहीं माना जा सकता है लेकिन लेखक के पैर देश की धरती पर जमें रहते है जहाँ कहीं भी उसने कल्पना शक्ति की उड़ान भरने की छूट दी है वहाँ भी अपने पैरों को धरती से उखड़ने नहीं दिया है।

श्री यशपाल जैन यदि चाहते तो उपन्यासों को अधिकाधिक सरस तथा रोचक बना सकते थे लेकिन शायद ऐसा उन्होने जानबूझकर नहीं किया वह इन्हे समस्या मूलक ही बनाया चाहते थे अतः उपन्यासों के ताने बाने को समस्याओं तक ही सीमित रखा है। श्री जैन ने जिन समस्याओं के आधार पर उपन्यास रचना करके पाठक को कटु सत्यों से अवगत कराने का प्रयास किया है, उनके चरित्र इसी धरातल के है, यशपाल जी किसी असाधारण चरित्र की सृष्टि तो नहीं कर पायें है लेकिन उनकी प्रगतिशील जीवन दृष्टि ने उनके विशिष्ट पात्रों को बहुत ऊपर उठा दिया है जो साधारण मानव के लिए कठिन तोजकर है लेकिन असम्भव नहीं ।

सारांशतः कहा जा सकता है कि लेखक के उपन्यास मूल्य पूरक एवं विचारोत्तेजक है वह मनुष्य की चेतना का झकझोरते है और उसे कृत संकल्प होकर मानवोचित कर्तव्य –पथ पर अग्रसर होने के लिए प्ररित करते है संख्या की दृष्टि से श्री जैन के द्वारा अभी तक मात्र दो ही उपन्यासों का सृजन किया गया है, जिनसे हिन्दी के उपन्यास–साहित्य में उल्लेखनीय वृद्धि तो नहीं हो सकी है, परन्तु उपन्यास साहित्य को नवीन दिशा की अवश्य प्राप्ति हुई है।

अध्याय चतुर्थ

यशपाल जी का संस्मरण साहित्य एवं जीवनी साहित्य

1. **संस्मरण** :– क. राजनीतिक व्यक्तियों के सस्मरण

   ख. साहित्य कारों के संस्मरण,

   ग. वैज्ञानिकों के संस्मरण,

   घ. संत– महात्माओं के सस्मरण,

   ग. सामाजिक कार्यकर्ताओं के संस्मरण।

2. **जीवनी** :– कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यशपाल कृत जीवनी साहित्य का विवेचन ।

यशपाल जी का संस्मरण साहित्य :–

मनुष्य अपनी जीवन यात्रा के बीच उसंख्य वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थलों के सम्पर्क में आता है, इनमें से कुछ का क्षणिक सम्पर्क भी उसके मन पर अमिट छाप छोड़ जाता है, यह छाप शान्ति के क्षणों में स्मृत होने पर जब मन स्पल पर जब मनस्पटल पर विवधि बिम्बों का निर्माण करने लगती है, तभी संस्मरण– साहित्य की सृष्टि होती है।

श्री यशपाल जैन को भी जीवन – पथ में कुछ ऐसे महान व्यक्ति मिले, जिन्होने उनके कोमल एवं भावुक ह्रदय का झकझोर डाला उन्हीं की मधुर करूण स्मृतियाँ उनके संस्मरण साहित्य में संकलित है। लेखक की अब तक विभिन्न संस्मरणों पर आधारित छः पुस्तको को प्रकाशन हो चुका है....

1. दिव्य जीवन की झांकियाँ – 1965
2. सेतु निर्माता – 1975
3. राष्ट्र की विभूतियाँ – 1977
4. आलोक की रेखाएं – 1977
5. समन्वय सेतु (–)
6. आधुनिक भारत की विभूतियाँ

इन पुस्तको में लेखक ने उन महान विभूतियों का सजीव एवं प्राणवान चित्रण करते हुए, उनसे सम्बन्धित परिस्थितियों का सुन्दर अंकन प्रस्तुत किया है।

यशपाल जी के सस्मरणों में मानवीय करूणा एवं प्रेम की भावना सर्वत्र व्याप्त है पर पात्रों की विविधता के आधार पर वर्ण्य विषय में अनेक रूपता आ गई है। लेखक की संस्मरण लेखन की

अपनी शिल्पगत विशेषताएं है आपके द्वारा अधिकाशतः व्यक्ति प्रधान संस्मरणों का सृजन किया है।

अध्ययन की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए यशपाल जी के संस्मरण साहित्य को निम्न वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

क. राजनीतिक व्यक्तियों के संस्मरण।

ख. साहित्यकारों के संस्मरण।

ग. वैज्ञानिकों के संस्मरण।

घ. संत महात्माओं के संस्मरण।

ड. सामाजिक कार्यकर्ताओं के संस्मरण।

(क) राजनीतिक व्यक्तियों के संस्मरण :–

लेखक के अनेक राजनीतिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, जिनमें से कुछ का क्षणिक सम्पर्क ही उसने मानस पटल पर अमिट प्रभाव छोड़ गया, कालान्तर में लेखक की ये स्वकीय अनुभूतियाँ अपने रोचक स्वरूप के लिए हुए राजनीतिक व्यक्तियों के संस्मरणों के रूप में प्रकट हुई, यद्यपि राजनीति में यशपाल जी की कोई अभिरूचि नहीं रही है, लेकिन राजनीतिक युगबोध अत्यन्त संयत रूप से उनके संस्मरणों में उमरा है, साथ ही प्रसगानुकूल राजनीतिक परिवेश का भी उल्लेख किया गया है।

श्री यशपाल जैन के द्वारा विभिन्न राजनीतिक व्यक्तियों के संस्मरणों का सृजन किया गया है, जिनके अंतर्गत उन्होने पं. जवाहर लाल नेहरू, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, मालवीय जी, सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् गाँधी जी, सरोजनी नायडू, सरदार पटेल और रफी अहमद किदवई इत्यादि के प्रभावशाली व्यक्तित्व कुशल नेतृत्व क्षमता एवं देश की आजादी के प्रति उनके द्वारा किये योगदान

का चित्रण प्रस्तुत किया है, लेकिन ने उनसे जुड़ी अपनी अनुभूतियों को भी रोचकता एवं कलात्मकता के साथ उभारने का प्रयास किया है, कुछ राजनीतिक व्यक्तियों से सम्बन्धित सस्मरणों के अंश दृण्टष्य है............

जवाहर लाल नहेरू (कुछ रंग बिंरगे चित्र) :–

लेखक की नेहरू जी से प्रथम भेंट अपने अध्ययन के समय आनन्द भवन में एक प्रार्थना सभा के दौरान हुई, जहाँ वह नेहरू जी प्रभावशाली व्यक्तिव से अत्यधिक प्रभावित हुआ, लेखक ने नेहरू जी के व्यक्तिव को अपने शब्दों के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है...

इतने में अन्दर से एक नौजवान आया, रंग गोरा चिट्टा, चेहरा अत्यन्त भव्य तेज से दीप्त उसने घुटनों के नीचे तक का खेत खादी कुरता और खादी की बारीक धोती पहन रखी थी ऊपर से जाकेट।"[1]

नेहरू जी की स्पष्ट वादिता के विषय में भी लेखक ने यथार्थता के साथ इंगित किया है...

"उन्होंने प्रश्न भरी मुद्रा में मेरी ओर देखा, पूँछा कौन सी क्लास में पढ़ते हो ? मैनें कहा, लॉ (कानून) की पहली साल में।"

"अच्छा, लॉ किसलिए पढ़ रहे हो ?

"इस सवाल पर मैं सकपका – सा गया विद्याथियों में आखिर कितने होते है, जो सोचते हो कि वे किसलिए पढ़ते हैं ? संकोच में उतर दिया, अभी कुछ सोचा नहीं है। पढाई करने के बाद जो होगा देखा जायेगा।"

इतना कहना था कि पंडित जी ने फाइल मेज पर रख दी, बोले, "तुम भी अजीब हो । पढ़ रहे हो और कहते हो कि यह सोचा ही नहीं कि क्या करोगे ?बिन मकसद पढ़ने से क्या फायदा?"[2]

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (कुछ रंग–बिरंगे चित्र) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 461
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (कुछ रंग–बिरंगे चित्र) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 462

तत्कालीन समय में इस घटना का लेखक के अंतर्मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। कई स्थलों पर श्री जैन ने नेहरू जी की दूसरो के प्रति उदारता एवं मानवीय करूणा की भावना का भी उल्लेख किया है यथा...

तत्कालीन समय मे ऐसे एक दो नहीं, सैकड़ो व्यक्ति आये, संकटग्रस्त लोगों के लिए उनकी करूणा सदा जागृत रहती है, और उनके घर का दरवाजा उनके लिए सदा खुला रहता था।"[1]

पंडित जी बच्चों को बेहद प्यार करते थे और उनके बीच अपने का भूल जाया करते है। इस कथन की पृष्टि के लिए यशपाल जी की स्वयं की रोचक अनुभूति दर्शनीय है...

एक बार उनकी वर्षगॉठ पर बहुत से लोग मूर्ति भवन में इकट्वे हुए बच्चे भी बड़ी संख्या में आये तीन मूर्ति भवन की मौत पर भेजें लगवादी थी, जिन पर प्लेटों में बर्फी रखी थी पंडित जी एक ओर खड़े हो गये और बच्चे कतार में उनके हांथ से बर्फी लेकर आगे बढ़ने लगे जब लाइन कहीं टूट जाती तो पंडित जी बर्फी का एक टुकड़ा अपने मुँह में डाल लेते, मैं पास खड़ा उस मधुर दृश्य को देखता रहा थोड़ी देर में बच्चों की पंक्ति समाप्त हो गयी और पंडित जी वहाँ से हटकर दूसरी तरफ जाने लगे, तभी अचानक एक लड़का वहाँ आ गया, यह सोचकर कि अगर पंडित जी के हाँथ से उसे बर्फी नहीं मिली तो उस बेचारे बालक को बड़ा दुःख होगा, मैने चिल्लाकर कहा, "पंडित जी "पंडित जी ने मुड़कर देखा और लौट आये, उस लड़के को बर्फी दी और चलते –2 एक टुकड़ा फिर अपने मुँह में डाल लिया। उनके उस बाल स्वभाव को देखकर वह क्षण अविस्मरणीय बन गया।"[2]

लेखक दो दशक से अधिक समय तक नेहरू जी के साथ रहा, इन वर्षो के मध्य अनेकों प्रासंगिक घटनायें घटी, जिनको आधार बनाकर लेखक स्पष्ट करते हुए कहता है, कि....

"पंडित जी अत्यन्त प्राणवान व्यक्ति थे सब चीजों में रस लेते थे और इन्सानियत उनमें कूटकर भरी थी बड़ी बांत यह थी, कि वह एक क्षण में गुस्से से तमत या सकते थे लेकिन दूसरे ही क्षण

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (कुछ रंग–बिरंगे चित्र) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 462
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (कुछ रंग–बिरंगे चित्र) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 466

खिल–खिलाकर हँस सकते थे इससे स्पष्ट है कि उनका ह्रदय बहुत ही निश्छल था।"[1]

देशरत्न – डा0 राजेन्द्र प्रसाद :–

यशपाल जी ने जिस कुशलता के साथ संस्मरण के प्रारम्भ में डा0 राजेन्द्र कुशलता के साथ संस्मरण के प्रारम्भ में डा0 राजेन्द्र प्रसाद के त्याग भय जीवन, कुशाग्र बुद्धि एवं निस्वार्थ देशभक्ति आदि गुणों पर प्रकाश डाला है वह दर्शनीय है....

"वस्तुतः जीवन की सादगी और विचारों की उच्चता के उनमें बड़ी ही समन्वय त्याग तो उनके स्वभाव में कूटकूट कर भरा था और उनके प्रेम तथा करूणा की मंदाकिनी हर घड़ी प्रभावित रहती थी ऐसा व्यक्ति प्रथम राष्ट्रपति न बनता तो अचरज होता।"[2]

देश के विभिन्न स्वतन्त्रता आन्दोलनों मे राजेन्द्र बाबू के योगदान को स्पष्ट करते हुए लेखक का कथन है...

"स्वतन्त्रता की लड़ाई के दिनों में छोटे बड़े जितने आन्दोलन चले, उन सब में उन्होंने भाग लिया, जेल गये, जेल की यातनायें सही, लेंकिन जिस प्रकार सोना तपकर कंचन बनता है। उसी प्रकार प्रत्येक परीक्षा उनका जीवन ऊँचाई की ओर बढ़ता गया उनमें सेवा की लगन थी और के प्रति गहन निष्ठा थी।"[3]

लेखक के जीवन में आये, एक बार सन् पचास में विश्व के शान्तिवादियों का एक सम्मेलन शान्ति निकेतन और सेवाग्राम में आयोजित हुआ, जिसमें राजेन्द्र बाबू भी उपस्थित हुए, वह जहाँ ठहरे थे, लेखक ने वहाँ जाकर अपने मासिक पत्र "जीवन साहित्य" के लिए लेख दे देने का अनुरोध किया, जहाँ उन्हे लेख की प्राप्ति हुई ही साथ ही राजेन्द्र बाबू के निश्छल स्वभाव का दर्शन भी हुआ दृष्टण्य है...

मैं समय पर वहाँ पहुँच गया वह काम में व्यस्त थे, मैं पास जा बैठा वह बोलते गये मैं लिखता

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (कुछ रंग–बिरंगे चित्र) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 466
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 56
3. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 60

गया, प्रन्द्रह मिनट में उन्होने बड़ा सुन्दर लेख लिखवा दिया।

मैने कहा, "इसे एक बार पढ़ लीजिए।" अत्यन्त सरलता के साथ वह बोले मुझे क्या पढ़ना है, आप जो सुधार या घटा –बढ़ी करना चाहें, कर लीजिऐ"।

उनकी निराभिमानता के आगे मेरा सिर झुक गया पर साथ ही मेरा लोभ बढ़ गया मैनें कहा, "बाबू जी, मुझे आपका एक चित्र भी चाहिए"। मेरे पास कैमरा देखकर बोले, "खींच लीजिए"।

कमरें में उजाला नहीं था मैनें कहा, "यहाँ चित्र ठीक नहीं आयेगा बाहर अच्छी रोशनी है।"

"तो बाहर चलिये" इतना कहकर वह उठ खडे हुये ।"

संस्मरण में लेखक ने उपर्युक्त घटना का वर्णन तटसथता के साथ प्रस्तुत किया है। श्री जैन ने राजेन्द्र बाबू के द्वारा विभिन्न अवसरों पर प्रकट किय गये उद्‌गारों को भी संस्मरण में यथास्थान सजीवता के साथ व्यक्त किया है, इसका एक उदाहरण दृष्टण्य है....

युद्धों का मूल कारण यह है कि कुछ व्यक्तियो और राष्ट्रों की इच्छाओं और महत्वाकाक्षाओं से टकराती है अमर और सफल शान्ति उसी दिशा में सुनिश्चित हो सकती है जबकि राष्ट्र का निर्माण करने वाले व्यक्ति अपनी इन महत्वाकाक्षाओं को अपने आप सीमित और संयत कर ले।"[1]

संस्मरण में राजेन्द्र बाबू के व्यक्तिव एवं कृतित्व के विषय में लेखक का स्पष्ट मत रहा है, कि उनका व्यक्तित्व जितना सरल और तरक था, कृतित्व उतना प्रखर था, मानसिक संतुलन बेजोड़ होने के कारण कैसी भी जटिल या संकट पूर्ण परिस्थिति से राजेन्द्र बाबू कभी हैरान नहीं होते थे बल्कि साहस से मुकाबाला किया करते थे, गाँधी जी के प्रति उनकी असीन श्रद्धा थी इसके सम्बन्ध में भी यशपाल जी ने यत्र–तत्र उल्लेख किया है।

महान दार्शनिक – सर्वपल्ली राधाकृष्णनन् :–

विश्व के महान दार्शनिकों में गिने जाने वाले भारतीय तत्ववेत्ता डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के

---

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 61

व्यक्तित्व का सफल चित्रण करते हुए श्री जैन ने उनकी विनोदवृत्ति को संस्मरण के माध्यम से इंगित कराने का प्रयास किया है यथा...

"हजारों निगाहें मंच पर केन्द्रित हो गयी थोड़ी देर में देखते क्या हैं कि एक दुबला – पतला व्यक्ति धीरे– धीरे मंच की सीढ़ियों पर चढ़ रहा था वह पतलून और बन्द गले का कोट पहने था और सिर पर मद्रासी पण्डितों की – सी पगड़ी थी हाथ – पैर बहुत ही पतले, पर चेहरा अपेक्षाकृ त भारी उनके मंच पर पहँचते ही श्रीमती नायडू खड़ी हो गयी उनके लिए कुर्सी खाली कर दी, वह व्यक्ति एक साथ बैठ नहीं गया, वह माइक के सामने गया और बोला, "मित्रों मैं आप सबका आभारी हूँ, पर यह कह देना चाहता हूँ कि मैं श्रीमती नायडू जैसी महिला के स्थान की पूर्ति के योग्य नहीं हूँ" उनके इस कथन में विनम्रता तो थी ही, श्रीमती नायडू के भारी – भरकम शरीर को लेकर थोड़ा विनोद भी था सब लोग हंस पड़े।"[1]

लेखक ने राधाकृष्णनन् जी की विद्धता एवं दार्शनिकता के विषय में नपे तुले शब्दों द्वारा प्रभावी ढंग से उल्लेख किया है।

"राधाकृष्णन उत्कृष्ट विद्वान थे, और माने हुए शिक्षा शास्त्री थे विश्व के इने – गिने वक्ताओं में गिने जाते थे और ऊँचे दर्शे के दार्शनिक थे लेकिन इन सबसे भी अधिक उनकी विशेषता यह थी कि वह एक महान ऋषि थे, उन्होने भारत की प्राचीन सन्त परम्परा को कायम रखा उनका भाषण सुन लिजिए, उनकी रचना पढ़ लीजिये उनसे बातचीत कर लीजिए आपका अनुभव होगा कि आप किसी किसी ऋषि से साक्षात्कार कर रहे हैं, उन्होंने धर्म – ग्रन्थों, दर्शन – शास्त्रों आदि का इतना सूक्ष्म अध्ययन किया कि वे उनके जीवन के अभिन्न अंग बन गये थे।"[2]

उपर्युक्त कथन के सम्बन्ध में श्री जैन का यह भी मानना है कि उनका यह ज्ञान उनकी यह विद्धता कोरी शास्त्रीय नहीं थी, अपितु उन्होने अपने जीवन में भी इसे उतारा था।

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 118
2. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 119

संभवतः लेखक ने संस्मरण में रोचकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही राधाकृष्णन जी की एक शिक्षाप्रद कहानी के प्रंसग का सहारा लिया है। एक अन्य स्थल पर इस मनीषी के जीवन–दर्शन को उसी के शब्दों में श्री जैन के द्वारा यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया गया है...

"केवल शुद्ध ह्रदयवाला ही ईश्वर से और मनुष्य से प्रेम कर सकता है। सहनशीलता युक्त प्रेम अध्यात्मिकता का एक चमत्कार है, इसमें यद्यपि दूसरों के अन्याय हमें अपनें कन्धों पर झेलने पड़ते हैं, तथापि उससे एक ऐसे आनन्द का अनुभव होता है, जो शुद्ध स्वार्थमय सुख की अपेक्षा अधिक वास्तविक और गहरा होता है, ऐसे अवसरों पर ही ज्ञात होता है कि संसार में इस ज्ञान से बढ़कर मधुर अन्य कुछ नहीं कि हम किसी दूसरे को क्षण भर सुख दे सके इस भावना से बढ़कर मूल्यवान, अन्य कुछ नहीं कि हमने किसी दूसरे के दुःख में बँटाया, अहंकार रहित गर्वशून्य भलाई करने के भी गर्व से गर्वशून्य – पूर्ण दयालुता ही धर्मका सर्वोच्च रूप है।"[1]

राधाकृष्णन् जी बड़े गम्भीर एवं स्पष्ट वक्ता थे, इस सम्बन्ध में यशपाल जी द्वारा विवेचित इस प्रंसग का उल्लेख करना अत्यधिक समीचीन होगा ।

"एक बार हम लोग उन्हे एक समारोह में आमंत्रित करने गये उन्होंने पूछा, "मुझे क्या करना है ?

"मैने कहा अंहिसा के विषय में बोलना हैं। बड़े गम्भीर होकर उन्होंने कहा, "व्हेयर इज नॉन वाइलेंस हुई"? (अहिंसा आज है कहा)

"आप यही बात कह दीजिए ।" मैने कहा ।

बोले, "मेरी सुनता कौन है।"[2]

लेखक का संस्मरण के अंतर्गत स्पष्ट कथन है कि ह्रदय की स्पन्दनशीलता, पर दुःखकातरता ही है, जो मानक़ को ऊँचा बनाती है, राधाकृष्णन् जी ने यह दुलर्भ लेक्चर के पद में प्रारम्भ करके भारत के राष्ट्रपति के गौरवशाली पद को सुंशोभित किया ।

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 120
2. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 122

ख. साहित्यकारों के संस्मरण :–

यशपाल जी ने इस सस्मंरणों में साहित्यकारें की मार्मिक जीवन धारा को शब्द बद्व किया है, उनका उद्देश्य रहा है कि जीवन अर्थाभाव विडम्बना की अग्नि में झुलस गया, जो समाज के लिए एक चुनौती है, तात्पर्य यह है कि इनके ये संस्मरण जीवन का खुला दस्तावेज है उन्होंने समाज तथा उसकी परम्परागत रूढ़ियों को चित्रित कर सर्वत्र मानव तावाद की प्रतिष्ठा करने का प्रयत्न किया है।

साहित्य परिवेश को स्पष्ट करते हुए श्री जैन ने समकालीन साहित्य सम्मेलनों कवि गोष्ठियों आदि का निरूपण बड़े स्वाभाविक ढ़ग से किया है। यशपाल जी ने निराला, हजारी प्रसाद आदि स्वदेशी साहित्यकारो के अतिरिक्त विदेशी साहित्यकारों इलिया रथचीन कोडोम्हाइंग एवं घाकोव इत्यादि के बाहय ओर आन्तरिक व्यक्तित्व का मार्मिक यथार्थ अंकन करते हुये उनके कृतित्व को अपने संस्मरणों में उभारा है, इन साहित्यकारों के व्यक्तित्व में उन्होंने करूणा का ऐसा समावेश किया है कि वे अविस्मरणीय बन गये हैं यथा...

मानव और कवि निराला :–

श्री जैन के इस संस्मरण के नायक महाकवि एवं लेखक निराला है संस्मरण के प्रारम्भिक भाग में लेखक ने निराला जी के कृतित्व पर प्रकाश डाला है, तथा बाद में अंतिम भाग में उनके व्यक्तित्व की सुस्पष्ट सुन्दर अभिव्यक्ति की है लेखक का मानना है कि इस महान साहित्यकार के दर्शन कर लेने अथवा उसके कृतित्व का अध्येयन कर लेने मात्र से अन्तर्मन पर जो अमिट प्रभाव पड़ता है वह कदापि भुलाया नहीं जा सकता लेखक के शब्दों में....

"जिन्होंने हिन्दी के मूर्धन्य कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" के लम्बे – चौड़े शरीर उन्नत ललाट दीप्त नेत्र और मुखमण्डल की गम्भरिता का देख है वे सहज ही उनकी छवि की मूल नहीं

सकते और जिन्होने अपनी रचनाओं को विशेषकर उनकी कविताओं को पढ़ा है, वे उनकी लेखनी के प्रभाव से मन को मुक्त नहीं कर सकते।"[1]

लेखक ने अपनी लेखनी को कहीं तो "निराला" जी की अभावग्रस्त स्थिति पर केन्द्रित किया है कही पर लेखन कला के भौतिक चिन्तन को दर्शाया है...

"भाव निराला जी के लिए आत्मा थे, भाषा परिधान जिस प्रकार जीवन में वह अपने परिधान के सम्बन्ध में सजग नहीं रह उसी प्रकार अपनी रचनाओं में भी उनका ध्यान भावों पर केन्द्रित रहा।"[2]

"निराला" जी के सरल व्यक्तित्व सादा जीवन और उसके बीच पनपने वाली जीवन दर्शन की चिन्तता सभी ने श्री को स्मृति बिम्ब प्रदान किये एक स्थान पर लेखक ने महादेवी जी से सम्बन्धित भावपूर्ण घटना का उल्लेख कर संस्मरण में रोचकता उत्पन्न करने का सफल प्रयास किया है यशपाल जी ने "निराला" जी के अन्तर्गत के विद्रोह और बर्हिजीवन की अभाव गयी विसंगति की सजीव झाँकी जिस कुशलता से प्रस्तुत की है संभ्भवतः अन्यत्र दुलर्भ है अंत में श्री जैन ने "निराला" जी के योगदान को कुशलता से परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया है।

"निराला जी आज हमारे बीच नहीं है। पर उनका साहित्य और उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत है, उनके द्वारा प्रज्जवलित ज्योति कभी बुझेगी नहीं और उससे साहित्य समाश और राष्ट्र को स्फूर्ति मिलती रहेगी।"[3]

संस्मरण में कुछ स्थलों पर लेखक स्वकीय धारणाओं और मान्यताओं को न चाहते हुए भी इंगित करा गया है, जो लेखक के जीवन दर्शन को परिलक्षित करती है।

सरस्वती के वरद पुत्र – हजारी प्रसाद द्विवेदी :–

हिन्दी साहित्यकारों मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अग्रगण्य हैं वे उच्चकोटि के निबन्धकार ही नहीं, चिंतक शोधकर्ता आलोचक एवं उपन्यासकार भी है, उन्होंने जीवन पर्यन्त साहित्य साधना

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 85
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 86
3. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 90

करके हिन्दी साहित्य को अत्यन्त समृद्धशाली बनाया है, लेखक की द्विवेदी जी से प्रथम भेंट सन् 1936 में दिल्ली आयोजित "त्रिद्विवसीय हिन्दी परिषद" में हुई थी जहाँ वह उसमें भाग लेने "शक्ति निकेतन" से पधारे थे तत्कालीन परिस्थितयों में इस घटना ने लेखक के मन पर विशेष प्रभाव छोड़ा था सम्भवत उसी के फलस्वरूप लेखक ने हजारी प्रसाद जी के प्रति अपने आकर्षण को संस्मरण में उद्घाटित किया है................

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के प्रति मेरे मन में विशेष आकर्षण पैदा हुआ उसके दो मुख्य कारण थे पहला यह कि वह शान्ति निकेतन से आये थे "शान्ति निकेतन" का साहित्य संस्कृति शिक्षा और कला का महान तीर्थ मानता था उसका कल्पना करने और उस कल्पना को भूर्त रूप देने वाले रवीन्द्र नाथ टैगोर (गुरूदेव) के व्यक्तित्व की मेरे मन पर गहरी छाप थी दूसरा कारण था उनका उन्मुक्त हँसी ।"[1]

श्री जैन ने हजारी जी के वाहय व्यक्तित्व को तो स्पष्ट किया ही है एवं उनक आन्तरिक जीवन को भी संस्मरण में उभारा है उनके अनुसार, हजारी जी का जीवन बहुत ही संयमित और प्रेरणादायी था उनके निकट आने वाले को सदा इस बात का अनुभव होता था कि वह पहले से अधिक परिष्कृत और अधिक बड़ा होकर लौट रहा है, लेखक जब बिना बताये हजारी जी के घर पहुँच जाता है तो वहॉ उनके रहन–सहन, खान–पान में उद्भुत सादगी और आचार विचार की सात्विकता से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाता है।

आचार्य जी के साहित्य संवर्द्धन एवं विशिष्ट पदों पर रहकर उनके द्वारा किये गये सतत् योगदान को यशपाल जी ने विस्तार से उल्लिखित किया है श्री जैन का मानना है हिन्दी के शीर्ष स्थान पर पहुँच जानें पर भी उनमें कोई अन्तर नहीं आया, वे जैसे थे, वैसे ही रहे।

कई स्थलों पर यशपाल जी ने हजारी जी एवं स्वयं के मध्य हुये हास – परिहास को भी

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 124

इंगित किया है लेखक के यह पूँछने पर वहाँ हाँथ तो पहुँच नहीं सकता, परस्तुकें कैसे निकालते होगे ? प्रत्युत्तर में हजारी जी का कथन विचारणीय है.....

"किताबें निकालने की जरूरत क्या है ? हिन्दी में किताबे कितने लोग पढ़ते है ? फिर एक बात और भी है हिन्दी में मुक्त किताबें ले जाने वालों की संख्या कम नहीं है उधर से किताबे लेने की किसी की हिम्मत नहीं होगी।"

शान्ति निकेतन से काशी तक की लम्बी जीवन यात्रा में हजारी ने बड़े उतार –चढ़ाव देखे थे, जिनमें से कुछ घटनायें लेखक के मन पर संवेदनात्मक रूप से अंकित हो गई थी जिन्हे श्री जैन ने बिना किसी बाहय रंगो के स्वकीय अनुभूतियों के प्रकाश में रेखांकित किया है।

वर्तमान युग के यथार्थ पर प्रकाश डालते हुये लेखक ने हजारी जी की मान्यता को उन्हीं के शब्दों में अभिव्यक्ति किया है....

"जमाना बदल रहा है अनेक वृक्षों और लताओं ने समझौता किया है, कितने ही मैदान में आ बसे लताओं ने समझौता किया है, कितने ही मैदान में आ बसे है, लेकिन देवदास है कि नीचे नहीं उतरा, समझौते के रास्ते नहीं गया और उसने अपनी खानदानी चाल नहीं छोड़ी ।"[1]

इस प्रकार लेखक ने हजारी जी के जीवन की गहराईयों में झाँकते हुए उनसे जुड़ी अपनी अनुभूतियों का संस्मरण के माध्यम से सुन्दर परिचय दिया है।

वर्मी साधक की –कीडाम्हाइंग :–

श्री यशपाल जैन ने विभिन्न देशों का भ्रमण किया है जहाँ उनकी अनेको ऐसे साहित्यकारों से भेंट हुई जिनका साहित्य अभिवृद्धि में विशेष योगदान रहा था, रंगून के एक वयोवृद्ध वर्मी साहित्यकार कोडाम्हांइग से एक भेंट, लेखक के लिए चिर–स्मरणीय बन गई और संस्मरण का रूप लेकर अवतीर्ण हुई ।

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 125

संस्मरण में श्री जैन ने कोडोम्हांइग के रहन–सहन को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता था कि वहाँ मामूली हैसियत के लोग रहते थे एक लेखक का मत है, प्रथम परिचय होने पर यशपाल जी ने उनके अद्‌गत व्यक्तित्व को अपने शब्दों के माध्यम से कुछ इस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान की है...

"वृद्धावस्था ने उन्हें पूरी तरह आक्रान्त कर रखा था आकृति में वह गढ़वाली जैसे लगते थे चेहरे पर सफेद मूँछे सिर पर बड़े – बड़े खिचड़ी बाल आते ही उन्होने हमारा अभिवादन किया।"[1]

लगभग 28 वर्ष की अवस्था मे कोडोम्हांइग ने लेखक कार्य प्रारम्भ कर दिया था शुरू में वे गद्य –पद्य दोनों में लिखते थे परन्तु बाद में जन सामान्य तक पहुँचने के लिए उन्हें गद्य अधिक शक्तिशाली माध्यम लगा लेखक ने संस्मरण के अंतर्गत कोडो के द्वारा विरचित साहित्य के उद्‌देश्य की ओर इंगित कराते हुए स्पष्ट किया है कि उनकी रचनाओं ने अनेको लेखकों, कवियों तथा उपन्यासकारों को लोक हितकारी साहित्य सृजन की प्रेरणा दी थी उनकी मूल कृति "तखिनतीका" के सन्दर्भ में यशपाल जी ने व्यक्त किया है कि ...

"तखिनतीका" में दासता की तीव्र निन्दा करते हुए राष्ट्र के जागरण तथा स्वातन्त्र्य के लिए प्रत्यनशील आहवान किया गया था, साथ ही राष्ट्र के कर्णधारों के दायित्वों एवं कर्तव्य का निर्देशन करते हुए विदेशी सत्ता की भर्त्सना की गई थी।"[2]

श्री जैन ने स्थान –स्थान पर इस महान बर्मी साहित्यकार द्वारा जो शान्ति स्थापित करने के लिए अथक प्रयास किया तथा इसके परिणाम स्वरूप उन्हे जिन पुरस्कारों से विभूषित किया गया, से सम्बन्धित घटनाओं का चित्रण बड़ी रोचकता एवं कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है लेखक को इसमें सन्देह नहीं कि बर्मी साहित्य को ऊँचे स्तर पर ले जाने में उन्होंने (कोडो) अपनी विशेष देन दी थी ।

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 130
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 96

लेखक ने अतीत की कुछ घटनाओं को....

"कही–कहीं पर प्रश्नोत्तर शैली के रूप में संस्मरण में प्रस्तुत किया है जैसे – लेखक के द्वारा यह पूँछने पर कि आप नये लेखको को प्रेरणा देने के लिए क्या कर रहे है? कोडो का स्पष्ट उत्तर था...

मिलने पर उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।[1]

एक अन्य स्थान पर अपने देश में सत्ता के लिए पारस्परिक प्रतिद्वन्द्विता को समाप्त करने के विषय में, लेखक ने कोडो के मार्मिक शब्दों का निम्न प्रकार से उद्घाटित किया है....

"मै वृद्ध हो चला हूँ, मृत्यु सन्निकट हूँ यदि मुझे शांति से मरने देना चाहते हो तो महायुद्ध बन्द करो।"[2]

श्री जैन द्वारा संस्मरण में स्वकीय अनुभूतियों का उल्लेख करने के साथ – साथ इस बर्मी साधक के सर्वांगींण आन्तरिक व्यक्तित्व और उनकी विश्व प्रेम मूलक मानव धर्म मे आस्था को व्यक्त करने में पूर्णरूपेण सफलता प्राप्त हुई है प्रस्तुत संस्मरण में उल्लिखित घटनायें सत्य की प्रतीति हैं। जो अपने यर्थाथ स्वरूप में समीप होने को दर्शाती है।

इलिया के तपोवन में –इलिया ग्रिगोरीविच एहरनबुर्ग :–

लेखक का यह संस्मरण अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार "इलिया" पर आधारित है संस्मरण में यशपाल जी ने "इलिया" के साहित्यिक योगदान को कुशलता के साथ उद्घटित किया है, श्री जैन का स्पष्ट कथन है कि द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी को पराजित करने में इस महान साहित्यकार की लेखनी ने विशिष्ठ भूमिका निभायी थी, तत्कालीन परिथितियों में उनके जो लेख "रेड स्टार" पत्र में छपते थे, वह रूसियों एवं लाल सेना में निरन्तर उत्साह उत्पन्न किया करते थे।

---

1. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 97
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 98

"इलिया" के घर पहुँचने से पूर्व, मार्ग में आये विभिन्न मनोहारी दृश्यों एवं सामारिक महत्व रखने वाले स्थलों जैसे इस्त्रां एवं गिरजाघर, लकड़ी से निर्मित भवन एवं मेरोजोव आदि का वर्णन लेखक ने यथार्थता एवं रोचकता के साथ संस्मरण में प्रस्तुत किया है, इस्त्रां के मार्ग के विषय में लेखक का कथन है कि.....

इस्त्रां का मार्ग बड़ा मनोरम था साफ सुधरी सड़क दोनो ओर दूर–दूर तक हरियाली ही हरियाली दिखायी देती है और ज्यों ज्यों इस्त्रां निकट आता गया, ऊँचे –2 सधन वृक्षों ने वहाँ के वायुमण्डल को बहुत ही लुभावना बना दिया।"[1]

लेखक जब "इलिया" को अपने सम्मुख पाता है, तो उसे कुछ पल के लिए भ्रम हो जाता है कि कही वह बंगला के विख्यात लेखक शरत् के सामने तो नहीं खड़ा उनकी वाहयकृति के विषय में श्री जैन ने स्पष्ट किया है ....

"सामान्य सी पोशाक, दुबली – पतली देह उभरी हुयी निश्छल आँखे होठों पर मुस्कान सिर पर लम्बे स्वेत केश यह थी "इलिया" की वाहय आकृति।"[2]

"इलिया" के सौम्य एवं उनकी पाश्दर्शी निश्छलता से भी लेखक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता, लेखक ने पौधों से "इलिया" के विशिष्ट लगाव को, शब्द चित्रों के माध्यम से स्वीकृति प्रदान की है।

यशपाल जी ने "इलिया" की प्रमुख विशेष रूचियों और इनके प्रति उनकी स्वयं की धारणाओं को बिना किसी कृत्रिम वातावरण प्रदान किये यर्थाथ रूप में प्रस्तुत किया है कई स्थालों पर लेखक ने "इलिया" और स्वयं के मध्य हुए वार्तावरण को प्रश्नोत्तर रूप में अंकित किया है, यह अंकन "इलिया" के आंतरिक भावों का स्वाभाविक विश्लेषण है। भारत के प्रति "इलिया" के दृष्टिकोंण को लेखक ने निम्न शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है, यथा...

---

1. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 58
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 59

"मैनें चीन जापान, यूरोप उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका का भ्रमण किया है संसार के इतने देशों के भ्रमण के बाद भी भारत का भ्रमण करने पर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं एक नई दुनियाँ में आ गया, वहाँ पर मैने कई आश्चर्यजनक वस्तुयें देखी।"[1]

"इलियाँ" की पैनी दृष्टि ने जो कुछ भारत – भ्रमण के समय दृष्टिगत किया था, उसे लेखक ने अपनी स्वानुभूति के साथ क्रमवद्ध ढंग से संस्मरण में उतारा है अन्त में श्री जैन ने अभिभूत "इलिया" के द्वारा कहे गये शब्दों को अपनी लेखनी के माध्यम से सुन्दर अभिव्यति प्रदान की है, यथा...

"हिन्दुस्तान में मुझे हर जगह मनुष्यता के दर्शन हुए उसकी पत्थर की मूर्तियों में हिन्दुस्तानियों के सरल जीवन में उनके आसुओं और मुस्कराहट में एक इंसान के दर्शन होते है ?"[2]

यशपाल जी ने निजी अनुभूतियों के आधार पर जो चित्र दिये है वे अत्यन्त सजीव तथा प्राणवान हैं और पाठक के मन पर उनकी गहरी छाप पड़े बिना नहीं रहती, "इलिया" की गहरी सम्वेदनशीलता और भारत एवं भारतीयता के प्रति उनकी उसीम निष्ठा को श्री जैन ने बड़े आत्मीय भाव से संस्मरण में परिलक्षित कराया है।

ग. वैज्ञानिकों के संस्मण :–

यशपाल जी के द्वारा मात्र एक वैज्ञानिक संस्मरण का सृजन किया गया है, जिससे उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेता सर चन्द्रशेखर वेंकटरमन के प्रभावशाली व्यक्तित्व और विज्ञान के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये चिरस्मरणीय योगदान का चित्रण किया है, इस महान विज्ञान वेत्ता के साथ लेखक को कुछ क्षण व्यतीत करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ था, इन अविस्मरणीय एवं महत्वपूर्ण क्षणों को श्री जैन ने बड़ी आत्मीयता और स्वच्छन्दता के साथ इस संस्मरण में प्रस्तुत किया है।

---

1. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 63
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 70

किरणों के जादूगर :– सर चन्द्रशेखर वेंकटरमण :–

श्री यशपाल जैन ने इस संस्मरण का प्रारम्भ बड़े ही चमत्कारपूर्ण ढंग से किया है, जिसके कारण संस्मरण के प्रारम्भ में ही रोचकता उत्पन्न हो गई है, इस निम्नलिखित प्रसंग से यही भी सिद्ध होता है कि लेखक का संस्मरण के नायक से प्रत्यक्ष साक्षात्कार हुआ है, उन्होने लिखा है....

"युवकोचित चपलता से बाहर आये और धारा प्रवाह अंग्रेजी में बोले, "आइ नो यू हैव कम विदाउट परमीशन , नेवर मांइड. डौंट टेल एनीबड़ी आई हैव आनली फिफटीन मिनट्स एट माई डिस्पोजल" (मै जानता हूँ आप लोग बिना आज्ञा के अन्दर आये है कोई बात नहीं है किसी से कहना मत देखो, मेरे पास कुल पन्द्रह मिनट है) वह एक साँस में कह गये, यही थे विश्वविख्यात विज्ञानवेत्ता सर चन्द्रशेखर वेंकटरमन।"[1]

यशपाल जी ने इस महान विश्रूति के वाहय व्यक्तित्व के अंकन में उनकी वेशभूखा का सजीव वर्णन किया है। सर चन्द्रशेखर वेंकटरमन की वैशभूषा बताते हुए लिखा है।

"सामान्य –सा कोट पतलून, मामूलीबूट दक्षिणी पगड़ी, उस वेशभूषा को देखकर यह अनुमान लगाना कहाँ सम्भव था कि वह असामान्य व्यक्ति है पर जैसे ही हम उस भवन में प्रविष्ट हुए, हमने पाया कि उस संस्थान को जो गौरव प्राप्त हुआ है, वह स्वाभाविक हैं।"[2]

लेखक ने रमन जी के सम्पूर्ण को प्रदर्शित करने के लिए उनके अन्त और वाहय व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है वाहय व्यक्तित्व को सम्बन्ध में उन्होंने यह भी लिखा है कि रमन भारत वर्ष के उन वैज्ञानिकों मे से थे जिन्होने विश्व का नोबेल पुरस्कार प्राप्त कर भारत का गौरव बढ़ाया था, श्री जैन ने रमन द्वारा स्थापित "रमन इन्स्ट्रीट्यूट" की विकास यात्रा का परिचय कराते हुए उनके द्वारा किये गये अविष्कारों का उल्लेख किया है।

एक स्थल पर अन्तःकरण का उद्घाटन कराते हुए लेखक ने रमन जी के शब्दों को उद्घृत किया है..

---

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 53
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 35

हमारे देश में नोबुल पुरस्कार पाने वाले दो व्यक्ति है उनमें अब एक में ही रह गया हूँ, इसी से सारी मुसीबत है।"[1]

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है, कि रमन जी आत्म स्वाभिमानी व्यक्ति थे रमन जी ने यशपाल जी की होली को पन्द्रह दिये थे, इससे स्पष्ट होता है कि वे समय के मूल्य को जानते थ और समय का सदुपयोग करते थे। श्री जैन के द्वारा इस संस्मरण में निष्पक्ष दृष्ठिकोंण अपनाया गया है, लेखक द्वारा यह पूँछने पर कि आपका चित्र खीचने की इच्छा है उत्तर के लिए उन्होने रमन जी के शब्दों को उद्घत किया है....

चित्र ।" उन्होने अबोध बालक भाँति मुस्कराते हुए कहा, "नहीं जी, इस फटे कोट में चित्र खींचोगे ? क्यों, दुनियाँ को दिखाओं गे कि मैं फटा हुआ कोट पहनता हूँ, लेकिन कोई बात नहीं तुम्हारी इच्छा है तो जरूर खींच लों।"[2]

संस्मरण के अन्त में लेखक का मानना है कि रमन की वैज्ञानिक उपलब्धियों निःसन्देह अत्यन्त महत्वपूर्ण थी लेकिन उनका व्यक्तित्व उन उपलब्धियों से कहीं अधिक महान था ।

घ. संत महात्माओं के संस्मरण :–

इन संस्मरणों में श्री जैन ने अतीत की धूमिल रेखाओं की उज्जबल आलोक प्रदान किया है लेखक ने एक ओर संत – महात्माओं की आध्यात्मिक विचार धार, विश्व बन्धुत्व एवं लोक कल्याण की भावना का अंकन किया है, तो वही दूसरी तरफ इन महान विभूतियों के प्रभावशाली व्यक्तिव रहन–सहन तथा उनके इर्द–गिर्द छाये धार्मिक परिवेश का सफल चित्रण किया है। इन दोनो पक्षों का उल्लेख करने से संस्मरणों में जीवन्तता उत्पन्न हो गयी है।

"निर्मोही का मोह"[3] संस्मरण में अन्ध विश्वास और रूढ़ियों के प्रति लेखक का व्यंग्य यर्थाथ का बोध कराने के पूर्ण सक्षम है, लेखक ने तटस्थ भाव रखते हुए – विनोबा बाबा मुक्तानंद स्वामी

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 53
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 57
3. दिव्य जीवन की झाँकियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 101

मस्त राम जी, चाट्टियार तुलसी मेहेर जी इत्यादि का सम्बन्धित संस्मरणों मे नायक रूप में प्रस्तुत किया है कुछ उल्लेखनीय संस्मरणों का परिचय निम्न प्रकार से है...

कृतयुगी –बिनोबा :–

इस संस्मरण में श्री जैन की रचना शैली का पूर्ण परिचय मिल जाता है, लेखक ने विनोबा जी की सीधी – साधी दिनचर्या, आचरण सम्बन्धी नियमों एवं उनकी अर्न्तमुखी दृष्टि इत्यादि का बड़ी बारीकी से चित्रण किया है इसके उपरान्त विनोबा जी के द्वारा चलाये गये भूदान आन्दोलन तथा गाँधी जी के सान्निथय में लोक कल्याण के लिए किये गये कार्यों को अत्यधिक कुशलता के साथ संस्मरण में प्रस्तुत किया है, लेखक भूदान आन्दोलन के प्रारम्भिक वर्षों मे अनेकों बार पग यात्रा में विनोबा जी के साथ रहा और कई सर्वोदय सम्मेलनों में भी साथ ही सम्मिलित हुआ था अतः इस दौरान उसे विनोबा जी के ईश्वर पर अटूट विश्वास प्रेम में उनकी अविचलन श्रद्धा को अत्यधिक समीप से देखने का अवसर भी प्राप्त हुआ, इन प्रारम्भिक वर्षों मे उनके द्वारा किये गये योगदान को स्पष्ट करने के लिए हमें लेखक के शब्दों की ओर देख लेना उचित होगा....

उन्होने देश का कोई मकाना नहीं छोड़ा जहाँ जाकर अलख न जगाई हो गर्मी जाड़े वर्षा किसी भी मौसम में उनकी यात्रा नहीं रूकी, गंगा की पतली सी धारा व्यापक बनती गयी।

लेखक जब इस महान चिंतक से भेंट करने के लिए पवनार (वर्धा) में आश्रम पहुँचता है, तो वहाँ इस महान तपस्वी के व्यक्तित्व से अभिभूत हुऐ बिना नहीं रह पाता है, लेखक का कथन है कि....

"उनका शरीर यथापूर्व था पर दाढ़ी मूँछे नहीं थी, कई दिन तक हजामत न बनाने पर जैसे बाल बढ़ जाते है वैसे ही उनके बाल बढ़े थे, कान उनके जवाब दे गये थे । पर उनकी भाव–भंगिमा से प्रतीत होता था कि उनके चैतन्य में कोई अन्तर नहीं पड़ा बहुत चिल्लाकर बोलने पर शायद सुन पाते थे उनकी वैसी मुस्कराहट पहले से बढ़ गयी थी ।"

आश्रम के रमणीय वातावरण के अन्तर्गत विष्णु सहसान का पाठ भरत राम के मन्दिर की पूजा अर्चना एवं विनोबा जी के द्वारा प्रशकर्ताओं के उत्तर देने की प्रक्रिया, जिसमें दो कापियों "उस्माकम्" एवं "उस्माकम्" का प्रयोग किया जाता था आदि ने भी यशपाल जी के अन्तर्गत पर गहरा प्रभाव छोड़ा श्री जैन ने इन मथुर अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना के द्वारा संस्मरण मे प्रतिलीक्षित कराया है, जहाँ वर्णय की प्रस्तुति लेखक की स्वकीय धारणाओं और मान्यताओं के अनुरूप हैं।

विनोबा जी के द्वारा एकता स्थापित करने में जो साहित्य है, वह देवनागरी लिपि में भी लिखा जाये, हम "ही" वादी नहीं है, इसलिए कहते है "भी" लिखा जाये यानि अन्य लिपियाँ भी रहे पर, देवनागरी देशव्यापी हो, इससे देश में एकता सम्पादित होगी।"

श्री यशपाल जैन ने विनोबा जी की सर्वतोमुखी प्रतिभा को संस्मरण में अत्यंत सधे शब्दों में कुशलता के साथ उदघटित किया है, साथ ही विभिन्न स्थलों पर इस महान विभूति और स्वयं के मध्य हुये हास परिहास को संयमित रूप प्रदान किया है, इस प्रकार लेखक का यह संस्मरणों की तुलना में अत्यधिक उत्कृष्ट बन पड़ा हैं।

मैं बाबा का चिर ऋणी हूँ – स्वामी मुक्तानंद परमहंस :–

संस्मरण में लेखक ने स्वामी मुक्तानंद के प्रभावशाली व्यक्तित्व का आंकन करते हुए उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा को प्रकट किया है, बाबा की आध्यधिक विचारधारा एवं लोगो के प्रति जागरूकता का भी चित्रण लेखक ने अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से किया है चमत्कारों में श्री जैन का विश्वास नहीं रहा है, पर बाबा के सम्बन्ध में सरलता, निश्छलता और प्रेमलता के विकल प्रभाव ने उन्हे बाबा के आत्यधिक समीप ला दिया, बाबा के सम्बन्ध में लेखक का कथन है कि....

मुझे अपने देश –विदेश के प्रवासों में जाने कितने साधु सन्तों को सम्पर्क के सौभाग्य मिला है, पर कोई साधु मुझे उतना उत्कृष्ट नहीं कर सका जितना बाबा मुक्तानंद जी ने किया।"[1]

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – मैं बाबा का चिर ऋणी हूँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 471

21 अक्टूबर 1970 की रात्रि में बाबा के दिल्ली आगमन क अवसर पर लेखक उदासीन भाव से बाबा के दर्शनीय जाता है, परन्तु इस महान विभूति के दर्शन कर लेने के उपरान्त उसकी प्रबल इच्छा होने लगती है कि इन अमूल्य क्षणों में कुछ और वृद्धि हो जाये रात्रि के अन्तिम प्रहर में लेखक के वापस लौटने पर हवाई अड्डा पीछे छूट जाता है पर बाबा की आत्मीयता और मुस्कराहट साथ आती है, लेखक अनुभव करता है, कि उस स्वामी में सच मुच कुछ है, जो असंख्य लोगो को उनकी ओर आकर्षित करता है।

बाबा के विदेशियों के प्रति दृष्टिकोंण को श्री जैन ने अपनी लेखनी के माध्यम से कुछ इस प्रकार से उद्घाटित किया है....

"विदेशों के लोग बड़े गतिशील है, खूब काम करते है, कमाई को मैं बुरा नहीं मानता, निर्धन व्यक्ति धर्म में गति नहीं कर सकता मैं कहता हूँ, खूब कमाओं और दूसरों को भी खूब दो जो धनी होने के लिए धन सम्पत्ति संचय करता है, वह बुराई को जन्म देता है।"[1]

श्री जैन ने स्वकीय अनुभूतियॉ को रोचकता के साथ संस्मरण के अंतर्गत प्रस्तुत किया है, कहीं–कहीं पर में अनुभूतियाँ पाठक को विस्मयकारी प्रतीत होने लगती है, जैसे....

दफ्तर आया मन में अपूर्व शान्ति थी, काम में खूब आनन्द आया, मन मस्ती से बार–बार झूम उठता था, छोटे बड़े सब अपने लगते थे ।"

यशपाल जी ने अपने इस संस्मरण के माध्यम से बाबा मुक्तानंद की प्रेम मूलक मानव धर्म की आस्था का सुन्दर परिचय कराया कई स्थलों पर मार्मिक प्रसंगो की योजना करके श्री जैन ने संस्मरण को विशेष रूप से प्रभावोत्पादक बना दिया हैं।

ड. – सामाजिक कार्यकर्ताओं के संस्मरणः–

यशपाल जी के सामाजिक –कार्यकर्ताओं पर आधारित संस्मरणों को संख्या सीमित ही है

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी – मैं बाबा का चिर ऋणी हूँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 469

पात्रों की दृष्टि से इन संस्मरणों में नारी एवं पुरूष दोनों का चयन किया गया है अपने पात्रों के अर्न्तमन प्रविष्ट होकर उनसे तादात्मय स्थापित कर उनके चरित्र के प्रत्यक्ष पक्ष को उद्घाटित करने में श्री जैन के संवेदनशील ह्रदय का परिचय मिलता है इन समस्त संस्मरणों में नारी पात्र पुरूष पात्रों की अपेक्षा सशक्त है, इनके चित्रण में लेखक ने पर्याप्त रूचि ली है, वे विषय परिस्थितियों में भी कटु आघात सहकर मार्ग को प्रशस्त किये रहती हैं।

यशपाल जी ने "दीनों के बन्धु" "वह समर्पित व्यक्तित्व" "भारत – थाई संस्कृति की एक घड़ी "मूक सेविका" "सेवा का संतोष" आदि संस्मरणों में क्रमशः सी0 एफ0 एण्ड्रयूज, कुमारी म्यूरिल लीस्टर एक भारतीय डाक्टर (अनाम) पं. रधुनाथ शर्मा, एडिथ एडलम को केन्द्रिय भूमिका प्रदान कर इनकी समाज के प्रति कर्तव्य परायणकृति का नित्र्लिप्त भाव से आंकन किया है, ये पात्र सहनशीलता, निष्काय कर्म–भावना निश्छल स्नेह, सेवा परायणता आदि भावनाओं के मूर्तिमान विग्रह है इन संस्थरणों में लेखक यह कहना चाहता है कि, मानवीय संवेदनायें किसी वर्ग विशेष की चाहरदीवारी में ही कैद नहीं है बल्कि ये प्राणी मात्र के गुण धर्म है। उदाहरण के लिए आधारित संस्मरण के अंश दृष्टण्य है....

मूक सेविका –एडिथ एडलम :–

यह संस्मरण लेखक की लंदन प्रवास की घटनाओं पर आधारित है, लेखक जिन व्यक्तियों से लंदन में मिला था, उनमें आंग्ल बहिन "एडिथ एडलम" भी थी साधारण व्यक्तित्व ने उसे अत्यधिक आकर्षित किया, लेखक के शब्दों में...

शरीर से कुछ भारी, पर बेहद फुर्तीली कुमारी एडिथ एडलम कमी की साठ पार चुकी थी, पर उनकी उमंग ओर उत्साह को देखकर ऐसा लगता था, कि कोई युवती भी उनके सामने क्या ठहर सकेगी ।"[1]

श्री जैन ने जब उनसे फैन्डस हाउस में मिलने जाते थे, तो उन्हें ऐसा लगता था कि वे इस

1. सेतु निर्माता– यशपाल जैन, पृष्ठ – 142

महान समाज सेविका से बहुत समय से परिचित है, सम्भवतः ऐसा "एडलम" के अपने देश की परम्परा के विपरीत के कारण ही हुआ होगा ।

अगले दिन एडलम को हाईडपार्क से ट्रफलगर तक एक जुलूस में सम्मिलित होना होता है, लेखक भी एडलम के साथ जूलूस में शामिल हो जाता है कुछ समय पश्चात् जुलूस एक नियत स्थान में पहुँचकर एक विराट सभा में परिवर्तित हो जाता हैं। जहाँ लेखक को इस मूक सेविका की यह विशेषता अत्यधिक प्रभावित करती है कि वह बिना कुछ कहे अपने निर्धारित कार्य में संलग्न है, जिसका वर्णन श्री जैन ने यथार्थता के साथ संस्मरण में प्रस्तुत किया है।

"वह मंच पर नहीं गयी पर नहीं गयी उनके संगी साथी जब धुँआधार भाषण दे रहे थे, वह महिला चुप चाप भीड़ के पीछे घूमती हुई शान्ति के महान ध्येय के लिए पैसे इकट्ठे कर रही थी वह मानती थी कि जो आनन्द मूल सेवा में है, वह पद प्रतिष्ठा में नहीं है।"[1]

कुमारी एडलम और स्वयं के मध्य हुए वार्तालाप को लेखक ने संवादो के रूप में संस्मरण में अभिव्यक्त प्रदान की है, संवाद एडलम के दृष्टिकोंण का पूर्ण रूप से अंकन करने में सक्षम है जहाँ एक ओर "एडलम" पैसे की बचत के लिए पैदल चलना पसंद करती है, वही दूसरी ओर तेज कदमों से चलकर समय से निर्धारित स्थान पर पहुँचना भी चाहती है, लेखक ने संस्मरण में अनयत्र एक स्थान पर माना है कि एडलम पैसे का बहिष्कार नहीं करती, बल्कि जीवन के साथ पैसे का सन्तुलन बनाये रखना चाहती है।

संस्मरण के अन्त में यशपाल जी ने एडलम द्वारा कहे गये शब्दों को निम्नप्रकार से अभिव्यक्ति प्रदान की है....

हम लोग कौड़ी – कौड़ी बचाते है ज्यादातर पैदल चलते है, जरूरी हुआ तो ट्रक–बस का इस्तेमाल कर लेत है, जहाँ तक बनता है टैक्सी नहीं लेते है हम लोग जरा झुँक जाये तो खूब पैसा

1. सेतु निर्माता– यशपाल जैन, पृष्ठ – 143

आसकता है पर वैसा पैसा किस काम का । उसूल की जिन्दगी बिताने में जो सुख मिलता है, वह पैसे के जोर पर जिन्दगी बिताने में कहाँ मिलता हैं।"[1]

उपर्युक्त पक्तियों में एडलम के जीवन दर्शन की एक झलक अपने पूर्णरूप में दृश्यमान हो जाती है, यशपाल जी ने अपने इस संस्मरण के प्रारम्भ से अन्त तक निर्लिप्त भाव से स्वकीय अनुभूतियों का संफल अंकन प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :–

यशपाल जी के संस्मरण – साहित्य का सम्पूर्ण विवेचन करने के उपरान्त कहा जा सकता है, इनका आधार यथार्थ है, जो कल्पना से अधिक सुदृढ़ और स्थायी है संस्मरणों मे सर्वत्र मानवीय करूणा एवं प्रेम की भावना के दर्शन होते है, जो चित्र लेखक ने दिये है, वे अत्यन्त सजीव एवं प्राणवान है और पाठक के मन पर उनकी गहरी छाप पड़ती है साहित्यकारों के संस्मरणों में वाहय और आन्तरिक व्यक्तित्व विश्लेषण के साथ – साथ कृतित्व पर भी विचार किया गया है निराला हजारी प्रसाद आदि विदेशी साहित्यकारों की आकृति, वेशभूषा तथा उनके क्रियाकलापों के वर्णन के साथ–2 लेखक ने उनके गुण स्वभाव एवं मनदिशा का जीवंत चित्रण किया है।

सामाजिक कार्यकर्ताओं से सम्बन्धित संस्मरणों में यशपाल जी के पात्र बहुत कम बोलते है श्री जैन ने स्वयं ही अपनी वाणी द्वारा उनके व्यक्तित्व को उजागर किया है, संत महात्माओं के संस्मरणों में जिन महान विभूतियों को नायक के रूप में चुना है, उनसे सम्बन्धित परिवेश का भी अत्यन्त कलात्मक ढंग से चित्रण हुआ है, परिवेश के अंतर्गत धार्मिक , आर्थिक राजनैतिक, साहित्यिक इत्यादि परिस्थितियों का सुन्दर अंकन लेखक ने किया है। इन सस्मरणों में जाने अन जाने लेखक की निजी मान्ताओं एवं उसका जीवन दर्शन भी परिलक्षित हो गया है, जिसके ओलक में उन महान विभूतियों के व्यक्तित्व को अधिक समीप से देखने और समझने में सहायक मिलती

1. सेतु निर्माता– यशपाल जैन, पृष्ठ – 144

है, राजनीति में यशपाल की अभिरूचि न होने पर भी इनके राजनीतिक व्यक्तियों पर आधारित संस्मरणों में राजनीतिक युग बोध का अत्यन्त संयत स्वरूप उभरा है।

निःसन्देह श्री जैन के संस्मरणों में अतीत की घटनाओं का भावात्मक स्मरण है जिसमें वर्ण्य की प्रस्तुति लेखक की स्वलीय धारणाओं और मान्ताओं के अनुरूप रोचक ढंग से हुई है अतः हम कह सकते है कि हिन्दी गद्य की इस आधुनिकतम विद्या की अभिवृद्धि में भी यशपाल जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जीवनी :–

किसी व्यक्ति के जीवन के वृतान्त अथवा जीवन चरित्र को जीवनी कहा जाता है, हिन्दी साहित्य में जीवनी शब्द अग्रेजी के "बायोगाफ्री" शब्द के स्थान प्रयोग किया जाता है, वैसे अग्रेजी में जीवनी को "लाइफ" अथवा "लाइफ स्केच" भी कहा जाता है। शब्दिक अर्थ की दृष्टि से इन शब्दों मे कोई मौलिक अन्तर नहीं है, किन्तु साहित्यिक विद्या के लिए "जीवनी" शब्द ही प्रायः प्राचलित हैं।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इसे अपने–2 ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है, यथा....

पाश्चात्य विचारक "शिप्ले" ने जीवनी की परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में सीमित की है....

"जीवनी को नायक के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके मथेण्ट भाग की चर्चा करनी चाहिए और अपने आदर्श रूप में उसे एक विशिष्ट इतिहास होना चाहिए ।"[1]

श्री गुलाब राय जी ने जीवनी को परिभाषित करते हुए लिखा है....

"जीवनी" लेखक अपने चरित्र पात्र के अन्तर वाहय स्वरूप का चित्रण कलात्मक ढंग से करता है इस चित्रण में वह अनुपात में शालीनता का पूर्णतः ध्यान रखता हुआ सह्रदयता, स्वतन्त्रता और

1. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र – डा. गंगासहाय "प्रेमी" एवं हरीश अग्रवाल, पृष्ठ – 91

निष्पक्षता के साथ अपने चरित्र पात्र के गुण – दोष मय सजीव व्यक्तित्व का एक आकर्षक शैली में उद्घाटन करता है।"[1]

गुलाबराय जी ने आत्मकथा और जीवनी में अन्तर बताते हुए यह स्पष्ट किया है।

"जीवनी – चरित्रों की कोई विधायें है और रूप भी लेखक की दृष्टि से तो जीवनी और आत्मा कथाएं ये दोनो प्रधान रूप है जीवनी कोई दूसरा आदमी लिखता है और आत्म कथा स्वयं लिखी जाती है।"[2]

पं. सीताराम चतुर्वेदी ने कथा के दो प्रकार बताये है –1. आत्म कथा 2. परकथा आत्म कथा के अंतर्गत वास्तविक आत्म चरित्र रूपकात्मक आत्म कथा आती है। रूपाकात्मक आत्मकथा आती है रूपाकात्मक वह है जिसमें स्वयं किसी वस्तु को व्यक्ति मानकर उसकी ओर से उसका जीवन चरित्र वर्णन करते है जैसे पैसे की आत्माकथा शेष सब प्रकार की कथाऐं परकथा होती है, जो प्रत्यक्ष परानुत काल्पित या इतिहास इत्यादि से सम्बद्ध होती है।"[3]

डा0 भागीरथ मिश्र के अनुसार....................

"जीवनी गद्य काव्य का कथानक कल्पित न हो कर पूर्णतः सत्य होता है, प्रायः इसमें लेखक का जीवनी के नायक के साथ निजी सम्पर्क होता है, इसमें रोचक प्रभावपूर्ण घटनाओं और विवरणों को बुनकर जीवन चरित्र का पूरा रूप प्रस्तुत किया जाता है।"[4]

स्पष्टतः जीवनी अपने से अतिरिक्त किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण कलात्मक अभिव्यक्ति है जो मुख्यतः के प्रकार की होती है – अत्मकथा तथा जीवनी (परकथा) उल्लेखनीय है कि प. सीताराम चतुर्वेदी ने दोनों के लिए परकथा शब्द का प्रयोग किया है, जी जीवनी आत्मकथा का अन्तर स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कह सकते है कि जीवनी के निम्नलिखित तत्व है....

---

1. काव्य के रूप – गुलाब राय, पृष्ठ – 232
2. काव्य के रूप – गुलाब राय, पृष्ठ – 232
3. समीक्षा शास्त्र – पं. सीता राम चतुर्वेदी, पृष्ठ – 514
4. काव्य शास्त्र – डा. भागीरथ मिश्र, पृष्ठ – 83

1. प्रसिद्ध चरित्र नायक की अन्तः बाहय सत्यनिष्ठ अभिव्यक्ति।
2. चरित्र नायक के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क।
3. रोचकता, सजीवता एवं रचनात्मक विशेषता के साथ।
4. आकर्षक शैली।
5. निष्पक्षता।

कथ्य और शिल्प की दृष्टि से यशपाल कृत जीवनी साहित्य का विवेचना :-

यशपाल जी ने अनेक महापुरूषों की जीवनियाँ लिखी हैं जिनके लिये उन्होने तीर्थ करों साधुओं, राजनीतियों और साहित्यकारों के जीवन-चरित्र को उद्देश्य बनाया है।

तीर्थकर महावीर -1957 वाहुबली नेमिनाथ - 1958 तीर्थकरों की जीवनियाँ है राजनीतिज्ञों की जीवनियों में साबरमती का संत - 1966, नेहरू जी का विधार्थी जीवन -1957, राजेन्द्र बाबू का बचपन - 1957 लाला लाजपतराय -1961, गणेश शंकर विधार्थी-1961 कस्तूरबा गाँधी -1955, मे थे नेताजी - 1956, बाल गंगाधर तिलक - 1961 की जीवनियाँ उल्लेखनीय है साधु -सन्तों में इन्होने ने स्वामी विवेकानन्द - 1957 संत नामदेव - 1960, संत एकनाथ - 1961, संत फ्रांसिस -192, भाक्ता पोतना - 1962, चैतन्य महाप्रभु - 1954, संत तुकाराम - 1955, नरसी मेहता - 1955, ख्वाजा मोइउद्दीन - 1955, रामकृष्ण परमहंस - 1956, समर्थ दास - 1956, गुरूनानक - 1967, साहित्यकारों में रवीन्द्र ठाकुर - 1961, मिर्जा गालिब - 1961, भारतेन्द्रु हरिशचंद्र - 1962, तिरूपल्लूर - 1955 आदि के जीवन चरित्र को अपनी लेखनी का विषय बनाया, इनके अतिरिक्त श्री जैन ने रामानुजाचार्य - 1960, राजाराम मोहनराय, गामा पहलवान - 1962, महामना -1957, झाँसी की रानी -1957, जमुना की कहानी - 1960 के जीवन चरित्र को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया है।

इनके अतिरिक्त यशपाल जी की देश भक्त गोपाल गोखले, युग पुरूष महात्मा गाँधी, शांति के अग्रदूत – जवाहर लाल नहेरू इत्यादि संस्मरणात्मक जीवनियाँ भी महत्वपूर्ण है।

1. तीर्थकर महावीर :–

लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व हुये जैनियों के 24 वें तीर्थकर भगवान महावीर का बालकों और प्रोढों से परिचय से परिचय कराने के उद्देश्य से यह जीवन चरित्र लिखा गया है, इसमें भगवान महावीर के जन्म की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं से लेकर उनके मोझ तक की घटनाओं को समाहित किया गया है।

"भगवान महावीर का जीवन शुरू से ही त्याग का रहा तीस साल की उम्र में राजपाट पर लात मारकर वह साधना करने चले गये, बारह साल तक उन्होंने बड़ा कठोर जीवन व्यतीत किया साधना पूरी होने पर तीस साल तक लोगों की भलाई का उप देश देते रहे, उन्होने आदमी – आदमी के बीच भेद नहीं किया और सब के हित की बात कहीं महावीर ने अंहिसा को बहुत बढ़ावा दिया और जीवन को सरल सादा तथा पवित्र बनाने पर जोर दिया उन्होंने और भी बहुत लाभ की बातें कही, आज ढाई हजार बरस बाद भी उनके उपदेश अपना महत्व रखते है, भगवान महावीर का परिचय तथा उनके उपदेश इस जीवन चरित्र में दिये गये हैं।"[1]

"भगवान महावीर यशपाल जी के आराध्य है उन्होने महावीर के जीवन के अन्तः और वाहय दोनों पक्षों पर प्रकाश डाला है, अन्त पक्ष के अंतर्गत उन्होंने तीर्थकार महावीर के चिन्तन का परिचय दिया है एक उदाहरण प्रस्तुत है....

"उन्हें (महावीर) दुःख होता है था कि लोग जान बूझकर गढ्ढे में गिरते है, जिस तरह दुनिया के दुःखो का देखकर भगवान बुद्ध का मन संसार से हट गया था उसी तरह महावीर भी बुराईयों को देखकर दुनियाँ से उदासीन हो गये, वह नया रास्ता खोजने लगे वह ऐसा सुख चाहते थे जो

---

1. तीर्थकर महावीर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 04

जीवन को सदा हरा –भरा और जिसके मिल जाने पर और कुछ पाने की चाह न रहे।"[1]

भगवान महावीर की वाहय – जीवन की सत्य निष्ठा अभिव्यक्ति के लिए लेखक ने उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को आधार बनाया है, उदाहरणार्थ बालक महावीर और साँप की घटना, विवाह की घटना किसान द्वारा महावीर पर किये गये उपसर्ग की घटना आदि, यशपाल जी ने किसान द्वारा महावीर परं किये गये उपसर्ग की घटना आदि यशपाल जी ने किसान की घटना को इन शब्दों मे वर्णित किया है...

"एक बार वह एक दूसरे गाँव के पास आये और एक ओर खड़े होकर अचल ध्यान में हो गये, उनसे कुछ ही फासले पर एक खेत था, कोई किसान उसे जोत रहा था, शाम को उस किसान को अपनी गाय–भैंसे दोहने जाना था, वह अपने बैलों को लेकर उनके (महावीर) के पास आया, उसने उनसे कहा, "इधर–उधर न चले जाये "इतना कहकर चला गया महावीर को पता भी नहीं था कि क्या हुआ ? किसान के खेत ही बैलों को छुट्‌टी मिल गई वे चरते – चरते जंगल में चले गयें, लौटने पर किसान को बैल दिखाई नहीं दिय तो उसने महावीर से पूछा, पर कोई उत्तर न मिला वह बैलों की खोज में घूमता फिरा, पर कहीं भी उनका पता न चला सबेरे थक कर वह खेत पर लौट आया वहाँ आकर देखता है कि दोनों बैल महावीर के पास बैठे हैं तब क्या था, किसान आग बबूला हो गया और उसने महावीर की खूब मार लगायी पर महावीर ध्यान ही में लगे रहै।"[2]

श्री जैन ने चरित्र नायक महावीर के साथ भावात्मक सम्पर्क स्थापित करके इस रोचक एवं सजीव जीवनी का सृजन किया है जीवनी को आकर्षक बनाने के लिए उन्होने नाटकीय शैली को भी अपनाया है, एक उदाहरण प्रस्तुत है....

"यक्ष के कहा प्रभो मैनें अपने जीवन में बड़े पाप किये है महावीर बोले उनके लिए पछताबा करे और आगे के लिए तय करो कि कोई पाप न करोगे इसी में तुम्हारा कल्याण होगा ।"[3]

---

1. तीर्थंकर महावीर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 13
2. तीर्थंकर महावीर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 16–17
3. तीर्थंकर महावीर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 17

अतः हम कह सकते है कि आलोचय जीवनी भक्तिभाव से लिखी गयी जीवनी है और प्रायः जीवनी के सभी तत्वों का इसमें परिपाक हुआ है।

2. साबरमती का संत :–

श्री यशपाल जैन द्वारा लिखित महात्मा गाँधी जी की जीवनी "साबरमती का संत" शीर्षक से सन् 1970 में प्रकाशित हुई यह जीवनी दो खण्डों में विभाजित है प्रथम खण्ड में जीवन – झाँकी अर्थात वाहय पक्ष और दूसरे खण्ड मे विचार अर्थात दूसरे खण्ड में विचार अर्थात आन्तरिक पक्ष उद्घाटित हुआ है, प्रथम खण्ड में गाँधी जी के स्वप्न, जीवन प्रभात, संघर्ष, सत्याग्रह स्वदेश में तूफानों के बीच असहयोग आन्दोलन, भारत छोगे आन्दोलन, दो राष्ट्रो का उदय, सन्ध्याकाल, पूर्ण आहुति शीर्षकों के अन्तर्गत गाँधी जी के जीवन से लेकर बलिदान तक की घटनाओं के रेखाकिंत किया गया है।

आन्तरिक पक्ष का स्पष्ट करने के लिए लेखक ने आत्म परिचय देने के उपरान्त उनके धार्मिक विचारों से परिचित कराया है, तथा अंहिसा, ब्रहमचर्य, आस्वादन, अस्तेय, अपरिग्रह, अमय, स्वधर्म संभाव नम्रता, ह्रदय शुद्धि, संयम, त्याग, तपस्या, क्षमा, दया, सेवा रामनाम, प्रार्थना, स्वराज, भारतीय लोकतन्त्र भारतीय समाजवाद, सर्वेदिय, अंहिसक अर्धव्यस्था साधन – साध्य, संरक्षकता तथा पंचायत राज पर गाँधी जी की विचार धारा स्पष्ट की गयी है, इसके अतिरिक्त लेखक ने बुनियादी शिक्षा, उच्च शिक्षा, प्रौढ़शिक्षा धार्मिक शिक्षा, स्वावलम्बी शिक्षा, पाठ्य पुस्तक, अध्यापक एवं विधार्थी जीवन पर भी गाँधी विचारधारा को अंकित किया है भारत और विश्व शांति की समस्या पर भी गाँधी – चिंतन लेखक की लेखनी का विषय बना हुआ है। लेखक ने आधुनिक युग के कछ राजनीतिक एवं सामाजिक प्रश्नों पर भी गाँधी चिन्तन प्रस्तुत किया है, इन प्रश्नों में भारत, पाकिस्तान और दुराग्रह बेकारी का सवाल हड़ताले, संतति नियमन, शराब और अन्य मादक द्रव्य, राष्ट्र भाषा और लिपी के प्रश्नों पर भी गाँधी जी के विचार स्पष्ट करने का जीवनी लेखक ने किया है।

श्री जैन ने अत्यन्त सफलता पूर्वक गाँधी जी के वाहय पक्ष को चित्रित किया है, और उन्हे आन्तरितक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने में भी सफलता प्राप्त हुई वाहय जीवन का स्पष्ट करने के लिए लेखक ने यंथास्थान अपनी टिप्पणियाँ देकर विषय को रोचकता प्रदान की है यथा......

"जो हुआ उसने भारत को नहीं समूचे संसार को स्तब्ध कर दिया करोड़ो नर– नारियों ने इस प्रकार शोक मनाया मानों वह उनकी व्यक्तिगत क्षति हुई हो यह स्वाभाविक था अपने ह्रदय की विशालता और प्रेम के क़ारण वह सबके बापू बन गये हो, विश्व के महान विज्ञान वेत्ता आइन्सटीन ने कहा है– "आने वाली पीढ़िया शायद मुस्किल से ही यह विश्वास कर सकेगीं कि गाँधी जी जैसा हॉड मॉज का पुतला भी कभी इस धरती पर हुआ होगा" उनके निधन पर जितनी श्रद्धान्जलियाँ अर्पित की गयी उनी विश्व के इतिहास में शायद ही किसी के निधन पर की गयी हो गाँधी जी की भौतिक काया का अंत हो गया पर मानवता के इतिहास में उनका नाम सदा सर्वदा के लिए अमर हो गया।"[1]

गाँधी जी के आत्म परिचर के लिए यशपाल जी ने गाँधी जी की आत्माकथा (Selection form Gandhi) हिन्दी नवजीवन (The mind of Mahatama Gandhi) महात्मा तेन्दुलकर फेंज प्यारेलाल मंगल देव भाई की डायरी, बापू के आर्शीवाद, बाबू के पत्र मणि बहिन के एकता चलो रे, गाँधी वाणी, अंतिम झाँकी, मोहन माला सत्य ही ईश्वर है, यरवदा मन्दिर, गाँधी की साधना विधार्थियों से खादी, सर्वोदय, हरिजन सेवक दिल्ली डायरी हिन्द स्वराज, रचनात्मक कार्यक्रम आदि से उद्धहरण देकर गाँधी जी के आन्तरिक पक्ष पर अपनी एक भी टिप्पड़ी नहीं थी, गाँधी जी से लेखक का निकट सम्पर्क रहा है अतः सम्पूर्ण जीवनी में लेखक की गाँधी जी के प्रति अटूट श्रद्धा की प्रकट हुई है आलोचनात्मक टिप्पणियों का अभाव दृष्टिगोचर है रोचकता, सजीवता एवं रचनात्मक विशेषताओं की दृष्टि से यह जीवनी सामान्य स्तर की है किन्तु जीवनी का प्रथम भाग प्रभावात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण है जिससे लेखक ने अपनी जीवन–कला का सफल प्रदर्शन किया है, गाँधी के जीवन में

---

1. साबरमती के संत – यशपाल जैन, पृष्ठ – 59

धुँधले प्रंसगो को अपनी लेखनी द्वारा निखारा है साम्प्रदायिकता और गाँधी प्रसंग सम्बन्धी एक उद्धहरण प्रस्तुत है...

साम्प्रदायिकता की आग अब भी फैली हुयी है, एक प्राप्त में वह शांत होती कि दूसरे में भड़क उठती गाँधी जी को इससे भंयकर आघात पहुँचा वह बुरी तरह व्यथित हो उठे, सारी दुनियाँ के सामने वह अंहिसा के आदर्श को प्रस्तुत करने के लिऐ जीवन भर परिश्रम करते रहे थे लेकिन अब उनके सारे प्रयत्नों पर जैसे पानी फिर रहा था, उनका ह्रदय इसके लिए किसी को दोषी नहीं ठहराता था, वह इसके पीछे अपनी ही अपूर्णता देखते थे।"[1]

श्री यशपाल जैन ने संस्मरणात्मक जीवनियों का भी सृजन किया है, तो सन् 1977 में "आलोक की रेखाए" पुस्तक में संकलित है, इस प्रकार की जीवनियों में देशभक्त–गोपालकृष्ण गोखले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महामना मदनमोहन मालवीय भारत के गौरव विवेकानन्द, अंहिसा के पुजारी मोहनदास करमचन्द गाँधी भारतीय संस्कृति के अमर गायक रवीन्द्र नाथ ठाकुर मानवता के सच्चे हितैषी जवाहर लाल नहेरू के नाम उल्लेखनीय हैं।

3. रवीन्द्र नाथ ठाकुर – भारतीय संस्कृति के अमर गायक :–

आलोचय संस्मरणात्मक जीवनी के चरित्र नायक रवीन्द्र नाथ ठाकुर से यशपाल जी को व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, यह सौभाग्य उन्हें दो बार प्राप्त हुआ – एक बार इलाहाबाद में मिले तथा दूसरी बार कलकत्ता में जिसका उल्लेख उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में किया है...

"गुरूदेव के दर्शन का सौभाग्य मुझे उस समय मिला जब वह इलाहाबाद विश्वविधालय में पधारें थे मै उन दिनों वहाँ छात्र था, युनीवर्सिटी ट्रेनिंग कोर के सैनिकों को सीनेट हाल के दरवाजों तथा अन्य स्थानों पर तैनात किया गया था, मैं मंच से खड़ा था ठीक समय पर वह आये सब लोग

1. साबरमती के संत – यशपाल जैन, पृष्ठ – 60

उठकर खड़े हो गये तालियों की गड़गड़ाहट से हॉल गूँज उठा, उस समय की उनकी आकृति आज भी मेरी आँखों मे बसी है उन्नत ललाट, प्रेमल आँखे, भव्य स्वेत ढाढ़ी शरीर पर लम्बा चोला, सिर पर साधु सन्तों जैसा टोंपा बड़ी मंथर गति से मंच की ओर बढ़ रहे थे, ऐसी प्रतीत होता था कि मानो प्राचीन युग का कोई महान ऋषि हमारी आँखों के सम्मुख थे बड़े आदर से उन्हे मंच पर लाया गया और कुर्सी पर आसीन किया गया, मुझे उनके एकदम निकट उपस्थित रहने का सौभाग्य प्राप्त था।"[1]

"इसके बाद जब मैं पढ़ाई पूरी करके सन् 1940 मे शांति निकेतन गया तो गुरूदेव वही थे उनके दर्शन की स्वाभाविक इच्छा थी, लेकिन हजारी प्रसाद द्विवेदी ने जिनके साथ में ठहरा था बताया कि गुरूदेव अस्वस्थ है और डॉक्टरों ने मुलाकातो पर पावन्दी लगा रखी हे मैं उनक निवास स्थान – उत्तरायन पर गया और बाहर से उस युग पुरूष को देखकर चला आया, उनका आवास किसी ऋषि के तयोवन का स्मरण दिलाता था।"[2]

रवीन्द्र नाथ ठाकुर – अन्त वाहय सत्यनिष्ठ अभिव्यक्ति :–

लेखक ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अन्तःकरण (विचार धारा) तथा उनके व्यक्तित्व की सत्यनिष्ठ अभिव्यक्ति रोचक एवं सजीव भाषा में की है, अन्तः करण के अन्तर्गत उन्होने विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर के साहिव्यिक– राजनैतिक विचारों पर प्रकाश डालते हुये लिखा है........

"साहित्य का सहज अर्थ जा मै समझता हूँ, वह है नैकट्य अर्थात् सम्मिलन, उसका काम है ह्रदय का योग कर देना, जहाँ योग ही अंतिम लक्ष्य है।"[3]

एक अन्य स्थल पर वह कहते है....

"विशुद्ध साहित्य अप्रयोजनीय है उसका जो रस है। वह अहेतुक है मनुष्य दायित्व – युक्त वृहत अवकाश के क्षेत्र में कल्पना के जादू की लकड़ी छुड़ाई हुई सामग्री को जाग्रत करके जानना

---

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 49–50
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 50
3. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 47

चाहता है अपनी ही सत्ता को उसके इस अनुभव में अर्थात् अपनी ही विशेष उपव्यक्ति में उसका आनंद है ऐसा आनंद देने के सिवाय साहित्य का और कोई भी उद्देश्य है, यह मैं नहीं जानता।"[1]

श्री जैन ने उनके राजनैतिक योगदान भी सफलता के साध जीवन चरित्र में पिरोया है....

"राजनीति में उनकी देन किसी प्रकार कम न थी वह अपने देश के प्रति अनुराग रखते थे लोकमान्य तिलक के होमरूल में उन्होंने उसका साथ दिया पंजाब के भीषण नर संठार की तीव्र शब्दों में निन्दा की "सर" की उपाधि को छोड़ा और गाँधी जी के आन्दोलनों में गहरी दिलचस्पी रखी भारत की स्वतन्त्रता के सभी प्रयत्नों को उन्होने प्रोत्साहन दिया ।"[2]

लेखक ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर के वाहय व्यक्तित्व के प्रस्तुत करने के लिए रेखा चित्र (शब्द चित्र) का प्रयोग किया है...

"किसी गगनचुम्बी शैल–शिखर के पाद प्रदेश में खड़े जब हम उसकी ओर देखते है या कूलहीन सागर के तट पर खड़े होकर जब उसकी अनन्त जल राशि के बीच विक्षुब्ध तंरगो की लीला का अवलोकन करते है तो उस समय हमारे मन में विस्मय के जिस प्रकार के भाव उत्पन्न होते हे, उसी प्रकार के भाव श्री रवीन्द्र ठाकुर के सम्बन्ध में भी प्यारे मन को अभिभूत कर डालते है।"[3]

निष्पक्षता :–

श्री यशपाल जैन ने रवीन्द्र नाथ ठाकुर के व्यक्तित्व के आन्तरिक और बाहय पक्षों का तो प्रभावपूर्ण स्पष्ट चित्रात्मक शैली में वर्णन किया ही है इसके अतिरिक्त उन्होने जीवनी नायक के जीवन के ऐसे प्रंसगो को भी कथ्य बनाया हे जिनसे सिद्ध होता है कि लेखक की दृष्टि निष्पक्ष है वह केवल प्रंशसात्मक नहीं हैं, तथ्यात्मक है...

"कहते है एक बार रवीन्द्रनाथ को कुछ दिन पेरिस में ठहरना पड़ा वहाँ से उन्हें बहुत दूर कहीं भाषण देने जाना था, टैक्सी आयी, मंजिल पर पहुँच कर देखा गया कि काफी रकम भाड़े की हो

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 47
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 49
3. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 44

गयी है। लेकिन टैक्सी ड्राईवर को मालूम हुआ कि वह रवीन्द्र नाथ ठाकुर को टैक्सी को मालूम हुआ कि वह रवीन्द्रनाथ ठाकुर का टैक्सी में लाया है तो बड़ी कृतज्ञता अनुभव की और भाड़ा लेने से इन्कार कर दिया, उसने कहा, फ्रांसीसी भाषा में इनकी जो पुस्तकें निकली है उन सबको पढ़ चुका हूँ, ऐसे महान साधक से मैं पैसा नहीं ले सकता ।"[1]

4. मानवता के सच्चे हितैषी – जवाहर लाल नहेरू :–

श्री यशपाल जैन ने जीवनी नायक स्वर्गीय जवाहर लाल नहेरू के अन्तः और वाहय व्यक्तित्व की झाँकी संजीव एवं सरल भाषा शैली में अभिव्यक्ति की है उन्होंने लिखा है....

"उनका पौरूष इतना प्रखर था कि वह किसी भी प्रकार का अन्याय सहन नहीं कर सकते है तो उन्हें बड़ा क्षोभ होता था और जब वह देखते थे कि रेल में या और किसी सवारी में कोई भारतीय गोरे हाकिम के साथ यात्रा नहीं कर सकता, सार्वजानिक स्थान पर यह उसके बराबर नहीं बैठा सकता तो उनका खून खौलने लगता था आखिर इंसान –2 सब एक से है, तब कोई क्यों अपने को छोटा मानकर दीन बने ? उस छोटी उम्र में ही यह बात उनके अन्दर गहरी जग गई कि मान के लिए सबसे बड़ा अभिशाप गुलामी है और वे भारत का विदेशी सत्ता के चंगुल से निकालने के लिए तभी से सपने देखने लगे, जब उन्हें पता चलता कि किसी भारतीय ने गोरे हुक्काम के अनाचार की सहन नहीं सहन नहीं किया और उसका मुकाबला किया तो उन्हें बेहद खुशी होती थी।"[2]

श्री जैन ने नेहरू जी के जन्म से लेकर निधन तक की घटनाओं तक का संक्षिप्त उल्लेख इस जीवनी में किया है, उनके अनुसार नेहरू जी ने बुद्ध महावीर और गाँधी जी की परम्परा को ही आगे बढ़ाया नेहरू जी के इस योगदान का वर्णन लेखक ने इस शब्दों में किया है....

जब से जवाहर लाल ने होश सम्भाला, तब से लेकर आखरी साँस तक उनके सामने इंसान का चित्र रहा और उसी के खुशी बनाने के लिए उन्होने रात दिन अपना खून पसीना एक किया

---

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 46
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 68–69

उन्होने कभी आराम नहीं किया सारी दुनियाँ जब रात को चैन की नींद सो रही होती थी वे काम में जुटे रहते थे उनके दिल की आग उन्हें सोने नहीं देती थी वह जीना चहते थे इसलिए नहीं कि उन्हे जीने से कोई मोह था बल्कि इसलिए कि अपने ध्येय की पूर्ति के लिए अभी बहुत सा काम करन को शेष था।"

लेखक ने आत्मोच्य जीवनी में जवाहर लाल नहेरू के व्यक्तित्व का एक पूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है तथा साथ ही अपने उद्‌गारों की मधुर अभिव्यक्ति की है जीवनी के अन्तर्गत आयी विभिन्न घटनायें सत्यता का उद्‌घाटन करती है जीवनी लेखक के छोटी से छोटी घटनाओं को अपनी कल्पना के चमत्कारी स्पर्श द्वारा निरपेक्षता के साथ प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष :–

यशपाल जी द्वारा लिखित प्रमुख जीवनियों की कथ्य और शिल्प के आधार पर आलोचनात्मक परख करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि यशपाल जी ने उन्हीं महापुरूषों के जीवन चरित्र के कथ्य को अपनी लेखनी का आधार बनाया जिनसे उनका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्बन्ध रहा, महावीर से उनका श्रद्धा और भक्ति के घरातल पर भावात्मक सम्बन्ध रहा और अन्य जीवनी के नायको से वे प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित रहे जीवनियों में प्रायः जीवनी–नायक के अन्तः और वाहय व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में लेखक को सफलता प्राप्त हुई है, गाँधी जी की जीवनी का आंतरिक पक्ष दुर्बल है तो रवीन्द्र नाथ ठाकुर की जीवनी मुख्यतः आन्तरिक पक्ष पर ही आधारित है वाहय पक्ष के लिए लेखक ने शब्द चित्र शैली का सफल प्रयोग किया है। यथा स्थान श्री जैन की निष्पक्ष दृष्टि का भी परिचय प्राप्त होता है उन्होंने जीवनी – नायक के जीवन को स्पष्ट करने के लिए अन्य विद्वानों उनकी पुस्तकों तथा उनकी उक्तियों का भी यथास्थान प्रयोग किया है।

अतः हम कह सकते है, कि श्री यशपाल जैन ने अपनी जीवनी–साहित्य में रोचकता, सजीवता

और प्रवाहात्मकता प्रारम्भ से अन्त तक बनी रहती है। संस्मरणात्मक जीवनी लेखको में श्री यशपाल जैन का योगदान हिन्दी साहित्य को नवीन दिशा प्रदान करता है।

अध्याय – पंचम

यशपाल जी का यात्रा–साहित्य

1. यात्रा साहित्य

यशपाल जी का मात्रा –. साहित्य :–

श्री यशपाल जैन ने अपने ही देश तत्पश्चात् विदेशों की अनेक यात्रायें की उन्होंने पूरा हिमालय छान डाला, उत्तर से दक्षिण तक पूर्व से पश्चिम तक पूरे भारतवर्ष की अनेक बार परिक्रमा की, 1957 में पहली बार रूस गये तभी रूस से चैकास्लोवा किया, स्विटजरलैण्ड, इटली फ्रांस, इग्लैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, थाईलैण्ड फिनलैण्ड और अफगानिस्तान भी गये बाद में वर्मा, थाइलैण्ड, कम्बोडिया दक्षिण वियतनाम सिंगापुर और मलाया की यात्रायें की सन् 1965 मे अदन–सूडान, इथोपिया, केनिया, मुगाण्डा, तंजानिया दक्षिण रोडेशिया जाम्बिया, मेडागास्कर, मारीशस, कोकोज, आइलैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, फिजी आदि देशों में गये उन्हीं दिनों सिंगापुर मलाया और थाइलैण्ड इत्यादि देशों का पुनः भ्रमण किया ।

सन् 1972 में कनाडा अमेरिका, सूरीनाम, गयाना और थाइलैण्ड गये सन् 1973 मे द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने दूसरे बारी मॅारीशस गये सन् 1981 के दौरान श्री यशपाल जैन ने कनाड़ा, अमेरिका इग्लैण्ड की यात्रायें की तथा इसी वर्ष के मध्य में "जापान बुद्ध संध" आमंत्रण पर जापान गये इसके अतिरिक्त 20 सितम्बर, 1983 मे "चाइना सोसाइटी" के आमन्त्रण पर "भारत – चीन मैत्री संध" के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में चीन गये, वर्तमान समय तक श्री जैन विश्व के लगभग सभी देशों की यात्रायें कर चुके हैं।

श्री जैन ने अपनी देश–विदेश यात्राओं के विवरण एवं अनुभव लिपिबद्ध करके यात्रा – वृतान्त के रूप में हिन्दी – साहित्य को प्रदान किये है, इनके यात्रा वृतान्तों को मुख्यतः दो भागो में

विभाजित किया जा सकता है.................

1. स्वदेश से सम्बन्धी यात्रा – वृतान्त

2. विदेश से सम्बन्धी यात्रा – वृतान्त

स्वदेश से सम्बन्धी यात्रा वृतान्त जिसके अन्तर्गत "जय अमरनाथ" – 1955 "उत्तराखण्ड के पथ पर – 1958 "कोर्णाक – 1961 "अजंता–एकोरा " – 1961 है, इनमें से प्रथम दो कृतियाँ "जय अमरनाथ" और "उत्तराखण्ड के पथ पर उल्लेखनीय हैं, शेष कृतियों में यात्रा – वृत के मुख्य तत्व आत्मीयता का अभाव है अथवा ये संक्षिप्त परिचयात्मक लधु पुस्तकें है "जगन्नाथपुरी " तीन काल्पनिक यात्रों के मध्य संवाद शैली में लिखा गया एक विवरण है, लगभग यहीं स्थिति "कोर्णाक" की है।

विदश से सम्बन्धित यात्रा – वृतान्तों में रूस में छियालिस दिग – 1960 "पड़ौसी देशों में – 1065 और "सागर के आ–पार" – 1992 कृतियाँ महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है "रूस में छियालिस दिन पुस्तक पर सोवियत नेहरू पुरस्कार देकर रूस सरकार ने लेखक को सम्मनित किया, "पडौसी देशों में" पुस्तक में उत्तर – प्रदेश सरकार ने लेखक को सम्मनित किया, "पडौसी देशों में "पुस्तक पर उत्तर – प्रदेश सरकार ने भी पुरस्कार प्रदान किया श्री जैन का सम्पूर्ण यात्रा साहित्य पहले पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ, इनमें नव भारत टाइम्स" नई दिल्ली का नाम उल्लेखनीय है तत्पश्चात् यह यात्रा वृतान्त सस्ता साहित्य मण्डल" नई दिल्ली से पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुआ ।श्री यशपाल जैन की स्वदेश एवं विदेश यात्राओं के सम्बन्ध में देश के विद्वानों, साहित्यकारों ने समय–समय पर अपने विचार निम्न प्रकार अभिव्यक्त किये है ....

श्री भाई दयाल जैन ने लिखा है..................

"विधाता ने उनको "श्री यशपाल जैन" सरस्वती पुत्र बनने के अलावा उदारता के साथ एक

अच्छा घुमक्कड़ भी बनाया है।"[1]

श्री राजदेव त्रिपाठी के अनुसार.........................

"वह स्वभाव से सैलानी है भ्रमण और पर्यटन के प्रति उनके मन में अत्यधिक आकर्षण है विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण देशों की यह यात्रा कर चुके है, हर वर्ष कही न कही यात्रा पर निकल जाते है और अपने यात्रा वर्णनों से हिन्दी – साहित्य की श्रीवृद्धि करते रहते हैं।"[2]

स्वर्गीय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है.....................

"पढ़ कर लिखकर उन्होने जितना अनुभव प्राप्त किया है, देश विदेश घूमकर भी उन्होने उतना ही ज्ञान और अनुभव हासिल किया है हर बरस दो बरस के बाद वे विदेश जाते ही रहते थे ।"[3]

श्री विष्णु प्रभाकर के मतानुसार....................

"एक यात्री में जिस साहस (दुस्साहस) ता मैं नहीं कहूँगा, सूझबूझ, पहल और नेतृत्व की आवश्यकता हो सकती है वह उनमें प्रचुर मात्रा में है।"[4]

डा0 विजेन्द्र स्नातक के शब्दों में.......................

"यशपाल जी सैलानी तबियत के आदमी हैं।"[5]

डा0 आदिनाथ उपाध्याय के अनुसार....................

उनका दृष्टिकोंण विश्व नागरिक का दृष्टिकोंण है

विदेश प्रवासों के उनके अनुभव सबसे अधिक शिक्षाप्रद और मनोरंजक है।[6]

श्री राजेन्द्र अवस्थी का कथन है कि...............

"यशपाल जैन फक्कड़ तबियत के धुमक्कड़ व्यक्ति हे पहले देश में घूमते थे और अब विदेशों में घूमते है।"

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 83
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 180
3. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 58
4. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 104
5. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 116
6. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 83

वस्तुतः श्री यशपाल जैन ने देश–विदेश की इतनी अधिक यात्राये की है, सम्भवतः दूसरा घमक्कड़ सैलानी यात्री हिन्दी साहित्य में मिलना दुलर्भ है उन्होने ये यात्रायें आँख मूँदकर नहीं की है, बल्कि उन्होने यात्राओं के खट्टे–मीठे अनुभवों को बड़ी आत्मीयता के साथ पुस्तकों की पंक्तियों में पिरोकर, विश्व बन्धुत्व की भावना को समर्पित किया है।

ग. स्वदेश से सम्बन्धित यात्रा – वृतान्त :–

श्री यशपाल जैन के भारतीय यात्राओं के वर्णन बड़े सजीव, प्रेरक एवं मनोरंजक है, वे स्थलों का वर्णन बड़ी आत्मीयता और स्वंछदता से करते है उनकी शैली एवं भाषा सम– सामयिक सरत और सुबोध है।

यात्रा–स्थलों का वर्णन :–

"जय अमरनाथ" पुस्तक में श्री जैन ने विभिन्न स्थलों का बहुत प्रभावशाली वर्णन किया है, उन स्थानों से सम्बन्धित यदि कोई अर्न्तकथा प्रचलित है तो उसे भी उन्होने अपनी लेखनी का विषय बनाया है, मुख्य स्थल से सम्बन्धित छोटे–2 स्थल भी उनकी दृष्टि से औझल नहीं हुए है, अमरनाथ की गुफा का सजीव वर्णन लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में किया है...............

"गुफा इतनी बड़ी है कि सैकड़ो व्यक्ति उसमें आसानी से ठहर सकते है गुफा की ढाल ड्योढी की ओर है और उसके ऊपर बहुत ऊँचा पहाड़ है, कश्मीर सरकार ने मंत्रियों की सुविधा के लिए थोड़े–थोड़े फासले पर लोहे की एक रेलिंग बनवा दी जिसके दर्शनार्थी अच्छी तरह, बिना भय के यहाँ ठहर कर दर्शन कर सकें गुफा के नीचे तथा दायें – बायें गर्मी में काफी बर्फ रहती है, लेकिन कहते है, कि गुफा के ऊपर पर्वत पर बर्फ देखने में नहीं आती, छत मे टप–2 पानी गिरता रहता है, और शायद उसी के कारण ये हिमाकृतियाँ बनती है यहाँ के पहाड़ एकदम सूखे है उन पर हरियाली का नाम तक नहीं हैं।"[1]

---

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 83

दिल्ली से अमरनाथ तक यात्रा में अनेक नगर पड़ाव आते है, जिनका वर्णन लेखक ने अतिसूक्ष्म दृष्टि से किया है, पठानकोट – रामबन के बीच जा ऊँचाई है उसको तुलनात्मक दृष्टि से लेखक ने अपने यात्रा वृतान्त में उल्लिखित किया है, उसने लिखा है कि वहाँ की ऊँचाई और यह की ऊँचाई में काफी अन्तर था इनसे भी अधिक का समझिये वायुवर्जन पडाव का वर्णन करते हुए श्री यशपाल जैन ने इस स्थान के सम्बन्ध प्रचलित अर्न्तकथा तथा इसके नामकरण का भी वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है...

इस स्थान के विषय में एक धर्म –कथा प्रचलित है कहते है, किसी जमाने में इस पर्वत पर एक बलवान राक्षस रहता था जो वायु के रूप वाला था वह देवताओं को बड़ा कष्ट देता था, उससे त्रस्त होकर सारे देवता शिव जी के पास गये उनकी स्तुति की, शिव जी प्रसन्न हुए देवताओ ने राक्षस के त्रास की कहानी सुनाई शिव जी ने कहा, मैनें उसे वरदान दिया है कि मैं उसे नहीं मार सकता आप लोग विष्णु जी के पास जाओ तब देवताओ ने क्षीर सागर पर जाकर विष्णु की स्तुति की, उन्होने प्रसन्न होकर कहा, मै अभी उस राक्षस का नाश कर डालूँगा ।" देवता चले गये तभी पाताल से शेषनाग प्रकट हुए विष्णु जी ने उन पर चढ़ कर आज्ञा हे सर्पराज, तुम हजार मुख से वायु का पान करो सर्पराज ने ऐसा ही किया और वायुरूप राक्षस का भक्षण कर लिया कहते है उसी समय से इनका नाम शेषनाग पड़ गया बाद में एक और दैत्य ने यहाँ उपद्रव किया और इन्द्र ने अपने ब्रज से इसी स्थान पर उनका हनन किया तब से यह स्थान वायुवर्जन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, कालान्तर से बिगड़कर वायुजन हो गया, जो हो स्थान बड़ा सुन्दर है। "[1]

केदारनाथ, ब्रद्रीनाथ की यात्रा में अनेक नगर और चट्टिया पड़ती है, लेखक ने "उत्तराखण्ड के पर"शीर्षक यात्रा – वृतांत में दिल्ली से लेकर केदारनाथ – बद्रीनाथ तक के मार्ग के प्रमुख स्थलों का बड़ा सजीव चित्रण किया है, रूडकी, हरिद्वार, ऋषिकेश, श्रीनगर के उपरान्त फाटा चिट्ठी का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है...

---

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 61

फाटा चिट्ठी से आगे का मार्ग बड़ा सुन्दर है ज्यों – ज्यों ऊँचाई पर चढ़ते जाते है। हरी – भरी उपत्काएं आगे पीछे दीख पड़ती है ऊँचे – नीचे सधन वृक्षों के कारण पर्वत मालायें इतनी सुहावनी लगती है, कि देखते – देखते जी नहीं अघाता, कही–कही छोटे–छोटे गाँव उस वन श्री के बीच ऐसे जान पड़ते है मानो प्रकृति की अगूँठी में नग जड़े हो यहाँ के ग्रामवासियों की गुजर–बसर कुछ तो खेती से और कुछ बंजी–व्यापार से होती है।"[1]

केदार नाथ यात्रा के मध्य रामबाड़ा चट्टी पर लेखक रूकता है जहाँ उसकी एक दूकानदार से भेंट हो जाती है, श्री जैन और दुकानदार के मध्य हुए बात चीत के अंश यात्रा वृतान्त में रोचकता उत्पन्न कर देते है, जिसके सम्बन्ध में यशपाल जी ने लिखा है, कि दुकानदार दिलचस्प आदमी निकला, बूढ़ा था और संस्कृत मिश्रित हिन्दी बोलता था लेखक के शब्दों में दृष्टण्य है...

वह बोला, "आप समझते क्या हो ? मैं

अनाशक्ति योग का बराबर पाठ करता है।

अनाशक्ति की जगह उसने इस ढंग से

कहा कि मुझे हँसी आ गई फिर मैने छेड़ते हुए पूँछा

"बाबा गाँधी जी को जानते हो?"

क्यों नहीं ? उन महात्मा को कौन नहीं जानता ? वह बोले ।

मैने फिर पूँछा "अच्छा और किस –2 नेता के जानते हो ?

उसके बुढ़े चेहरे पर मुस्कराहट खिल उठी गर्व के साथ बोला में सब बड़े –2 आदमियों को जानता हूँ, राजेन्द्र प्रसाद हमारे राष्ट्रपति है, जवाहर लाल नहेरू प्रधान मंत्री हे न ?"[2]

हनुमान चिट्ठी का वर्णन लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में किया है।

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 50
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 62

"हनुमान चिट्टी से तीन मील पर कांचन गंगा आई ऊपर से नीचे तक सारी धारा जमी हुई थी, बर्फ पक्की और चिकनी अभ्यस्त होने के कारण बहुत से यात्री फिसल पड़ते है पर सौभाग्य से ढाल ऐसा नहीं है कि नीचे पाताल दर्शन हा जाये, या जोर की चोट लग जायें, गुजे की बात यह कि गिरने वाले राते नहीं, खिलखिलाते है और साथ के लोगों के मनोदुलर्भ होती है जहाँ प्रकृति हँसती हो, मानव का रोना शोभाप्रद कैसे हो सकता है।"[1]

श्री जैन ने केदार मन्दिर का जो चित्र प्रस्तुत किया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि लेखक में अन्धश्रद्धा नहीं है, वह जो कुछ यथार्थ रूप में दृष्टिगत करता है उसे स्पष्ट बमानी के साथ प्रस्तुत करने देता है,यथा....

मुख्य द्वार के समाने नन्दी की विशाल मूर्ति है, सभा मण्डल मे द्रोपदी सहित पाँच को मूर्तिया है पूजा की सामग्री के साथ लोग घी ले जाते है और उसका कमल चढ़ाने का विशेष महत्व मानते है, अन्दर घी के बहुत से दिये जल रहे थे जिसके कारण वहाँ के वायुमण्डल बड़ा संगुन्धित हो रहा था, मन्दिर के पीछे तीन हाँथ लम्बा अमृत कुण्ड है जिसमें दो शिव लिंग है पुर्वात्तर भाग में हँसकुण्ड और रेतकुण्ड है हँस कुण्ड में लोग अपने मृतकों की मुक्ति के लिए उनकी कुण्डलियाँ डाल जाते है, कई कुण्डलियाँ उसमें पड़ी थी हमें बताया गया कि रेतकुण्ड के निकट खड़े होकर "ओं नमों शिवाय" कहो तो पानी में बुलबुल उठने लगते है पर यह चमत्कार हम लोगो के देखने में नहीं आया, बुलबुले उठ जरूर रहे थे लेकिन ऐसा दिखाई नहीं दिया कि "ओ नमों शिवाय" कहने पर ही उठते है।"[1]

बद्री विशाल की प्राचीन मूर्ति का वर्णन लेखक ने बड़े समन्वित ढंग से निम्नलिखित शब्दों मे उद्घाटित किया है....

"मन्दिर के भीतर बद्री विशाल की काले पत्थर की पद्मासनस्थ चर्तुभुजी मूर्ति है उसके सम्बन्ध

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 111
1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 62

में लोगों की अलग–अलग धारणायें है वैष्णव उसे विष्णु भगवान की मूर्ति मानते है शिव शैव की, शाक्त शक्ति की जैन पार्श्वनाथ ऋषमदेव की बौकृ बुद्ध की आदि और सब अपनी–अपनी दृष्टि से अपनी – अपनी मूर्ति छवि उसमें देख लेते है प्रतिमा की दो भुजाये तो पधासन की मुद्रा में है, दो ऊपर की ओर जाती है, कन्धे से ऊपर का भाग नहीं है। वहाँ सपाट पत्थर है लंदन की ओर जाती हैं दो ऊपर की ओर जाती हैं कन्धे से ऊपर का भाग नहीं है वहाँ सपाट पत्थर है, चन्द्र की बाड लगाकर दर्शकों को सिर का अनुमान करा दिया जाता है, वाहे खण्डित है वक्ष पर श्रीवत्स का चिन्ह हैं।"

प्रकृति वर्णन :–

श्री यशपाल जैन के यात्रा वृतान्तों में प्रकृति वर्णन का महर्त्वपूण स्थान है उन्होने विभिन्न स्थलों के सन्दर्भ में तो प्रकृति वर्णन किया नहीं है, वरन् स्वतन्त्र रूप से भी प्रकृति के सुन्दर मनमोहक दृश्य वर्णित हुए है इनके यात्रा वृतान्तों में प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों ही रूपों को दृश्य किया जा सकता है,पर्वत नदियों कुंडो उपत्यकाओं को चित्र इनकी लेखनी का स्पर्श पाकर सजीव हो उठे है, प्रकृति का संदेशात्मक रूप भी उपलब्ध होता, किन्तु अंलकार रूप में प्रकृति चित्र का सर्वया अभाव दृष्टिगोचर होता है।

प्रकृति के कोमल रूप का वर्णन :–

लेखक ने प्रकृति के कोमल रूप को जिस ढंग से स्थापित किया है, वह यात्रा वृतांत पाठक के मन में प्रकृति के रूप में बरबस आकृष्ट कर देता है, यथा....

"त्रियोदशी का चन्द्रमा आकाश में चमकने लगा चाँदनी छिटकी हुई थी और चारो ओर बिछी चाँदी सी चमक रही थी दूर –पास सब कुछ सफेद नजर आता था, तम्बू के चारो ओर बर्फ की मोटी सी तह लगी थी। ऊपर तह लगी थी ऊपर से दूध – सी चाँदनी छिटकी थी और शुभ्राकाश में

गोलाकार चाँद अपनी आभा खुले हाँथो से बिखेर रहा था, सप्तऋषि मुस्करा रहे थे, जीवन का वह अपूर्व अनुभव था सब लोगो ने उठ–2 कर वह अद्‌भुत दृश्य देखा ।"[1]

इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर....

"मंदाकनी कही नव–यौवना की भाँति धीर गम्भीर हो उठती है यहाँ की वन श्री तो बहुत ही शोभायुक्त है ऐसा प्रतीत होता, जैसे किसी चितेरे की कुशल तूलिका ने उस आलोकिक जगत की सृष्टि की है और वहाँ जो दीख पड़ता है वह पार्थिव जगत की वस्तु नहीं है। उन दृश्यों को देखने को देखने की भूख उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।"[2]

प्रकृति का कठोर रूप :–

प्रकृति के कठोर रूप में लेखक ने निम्नलिखित शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है.....

पानी के साथ जोर के ओले पड़ने लगे, तम्बू के ऊपर ओलो की पड़ पडाहट ऐसी प्रतीत होती थी, मानो ईट पत्थर गिर रहे हो, पानी के बचाव के लिए तम्बू को अच्छी तरह से बन्द कर लिए थोड़ी देर में देखता हूँ कि पानी मेरे बिस्तर के बीचे आने लगा चटाई बिल्कुल भीग गई थी पानी और बढ़ता जा रहा था रात को बारह बजे तक यही स्थिति रही पानी और ओले पड़ते रहे हम लोग भगवान का नाम लेते, कभी बैठते कमी लेट जाते।"

श्री जैन की अमरनाथ – केदारनाथ बद्रीनाथ यात्राओं में पर्वतों पर विशेष दृष्टि रही है और अपने विवरणों में उन्होने इन पवर्तो का गहन दृष्टि से अवलोकन किया है, अमरनाथ की यात्रा में इन पर्वतो की विशेषताओं ने उनके साहित्यकार मन को विशेषतः आकर्षित किया है वे लिखते है.....

"यहाँ एक विशेषता ने हम लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया इधर कोई भी दो पहाड़ एक रंग के न थे, कोई टूटे–सूखे पेड़ की तरह और उसेक रंग का था तो कोई रेल के जले कोयले जैसा कोई मटमैला तो कोई कत्थई यह बड़ी विचित्र बात थी जगह एक वायुमण्डल एक

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 51
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 43

आंकाश एक सूर्य का ताप, सर्दी और बर्फ भी एक लेकिन पर्वतों के नाना रूप और वर्ण है, प्रकृति की लीला अपरम्पार है।"[1]

उत्तराखण्ड के पर्वतों का रूप परिवर्तनशील है, जो सैलानियों को विशेष आनन्द प्रदान करता है, इस सम्बन्ध में श्री जैन ने लिखा है....

"सबसे विचित्र बात यह है कि यहाँ के दृश्य थोड़ी –2 देर में बदलतें रहते है, जैसे –2 मौसम के हिसाब से बर्फ घटती बढ़ती है पर्वतों का रूप भी परिवर्तित हो जाता है बर्फ के कारण पहाड़ो पर अपनी कल्पनानुसार अनेक आकृतियाँ दीख पड़ती है कहीं ऐरावत दिखाई देता है तो कही रथ कही जटाजूटधारी शंकर भगवान तपस्या करते दीख पड़ते है तो कही पार्वती जिधर भी देखिये उधर ही भिन्न – भिन्न प्रकार के रूप दिखाई देते है।"[2]

भारतवर्ष में नदियों का जाल बिछा हुआ है और नदियों का देश भी कहा जाता है श्री जैन ने यात्रा वृतान्तों में गंगा – यमुना आदि नदियों का तो चिन्ताकर्षक वर्णन हुआ है साथ ही सिंधु और मंदाकिनी के चित्र विशेष रूप से उल्लेखनीय है, सिन्धु नदी के एक भावपूर्ण चित्र को श्री जैन ने नदी का मानवीकरण करते हुए दर्शाया है...

सिन्धु नदी अनासक्त भाव से बहती है जाने कितने यात्री अब तक उस मार्ग से गुजर चुके है जाने कितने आगे गुजरेंगे उनकी धबराहट के देखकर यदि वह भी घबरा जाये तो कहाँ ठिकाना लगेगा, वह ले मानो कहती थी..............

आदमी आवे चाहे जावें, लेकिन मै तों सदा सर्वदा इसी प्रकार बहती रहूगी ।" सच भी है जीवन अर्थ गति है गतिहीनता का अर्थ है मृत्यु, धीर गम्भीर गति से बहती हुई सिंध यात्रियों को यही सन्देश दे रही थी ।"[3]

श्री जैन ने मंदाकिनी को उसके उद्‌गम् स्थल से लेकर यौवना एवं प्रौढ़ावस्था तक अवलोकित

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 66
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 70
3. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 78

करने के साथ–2 अपनी दृष्टि को मात्र पर्वतों की चोटियों के सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं रखा, अपितु कुण्ड़ो तक भी उसे पहुँचाया हे उत्तराखण्ड के अमृत कुण्ड, हँस कुण्ड रेत कुण्ड का उल्लेख भी उन्होने बड़े रोचक ढंग से किया है उपत्यकाओं के सौन्दर्य से वे इतना अभिभूत हो जाते है, कि वह दृश्यों को बारम्बार देखना चाहते हैं।

प्रकृति बड़ी उदार, विवेंक और सामंजस्यता का उपदेश देने वाली है प्रकृति के इस गुण का उल्लेख श्री जैन ने निम्नलिखित शब्दों मे किया है...

असल में प्रकृति बड़ी समझदार है जहाँ जिसको पैदा करती है देश – काल के अनुसार उसी प्रकार के साधन उसके लिए जुटा देती है यदि प्रकृति ने बकरियों को इतने बड़े बाल न दिये होते तो वह बेचारी ठिठुर कर मर न जाती ऐसी अन्याय प्रकृति के हाँथी कैसे हो सकता था ।"[1]

वैयाक्तिकता एवं आत्मीयता :–

किसी मात्रा – वृतान्त के लिए वैयक्तिकता एवं आत्मीयता का होना आवश्यकता तत्व है, इस गुण का श्री जैन के मात्रा – वृतान्तों में कही पर भी अभाव दृष्टिगोचर नहीं होता, उन्होने समस्त यात्रा – साहित्य का सृजन प्रथम पुरूष के रूप में किया है, सर्वत्र यशपाल जी का व्याक्तित्व आरूढ़ वे प्रायः पाठकों को यह अनुभूति कराते हुए चलतें है कि यह सब जो मैने लिखा है उसे स्वयं देखा और भोगा है "जय अमर नाथ" में उन्होने एक स्थान पर लिखा है।

"अपने जीवन में मैने अनेक पहाड़ी स्थल देखे है, लेकिन इतना दुर्गभ और इतना निर्जन स्थान मैने अब तक नहीं देखा, प्रकृति का रूप यहाँ जितना आलौकिक था उतना ही भयावना, चारों ओर वृक्षहीन हरियाली, रहित पर्वत और अनुसान इतना की अपने ह्रदय का स्पन्द भी आप सुन सकें ।"[2]

उनकी आत्मीयता केवल चंद बड़े लोगो तक ही सीमित नहीं है, उनकी आत्मीयता के घेरे में नदी, नाले पर्वत, कुण्ड, गरीब वर्ग के बोझिये तक आ जाते है, "उत्तराखण्ड के पथ" पर में बोझियों

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 58
2. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 68

के लिए उनकी आत्मीयता निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त हुई है...

"बोझियों से विदा ली, इतने दिन साथ रहने के कारण कई बोझियों को हम लोगो से बड़ी आत्यीयता हो गई थी, अलग होने पर उनका और हम लोगों का जी भर आया ।"[1]

श्री जैन तीर्थ की उन्नति के लिए भी वहाँ के लोगों से विचार – विमर्श करते हैं यह उनकी आत्मीयता का दूसरा रूप है, उदाहरण के लिए श्री आलम सिंह के ये शब्द यर्थाथ जान पड़ते हैं....

"इतनी कुरसत किसे है। लोग मेहमान की तरह आते है और बड़ी – बड़ी बाते करके चले जाते हैं। इससे कुछ नहीं होने का ।"[2]

लेखक की आत्मीयता एवं वैयाक्तिकता का एक उदाहरण उस समय मिलता है जब ये उत्तराखण्ड की यात्रा के अंतिम क्षणों में बद्रीनाथ के मंदिर से दिल्ली की ओर प्रस्थान करते है, उस समय वे भाव विभोर होकर अपनी भावाभिव्यक्ति निम्नलिखित शब्दों में करते है....

"आखिर वहाँ से बिदा लेने का समय आया साढ़े आठ बजे थे मंदिर के बाहर खड़े होकर जब एक निगाह चारो ओर डाली तो बहुत से चित्र सामने घूमने लगे, सामने महात्मा उपमन्यु तपस्या कर रहे थे, उधर देखिये, गोत्र हत्या का पाप दूर करने के लिए पांडव भगवान शंकर का दर्शन करने चले आ रहे है, पुरवासी घी और मक्खन लिये कितनी भक्ति से उनका स्वागत कर रहे है, ब्रहम हत्या के पाप का प्रायश्चित करने के लिए मर्यादापुरूषोत्तम् राय अपने भाई भरत और लक्षमण तथा सीता के साथ चले आ रहे है, पर यह युवक कौन है, जिनका मुखमण्डल तेज से दीप्त हो रहा है? आहो, यह तो आदि शुरू शंकराचार्य है वह देखिऐ पर्वतों के उत्तुंग शिखरों पर पर्वतराज और प्रकृति–देवी किस प्रकार आंनन्द से चहलकदमी कर रहे है।"[3]

उपरिलिखित गद्य खण्ड जहाँ एक ओर प्रकृति – देवी आत्माभिव्यक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है वहाँ दूसरा ओर अंत में सम्पूर्ण यात्रा को एक कड़िका में समाहित करने की कला में भी सिद्ध हस्त है।

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 142
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 92
3. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 72

स्वच्छदता एवं निरपेक्षता :–

लेखक ने अपने स्वदेश से सम्बन्धी यात्रा वृतान्तों में बिना किसी पूर्वाग्रह के "उत्तराखण्ड" एवं निपेक्षता के साथ वर्णन किया है।

भारतीय संस्कृति का आधार जीवन साधना है, जिसे वेदान्त में अद्धॅतानन्द कहा गया है, जीवन साधना के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए श्री काका कालेकर ने लिखा है...

"हमारे पूर्वज ने जीवन साधना के किसी जीवन साधना के किसी सुभग क्षण में जीवन शुद्धि और जीवन स्मृति का समन्वय करने का सोचा और वे पवित्र स्थानों की यात्रा करने निकल पड़े सच्चा धर्म है समाज सेवा के लिए इन्द्रिय निग्रह करना, उधोग परायण सादगी से रहना और समुचे समाज के साथ अपनी एकता की अनुभव करना, केवल मनुष्य समाज के साथ ही नहीं किन्तु सचराचर विश्व के साथ एक रूप हो जाना यही है सच जीवनानंद, वेदांत जिसे अद्धैतानंद कहता है, वह यही विराट जीवनांनद है।"[1]

स्पष्टतः सच्चा जीवनांनद किसी मनुष्य का यात्री बनकर ही प्राप्त होता है, अतः किसी भी संस्कृति को समझने के लिए यात्रा करना परमावश्यक है भारतीय संस्कृति एक विशाल महासागर सदृश्य है जिसमें विभिन्न धर्म विभिन्न विश्वास वेशभूषा भाषा एवं रीतिरिवाजों की सरिताएं आकर गिरती है और विराटता प्रदान करती है, भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है मानवता और एकता में अनेकता एवं अनेकता में एकता अर्थात साम्य भाव उत्तराखण्ड एवं जमरनाथ की यात्राओं में लेखक की मानवता अनेक स्थानो पर प्रकट हुई है एक घायल स्त्री को देखकर उनके ह्रदय में बड़ी पीड़ा होती है, उन्होने लिखा है...

"कुछ कदम आगे बढ़ने पर एक डांडी आई जिसमें एक लहूलुहान स्त्री बेहोश सी पड़ी थी कपड़े खेन से लतपत हो रहे थे, पूँछने पर मालूम हुआ कि वह छत से गिर पड़ी थी सारी देह फूट

---

1. जय अमरनाथ, यशपाल जैन, पृष्ठ – 8–9(भव्य और दिव्य)

गई थी, उसे देखकर डांडी वालों को दया आ गई, वे उसे गुप्त काशी ले जा रहे थे, जहाँ चिकित्सा की व्यवस्था थी स्त्री की दिशा देखकर दिल को बड़ी चोट लगी, यूँ तो सावधानी से रहने और चलने की सभी जगह जरूरत होती है लेकिन पहाड़ो पर तो सजग रहना और श्री आवश्यक है जरा चूकने पर जॉच संकट में पड़ सकती है, बार–बार ख्याल होता था कि स्त्री के इतनी चोट लगी है इतना लहू वहा है, वह क्या बच पायेगी ।"[1]

अन्यत्र लेखक एक मजदूर के प्रति संवेदनशील हो उठता है और सुझाव देने लगता है यथा....

"आगे चलकर मालूम हुआ कि सुंरग से एक मजदूर का शरीर रक्त रंजित हो गया, काफी चोट आयी थी, नहीं बचा होगा कि नहीं जहाँ–2 काम लगा है वहाँ समुचित उपचार की व्यवस्था अवश्य रहनी चाहिए ।"[2]

उत्तराखण्ड की समान प्रवृति पर प्रकाश डालते हुए यशपाल जी ने लिखा है.....

"कैसी विचित्र दुनिया है वह। न वहाँ कोई धनी है, न एक है, न कोई बड़ा है, न छोटा, न कोई नीच है, न कोई ऊंच एक बड़े कुटुम्ब के आत्मीयजनों की भाँति प्रेम से हिल – मिल कर सब चले जा रहे है। थोड़ी देर की जान – पहचान में ही ऐसा लगता है। मानो वर्षो का परिचय हो ।"[3]

पौराणिक उल्लेख एवं किवदन्ती :–

"ऊषा – अनिरूद्ध की प्रेम लीला भूमि में वाणासुर नामक दैत्य की कन्या ऊषा इसी स्थान पर रहती थी, श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध के प्रति उसकी आसीवत हो गयी और कुछ समय तक उनकी प्रेम लीला चलने के बाद उनका विवाह हो गया, इसी ऊषा के नाम पर इस स्थान का नाम "उषामठ" पडा, जो कलान्तर में बिगड़कर "ऊखी –मठ" हो गया, यहाँ के मन्दिर में ऊषा और अनिरूद्ध की मूर्तियाँ है, एक मूर्ति माधांता की है यहाँ सबसे बड़ा और प्रधान ओंकारश्वर शिवलिंग का है, मन्दिर पर दक्षिण की स्थापत्यकता का प्रभाव हैं।"[4]

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 46
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 38–39
3. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 58
4. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 83

लेखक ने पौराणिक उल्लेख तो किया ही वरन् साथ में ऐतिहासिकता को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया जो उपर्युक्त वर्णन में दृश्यमान हो जाता है।

उत्तराखण्ड का गरूड़ गंगा क्षेत्र एक पौराणिक स्थल है इसक सम्बन्ध में एक किवदन्ती भी प्रचलित है जिसका संकेत लेखक ने इन शब्दों में किया है....

"कहते है, यह गरूड़ की तपोभूमि है, विष्णु भगवान का वाहन होने के लिए यहाँ गरूड़ ने तपस्या की थी पास ही "गुरूड़ गंगा" नाम की छोटी सी नदी बहती है, धार्मिक लोगो का कहना है कि यहाँ का पत्थर घर में रखने से साँप का डर नहीं रहता ।"[1]

"बद्रीनाथ जाते हुए पांडुकेश्वर एक स्थान आता है जिसके सम्बन्ध में एक पौराणिक आख्याम प्रचलित है, जिसका उल्लेख श्री जैन ने निम्नलिखित शब्दों में किया है....

"पाड़वों ने इसे बनवाया था प्राचीन कथा है कि महाराजा पांडु ने पूर्व जन्म में मृग रूपी मुनि को वाण से मारकर उसके शाप से दुःखी होकर यहाँ तपस्या की थी, यह भी कहा जाता है, कि यही पर कुंती ने पाँचो पाण्डवों को जन्म दिया था और यहीं पर महाराज पाण्डु की मृत्यु हुई, यहाँ पर दो ताम्र–पत्र है लेकिन उन्हे अभी तक कोई पढ़ नहीं सका ।"[2]

लेखक ने गौरी कुण्ड में एक सिर कठे गणेश की मूर्ति देखी जिसके विषय में एक पौराणिक गणेश आख्यान है कि....

"यहाँ पार्वती ने रखवाली के लिए गणेश को बिठा दिया था, शिवजी आये तो गणेश ने उन्हें रोका इस पर गुस्साहोकर शिवजी ने उनका सिर उड़ा दिया जब पार्वती को यह मालूम हुआ तो वह बहुत राई–थाई तक शिवाजी ने हाल में ही पैदा हुए हाँथी के एक बच्चे का सिर काट कर लगा दिया, उस समय से गणेश गजानन बन गये।"[3]

बद्रीनाथ मन्दिर से आगे वसुधारा है, जिसके सम्बन्ध में किवदन्ती है कि जिस व्यक्ति पर

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 98
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 98
3. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 108–109

इसकी बूँदे नहीं पड़ती वर्ण संकर संतान होता है, इसका उल्लेख श्री जैन ने अपने यात्रा वृतान्त में यथा स्थान किया है जोशीमठ में नरसिंह की एक विशाल मूर्ति है जिसका एक हाँथ बड़ा ही कृश है इसके सम्बन्ध में भी प्रचलित किवदन्ती को लेखक ने बड़े सटीक ढंग से से निरूपित किया है....

"लोगो की धारणा है जब तवह हाँथ टूटकर गिर जायेगा तो नर–नारायण पर्वत आपस में मिलकर बद्रीनाथ का मार्ग अवरूद्ध कर देगे।"[1]

इसी प्रकार, जब तक ज्योर्तिम में विष्णु विधमान है जिस दिन उनकी (विष्णु) ज्योति मठ जायेगी, बद्रीनाथ मनुष्यों के लिए अगम्य हो जायेगा।"[2]

इन किवदन्तियों का उल्लेख "कुमार संहिता में तो है ही, श्री जैन ने भी इन्हे रोचकता के साथ अपने "उत्तराखण्ड के पथ पर" यात्रा वृतान्त में स्पष्ट किया है ये किवदन्तियॉपाठक के मानस पटल पर गहरा प्रभाव डालती हैं और उनकी धार्मिक मान्यताओं को पुष्ट करती है।

केदार नाथ मन्दिर के आस पास एक बड़ा भंयकर स्थान है जिसके सम्बन्ध में प्रचलित है कि वहाँ के कूदकर बहुत से भोले भाक्ते धर्मान्ध व्यक्ति मोक्ष पाने की अपनी मनोकामना पूर्ण करते है, इसका मार्ग अब बन्द कर दिया गया है इसका उल्लेख भी यशपाल जी ने अपने यात्रा वृतान्त में किया है।

उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकती है कि जैन ने अपने इन धार्मिक महत्व वाले यात्रा वृतान्तो में जहाँ कही भी सम्भव हुआ है वहाँ पौराणिक वर्णनों का उल्लेख किया है एवं स्थलों से जुड़ी किवदन्तियों को जस का तस प्रस्तुत किया है इनके वर्णन से यात्रा वृतान्तो में रोचकता तो पाठक महसूस करता ही है साथ ही उसके मन में भाँति – भाँति की जिज्ञासायें भी उत्पन्न हो जाती है, जो यात्रा वर्णन की सफलता को इंगित कराता है।

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 102
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 102

वेशभूषा :-

श्री यशपाल जैन पर्वतीय यात्राओं की वर्णनों में वहाँ की लोक अर्थात् वेशभूषा आदि का भी सुन्दर एवं प्रभावशाली वर्णन किया है यथा....

"इधर के रहने वालों को स्वास्थ्य बड़ा अच्छा है साफ और चेहरे लाल, स्त्रियाँ गहने खूब पहनती हैं पर गन्दगी बहुत है शायद बरसों में ये लोग स्नान करते है यहाँ दिखावा नहीं है और स्त्रियों में गजब का शील है आप चुपचाप चित्र खींच ले तो अलग बात है, मालूम होने पर शायद ही कोई स्त्री चित्र खिंचवाने को राजी है।"[1]

लेखक के भारतीय यात्रा –वर्णनों में स्थानीय भाषा एवं लोक जीवन की झलक बहुत कम मिलती है.....

उत्तराखण्ड के चमेली जनपद में "पुल" के लिए "लाल सांगा" शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका अर्थ लाल पुल होता है, केवल इतना अवश्य एक स्थान पर उल्लिखित है, परन्तु इसके अतिरिक्त श्री जैन ने स्वच्छन्दता एवं निरपेक्षता से वहाँ पर व्याप्त लालची प्रावृत्ति, गरीबी, चोरी, गन्दगी भ्रष्टाचार और साधुओं पर करारा प्रहार किया है....

उत्तराखण्ड के लोगों में व्याप्त लालची प्रवृत्ति को लेखक ने कारण सहित इन शब्दों मे व्यक्त किया है....

"इधर के लोगों में लालच बहुत है शायद इसलिए कि यात्रा के छः महीनो में उन्हें साल भर के गुजारे का प्रबन्ध कर लेना होता है न करें तो जाड़े के दिनों में जब आदमी तो क्या परिंदा भी उधर दिखाई नहीं देता हो वो क्या खायें।"[2]

श्री जैन का विश्वास है कि पर्वतीय क्षेत्रों के लोग गरीब अवश्य है किन्तु बड़े ईमानदार है वे चोरी नहीं करते है भीख माँगकर अपनी गरीबी को ढ़कने का प्रयास जरूर करते हैं मन्दिर चाहे

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 110
2. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 07

उत्तराखण्ड के हों या जम्मू कश्मीर क्षेत्र के बद्रीनाथ का मन्दिर हो अथवा केदारनाथ और अमरनाथ की गुफा, सर्वत्र गरीबी का खुला प्रदर्शन दृष्टिगोचर होता है लेखक का कथन है कि....

"मन्दिर के बाहर साधु और भिखारियों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है, बड़े ही करूण स्वर में व यात्रियों से भीख की याचना करते है बड़ा बुरा लगता है तीर्थ क्षेत्रों में लोगो की दान– पुण्य की वृत्ति ने इन लोगों को भिखमंगा बना दिया है।"[1]

एक अन्य स्थान पर भी श्री जैन ने लिखा है....

"उनके छोटे–छोटे खिलौनों जैसे बच्चे यात्रियों को देखते ही दौड़ आते हैं और हाँथ फैलाकर कहते हैं, "सेठ साब पैसा दो" उनकी प्यारी सूरत और स्वस्थ शरीर को देखकर जहाँ होता है, वहाँ उनकी माँगने की प्रवृत्ति पर क्षोभ भी होता है, इसमें दोष वास्तव में बच्चों का नहीं है उन व्यक्तियों का है, जिन्होंने उन्हें पैसा दे देकर भिखारी बना दिया है।"[2]

धर्म को व्यवसाय बनाये जाने की प्रवृत्ति पर भी लेखक ने दृष्टिपात किया है, उसने इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है....

"मूर्ति के पास एक आदमी बैठा रहता है? सामने थाली रहती है जिसमें कुछ पैसे पड़े रहते है यात्रियों को देखते ही वह आदमी कोई कथा सुनाकर उस स्थान और उस मूर्ति का महात्मय इस ढंग से समझाता है कि बहुत से भोले यात्री चक्कर में आ जाते है इस प्रकार कमाई के अनेक केन्द्र इस सारी यात्रा में मिलते है हाँ एक बात है यदि इन लोगों को सुनकर सारी कहानियाँ लिखी जायें तो एक बड़ा रोचक और मनोरंजक ग्रंथ तैयार हो सकता है।"[3]

यशपाल जी ने एक अन्य स्थान पर लिखा है इस रास्ते में मांगते बहुत मिलते है और रट लगाकर कहते है "पाई–पैसा, पाई–पैसा, गुप्तकाशी के पाण्डों के विषय में लेखक का स्पष्ट कथन है कि....

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 118
2. जय अमरनाथ, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 38
3. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 57

"गुप्तकाशी में पण्डों की भरमार है वे यात्रियों को बहुत ही हैरान करते है, हाथो में लम्बी बहियॉ लेकर वह हर यात्री से उसका नाम और ठोर ठिकाना पूँछते है इतने पीछे पड़ जाते है, कि लोग तंग आ जाते है, हमें भी कई पण्डों ने घेर लिया उन्हें भगाने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन वे कहाँ मानने वाले थे, आखिर हम लोगों के नाम, पते लिखकर ही टलें।"[1]

लेखक ने "जय अमरनाथ" पुस्तक के क्षीण पुण्य" खण्ड में श्री नगर के प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच व्याप्त अशिक्षा और गन्दगी का भी उल्लेख किया है वह इसके पीछे वहाँ के नागरिकों को उत्तरदायी ठहराती है सम्भव है उनमें इनके प्रति कोई रूझान न हो लेखक के शब्दों में दृष्टण्य है.....

प्राकृतिक सौन्दर्य की वह खान है पर.... यह "पर" क्या है, जो वहाँ की धवलता पर एक काला धब्बा लगा देती है ? वह है वहाँ की गरीबी और दैन्य निरक्षरता और गन्दगी।..... ऐसी क्यों है ? इसके अनेक कारण है शायद सबसे बड़ा कारण यह है कि गन्दगी और गरीबी के प्रति वहाँ के मानव की चेतना लुप्त हो गई।"[2]

प्रेरणास्पद :–

लेखक के स्वदेश से सम्बन्धित यात्रा – वृतान्तों में अन्य विशेषता यह भी है कि उन्होंने ऐसे प्रंसगो पर विशेष दृष्टि रखी गयी है, जिसके माध्यम से वह पाठकों को प्रेरित कर सकें, अमरनाथ की यात्रा में उन्होने सामान्य ट्टूट को प्रेरणा स्त्रोत बनाते हुए लिखा है कि.....

"हम लोग अपने जीवन में ठोकर इसलिए नहीं खाते कि मार्ग असमतल होता है, बल्कि इसलिए खाते है, कि हम धीरज के साथ और साधकर कदम नहीं उठाते यहाँ अगर कोई भी टट्टू उतावली से कदम उठावे तो निश्चय ही स्वयं डूबे और सवार को भी डुबो दो हम लोग बहुत सी चीजें मूक प्राणियों से सीख सकते हैं बशर्ते कि हमारे पास देखने को खुली आँखे और सीखने को जिज्ञासा हो ।"[3]

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 50
2. जय अमरनाथ, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 112
3. जय अमरनाथ, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 58

अन्यत्र एक स्थल पर......

"रास्ते में सध्यारानी नाम की एक नौ वर्ष की बंगाली बालिका मिली हाँथ में लाठी लिए धीरे–धीरे वापस लौट रही थी, पूँछने पर मालूम हुआ कि उसने केदारनाथ त्रिजुगीनारायण तुंगनाथ और बद्रीनाथ की पूरी यात्रा पैदल की है मैंने उसकी पीठ थपथपाकर शबाशी दी देर तक सोचता रहा कि हम लोग बच्चों की शक्ति का ठीक–2 अनुमान नहीं लगा पाते और अपनी ग्रान्त धारणाओं से दुर्बल और मीरू मानकर उन्हें पैसा ही बना देते हैं।"[1]

उद्देश्य :–

हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवि एवं विद्वान श्री भवानी प्रसाद मिश्र ने श्री यशपाल जैन के सम्बन्ध में लिखा हैं।

"उनका पयर्टन लगभग निरूउददेश्य होता है, वह सम्यक उद्देश्यों को सहज साधक बन जाता है।"[2]

श्री जैन ने "उत्तराखण्ड के पथ पर" पुस्तक की भूमिका में जो लिखा है, उससे उनकी यात्रा विवरण का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है....

यदि उत्तराखण्ड के इन तीर्थो की यात्रा करने वाले सहस्त्रों नर–नारियों में से कुछ–कुछ को भी इस पुस्तक से भी मदद मिली या पाठक को यात्रा करने की प्रेरणा मिली तो लेखक को बड़ा – संतोष होगा और वह अपने परिश्रम को सफल समझेगा इस प्रकार धर्म – परायण यात्री तथा प्रकृति प्रेमी पर्यटक दोनों ही पुस्तक को अपने काम की पा सकते है।"[3]

एक भेंट वार्ता में श्री जैन ने अपनी भारतीय यात्रा विवरणों के उद्देश्य के सम्बन्ध में बताया है....

हिमालय में घूमने का मेरा ध्येय तीर्थ–दर्शन से अधिक वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य तथा सांस्कृतिक महिमा के दर्शन करने का था, मेरा यह निश्चिय मत है कि बिना हिमालय दर्शन किये

1. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 100
2. निष्काम साधक, सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 115
3. उत्तराखण्ड के पथ पर, श्री यशपाल जैन, पृष्ठ – 6 (दो शब्द)

कोई भी व्यक्ति भारतीय संस्कृति को नहीं समझ सकता, हिमालय की गोद में ही भारतीय संस्कृति पोषित हुई है।"[1]

वस्तुतः श्री यशपाल जैन के स्वदेश से सम्बन्धित यात्रा– वृतान्त विषय वस्तु एवं उद्देश्य की दृष्टि से महत्व पूर्ण है वे मानसिक बल के अतिरिक्त प्रेरणा भी प्रदान करते है, ईश्वर की कृति "मानव की पूजा" ही सबसे बड़ी पूजा है, उनके विवरणों में गहराई के साथ जन जीवन एवं संस्कृति का चित्रांकन भी हुआ है हास परिहास में इन्हे मनोरंजन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है इस प्रकार श्री जैन ने यात्रा विवरणों को लिपिबद्ध करके यात्रा साहित्य की अभिवृद्धि की है, हिन्दी जगत में उनके यह यात्रा वृतान्त सदैव स्मरण किये जायेगें।

घ. विदेश से सम्बन्धित यात्रा–वृतान्त :–

विदेश भ्रमण के अनेक अनेक अवसर श्री यशपाल जैन की प्राप्त हुए और उनका उपयोग उन्होने यात्रा साहित्य की अभिवृद्धि में किया उन्होने विदेशी संस्कृतियों का गम्भीर अध्ययन किया और भारतीय संस्कृति से यथास्थान उसकी तुलना भी की, स्थल चित्रण भी सजीव और कलात्मक रूप में इन यात्रा –वृतान्तों में उभरा है लेखक का प्रकृति – प्रेम विदेशों के भ्रमण में भी दृष्टि गोचर होता है, लोक –जीवन एवं प्रमुख व्यक्तियों के जो संक्षिप्त रेखा–चित्र श्री जैन ने प्रस्तुत किये है, उनमें लेखक की कुशलता दर्शनीय है।

विदेशी यात्रा–स्थलों का वर्णन :–

अपनी रूस यात्रा में श्री जैन ने मुख्यतः मास्को (रूस की राजधान) और काबुल (अफगानिस्तान की राजधानी) के भवनों विश्वविद्यालयों चौराहों यातायात की व्यवस्था, आर्ट गैलरी, हवाई अड्डों तथा इन नगरों के नागरिकों का अतिसूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन किया है और अपनी लेखनी द्वारा उनके सौन्दर्य आदि का वर्णन किया है।

---

1. एक भेंट वार्ता के अंश

रूस की धरती लाल है, यह धारणा श्री जैन के मन गहरी उतरी हुई थी, जब वे रूस की धरती के ऊपर वायुमान द्वारा उड़ रहे थे, तब उनके मन में गहरी जो विचार आये, उन विचारों को उन्होने निम्नलिखित शब्दों में लिपिबद्ध किया है...

"अब हम रूस में थे उस देश में जिसकी भूमि "लाल" कही जाती है मेरी आँखे उस रंग को देखने के देखने के लिऐ लालायित हो उठी पर कहाँ थी लालिमा ? कहाँ था उस भूमि को अन्तर जो एक क्षण पहले हमसे छूटी थी। सारी भूमि एस–सी सारे दृश्य एक से। दरिया का पानी भी ठीक दूसरे दरियाओं का जैसा।

निमिष – यात्रा में ये विचार मन में बिजली की भाँति कौध गये, लेकिन तभी विमान – नीचे उतरने लगा, विचारों का तांता टूट गया।"[1]

रूस की राजधानी मास्को तथा उसकी गंगातुल्य पवित्र नदी "मस्क्वा" का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है.....

"मास्को विशाल नगरी है और वास्तव में वह बड़ी सुन्दर है, मस्क्वा (मास्को) नदी लहराती हुई नगर में होकर बहती है और सारे शहर को अपूर्ण शोभा प्रदान करती है, बहुत से बड़े – बड़े भवन और मकान उसी के तट पर बने हुए है, यह नदी 312 मील लम्बी है और कोलोमना नगर के निकट ओका नदी में जाकर गिरती है मास्को के भीतर उसकी लम्बाई 28 मील है कहीं – कहीं तो ऐसा बलखाती है कि देखकर ह्वदय मुग्ध हो उठता है, असीम प्राकृतिक सौन्दर्य – प्रदायिनी होने के साथ–साथ उस की उपयोगिता भी कम नहीं है, नौकाओं तथा अग्नि बोटों के द्वारा उसमें अच्छा यातायात होता है।"[2]

श्री जैन ने मास्को को एक साहित्यकार एवं दार्शनिक की दृष्टि से तो देखा ही वरन् भवनों पर उनकी जो अभियन्ता के रूप मे दृष्टि पड़ी वह अत्यधिक प्रशंसनीय है उनके द्वारा किया गया

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 23–24
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 39

क्रेमलिन भवन का वर्णन ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई अभियन्ता की रिपोर्ट रही हो यथा.....

"क्रेमलिन भवन की ऊंचाई लगभग 20 मीटर है, लम्बाई 13 मीटर और क्षेत्रफल 138 मीटर उसकी मीनारें और गुम्बज उसके शिखरों को स्वर्ण वर्ण तथा मास्को नदी के तट पर उसकी अवस्थिति कुल मिलाकर बड़ा ही आकर्षक दृश्य उपस्थित करते है। क्रेमलिन में 20 मीनारें है, जिनमें सबसे विशाल है स्पासकाया मीनार, इसका निर्माण सन् 1491 में हुआ था उसकी ऊँचाई लगभग 221 फुट है, सन् 1951 में उसमें एक घड़ी लगाई गई जिसके घन्टे आज भी आधी रात के समय मास्को रेडियों से सुने जाते है।"[1]

क्रेमलिन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग वह है जहाँ "जार" के समय बहुमूल्य दुलर्भ, ऐतिहासिक महत्व वाली सामग्रियाँ सुरक्षित है, इसका उल्लेख भी लेखक ने अपने यात्रा – वर्णन में विस्तार से किया है।

"मेत्याकोव" मास्को की प्रसिद्ध आर्ट गैलरी है जिसका वर्णन सिद्ध करता है। कि मास्को के कलाकार प्रकृति प्रेमी है....

"प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बड़े आकर्षक है। नदी, सागर, वन, वन्य पशु–पक्षी, पुष्प आदि चित्र कारों की निगाह से बच जाते तो शायद प्रकृति उन्हे क्षमा न करती, रूस की भूमि वास्तव में प्रकृति देवी की बड़ी काड़ती भूमि है और उसका प्रयत्क्ष प्रमाण इस संग्रहालय के अनेक चित्र देते है, प्रकृति के चित्रण में रंगो को खुली छूट नहीं दी गयी है, बल्कि असाधारण संयम रखा गया है।"[2]

लाल चौक (रेड स्क्वायर) रूस की सत्ता परिवर्तन का केन्द्रीय स्थल है, जो सन् 1917 के युद्ध की याद दिलाता है, इसका उल्लेख भी श्री जैन अपने यात्रा विवरण में किया गया है।

श्री यशपाल जैन ने मास्को विश्वविद्यालय के अतिरिक्त रूस के "कजान विश्वविद्यालय" "र्तातू

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 42
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 60

विश्वविद्यालय" "खारकोव विश्वविद्यालय" "लेनिनग्राद विश्वविद्यालय" "कीष विश्वविद्यालय" का भी नामोउल्लेख किया है।

रूस के नियंत्रित यातायात ने लेखक को बहुत प्रभावित किया इसके सम्बन्ध में लेखक का कथन है कि .....

यातायात के साधन बहुत ही सुविधाजनक हैं। सारे शहर में रेलों के और सड़को का जाल बिछा है ट्रेनें, बसें, ट्राली बसें, और टैक्सियाँ रात के दो–तीन घंटो को छोड़कर बराबर चलती रहती है, जमीन के भीतर सुरंग में चलते वाली रेलों का तो जिन्हें मीत्रो कहते है, क्या।"[1]

रूस की जनता में उत्सुकता का गुण अवश्य है, किन्तु वे अनुशासनहींन नहीं है हिन्दी और हिन्दुस्तान से वे प्रेम करते है, इसका शब्द चित्र प्रस्तुत करते है और यशपाल जी कहते है....

जब हम खाना हुए तो बाहर के दृश्य को देखकर ह्मदय गद्‌गद्‌ हो गया लाखों उत्सुक नर–नारियों की भीड़ सड़क के दोनो किनारों में बड़ी ही व्यवस्थित ढंग से खड़ी थी, उनके हाथों में झड़ियाँ थी जिन्हें ऊँची करके "मीर" (शान्ति) और "दुजवा" (मैत्री) के नारे लगाते थे हिन्दी – रूसी "भाई–भाई" के स्वर बार–बार उनके कष्ठ से फूटकर वहाँ के वायुमण्डल में गूँजते थे, लोग जोश में पागल हो रहे थे भीड़ इतनी अनुशासित थी कि देखकर आश्चर्य मिश्रित हर्ष होता था, वास्तव में विशाल जन समुदाय की असीम भावनाओं की यह अभिव्यक्ति असामान्य थी।"[2]

अफगानिस्तान में श्री जैन को रूकने के लिए बहुत कम समय मिला, लेकिन इतने में भी उन्होने वहाँ की अपने यात्रा वृतान्त में पर्याप्त जानकारी प्रदान की है, अफगानिस्तान की राजधानी काबुल का हवाई अड्‌डा धूल से भरा है, जिसका उल्लेख उन्होने निम्मलिखित शब्दों में किया है....

"काबुल का हवाई अड्‌डा कच्चा है जब कोई विमान उतरता है तो धूल का तूफान स आ जाता है, कई देशों के जहाज यहाँ आते जाते हैं आर्याना कम्पनी के जहाज भी कई देशों को जाते रहते

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 39
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 30

है, फिर भी यहाँ का अड्डा बड़ी गई – बीती हालत है उसे ठीक करने के लिए कुछ योजनाएं बनाई गई है, पर देखना है कि उसका भाग्य कब फिरता हैं।"[1]

राजधानी "काबुल" मुख्यतः दो भागों में विभक्त है – नया शहर और पुरानी बस्ती दोनों का यथार्थ चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है....

"यह बड़ा नगर है, बस्ती दूर –दूर तक फैली है, लेकिन देखने में वह एक देहाती कस्बे जैसा लगता है सूखे पहाड़ो पर से दिन भर धूल उड़ती रहती है और कभी–2 तो ऐसा बंबडर आता है, कि खुले रास्ते पर चलना मुश्किल हो जाता है, मकानों बाजारों तथा लोगों के रहन–सहन और कपड़े – लत्ते आदि को दखेकर ऐसा नहीं लकता हम किसी देश की रजाधानी में है शहर का कुछ भाग पुराना है, कुछ नया बसा है, नई बस्ती को "शोरेनो" यानि नया शहर कहते है। उसमें पुरानी बस्ती की अपेक्षा हरियाली अधिक है और मकान भी बड़े और अच्छी बनावट के है, पुरानी बस्ती बहुत घिरी हुई है, लेकिन नगर का तेजी से विकास हो रहा है, नई सड़के बन रही है, पुरानी चौड़ी की जा रही है, नये घर बन रहे है, बिजली पानी की समुचित व्यवस्था की जा रही है।"[2]

लेखक की पैनी दृष्टि वहाँ व्याप्त गरीबी और गन्दगी पर भी पड़ी है उसने इकना वर्णन भी तटस्थता के साथ यात्रा वृत्त में किया है, इसकी एक झलक यहाँ स्पष्ट है।

"काबुल, फलों, ऊनी, सूती, वस्त्रों के लिए विश्वविख्यात है फिर भी वहाँ बेहद गरीबी है, जगह – जगह भिखारी पीछा करते है, पार्वत्य प्रदेशों में गरीबी के साथ – साथ गन्दगी का गठबन्धन अक्सर देखने में आता हे, काबुल इसका अपबाद नहीं है, वहाँ अधिकांश लोग बड़े ही गन्दे है काबुल नदी कुछ महीनों को छोड़कर शेष महीनों में सूखी पड़ी रहती है, जहाँ तहाँ जो पानी रह जाता है, उसका किस प्रकार उपयोग होता है, देखकर तबियत घबराती है।"[3]

थाईलैण्ड, वर्मा, कम्बोडिया, वितनाम, मलाया, नेपाल, भारत के पड़ौसी देश है, जिनका शब्द चित्रण श्री जैन ने विभिन्न दृष्टिकोंण से किया है....

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 14
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 16
3. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 16

थाईलैण्ड के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन :–

इस देश के बैंकाक और अजुध्या नगर सौन्दर्य एवं संस्कृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर है, इन नगरों के राष्ट्रीय संग्रहालय, गवर्न विश्वविधालय तैरते बाजार और मन्दिरों का आकर्षण में श्री जैन को विशेष रूप से आकर्षित किया है इसके अतिरिक्त चिड़ियाघर, सर्पपालक संस्था, सफान पुल, बालोधन और प्रपात, रछबन बाजार और नई सड़क फौराट (जौहरियों का बाजार) महत्वपूर्ण है।

18 मई को प्रातः 8.30 पर रॉयलस्टार कम्बोज से कम्बाडिया की ओर रवाना हुए कस्टम की दृष्टि से हमारे मन पर थाइलैण्ड की सबसे अच्छी छाप पड़ी आते समय और अब जाते समय अधिकारियों ने पासपोर्ट और वीसा देखे, टिकट जाँचे, सामान तुलवाया पर जब सामान दिखाने की बात आयी तो उन्होने उसे खोलने का मौका नहीं दिया, हल्की मुस्कराहट के साथ हमारी ओर देखकर उन्होने सारी चीजों को बिना देखे ही पास कर दिया।"[1]

बैंकाक :–

थाईलैण्ड की राजधानी होने के कारण बैंकाक की निराली शान है वह अपने देश का सबसे बड़ा शहर है, शिक्षा, व्यापार तथा शासन का प्रमुख केन्द्र होने के कारण उसका बड़ा महत्व है लेकिन सबसे दिलचस्प यह बात है कि इस नगरी में प्राचीन अर्वाचीन का विचित्र समन्वय है।

लेखक के बैंकाक की नहरों को उज्जवल एवं धूमिल पक्ष का तटस्थ भाव से वर्णन करते हुए लिखा है....

नहरें बैंकाक की शोभा है सारे नगर में नहरों का जाल बिछा है और इसी कारण इस नगर को पूर्व का वेनिस कहा जाता है, दिन मे एक बार इन नहरें में पानी आता है, उस समय उसमें नावें चलती है, जब पानी उतरता है तो पीछे कीचड़ और गन्दगी छोड़े जाता है, जिससे रोग के कीटाणु उत्पन्न होते है, बैंकाक की आधी बीमारियों का कारण पानी की यही गन्दगी है, इसी कारण अब नहरों को पाटा जा रहा है।

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 210

बैकाक के तैरते बाजार भी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है इसका विवरण श्री जैन ने निम्नलिखित शब्दों में किया है.....

"चौफिया नदी के तैरते बाजार वहाँ के लोक जीवन की अच्छी झाँकी प्रस्तुत करते है इन बाजारो में "   " बाजार प्रमुख है जो नदी के किनारे – किनारे बहुत दूर तक फैला है, उसमें साग, सब्जियाँ फल, मछली, कंकड़े तथा दूसरी बहुत सी चीजें मिलती है सामान से भरी नावें नदी में इधर से उघर दौड़ती रहती है।"[1]

बैंकाक के मन्दिरों मे वाटा फाकेओ (एमरल्ड बुद्ध का मन्दिर) सर्वश्रष्ठ है श्री जैन को जहाँ एक ओर उसकी पवित्रता ने प्रभावित किया, वही दूसरी ओर वहीं दूसरी ओर इसके चारों ओर व्याप्त शान्त वातावरण ने भी आकृष्ट किया, इसके सम्बन्ध में उन्होने दर्शाया है।

"मन्दिरों में बच्चो और स्त्री पुरूषों की संख्या काफी थी जो वहाँ बैठकर अपने इण्ट देव को श्रद्धान्जलि अर्पित कर रहे थे लेकिन क्या मजाल कि एक शब्द भी किसी के मुँह से जारे से निकलता हुआ सुनाई दे जाय, सब मौन प्रार्थना में लीन थे ।"[2]

लेखक वहाँ के मन्दिर से तुलना करता हुआ यह भी कहता है कि....

"ऐसा वायुमण्डल और शान्ति हमारे मंदिरों में कहाँ मिलती है वहाँ तो इतना शोर होता है कि मन को एकाग्र करके चिन्तन करना एक प्रकार से असम्भव हो जाता है।"[3]

"बैकांक के विश्वविधालय एवं शिक्षा के सम्बन्ध में लेखक का कथन है....

"बैकांक का चुलालौंगकर्न विश्वविधालय का भवन स्वतः ही पर्यटको का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है, वह जितना विशाल है उतना ही कलापूर्ण भी है थाइलैण्ड में प्राइमरी (प्रथोम) अर्थात 1 से 4 तक की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है मिडिल (मथयोम) तथा हाईस्कूल के कक्षाएं 5 से 12 तक है अर्थात् हमारे यहाँ के इंटर के बराबर उसके उपरान्त विश्वविधालय की शिक्षा आरम्भ

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 154
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 145
3. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 145

हो जाती है, शिक्षा का माध्यम थाई भाषा है, पर विश्वविधालय के पाठ्यक्रम में अंग्रेजी भी ऐच्छिक विषय है।"[1]

शिक्षा के अंगों को और अधिक स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है....

"वैसे प्रमुख विश्वविधालय वहाँ पर एक है लेकिन शिक्षा के जिन चार प्रमुख अंगों को लेकर प्रत्येक अंग को विश्वविधालय का दर्जा दे दिया गया है, वे है 1. धर्मशास्त्र (धम्मासात) 2. कृषि (कसेती) 3. बैथक शास्त्र (फैतेजात), 4. ललित कला इनकी व्यवस्था तत्सम्बन्धी सचिवालमों के अन्तर्गत हैं।"[2]

उपर्युक्त विवरण लेखक की बड़ी गहरी दृष्टि का परिणाम है उसने विश्वविधालय को छुट्टी के समय में देखा अर्थात विश्वविधालय क्रियान्वित रूप में न देखकर भी लेखक ने वहाँ की विस्तृत जानकारी एकत्र कर उसको प्रभावपूर्ण ढंग से वार्णित किया है, जो उसकी कुशलता एवं अथक परिश्रम को दर्शाता है।

अजुध्या नगर :–

बैकांक वासियों की मान्यता है कि इस नगर का सम्बन्ध राम – जन्म से है, यहाँ के राजा के राजगद्दी पर बैठते ही उसका नामकरण राम के नाम पर कर दिया जाता है, रामायण इस नगर में बहुत प्रचलित है। यह नगर विदेशों में भारतीय संस्कृति की याद को ताजा कर देता है, अजुध्या एक ऐतिहासिक नगरी है जिसका समस्त वैभव काल की गोद में सो चुका है, अवशेष शेष है, इसके सम्बन्ध में यशपाल जी ने लिखा है....

"प्राचीन गौरव यदि ईटों के ढेर में दब गया हो तो आधुनिक बाने वहाँ चारों ओर मुस्कराता हुआ दिखाई देता है, नये भवन नये बाजार और नई उंमगे उस नगरी को नया यौवन प्रदान करती दिखती है।"[3]

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 151
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 161
3. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 166

अजुध्या नगर का एक शब्द – चित्र लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में चित्रित किया है,

"मौसम सुहावना था, सड़क के दोनो ओर धान के खेत बिछे थे, जिनके बीच–2 में बांसो के घरों की बस्तियाँ थी, अधिकांश बस्तियों में केले के पेड़ो और बॉसों की निकुजों की हरियाली को देख कर बड़ा अच्छा लगा, खेतो में स्त्री पुरूष धूप से बचाव के लिए सिर पर बड़े –बड़े टॉप लगाये काम कर रहे थे, कई स्थानों पर लम्बे–2 सींगो के भैसे और भैंसें चर रही थीं, उधर भैसों का रंग सफेद होता है।"[1]

कम्बोड़िया के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णनः–

नागपेन कम्बोड़िया की राजधानी है वहाँ के एक दृष्य का चित्र लेखक के शब्दों में....

यहाँ पर तीन नदियों का संगम है ये तीनों उस देश की बड़ी नदियाँ है और उनके मिलन से एक विशाल झील का निर्माण होता है मिकांग नदी उधर से कई देशों से बहती है शेष दो सहायक नदियाँ है बसाक और टीन लोसेप, इसमें टीनलोसेप की विशेषता यह है, कि स्याम की खाड़ी के पानी के उतार चढ़ाव के हिसाब से साल में छः महीने उसकी धारा उल्टी बहती है, सब नदियाँ मिलकर चौथी दिशा में चली जाती है, जगह वास्तव में बड़ी सुन्दर है, सुबह शाम वहाँ भीड़ हो जाती है।"[2]

लेखक ने इस नगर के विश्वविधालय तथा संग्रहालय को भी देखा विश्वविधालय में केवल बौद्ध भिक्षुओं को ही प्रवेश का अधिकार है संग्रहालय के सम्बन्ध में लिखा है..................

"शिव और विष्णु के मुँह पर बड़ी – बड़ी मूँछ और सिकर पर पारसियों की सी टोपी देखकर बड़ा विचित्र सा लगता था, बुद्ध की भी कई मूर्तियाँ थी, इनके अतिरिक्त पोशाकों वाद्य यंत्रों, रथों शिलालेखों इत्यादि का अच्छा संग्रह था ।"[3]

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 161
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 238
3. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 238

अंकोरवाट :–

अंकोरवाट देखने की इच्छा लेखक को वायुमान में ही जाग्रत हो चुकी है, अंकार का अर्थ है, नगर वाट का अर्थ है मन्दिर, अर्थात नगर का मंदिर सियम रीयप से लगभग चार मील दूर है, इसकी शिल्प कला जावा के बोटो बूदूर स्टूप पर उत्कीर्ण शिला पट्टों से भी अधिक है लेखक का इसके सम्बन्ध में कथन है कि...

"ऐसा जान पड़ता है, मानो उनके निर्माता और कलाविद भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक रहे होगे, रेखाओं द्वारा भावना की अभिव्यक्ति बड़ी कठिन होती है, लेकिन इस कार्य को उन वास्तु–शास्त्र विशार दों ने बड़ी निपुणता से सम्पन्न किया है।"[1]

अंकोर वाट तक के रास्ते का वर्णन, यशपाल जी ने निम्नांकित रूप से किया है,

"जिस प्रकार हमारे देश में तीर्थ प्रायः रमणीक स्थानों पर पाये जाते है, उसी प्रकार अंकोरवाट भी बड़े ही सुन्दर दृश्यों के बीच अवस्थित है। रास्ता घने जंगल में होकर जाता है, ऐसा जान पड़ता है, मानों किसी वनवासी तपस्वी के आश्रम की यात्रा करने जा रहे है।"[2]

लेखक के यात्रा वृतान्त के अनुसार कम्बोडिया कृषि प्रधान देश है, यहाँ के लोग शान्ति प्रिय है, लेकिन फ्रेंच सरकार ने उन्हे परावलम्बी बना दिया, पश्चिम सभ्यता का इन पर प्रभाव है, यहाँ के लोग पर्यटकों की मदद करते है, उपरान्त हाँथ जोड़कर चला गया, इसका उल्लेख उन्होंने अपने यात्रा वृतान्त में किया है।

नेपाल के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन :–

श्री यशपाल जैन के यात्रा वृतान्त के अनुसार नेपाल एशिया का एक मात्र हिन्दू राज्य है, भौगोलिक दृष्टि से वह छोटा सा देश है, इसके साधन सीमित हैं अतः यातायात के साधन भी विस्तृत नहीं है, जंगल नंदियों और पहाड़ों के कारण यातायात कठिन है, श्री जैन ने यहाँ की

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 218
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 215

राजधानी "काठमाण्डू" और "पाटन नगर" का धर्म संस्कृति की दृष्टि से प्रभावशाली वर्णन किया है।

"काठमाण्डू डेढ़लाख की आबादी का एक छोटा शहर है पर उसका इतिहास उतना ही पुराना है और महान है। काठमाडू का प्रारम्भिक नाम कान्तिपुर था, जिसका अर्थ होता है "गौरवमयी नगरी" एक ही लकड़ी का बना एक बहुत बड़ा मंडप शहर के बीचों बीच था इसलिए इसे काठमाण्डू कहकर पुकारा गया।"[1]

यह नगरी मन्दिरों का नगर है, पशुपति नाथ का मन्दिर, गुहेश्वरी मन्दिर, स्वयंभूनाथ मन्दिर, अजिया देवी का मन्दिर उल्लेखनीय है। श्री जैन ने लिखा है, कि पशुपति के दर्शन एक साथ चार धामों के दर्शन के समान है। इसका दृश्य बड़ा भव्य मालूम होता है इस मन्दिर का निर्माण तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ में जय सिंह रामदेव के समय में हुआ। नेपाली स्थापत्य कला का यह अद्भुत नमूना है। गुहेश्वरी मन्दिर का प्रवेश द्वार कलात्मक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं पूज्यनीय है। अजिया देवी के मन्दिर में शिव पार्वती एवं बुद्ध की मनोहर मूर्तियां है। काइमाण्डू से कुछ दूरी पर 200 फुट की ऊँचाई पर स्वयंभूनाथ नाथ का मन्दिर है। मूलतः यह बौद्ध मन्दिर है, किन्तु इसमें हिन्दू और बौद्ध का अनूठा समन्यय हुआ है।

लेखक ने नेपाल यात्रा–वृतान्त में काठमाण्डू के तुंडी खेल मैदान सहित, शहीद द्वार, राष्ट्रीय संग्रहालय आदि की भी सुन्दर उल्लेख किया है।

मनोहारा ग्राम के गाँधी–आदर्श महिला विद्यालय का उल्लेख भी उनके द्वारा किया गया है, "पाटन नेपाल का ऐतिहासिक नगर है इसकी चर्चा करते हुए लेखक ने लिखा है....

"पाटन का पुराना नाम ललितपुर है, जिसका अर्थ है "सौन्दर्य की नगरी"। उसका निर्माण काठमाण्डू के ढंग पर ही हुआ है, पर उसके कुछ चौक काठमाण्डू के चौकों की अपेक्षा कुछ बड़े हैं। सच बात यह है कि काठमाण्डू में जहाँ एक आधुनिक नगर के दर्शन होते हैं, वहाँ पाटन या

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 328

ललितपुर में वह नेपाल देखाई देता है, जिसकी संस्कृति आधुनिकता के बाने से आज भी अछूती है।"[1]

वर्मा देशों के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन :–

वर्मा की राजधानी रंगून है और जियावड़ी एवं मांडले इसके अन्य महत्वपूर्ण नगर हैं। लेखक ने अपने यात्रा वृतान्त में इन स्थलों का यथार्थ वर्णन किया है। श्री जैन के अनुसार रंगून भारत के समान, हरियाली एवं उद्यानों का शहर है। यहाँ की भूमि एवं खेत आदि भारत के समान हैं लेकिन गाँव के घर बड़े ही रूचिपूर्ण दिखाई देते हैं। लकड़ी के ऊँचे मचान पर बाँस की चटाईयों की दीवार से वहाँ के लोग घरों का निर्माण करते हैं। सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि सामूहिक जीवन होते हुए भी प्रत्येक घर स्वतन्त्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व रहता है, अर्थात दो घरों के बीच मे थोड़ा फासला अवश्य रखा जाता है।

लेखक ने रंगून विश्वविधालय की शिक्षा एवं अनुशासन का भी उत्कृष्टता के साथ उल्लेख किया है। सन् 1910 में तिलक ने "गीता रहस्य" का श्री गणेश भी इसी नगर में किया था, जिसके सम्बन्ध में यशपाल जी ने सविस्तार वर्णन प्रस्तुत किया है ।

वर्मा में मन्दिर को पगोड़ा कहा जाता है लेखक के यात्रा वृतान्त में इन पगोडाओं का वर्णन सुस्पष्ट रूप में उपलब्ध है वर्मा के सबसे विख्यात बगोड़ा रंगून में लिखा है...

पगोड़ा में प्रवेश करने के लिए चारों दिशाओं में चार छायादार प्रवेश मार्ग है। इन मार्गो के दोनो पार्श्वो में विभिन्न प्रकार की चीजों की दुकानें है पूजन के निमित फूल, मोमबत्ती, सोने के बरक, खिलौने पीतल के पात्र आदि इन दुकानों पर मिल जाते है।"[2]

मांडले :–

मांडले वर्मा की प्राचीन राजधानी थी इसका उल्लेख लेखक ने निम्न लिखित शब्दों में अभिहित किया है...

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 60
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 29

"उसकी गोंद में अनेक ऐतिहासिक स्मृतियाँ छिपी हुई है, बल्कि इसलिए कि वर्गो संस्कृति, कला, सगीत नृत्य आदि का आज भी वह प्रमुख केन्द्र है मित्रो का यह कहना था कि यधपि समय के साथ मांडले के रूप में काफी परिवर्तन हो गया है।"[1]

जियावाड़ी एवं अन्य बस्तियां :-

श्री जैन ने वर्मा की बस्ती जियावड़ी के अतिरिक्त जयपुर शिवसागर, भास्कर पट्टन, हस्तनापुर, गोपाल गंज तथा नवा नगर आदि वस्तियों का संयत रूप अपने इस विदेश से सम्बन्धित यात्रा – वृत्त मे उभारा है, यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि इन वस्तियों का नामकरण ही भारतीय नहीं है अपितु इनमें रहने वाले भी अधिकाश भारतीय है।

मोमियों नगर :-

इसकी एक झलक लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में दर्शायी है, यथा....

"छोटी – छोटी पर्वत मालाओं के बीच मेमियो 17 वर्ग मील के धेरे में बसा हुआ है, उसकी सबसे ऊँची शिखर वन ट्री हिल 4021 फुट ऊँची है वहाँ की शोभा में युक्ति पट्स, देवदास, चीड़ आदि के गगनचुम्बी हरे – भरे वृक्ष चार चाँद लगाते है – पहाड़ी के ढलानों तथा मैदानों में काफी स्ट्रावेरी और अनन्नस के खेत वहाँ की समृद्धि में अपना योगदान देते है, गोभी, गाजर आदि साग–भाजियों तथा फलों की वहाँ भरमार है और वहाँ के पुष्प तो समूचे वर्मा के पगोडाओं में चढ़ाने के लिए हवाई द्वारा ले जाये जाते है।"[2]

मलाया के स्थलों का वर्णन :-

मलाया में छः लाख से अधिक भारतीय, पंजाबी, सिंधी ओर गुजराती रहते है, इस देश के क्वालालाम्पुर, पिनांग महत्वपूर्ण नगर है लेखक ने अपने यात्रा विवरण में मलाया की राजधानी क्वालालाम्पुर की प्रमुख नदियों का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है....

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 58
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 77

"क्वालालाम्पुर में दो नदियाँ है – क्लैंग और गोम्बक, इन दोनो नदियों के कारण राजधानी की शोभा में चार चाँद लग गये है प्राकृतिक और मानवीय, दोनो प्रकार के सौदर्न्य का अनंत भण्डार है, पर साथ ही वहाँ के लोगो में सरलता भी है, उनके जीवन में सुघड़ता है पर सिंगापुर की सी उच्छंखलता नहीं है।"[1]

यह नगर रबड़ एवं टीन उधोग के लिए विश्वविधालय है इसका श्री जैन ने उल्लेख किया है।

पिनांगः–

पिनांग द्वीप ने यशपाल जी को बहुत अधिक आकर्षित किया इस द्वीप में ऊँचे पर्वतों तक पहुंचने के लिए बिजली की रेल की व्यवस्था है, यहाँ पर सुंगीक्लुआंग में मन्दिर है, जो सॉपों का मन्दिर कहलाता है, इस स्थान पर भिखमंगी की अधिकत है जिसका वर्णन लेखक के यात्रा वृतान्त में उपलब्ध होता है, इस द्वीप के सौदर्न्य का वर्णन करते हुए श्री जैन ने लिखा हे कि....

"सवेरे उजाला होने पर उठकर बैठे गये और रबर नारियल के सधन वन देखने लगे मलाया कितना हरा–भरा है उसकी कल्पना बिना देखे नहीं की जा सकती है मलाया में उनकी इतनी बहुमात है कि जिधर देखो उधर उनकी धनी – धनी निकुंजे दिखाई देती है, सारे मलाया को प्रकृ ति ने रबर और नारियल की बड़ी भारी देन दी है।"[2]

वियतनाम एवं सिंगापुर :–

वियतनाम देश की स्वतन्त्रता से पूर्व अनेक से ग्रसित था, जिनके जुआ– वैश्यावृत्ति मुख्य थी लेखक ने इन सभी दुष्प्रवतियों के उन्मूलन का उल्लेख करना आवश्यक है। एक तो यह कि जुआ खेलना बन्द कर दिया है, दूसरे, वैश्याओं के चकले खत्म हो गये है गुलामी के दिनों में ये दोनो ही बीमारियाँ भंयकर रूप में फैली थी। गली –गली में जुए के अड्डे और वैश्याओं के चकले बन गये थे ।"[3]

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 284–285
2. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 290
3. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 254

सिंगापुर में श्री जैन 23 मई से 31 मई तक रहे इस बीच उन्हे सिंगापुर के बाजारो का जो अनुभव हुआ उसकों उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में लिपि बद्ध किया है....

"जब हम बाजार में गये और घड़ी कैमरा आदि देखा तो लगा, वहाँ खरीद करना आसान काम नहीं है। चीजों के दामों में बहुत ही अन्तर था, फिर भी सौदेबाजी भी वहाँ बेहिसाब चलती है, हमने अनुभव किया वहाँ के बाजार में ठीक से खरीदारी करना सबके बस का काम नहीं है कुछ चीजें अच्छी मिल गयी कुछ में धोखा खा गये।"[1]

लेखक सन् 1992 में "सदभावना—यात्रा" पर सूरीनाम गया था, वहाँ से "अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन" में भाग लेने त्रिनीडाड तत्पश्चात् उन्होंने अमेरिका और केनेडा के विभिन्न भागों की यात्रा की थी, उस सबका बड़ा ही सरस एवं ज्ञानवर्द्धक विवरण "सागर के आर—पार" पुस्तक में दिया है, इस यात्रा—वृतान्त के लेखक कार्य का श्री गणेश टोरेंटो (कैनेडा) में हुआ तथा कुछ भाग ओटावा में पूर्ण किया, अंतिम भाग लेखक ने अमरीका के "मैरीलैण्ड" स्थित जर्मन हाउन नगर में पूर्ण किया।

सूरीनाम, ट्रिनीडाड, अमरीका और कैनेडा के महत्वपूर्ण स्थलों को वर्णन :—

सूरीनाम के सूर्य मन्दिर, कृष्ण मन्दिर, अहमदिया मस्जिदें, सरमक्का नामक स्थान जहाँ पहला जहाज सन् 1873 में शर्तबन्द मजदूरों को लेकर भारत से आया था, आदि महत्वपूर्ण स्थलों का श्री जैन ने आकर्षक रूप में उल्लेख किया है, सूर्य मन्दिर के सम्बन्ध में लेखक का कथन है कि....

"मन्दिर सूर्य का समर्पित था, उसमें सबसे बड़ी मूर्ति हंसवाहिनी देवी की थी कीर्तन बड़ा अच्छा था, एक छोटा बालक अत्यन्त तल्लीनता से एक वाद्य बजा रहा था, हमें जानकर बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ कि उस छोटे से देश में सनातन धर्म और आर्य समाज के लगभग सौ मन्दिर हैं।"[2]

पारामारीबो स्थल पर बने प्रवासी भारतीयों के कलापूर्ण मकानों का उल्लेख भी श्री जैन ने तटस्थ भाव से किया हैं।

---

1. पड़ोसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ — 280—281
2. सागर के आर—पार, यशपाल जैन, पृष्ठ — 27

पोर्ट ऑफ स्पेनः–

"पोर्ट ऑफ स्पेन" ट्रिनीडाड टुबैगो की राजधानी है, यह काफी फैला हुआ नगर है। श्री जैन यहाँ "अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन" में सम्मिलित हुए। सम्मेलन का स्थान था "रूद्रनाथ कपिल देव लर्निंग रिर्सोस सेन्टर (मैकबीनकूवा) जो पोंट ऑफ स्पेन नगर से पचास–साठ किलोमीटर दूर था। इसके सम्बन्ध में लेखक ने लिखा है....

नगर के विख्यात समाज सेवी रूदनाथ कपिलदेव की स्मृति में उनके नाम पर "लनिंर्ग रिसोर्स सेंटर" का विशाल भवन बना दिया गया है, उसके परिसर में एक सभागार है और छोटे बड़े अनेक कमरे हैं, सेन्टर के चारों ओर के चारो ओर वातावरण है संभवतः संचालकों की संस्थान को बड़ा रूप देने की योजना है।"[1]

लेखक ने कैरेबियन – सागर के महत्वपूर्ण स्थलों का वर्णन भी यात्रा वृतान्त के अंतर्गत किया है, मछलियों के कलापूर्ण घरों को देखकर उसका मन विषयम से भर जाता है।

अमेरिका एवं कैनेडा :–

अमेरिका के मैरीलैण्ड राज्य में कई उप नगर है, जर्मन टाउन उन्हीं में एक है। लेखक के अनुसार धर्म अध्यात्म के असंख्य केन्द्र है। गिरजे, मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे आश्रम के चारों ओर फैले हुए हैं, यशपाल जी ने मैरीलैण्ड राज्य के विख्यात नगर बॉल्टीमोर के सम्बन्ध में अपने यात्रावृतान्त में निम्नलिखित शब्दों में लिखा है।

"इन हार्बर बॉल्टीमोर के आकर्षण का सबसे बड़ा केन्द्र है छुट्टी के दिन वहाँ सैलानियों की भीड़ इकठ्ठी हो जाती है। वहीं बहुत बड़ा बाजार है, जिसमें सब प्रकार की चीजें मिल जाती है अनाज कोयला और मसालों के लिए एक बड़ा बन्दरगाह है। एक विशाल मत्स्यालय भी है। पहाड़ी स्थान होने के कारण सैर के लिए वह अत्यन्त उपयुक्त है।"[2]

---

1. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 40
2. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 76

श्री जैन ने साउथ फाल्सबर्ग के आश्रम नियाग्रा प्रपात स्थलों का भी प्रभावपूर्ण वर्णन अपने यात्रा वृतान्त के अंतर्गत प्रस्तुत किया है।

कैनेडा के कैलाबोगी, ओटावा तथा टौरन्टो ने लेखक को अत्यधिक प्रभावित किया है। टोरन्टो सेण्टर पिकरिंग और मौंटीन सेण्टर में गुरूभाई के आश्रम केन्द्र है। ओटावा में नदियों के संगम स्थल का लेखक के रूप में यात्रा–वृतान्त में वर्णन किया है.....

"ओटावा में तीन नदियों का संगम है। ओटावा मैटिनों और रीडो। ये तीनों नदियाँ जहाँ मिलती है वहाँ दर्शनार्थियों की भीड़ निरन्तर बनी रहती है। एक विशाल प्रताप भी वहाँ है। नीचे जल में बहुत से सैलानी नावों में घूमते हैं। यह सच है कि इस नगर में तीन नदियों का ही संगम नहीं है राजनीति, संस्कृति और कला का भी अदभुत संगम है।"[1]

अमेरिका और कैनाडा की तुलना करते हुए लेखक ने व्यक्त किया है कि....

"अमेरिका की भाँति कैनेडा में भी हरियाली खूब है। प्रत्येक भाग में मार्ग के दोनों ओर हरे–भरे ऊँचे–2 वृक्ष, पुष्पों से सुशोभित पेड़ पौधों और हरी–हरी घास जलासय नदियाँ हजारों मील की यात्रा में भी उबती और थकाती नहीं है। दो देशों की तुलना करना आसान नहीं है। फिर भी मै कहूँगा कि अमरीका जैसी समृद्धि कैनेडा में भले ही न हो किन्तु वह अपेक्षाकृत अधिक शान्त और शालीन है।"[2]

अमरीका की "धुतनगरी जिसे अटलान्टिक सिटी कहते हैं एवं ऑरलैण्डो जो कि फ्लोरिडा का प्रसिद्ध स्थान है का विस्तृत विवरण लेखक ने अपने इस यात्रा वृतान्त में किया है। यह वर्णन रोचकता एवं जीवन्तता को अपने अन्दर समेटे हुए है जो पाठक के मन में भी गहरा प्रभाव छोड़ता है। इसका कारण यह है कि यह वर्णन लेखक ने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर दिया है।

---

1. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 108
2. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 110

श्री यशपाल जैन के विदेश से सम्बन्धित यात्रान्वृतान्तो में प्रकृति चित्रण :–

1. रूस :–

यशपाल जी को रूस के प्राकृतिक सौन्दर्य ने मंत्रमुग्ध किया है। विमान से अनेक नेत्र रूपी कैमरे में जो चित्र अंकित हुआ उसे उन्होंने शब्दों के द्वारा व्यक्त किया है....

"नीचे पर्वत ऊपर रूई ऊपर रूई के फोहे जैसे बादल विमान उनके भी ऊपर। अब तक मैदान देखने में आये थे। उन पर कहीं–कहीं, हरे–भरे वृक्ष, छोटे–छोटे घर, नदियों की पतली सी धारायें आदि को देखकर ऐसा लगता है मानो धरती पर किसी ने कोई चित्र अंकित कर दिया हो। पर्वतों के आने पर दृश्य बदल गया, कोहरे और बादलों के मेल से जो दृश्य बना, वह बड़ा ही विचित्र था।"[1]

थाईलैण्ड :–

छौलीपुरी नगर के समुद्री तट का प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन करते हुए श्री जैन ने लिखा है.....

"मौसम सुहावना था बूंदाबांदी अब भी हो रही थी। अचानक पश्चिमी क्षितिज पर से बादल हट गये और सूर्य की किरणों ने सागर के तंरगति जल पर सुनहरी चादर बिछा दी। थोड़ी देर में मेघ खण्डो ने सूर्य को फिर अपने अंचल में छिपाकर उस दृश्य पर पर्दा डाल दिया, लेकिन उसकी स्मृति आज भी धूमिल नहीं हो सकी है।"[2]

वर्मा:–

वर्मा के नागरिक फूलों के प्रेम के लिए प्रसिद्ध है, मजदूरी करने वाली स्त्रियाँ तक अपनी वेणी को फूलों से सजाती है। श्री जैन ने इस देश की प्रकृति के सम्बन्ध में लिखा है कि....

"पहाड़ी प्रदेशों का मार्ग वैसे ही मनोरम होता है, पर इस हिस्से की शोभा निराली थी, सघन

---

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 13
2. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 171

वेणुकुजों से आरम्भ करके जैसे–जैसे ऊपर चढ़ते गये, प्रकृति का रूप निखरता चला गया। चीड़ के हरे–भरे वृक्षों ने पर्वतों को नाया बाना पहना दिया है।"[1]

नेपाल :–

नेपाल में उपत्यका अपने प्राकृतिक सौदर्न्य के लिए दूर–दूर तक विख्यात है। कुछ लोग उसे नेपाल की घाटी भी कहते है। ऐसा लेखक का कथन है श्री जैन ने इसके सम्बन्ध में लिखा है.....

"घाटी के चारों ओर हिमालय पर्वतमाला प्रहरी की भाँति खड़ी है। इन पहाड़ों के बीच–2 में उपत्काएं हैं। पहली पर्वतमाला के बाद दूसरी पर्वतमाला है जो पहली से अधिक ऊँची है। साफ मौसम में देखने पर ऐसा लगता है, मानो प्रकृति ने सीढ़ी नुमा पर्वत खड़े कर दिये हों।"[2]

अमेरिका :–

यशपाल जी ने अमेरिका के फॉलसवर्ग में स्थित गुरुमाई आश्रम के प्राकृतिक रास्ते का चित्रण करते हुए लिखा है.....

"सारा रास्ता अत्यन्त मनोहारी था। हरा भरा साफ सुथरा, ऊँचे–ऊँचे सघन वृक्ष लतिकायें, जलाशय, प्रपात कालीन जैसी घास, रंग–बिरंगे फूलों के पौधे, सब कुछ इतना नयनाभिराम था कि मंजिल बेहद सिकुड़ गई।"[3]

इसी प्रकार अन्यत्र एक स्थान पर कश्मीर से समानता व्यक्त करते हुए लेखक ने यात्रा वृतान्त में दर्शाया है....

"यहाँ के पर्वत और घने वृक्षों को देखकर मुझे कश्मीर का स्मरण हो आया। प्रकृति ने जहाँ भी अपना सौन्दर्य चारों ओर मुक्त भाव से फैला दिया है, पर कश्मीर कश्मीर से अन्तर यह है कि यहाँ के सौदर्न्य को मनुष्य ने संवार दिया, जिससे इसमें व्यवस्थिता आ गई है।"[4]

---

1. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 83
2. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 328
3. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 77–78
2. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 87

विदेश से सम्बन्धित यात्रा वृतान्तों में संस्कृति :–

रूसः– श्री जैन के यात्रा वृतान्त के अनुसार रूस के थियेटर और उद्यान रूसियों के सांस्कृतिक प्रेम की झलक देते हैं। मास्को में 34 थियेटर व 200 क्लब हैं जिन्हें उद्यान–कला से सुसजिजत किया गया है। रूसी अपने अतिथियों, अभिनेताओं, साहित्यकारों एवं कलाकारों का आदर सत्कार करना जानते हैं। और यह उनकी सभ्यता और संस्कृति का अंग है। इस सन्दर्भ में लेखक ने लिखा है...

"एवेलिन ने कई हस्तलिखित पृष्ठों की फोटो कापियाँ मुझे दी। इसी प्रकार चित्र विभाग की संचालिका लोक्यूनोल ने टालस्टाय के माता–पिता के चित्रों की एक एक प्रति भेंट में दी। मैने उनका आभार माना और जब विदा ली तो एवेलिन मेरे रोकते रोकते बाहर तक पंहुचाने आई।"[1]

रूस की एक परम्परा का उल्लेख करते हुए यशपाल जी ने लिखा है कि रूस में दिवंगत विभूतियों की कोई एक वस्तु रखने की परम्परा है।

"अविवाहित लड़कियों पर कड़े प्रतिबन्ध नहीं है वे जब जहाँ जाना चाहें जा सकती है। माँ बाप की ओर से उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता है लेकिन वे उस आजादी का दुरूपयोग प्रायः नहीं करतीं। यो अपवाद सब जगह निकल आते हैं। वहाँ क्वाँरी कन्या के संतान होना, अच्छा नहीं माना जाता, लेकिन यदि इस प्रकार की लाचारी कभी उपस्थित हो जाती है तो लड़की को पतित या हीन नहीं माना जाता।"[2]

रूस के पुस्तकालय, प्रकाशन गृह, विदेशी साहित्य का रूसी में अनुवाद तथा रूसी भाषा को विदेशी भाषा में अनुवाद इस देश की जनता साहित्य प्रेम का परिचायक है। जिसका उल्लेख लेखक ने अपनी यात्रा वृतान्त में किया है। लेखक की सूचनानुसार रूस में साप्ताहिक छुट्टी रविवार की होती है और यह दिन वहाँ मौज मस्ती का दिन होता है, जिसकी तैयारी वहाँ शनिवार से ही शुरू हो जाती है।

---

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 86
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 137

अफगानिस्तान :-

अफगानिस्तान में पर्दा-प्रथा प्रचलित है, जिसके सन्दर्भ में श्री जैन ने निम्मलिखित शब्दों में उद्घाटित किया है....

"पर्दे का चलन वहाँ खूब है। शहर में सभी धर्मों की स्त्रियाँ बुर्का ओढ़कर निकलती हैं। दुकानों पर सामान खरीदती हैं। तब भी उनके मुँह ढंके रहते हैं। बड़ा अजीब लगता है जब बुर्का ओढ़े स्त्री खूब जोर-जोर से दुकानदार से बातें करती हैं और चीजों के दामों के लिए झगड़ती है।"[1]

वहाँ के पुरूषों के सुगठित शरीर में सम्बन्ध में एवं विकास का उल्लेख करते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है.....

"अफगान शरीर से बड़े ही तगड़े हैं और बहादुरी में तो उनका मुकाबला कम ही लोग कर सकते हैं। यदि उनके जीवन का सर्वांगीण विकास हो जाये तो उनके देश उस देश का जिरो किसे जमाने में "आर्याना" की संज्ञा से विभूषित किया गया है, भाग्य बदलते देर नहीं लगेगी।"[2]

अमेरिका :-

लेखक ने अपने यात्रा वृतान्त में अमेरिका की संस्कृति को निम्न रूप में उद्घटित किया है.....

"तलाक यहाँ खूब होते हैं। छोटी-छोटी बातों में यहाँ पर वैवाहित बन्धन टूट जाते हैं। परिवार बिखरे हुए हैं। लड़के लडकियाँ बड़े हुए कि स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते हैं। संयुक्त परिवार नाम की चीज यहाँ पर नहीं है। अधिकांश परिवारों में अंततः वृद्ध स्त्री पुरूष रह जाते हैं जो अपना मर्यादित जीवन जीते हैं। गर्भपात पर यहाँ प्रतिबन्ध नहीं है, छात्राएं तक शरीरिक सम्बन्ध स्थापित करने से नहीं चूकती और गर्भ गिराने तक को भी बुरा नहीं मानती।"[3]

---

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 20
2. सागर के आर-पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 72-73
3. सागर के आर-पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 72-73

सिंगापुर :–

सिंगापुर के लोग अपनी राष्ट्र भाषा मलायी के प्रति समर्पित हैं किन्तु वह अंग्रेजी, चीनी, तमिलन आदि भाषाओं का भी आदर करते हैं और यह उनकी सांस्कृतिक विशेषता है। इसका विवरण लेखक ने अपने यात्रा वृतान्त में कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है।

वियतनाम :–

वियतनाम का प्राचीन नाम अनम या अन्नमिक है। इस नाम के पीछे देश की उपजाऊ भूमि का हाथ है। उपजाऊ भूमि के कारण ही इस देश का यह नामकरण किया गया और यह देश विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र बन गया। इसका उल्लेख श्री यशपाल जैन ने अपने यात्रा–वृतान्त के विवरण में किया है। उन्होंने इस देश की विस्तुत चर्चा करते हुए लिखा है कि.....

"यहाँ कि स्त्रियों की पोशाक बड़ी आकर्षक होती है। बहुत नीचा कुर्त्ता पहनती हैं, जिसे औमायी कहते हैं। यह कमर से सटा रहता है, पर दाँये बाँये कमर से नीचे खुला रहता है। सलवार की जगह पजामा जैसी चीज पहनती हैं। जिसे वुंग कहते हैं। दुकानों पर ज्यादातर लडकियाँ काम करती है। उनमें फुर्ती अवश्य है पर फ्रेच शासन–काल में उनमें से बहुतो में परिस की सी नजाकत और विलासित आ गई है, वे अपनी सजावट और सौदर्न्य के बारे में बराबर सजग दिखाई देती हैं।"[1]

वियतनाम के जन–जीवन पर पश्यिम का प्रभाव स्पष्ट करते हुए लेखक ने दर्शाया है ....

"देश पुराना है, पर वहाँ के इन्सान नये रहन–सहन नये आचार–विचार, नई शान–शौकत का प्रेम है। पुरूषों की वेषभूषा स्त्रियों की पोशाक, बालो की सजावट, घरों की बनावट और उनकी सज्जा, सब पर पश्चिम का प्रभाव साफ दिखाई देता है।"[2]

---

1. पड़ौसी देशौं में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 254
2. पड़ौसी देशौं में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 255

कम्बोडिया :–

कम्बोडिया की भाषा एवं संस्कृति पर भारतीय भाषा संस्कृति पर प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। लेखक के यात्रा–वृतान्त के अनुसार कम्बोडिया भाषा में 25 प्रतिशत शब्द तमिल के, 35 प्रतिशत शब्द संस्कृत के हैं, किन्तु उच्चारण में थोड़ी भिन्नता अवश्य है। उदाहरण के लिए तिथि को तिथाई कहते है। अंकोरवाट मन्दिर की शिल्पकला की विषय वस्तु एवं शैली भारतीय है जिसका उल्लेख लेखक ने निम्नांकित शैली में किया है....

"दीवारों पर खुदे हुए चित्रों में कई चित्र तो भूले नहीं जा सकते। वाण–शैया पर पड़े भीष्म का युधिष्ठिर को उपदेश, सूर्य और चन्द्र का राहु के विरूद्ध अमृत चुराने का संदेश लेकर जाना, शेषनाग की रस्सी बनकर देवताओं तथा असुरों द्वारा समुद्र मंथन करना और शिव का कामदेव को भस्म करना, ये तथा ऐसे ही कुछ अन्य चित्र तो बार–बार आँखों के सामने आते हैं। गैलरियों में कृष्ण लीला तथा विष्णु से सम्बन्धित बहुत सी कथाएं मिलती हैं।"[1]

थाइलैण्ड :–

थाइलैण्ड का एक अन्य नाम स्याम भी प्रचलित है। थाई लोग शान की घाटी के निवासी थे जो चीन के दक्षिण में है। थाइलैण्ड की सभ्यता पर चीन और वर्मा का प्रभाव परिलक्षित होता है, इस तथ्य का उल्लेख लेखक ने अपने यात्रा वृतान्त में किया है। थाइलैण्ड की सम्यता को दर्शाते हुए लेखक ने लिखा है....

"पश्चिमी लिवास से लैस होकर भी वहाँ के निवासी आपस में या बाहर से आये लोगों से हाथ नहीं मिलाते। हाँथ जोड़कर सिर झुकाकर अभिवादन करते हैं और विदाई के समय "गुडबाई" या बाई–बाई न कहकर "स्वस्ति" शब्द का प्रयोग करते हैं।"[2]

थाइलैण्ड की संस्कृति पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से होता है। यहाँ पर रहने

---

1. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 219
2. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 132–133

वाले भारतीयों में अधिकांशतः व्यापारी दरवान, दूधिये और नौकरी पेशा हैं, जो मुख्यतः उत्तर प्रदेश के हैं। यहाँ पर "थाई–भारत कल्चरल हाउस" भारतीय विद्यालय, हिन्दू समाज, आर्य समाज, नेताजी प्रसूतिगृह तथा अनेक विष्णु मन्दिर हैं। हिन्दी के अनेक शब्द हैं जो थाइलैण्ड में प्रचलित हैं। दूरदर्शन के लिए दूरदर्शक आदि शब्द इस देश में प्रचालित हैं। वहाँ के उत्सव और पर्वों में भी कई एक भारतीय त्यौहारों से मिलते जुलते हैं। रामायण भी भारत और थाइलैण्ड को एक सूत्र में बाँधती है। दोनों देशों की संस्कृतियों के इस अनूठे समन्वय को श्री जैन ने विशेष गम्भीरता से लिया और अपने यात्रा विवरण में इसका उल्लेख किया।

लेखक के यात्रा वृतान्त के अनुसार इस देश में भारतीयों का उद्देश्य पैसा कमाना है। भारत में अपने घर पैसा अधिक भेजने के लिए वे कानून की आँखों में धूल झोंकते हैं और भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा देते हैं। एक व्यक्ति ने श्री जैन को बताया था कि .....

"हम आपसे क्या कहैं। इन लोगों ने सारे हिन्दुस्तानियों के नाम पर बट्टा लिया दिया है। जब कोई भी बेईमानी या धोखे का मामला पकड़ा जाता है तो यहाँ के लोग कहते है कि वह आदमी जरूर हिन्दूस्तानी होगा। बेईमानी और भारतीय एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये है।"[1]

यशपाल जी ने थाइलैण्ड की विचित्र विवाह परम्परा का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है.....

"जात–पात का कोई बन्धन नहीं है। विवाह का निश्चय हो जाने पर, वर्मा की तरह लड़का–लड़की बिना किसी से कहे चुपचाप कहीं भाग जाते हैं। इससे माँ बाप समझ लेते हैं कि वे दाम्पत्य जीवन में बँधने के इच्छुक हैं। पाँच–सात दिन तक छिपे रहकर बाद में वे लौट आते हैं और पति पत्नी के रूप में एक साथ रहना ही वैवाहिक जीवन को वैध बना देता है। लेकिन कुछ अभिभावक इस अवसर पर समारोह करते हैं और आर्शीवाद देते हैं। मजे की बात यह है, कि विवाह के बाद लड़की–लड़के के घर नहीं जाती, बल्कि लड़का लडकी के घर जाकर रहता है।"[2]

1. पड़ौसी देशौं में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 207
2. पड़ौसी देशौं में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 101

थाइलैण्ड के साहित्य पर हिन्दू और बौद्ध धर्म का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। उदाहरणार्थ राजा मोदफा चुलालक ने स्यामी रामायण "रामकिन" की रचना की। राजा बजिर बुद्ध ने नल और शुकन्तला नाटक की रचना की। इस साहित्यिक महत्व के तथ्य का उल्लेख लेखक ने अपने यात्रा वर्णन में किया है। थाई साहित्य के सम्बन्ध में श्री जैन ने लिखा है....

"पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में साहित्य और रंग मंच के विकास के लिए विधिवत प्रयत्न आरम्भ हुए। वहाँ के इतिहास का द्वितीय चरण अर्थात अजुध्या–काल का आरम्भ हो चुका था। बौद्ध धर्म की जड़ें मजबूत हो गयी थीं।"[1]

थाइलैण्ड के लोक साहित्य ने वहाँ के जन जीवन को सजाया संवारा है। इस विषय में लेखक की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है....

"थाई लोक कथाओं का एक विशाल संग्रह "स्यामीज टेल्स एण्ड न्यू" स्यामी लोक कथाऐं प्राचीन और अर्वाचीन के नाम से निकाला। इस काल की लोक कथाओं में धार्मिक प्रेरणाओं की प्रमुखता थी। जिन्होंने थाई लोगों की बुनियाद का काम किया। पन्द्रहवीं शताब्दी तक थाई लोगों की अपनी कोई लिपी नहीं थी। बौद्ध धर्म के निष्ठा के कारण आवश्यक हो गया कि पाली में जो बौद्ध साहित्य उपलब्ध था उसका अनुवाद वहाँ के निवासियों के लिए हो।"[2]

वर्मा :–

श्री यशपाल जैन के यात्रा–वृतान्त के अनुसार वर्मी जीवन की विशेषता है कि धर्म परायण लोग साधुओं को दान दक्षिणा दिये बिना विदा नहीं करते। वहाँ पगोड़ा (मन्दिर) में लोग जूतों को हाँथ में लेकर जाते हैं और अपने पास जूते रखकर श्रद्धंजलि अर्पित करते है तथा वहीं चूरट का जलपीने लगते हैं।

बच्चों के नामकरण व कन्छेदन की परम्परा भी वर्मा के जनजीवन में प्रचालित है। बालक के

---

1. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 186
2. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 186

बौद्ध भिक्षुक होने पर विशेष उत्सव मनाया जाता है। नारी समाज में विश्वास प्रचालित है कि जब भी बुद्ध का जन्म होगा तो पुरूष रूप में होगा।

इस देश में मृत्यु होने पर मुर्दे को कुछ समय रखने के बाद जलाने की प्रथा है। सम्बन्धी सिर मुंडाते है और सफेद कपड़े पहनते हैं।

वर्मा वासियों की कला, नृत्य, संगीत एवं अभिनय के प्रति उनकी सांस्कृतिक अभिरूचि का परिचालक है। लोग स्वभाव से ही उत्सव प्रिय है। इस देश का नया वर्ष तिंजान (जलोत्सव) जिसे भारत में होली पर्व कहते हैं, तथा दडिंजो के अवसर पर घरों को सजाया जाता है। स्थान–स्थान पर केले के तनों के द्वार बनाये जाते हैं। पटाखे और फुलझाड़ियाँ छोड़ी जाती हैं। दीपकों का प्रकाश तो होता ही है।

वर्मा में स्त्री को विशेष स्थान प्राप्त है। यहाँ मातृ मूलक समाज प्रतिष्ठित है। स्त्रियाँ ही घर और बाहर का समस्त कार्य सम्पन्न करती हैं और यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका उल्लेख लेखक ने अपने यात्रा–वृतान्त में इस प्रकार से किया है.....

"वर्मा राष्ट्र की आत्मा उसके लोक जीवन में बसी है। यहाँ के लोगों के जीवन का प्रेरणा–स्त्रोत बौद्ध धर्म है। वर्मा लोक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ पर नर–नारी अपने को अधिकाधिक सुखी बनाना चाहते हैं। भौतिक बिन्दुओं का संग्रह करके नहीं, छोटी से छोटी चीजों में रस पैदा करके।"[1]

वर्मा के प्रसिद्ध विद्वान जेमा ने यहाँ के लोक साहित्य का निर्माण किया था, जिस पर सन् 1955 में रूस सरकार ने उन्हें "स्तालिन शान्ति पुरस्कार" देकर सम्मानित किया है।

वर्मा की संस्कृति पर भी भारतीय प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। भारत में जो स्थान गंगा का है वही वर्मा में इरावदी का है। सन् 1950 में "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" का वार्षिकोत्सव वर्मा में हुआ

1. पड़ौसी देशौं में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 46

था। हिन्दी पढ़ाने वालों की एक संख्या भी वर्मा में पर्याप्त है। रंगून के पंगोड़ा (मन्दिर) के संचालक भी एक भारतीय श्री रामकृष्ण मिशन के स्वामी सूर्यानंद हैं।

वर्मा में रहने वाले हिन्दुस्तानियों के सम्बन्ध में श्री यशपाल जैन को वहाँ के एक व्यक्ति ने बताया था.....

"अपने घर से इतनी दूरं आते हैं, बसते हैं, कमाई करते हैं लेकिन यहाँ की जमीन के साथ उनका नाता नहीं जुड़ता। यही कारण है कि लाखों हिन्दुस्तानियों में कुछ को छोड़कर बाकी सालों में रहते हुए भी यहाँ के निवासियों के साथ घुलमिल नहीं पाये। जाति–पाँति के संस्कारों ने और भी गजब ढ़ाया है। ज्यादातर भारतीय श्री रामकृष्ण तरह से अछूत जैसा मानकर खान–पान में उनसे परहेज करते हैं।"[1]

विदेश से सम्बन्धित यात्रा–वृतान्तों में व्यक्ति चित्रण :–

यशपाल जी अपनी विदेश यात्राओं में अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आये और बहुत से व्यक्तियों से प्रभावित हुए। उनके वर्णनों में रेखा चित्र के तत्वों का समावेश हो जाने के कारण उन्हें रेखाचित्रों की कोटि में स्थापित किया जा सकता है। चूँकि रेखाचित्र गद्य साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें संक्षिप्त आकार में ही किसी नाम, वस्तु अथवा घटना का रेखांकन इस प्रकार किया जाता है कि विशेष सामाग्री का चित्र ही साकार हो उठता है।"[2]

श्री जैन के निम्नलिखित व्यक्तियों चित्रण में संस्मरणात्मक रेखा चित्रों के लक्षणों को दृष्टिगोचर किया जा सकता है।

यह चित्रण जिसमें उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार इलिया (रूस) को निरूपित किया है.....

"इलिया एक–एक शब्द तौल कर बोलते थे और बड़े ही धीमे। उनकी सौम्यता ह्रदय को

1. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 110
2. साहित्य विविधा, डा. रमेश चन्द्र लवानियाँ, पृष्ठ – 120

पुलकित करने वाली थी और उनकी पारदर्शी निश्छलता बार–बार हमारी आँखों को अपनी ओर खींच लेती थी, उनकी पत्नी उच्च कोटि की चित्रकार हैं पर कितना अंतर था दोनों में।"[1]

इसी प्रकार, प्रिंस धनी निवास के सम्बन्ध में उद्घटित किया है कि....

इतने बड़े राजनीतिज्ञकार और सहित्यकार होते हुये भी उसमें किसी प्रकार का दंश दिखाई नहीं दिया, बल्कि उनके चेहरे पर सरलता और व्यवहार में विनम्रता दिखाई दी। मन बड़ा पुलकित हुआ।"

विदेश यात्राओं में श्री यशपाल जैन जिनसे मिले प्रमुख व्यक्तियों की तालिका :–

1.	प्रो0 ए. एम. पाकोव	रूस	इतिहासकार
2.	प्रेम "धवन"	भारत	गतिकार
3.	भीष्म साहनी	भारत	साहित्यकार
4.	गोपेश	भारत	....
5.	डा. खन्ना	भारत	....
6.	मदन लाल मधु	भारत	....
7.	शंकर गौड़	भारत	....
8.	नकवी	भारत	....
9.	सौ0 रगीना	रूस	सुसंस्कृत महिला
10.	श्री एवं श्रीमती रत्नम्	भारतीय	(तत्कालीन भारतीय कोंसलर)
11.	इलिया इहरनबुर्ग	रूस	अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार
12.	कोडोम्हाइंग	वर्मा	राजनीतिक साहित्यकार
13.	जेया	वर्मा	साहित्यकार
14.	अनुमान रथ चौन	थाइलैण्ड	राजनीतिक साहित्यकार
15.	प्रिय धानी निवास	अमेरिका	अमेरिकी दल का संरक्षक
16.	एक व्यक्ति (स्थानीय निवासी)	रूस	इंजीनियर
17.	चोटिट्टयार	कम्बोडिया	व्यापारी
18.	व्यक्ति (स्थानीय निवासी)	रूस	इंजीनियर

विदेश से सम्बन्धित यात्रा–वृतान्तों में वैयाक्तिकता एवं आत्मीयता :–

रूस यात्रा में अनेक स्थलों पर श्री यशपाल जैन की वैयक्तिकता एवं आत्मीयता के दर्शन होते हैं। जब वे अनुभव लिखते हैं तो उनकी आत्मीयता के दर्शन होते हैं। एक घटना के सम्बन्ध में उन्होने लिखा है....

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 95

"इस घटना का मेरे मन पर अजीब असर हुआ। मैंने देखा कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में रूसी सरकार और वहाँ के नागरिक बहुत ही आजाद हैं। उसमें किसी प्रकार का दबाब नहीं है। न डर, आंतक। लेकिन जहाँ राजनीतिक क्षेत्र का प्रश्न उठता है, वे लोग बड़े चौकन्ने हो उठते हैं।"[1]

अन्यत्र एक स्थल पर लेखक ने अपने आप को रूसी जनता से जोड़ते हुए अपनी वैयक्तिक भावना को निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्ति दी है.....

"घूमते–घूमते बहुत से परिचित लोगों से मिलना हुआ। रूसी भाई बहनों की भीड़ की भीड़ हमें घेर लेती थी और "हिन्दी रूसी भाई–भाई" के नारे लगाती थी। हमें भारतीय देखकर कुछ लोग बड़े अजीब से स्वर में गाते थे "आवार हूँ। कई लोगो ने पूँछा "क्या आप राजकपूर के देश से आये हो। मैनें कहा "नहीं" मैं गाँधी के देश से आया हूँ, नेहरू के देश से आया हूँ। बाद में मालूम हुआ कि राजकपूर उन दिनों मास्कों में थे और उनके "आवारा" चित्र का यह गाना वहाँ बडा लोकप्रिय हो रहा था। हिन्दी की फिल्में भी वहाँ के सिनेमाघरों में कभी–कभी दिखाई जाती थीं।"[2]

श्री जैन ने अपनी रूस यात्रा के 46 दिनों में आत्मीयता दी है, और बदले में आत्मीयता पाई है। जब रूसी उनसे पूँछते "इंदिस्की" ? (अर्थात आप भारतीय हैं) तो वे बड़ी आत्मीयता से उसका उत्तर देते थे। वह बड़े प्यार और आत्मीयता से पेश आते थे। यात्रा के अंत में उन्होंने रूसी महिला माशा से जो आत्मीयता पाई उसका उल्लेख उन्होंने अपने यात्रा वृतान्त में किया है।

पड़ौसी देशों की यात्रा में भी श्री जैन को विभिन्न व्यक्तियों, सभाओं में आत्मीयता प्राप्त हुई है। वे कम्बोडिया में श्री पी.ए. तिरूपति चेट्टिट से मिले तो दोनों के मध्य आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित हो गये। एक सभा के सम्बन्ध में श्री जैन ने लिखा है....

"हमारे देश में भगवान बुद्ध के महापरि निर्वाण महोत्सव के अवसर पर छोटी बड़ी अनेक सभायें विभिन्न स्थानों पर हुई लेकिन जो सभाएं मैने देखी उनमें मुझे गम्भीरता, वह पावनता और वह श्रद्धा दिखाई नहीं थी, जो रंगून के इस जयंती समारोह में दिखाई दी।"[3]

---

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 36
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 31
3. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 56

यह श्री यशपाल जैन की आत्मीयता का ही एक उदाहरण है, जब अंकोरवाट के लिए जा रहे थे, तो उन्होंने चेट्टियार में इसके सम्बन्ध में साहित्य माँगा तो उसने कहा अंग्रेजी में है। सुनकर श्री जैन को बहुत दुःख हुआ कि भारतीय संस्कृति के केन्द्र को लेकर भारतीय भाषाओं में कुछ भी उपलब्ध नहीं है।

यशपाल जी की निम्नलिखित भावअभिव्यक्ति उनकी आत्मीयता का स्पष्ट उदाहरण है....

"मेरी एक ही आंकाक्षा है, और वह यह कि अपने इन पड़ौसी देशों को हम भली प्रकार जानें और इनके साथ हमारे सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा भावनात्मक सम्बन्धों का आदान प्रदान बढ़े।"[1]

लेखक की सद्‌भावना यात्रा जो कि सूरीनाम ट्रिनीडाड अमरीका एवं कैनेडा की हुई थी जिसके फलस्वरूप उन्होंने यात्रा वृतान्त लिखा उसमें भी सर्वत्र उनकी आत्मीयता के दर्शन होते हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि....

"मन्दिर में अनेक भारतीयों से भेंट हुई। उनमें कुछ मेरे पिछले प्रवास के परिचित लोग थे। कुछ नये थे। उन सबके बीच ऐसा लगा, जैसे हम भारत में हों। भारतीय समाज की वेशभूषा में परिवर्तन आ गया है, भाषा भी उनकी बदल गयी है, किन्तु अपने धर्म और संस्कृति के प्रति उनकी आस्था यथावत है।"[2]

अतः उर्पयुक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि श्री जैन की आस्तिक भावना ही है जो मंदिर में उपस्थित प्रवासी भारतीयों के प्रति स्पष्ट आत्मीयता को प्रकट करती है। नास्तिक लेखक मंदिर की कला को देख सकता है परन्तु धर्म की गहराई को नहीं समझ सकता।

स्वच्छन्दता एवं निरपेक्षता :–

श्री यशपाल जैन की यात्राओं में अनेक बार ऐसे प्रसंग उभरे कि उन्हें विदेशी परम्पराओं से अलगाव प्रकट करना पड़ा। ऐसा करके उन्होंने अपनी स्वच्छंदता का परिचय दिया। रूस यात्रा करते

1. पड़ौसी देशों में–भूमिका, यशपाल जैन, पृष्ठ – 5
2. सागर के आर–पार, यशपाल जैन, पृष्ठ – 27

समय वायुमान में जब माँसाहारी भोजन उनके सामने आया तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि....

"मैने अपने जीवन में कभी शराब नहीं पी पर आप चिंता न करें मै एक गिलास जल के साथ आप सबके स्वास्थ की कामना करूँगा।"[1]

"रूस में छियालिस दिन" यात्रा वृतान्त की भूमिका में अपनी निरपेक्ष नीति की घोषणा करते हुए श्री जैन ने लिखा है....

"जो देखा उसी को मैनें दिखाने का प्रयास किया है। हो सकता है, कि पाठाकों को लगे कि मैंने जितना प्रकाश उजले पर डाला है उतना दूसरे पहलू पर नहीं। यदि ऐसा है तो इसके पीछे मेरे पक्षपात का हाँथ हो सकता है। मैं मानता हूँ कि हम सबको, विशेषकर भ्रमण–अर्थियों को ऐसी मनोभूमिका रखनी चाहिए कि जहाँ भी कोई अच्छी चीज हो उसे देख लें, और उत्साह पूर्वक दूसरों को दिखा दें। लेकिन यदि बुराई सामने आवे तो ईमानदारी के नाते उसे देख तो लें, किन्तु उसके प्रदर्शन में उतनी उदार दृष्टि न रखें। जहाँ तक उसकी कमियों का सम्बन्ध है वे किसी से छिपी नहीं हैं। सच बात यह है कि वहाँ के शासक और वहाँ की जानता स्वयं उन्हें जानते हैं। उन्हे दूर करने के लिए कुछ हद तक प्रयत्न भी कर रहे हैं।"[2]

उक्त घोषणा के अनुसार भी श्री जैन के देश विदेश के यात्रा–वृतान्तों में इस नीति का पालन नहीं हुआ है। उन्होंने भारत के तीर्थ स्थानों के भ्रष्टाचार, गरीबी, चोरी आदि का स्पष्ट शब्दों में प्रयोग किया है। और इसी प्रकार विदेशी तीर्थ–स्थानों पर व्याप्त गरीबी आदि को लेखनी से कुरेदा है। इतना ही नहीं विदेशों में हिन्दुस्तानियों की जो घूमिल छवि है, उसका संकेत करने में भी वे नहीं चूके हैं।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते है, कि अपनी घोषणा के विपरीत बुराईयों पर प्रकाश डालकर उन्होने अपनी लेखनी की निरपेक्षता का ही परिचय दिया है।

---

1. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 24
2. रूस में छियालिस दिन, यशपाल जैन, पृष्ठ – 6

उद्‌देश्य :– श्री जैन ने अपने यात्रा–वृतान्तों के उद्देश्यों को अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार से स्पष्ट किया है....

"हमारे प्रवास का मुख्य उद्देश्य साहित्यिक एवं सांस्कृतिक था। इसलिए जिन–जिन देशों में हम गये वहाँ की संस्कृति और साहित्य की अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने की हमारी इच्छा रही।"[1]

"इनके उद्देश्य को अधिक स्पष्ट करते हुए श्री धरम चन्द गोयल ने लिखा है "चिंतन की कसौटी पर परख कर अपने अनुभवों को उन्होंने यात्रा वर्णनों के रूप में देशवासियों के उद्‌बोधन और मार्गदर्शन के लिए प्रस्तुत किया है।"[2]

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर दर्शाया गया है, कि....

अपनी विदेश यात्राओं के प्रत्येक अवसर को उन्होंने अधिक से अधिक साथर्क बनाने का प्रयत्न किया है, अर्थात एक ओर विदेशों की प्रगतिशील जीवन की कार्य पद्धतियाँ और जीवन गतियों का दिग्दर्शन और दूसरी ओर भारतीय संस्कृति की मूल भावनाओं तथा यहाँ की साहित्यिक गतिविधियों का परिचय और मूल्यांकन प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।"[3]

निष्कर्ष :– यशपाल जैन का यात्रा–साहित्य विवरण प्रधान प्रकृति सौन्दर्य युक्त एवं समग्र निपेक्षता को चित्रित करने वाला है। हिन्दी साहित्य में श्री जैन को उनके यात्रा वर्णनों के कारण ही घुमक्कड़, सैलानी आदि नाम से संबोधित किया जाता है। उनकी देश विदेश की यात्राओं में विभिन्न स्थलों, प्रकृति एवं संस्कृति का गंभीरता से अध्ययन किया गया है। उनकी भावाभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण एवं आत्मीयता से परिपूर्ण है। स्वच्छन्दता एवं निरपेक्षता इनके यात्रा वृतान्तों का अन्य महत्वपूर्ण गुण है। इनकी दृष्टि से पौराणिक उल्लेख, किवदंतियाँ रीतिरिवाज, वेषभूषा कुछ भी अछूते नहीं रहे हैं। विदेशी यात्रा वृतान्तों की भाषा अत्यन्त सशक्त एवं साहित्यिक है। उद्देश्य की घोषणा उन्होंने प्रायः स्वयं की है। व्यक्तियों के चित्रण में रेखाचित्र की झलक दृष्टिगोचर होती है। अपनी की हुई घोषणाओं के विपरीत भी उन्होंने देश–विदेश के बदनुमा घावों को अपनी लेखनी से कुरेदा है।

1. पड़ौसी देशों में, यशपाल जैन, पृष्ठ – 47
2. निष्काम साधक, सं. बनारसीदास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 85
3. निष्काम साधक, सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (शन्ति प्रसाद जैन), पृष्ठ – 67

श्री जैन का यात्रा–साहित्य इतना धार दार और जीवंत है, कि वह समय के दौर से आगे बढ जाता है। तीर्थ क्षेत्र के कड़वे सत्य को वे निः संकोच उजागर कर देते हैं। वे घोषणा एवं उत्पीड़न के विषैले कुंज को उखाड़ फेंकने का स्पष्ट संकेत देते हैं। उनके यात्रा वर्णनों में निष्छलता एवं तीव्रता के साथ–साथ गहनता भी है। भाषा शैली में भावानुकूलता मार्धूय तथा ओज होते हुए भी प्रसाद गुण प्रबल है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी जगत में श्री यशपाल जैन जी की यात्रा सम्बन्धी साहित्य एक अमूल निधि के रूप में स्थान रखता है। यदि इस यात्रा–साहित्य को देश, कला और संस्कृतियों के बीच श्रेष्ठ और चिरस्थायी समन्वय सेतु की संज्ञा दी जाये तो वह अनुचित न होगा। लेखक ने हिन्दी के यात्रा साहित्य की भी वृद्धि करके उसकी उल्लेखनीय सेवा की है।
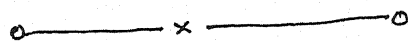
अध्याय – षण्ठम्

यशपाल जी का संकलित, और सम्पादित साहित्य

1.संकलित और सम्पदित साहित्य :–

यशपाल जी के द्वारा संकलित और सम्पादित साहित्य पर दृष्टि डालने से पूर्व सम्पादन, सम्पादक के कार्य और आर्दश तथा सम्पादकीय लेखन क्या होता है ? इसके सम्बन्ध में भी विचार कर लेना आवश्यक हो जाता है। अतः विभिन्न विद्वानों द्वारा समय–समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में की गई टिप्पणियाँ उल्लेखनीय है....

संपादन :–

"सम्पादक भावना प्रवण, विचारक विश्लेषक दृष्टियुक्त बौद्धिक प्राणी होता है जो भावना के स्तर पर लोक मन में डूब कर जीता है। तीव्र विचारणा के स्तर पर उन्मयित हो उठता है और विश्लेषण बुद्धि के बल पर सामाजिक एवं जातीय स्तर तक अनुभव कर जनमानस की भावनाओं को वाणी देता है। ऐसा करते वक्त उनके विचारों की तीव्रता अभिव्यक्ति की मुरखता के मिलकर प्रखर रचना प्रक्रिया को जन्म देती है। भविष्य की दृष्टि से सम्पन्न होने के कारण वह समाज को एक दिशा देता है। पत्रकार की वाणी की प्रखरता इस बात पर निर्भर करती है, कि उसमें सेवा व्रतीत्व कितना है ? भावधारा की प्रगाढ़ता उस वाणी को नई–नई विधाओं का वरण कराती है। सृजन की इस प्रक्रिया में वह कब लेख, कहानी, नाटक, कविता, व्यंग्य और न जाने क्या–क्या लिख जाता है, उसे बता पाना सम्भवतः उसके अपने चेतन मन के लिए भी सम्भव नहीं है।"[1]

सम्पादन कला समाज के विस्तृत वर्ग की अदम्य ज्ञान विपासा की शान्ति की दिशा में प्रभावशाली साधन है। मानव की दुर्दमनीय जिज्ञासा ही ज्ञान की खोज की मूल प्रेरणा रही है। जो देखा है उसकी अन्य व्यक्ति के समक्ष अभिव्यक्त करना उसकी सहज प्रवृत्ति रही है, इसलिए रस्किन के शब्दों में....

1. पत्रिका सम्पादन कला, डा. रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ – 11 (साहित्य सृजन की दिशा और पत्रिकायें)

"संसार में मानव आत्मा की किसी बात को देखना और सीधे शब्दों में उसका वर्णन करना मनुष्य की ज्ञान प्राप्ति की उत्कट लालसा तथा जो ज्ञात है, उसकी अभिव्यक्ति इन दोनों का परितोष करने वाला माध्यम पत्रकारिता है। स्थिति, अध्ययन, चिंतन, मनन, आत्मभिव्यक्ति की व्यग्रता जन मंगल के प्रति अस्था तथा ऐसे ही कुछ और अनुभवों ने पत्रों का प्रारम्भ किया होगा। ज्ञान तथा विचारों की समीक्षात्मक टिप्पणियों एवं चित्रों सहित विशाल जन–मानस तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।"[1]

"वह व्यक्ति जो समाचार पत्र के सम्पादकीय कार्य का निर्देशन और निरीक्षण करता है, उसे सम्पादक कहते हैं। वह सम्पादकीय विभाग का प्रमुख होता है, और प्रकाशित होने वाली प्रत्येक सामग्री के लिए उत्तरदायी होता है।"[2]

सम्पादकीय लेखन :–

सम्पादकीय लेख का कोई निश्यित आकार एवं स्वरूप नहीं होता। सामान्यतः उसके दो खण्ड होते हैं। प्रारम्भिक खण्ड में जो सामान्यतः बहुत छोटा होता है, उस विषय का संक्षेप में उल्लेख रहता है जिस पर उक्त सम्पदाकीय आधारित होता है। दूसरा खण्ड सम्पादकीय लेखन का प्राण होता है। इस खण्ड में विश्लेषण व्याख्या, मूल्यांकन तथा अन्य विशिष्ट तर्कशरीण रहती है। कभी–कभी तीसरा खण्ड जुड़ा रहता है। यह खण्ड प्रायः उसी अवस्था में रहता है जब सम्पादक किसी महत्वपूर्ण विचार, उत्प्रेरणा, परामर्श या आदेश आदि देता है।"[3]

"विषय चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो जब सम्पादक उस पर अपनी लेखनी उठाता है तो उसे जनता के सामने पानी में तैरती नौका बना देता है। सम्पादकीय लेखन की दृष्टि से वही सम्पादक सर्वाधिक सफल है जो स्पष्ट, सशक्त, प्रत्यक्ष और सरल सुबोध शैली की अपनाता है। जब वह वाग्जाल एवं कठिन अंलकरण में उलझे बिना सीधी बात कहता है। किसी भी तथ्य की

1. पत्रिका सम्पादन कला, डा. रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ – 58
2. समाचार सम्पादन और पृष्ठ सज्जा, डा. रमेश कुमार जैन, पृष्ठ – 33–34
3. पत्रिका सम्पादन कला, डा. रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ – 67

तोड़–मोड़ नहीं करता या गलत बात कहे बिना तर्क संगत विचरणा को प्रस्तुत करता है। तब वह ऐसे शब्द चुनता है जो उसके मंतव्य को स्पष्ट रूप से प्रेषित कर सके। उसके लेखन की स्पष्टता एवं सुबोधता उसके चिंतन की स्पष्टता को ही प्रतिबिम्बित करते हैं।"1

डा0 रामचन्द्र तिवारी ने अपने ग्रंथ "पत्रिका सम्पादन कला" में सम्पादक के कार्यों में सम्पादकीय लेखन के अतिरिक्त समाचार लेखन, सामग्री चयन अंको की पूर्व योजना, साज–सज्जा डमी निर्माण, शुद्ध मुद्रण का भी उल्लेख किया है।

सम्पादक श्री यशपाल जैन :–

श्री यशपाल जैन ने अनेक पत्रिकाओं, अभिनन्दन ग्रन्थों एवं पुस्तकों का सम्पादन किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने संकलन का कार्य भी बड़ी कुशलता से किया है। हिन्दी पत्रकारों में पूज्य श्री हरिमाऊ एवं पं. बनारसीदास चतुर्वेदी जी का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण, दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार से कह सकते हैं, कि वे हिन्दी पत्रिकारिता के मील के पत्थर हैं जहाँ पर पहुँच कर हिन्दी पत्रकारिता की धारा ने नये मोड़ लिए हैं और दिशायें बदली हैं। नये आयाम खोजे हैं। ऐसे मूर्धन्य सम्पादकों के जीवन एवं सम्पादन के उच्चादर्श श्री जैन ने अपनाए और ये दोनों ही उनके सम्पादक–जीवन के मूलाधर एवं प्रेरणा स्त्रोत हैं।

मुख्यतः श्री यशपाल के सम्पादित साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

श्री यशपाल जैन का सम्पादित –साहित्य

पत्रिकाएं | अभिनन्दन स्मृति ग्रन्थ | संकलित एवं सम्पादित पुस्तकें
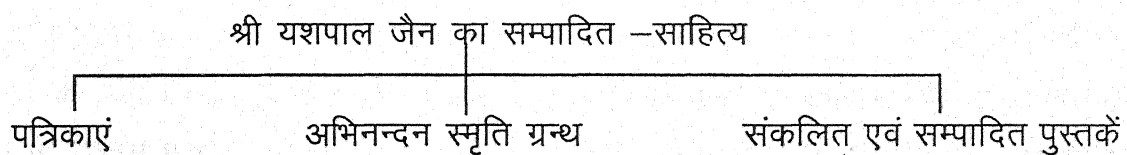
सम्पादित पत्र – पत्रिकाएँ :–

1.	मिलन, इलाहाबाद	मासिक	1935–36
2.	जीवन, सुधा, दिल्ली	"	1938–39
3.	मधुकर, कुण्डेश्वर	"	1940–46
4.	जीवन साहित्य, नई दिल्ली	"	1946–सम्प्रति

1. पत्रिका सम्पादन कला, डा. रामचन्द्र तिवारी, पृष्ठ – 265–266

सम्पादित – अभिनन्दन – स्मृति ग्रन्थ :–

1.	प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ (नाथूराम प्रेमी)	1946 प्रेमी अभिनन्दन समिति टीकमगढ़
2.	राजेन्द्र बाबू व्यक्तित्व दर्शन (डा0 राजेन्द्र प्रसाद)	1963 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
3.	नेहरू व्यक्तित्व और विचार (पं. जवाहर लाल नहेरू)	1965 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
4.	संस्कृति के परिव्राजक (काका कालेलकर)	1965 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
5.	गाँधी व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव (महात्मा गाँधी)	1966 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
6.	गाँधी सम्मरण और विचार (महात्मा गाँधी)	1967 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
7.	समन्वयी साधक (हरिमाऊ उपाध्यय)	1969 अभिनन्दन समिति, दिल्ली
8.	प्रेरक साधक (बनारसीदास चतुर्वेदी)	1970 ससता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
9.	विनय और विवेक (हँसराजगुप्ता)	1972 अभिनन्दन समिति, नई दिल्ली
10.	बिनावा व्यक्तित्व और विचार(विनोला भावे)	1971 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
11.	समर्पण और साधना (जानकी देवी बजाज)	1973 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
12.	कमलनयन बजाज व्यक्तित्व विचार (स्व. कमल नयन बजाज)	1977 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
13.	स्वामी मुक्तानंद (स्वामी मुक्तानन्द परमहँस)	1978 गुरूदेव आश्रम, गणेशपुरी
14.	श्री मन्नारायण व्यक्तित्व और विचार	1979सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
15.	समन्वय के साधक (काका कलेलकर)	1979 अभिनन्दन समिति, नई दिल्ली

संकलित और सम्पादित पुस्तकें :–

1.	अहार (विख्यात जैन–तीर्थ से सम्बन्धित लेखों का संग्रह)	1943 मधुकर कार्यालय, टीकमगढ़
2.	स्व. हेमचन्द्र (संस्मरण संग्रह)	1944 हिन्दी ग्रन्थ (रत्नाकर बम्बई)
3.	सन् बयालीस का शहीद रमेश (सस्मरण संग्रह)	1949 स्मृति समिति, नई दिल्ली
4.	गाँधी की कहानी (जीवन लुई फिशर)	1964 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
5.	भारत का विभाजन की कहानी	1954 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
6.	समाज विकास माला (नव साक्षरों के लिए 174 पुस्तकें)	1953–63 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
7.	गाँधी हिन्दी दर्शन (संकलन)	1970 हिन्दी साहित्य सम्मेलन
8.	दिव्य ज्योति (माता जी लक्ष्मीदेवी सम्बन्धित संस्मरण)	1970 दिव्य प्रकाशन नई दिल्ली
9.	सचित्र बाल साहित्य (बालोउपयानी)	1970 दिव्य प्रकाशन, नई दिल्ली
10.	सुबोध साहित्य (किशोरपयोगी) 17 पुस्तकें	1978 दिव्य प्रकाशन, नई दिल्ली

पत्रिका सम्पादनः–

श्री यशपाल जैन ने सन् 1936 में इलाहाबाद से मासिक पत्र "मिलन" का सम्पादन अपने दो अन्य सहयोगियों – श्री नरेश शर्मा तथा श्री प्रभात विद्यार्थी के साथ किया। तत्पश्चात् दिल्ली से मासिक "जीवन सुधा" का सन् 1938–39 में सम्पादन किया। फिर कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) से पत्रिका मधुकर के सन् 1940 से 46 तक संयुक्त सम्पादक रहे। सन् 1946 से लगातार सम्पादन कर रहे हैं। साथ ही दिल्ली से प्रकाशित "मंगल प्रभात" के सम्पादन तथा "अणुब्रत" के परामर्श दाता–सम्पादक भी हैं। इस प्रकार पाक्षिक और मासिक पत्रों के सम्पादन का उनका अनुभव दीर्घकालीन लगभग 46 वर्षो का है। इतनी लम्बी अवधि में उनके विचारों में और उनकी अभिव्यक्ति में जो परिपक्वता, जो निखार आया है, उसका परिचय हमें उनके लेखों विशेषकर "जीवन साहित्य" की सम्पदाकीय टिप्पणियों से भलीभाँति मिलता है।

सम्प्रति हमारे सामने "जीवन साहित्य" के इधर के कुछ वर्षों की फाइल है। हम इससे उनके विचारों, चिंतन, मनोभावों उनके आवेगों संवगो, उद्वेगों, उनकी टीस, उनकी कसक इत्यादि की काफी झलक पाते हैं एवं सम्पादक समझने के लिए उसकी सम्पादकीय टिप्पणियों से बढ़कर शायद ही कोई अन्य साधन हो।

यशपाल जी के सम्पादन में प्रकाशित पत्रिका जीवन–साहित्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय है। जिसका प्रकाशन आज भी निर्बाध गति से हो रहा है। कई बार यह पत्रिका बंद होने की स्थिति में भी आ गई, किन्तु श्री जैन की लगन व तपस्या के फलस्वरूप यह सिसकती पत्रिका पुर्नजीवित हो उठी। आज उसके पाठक सम्पूर्ण भारत में ही नहीं विदेशों में भी फैले है। इस पत्रिका के सम्पादकीय लेख श्री जैन की सम्पादन कला एवं विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पत्रिका का प्रकाशन "सस्ता साहित्य मण्डल" नई दिल्ली से हो रहा है।

पत्रिका के सम्पादकीय लेखों में श्री यशपाल जैन ने मुख्यतः शैक्षिक क्षेत्र की समस्याओं, तत्कालीन राजनैतिक स्थिति, सामाजिक समस्याओं, हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य की स्थिति, धर्म तथा नैतिक मूल्यों की अपनी लेखनी का विषय बनाया। इसके अतिरिक्त उन्होंने फिल्मों को भी अपनी लेखनी से सुधारा है। "जीवन साहित्य" से उर्पयुक्त विषयक कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ प्रस्तुत हैं.....

शिक्षा :–

"आज शिक्षा ने बेरोजगारी को बढाया है और लोगों को सरकार का मुखापेक्षी बनाया है।"

"रचनात्मक क्षेत्र में आज कितनी निराशा व्याप्त है इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। जो खादी आजादी की वर्दी मानी जाती थी, वह आज सरकार की दया और कृपा पर जी रही है, ग्रामोउद्योग सिसक रहे है।"[1]

कुतुबमीनार की ह्रदय विदारक त्रासदी :–

पिछले दिनों कुटुबमी नार पर जो ह्रदय विदारक दुर्घटना हुई है, उसका स्मरण करके रोगटे खड़े हो जाते है, हमारे देश के इतिहास में इस घटना की दुःखद स्मृति बहुत दिनों तक बनी रहेगी यह त्रासदी अत्यन्त भंयकर है, क्योंकि इसमें मरने वालों में अधिकाश स्कूली बच्वें थे, उनके अभिभावकों के दिलो के घाव कभी भरे नहीं जा सकेगें जब तक सरकार अपने बनाये नियमों के प्रति जागरूक नहीं होगी और नागरिक उन नियमों के मानने के लिए तत्पर नहीं होगें तब तक ऐसी दुर्घटना को रोक नहीं जा सकता।"[2]

राजनैतिक दलों की भूमिकाए बदले :–

देश आज़ विनाश के कमार पर खड़ा है आंतरिक फूट – द्वेष विद्वेष लड़ाई इगडे अहं उसकी भीतरी शान्ति को क्षीण है वहाँ उसकी सरहद पर चारों और बाहरी खतरे बढ़ रहे है।

---

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (जनवरी 1982)
2. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (जनवरी 1982)

इंदिरा जी ओर उनका दल विपक्षी नेताओं के बुरा कहेगा और विपक्षी नेता और उनके दल इंदिरा को बुरा कहेगें।"[1]

प्रेस की भूमिका :–

आज के अधिकांश नगर वासियों की दैनिक चर्या का आंरभ अखबारों की खबरों के वाचन से होता है। आत्महत्याओं, डकैतियों, लूटमारों, राजनैतिक उखाड़–पछाड़, बलात्कार, आन्तरिक विग्रह, बाहरी खतरों आदि की खबरें जब तक नहीं पढ़ लेते, चैन नहीं पड़ता है।"

"गाँधी जी गोली लगने का समाचार सुन कर विख्यात अमरीकी लेखिका पर्लबक की नन्हीं सी बेटी ने भारी से मन से कहा था "माँ कितना अच्छा होता अगर पिस्तौल की ईजाद न हुई होती। "व्यक्तिगत सामूहिक जीवन पर पत्रों के दुष्प्रभाव को देखकर हमारा मन भी प्रायः यह कहने को लाचार हो उठता है कि यदि समाचार पत्र न होते तो कितना अच्छा होता। सबेरे अखबार पढ़कर जानें अनजानें दिन भर के लिए हमारे मन पर तनाव पैदा हो जाता है।"[2]

प्रेस बिल :–

प्रधानमंत्री ने अपने लखनऊ व्याख्या में इस बिल का समर्थन कर दिया है। यह सच है कि यह कदम अपनी कमजोरियों को छिपाने के प्रयत्न है। बिहार में राजनैतिक मंच पर जो कुछ हो रहा है वह वांछनीय नहीं है। आगे और भी गंदगी फैलने का अंदेशा है। यही कारण है कि प्रेस की आजादी छीनकर मार्ग निष्कलंक बना लेने के लिए बिहार के शासक इच्छुक हैं। आज के युग में प्रेस की आजादी छीनना अपनी मौत को आमंत्रण देना है।"[3]

हिन्दी को लेकर रस्साकसी क्यों :–

जब वे दलीलें थोथी सिद्ध हो गईं तब हमारे स्वनामधन्य शासकों ने एक दलील दी कि हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी। आवेश अथवा अपने स्वार्थों के वशीभूत होने के कारण वे थोपने का

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (फरवरी 1982)
2. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (मई 1982)
3. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (अक्टूबर 1982)

सामान्य अर्थ भूल गये। थोपनें का अर्थ होता है अल्पसंख्यकों की भाषा को बहुसंख्यकों के सिर पर लादना।

हिन्दी दक्षिण से लेकर उत्तर तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक सारे देश में समझी और बोली जाती है। हमारे नेता लोग सत्ता को हाँथ में बनायें रखने के लिए जो न कहें थोड़ा है.... हिन्दी का किसी भी भाषा में विद्वेष नहीं है न अंग्रेजी से, न भारतीय भाषाओं से लेकिन उसे अपना स्थान तो मिलना ही चाहिए। इतना निश्चित है कि स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा न अंग्रेजी हो सकती है, न कोई प्रादेशिक भाषा। वह दर्जा तो हिन्दी का है और उसी का रहेगा।"[1]

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन :–

पहला और दूसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन नई दिल्ली में दिसम्बर के तृतीय सप्ताह में होने जा रहा है.... हमें याद है कि सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन में पश्चिमी जर्मनी के हिन्दी सेवी लोथार लुप्से ने भारी भीड़ के सामने कहा था, "आप हमसे हिन्दी को बढ़ावा देने की अपेक्षा रखते हैं, लेकिन यह तो बताइये कि आपके आदेश में क्या हो रहा है ? इस प्रकार का प्रश्न पूछने का अब तो और अवसर है.... हमें पहले अपने घर को सम्भालना चाहिए। हमारे देश की राष्ट्रभाषा स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी अंग्रेजी बनी रहे। इसमें हमें भले ही अटपटापन अनुभव हो बाहर के लोगों के तो वह गले नहीं उतरती।"[2]

साहित्यिक पुरस्कार :–

भारतीय ज्ञान पीठ के सातवें पुरस्कार की विजेता अम्रता प्रीतम का सम्पूर्ण जीवन साधना का रहा है और उनके साहित्य का उद्देश्य उस मानवता को प्रतिष्ठापित करना है जो घर–2 में व्याप्त है, और जिसके अधिष्ठान पर सारा जगत खड़ा है..... मेरे मतानुसार लेखन अपने तक और फिर अपने से बहुत दूर आगे तक पहुँचने का सफर है। अपने सफर तक पहुँचने के सफर का मतलब है.... सबसे पहले "अपने" को जानना, फिर "तुम" को फिर आगे जो कुछ है यानी सारी दुनिया।

---

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (सितम्बर 1982)
2. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (दिसम्बर 1982)

इसका मतलब यह है, कि इससे दूसरों का, समाज का, देश का और दुनियाँ का मौजूदा दुःख तभी दूर होगा जब आदमी–आदमी से मिलेगा। उसके बीच कोई फासला नहीं रहेगा और आदमी क्या छोटे जीव का दर्द अकेले नहीं रहेगा यही महावीर का मार्ग है, बुद्ध का मार्ग है। इसी खोये मार्ग को खोजना है और इस पर चलना है। साहित्य का और साहित्य का ही क्यों सबका कर्तव्य इसी मार्ग की खोज में सहायक होना है।"[1]

चीन में हमने क्या देखा :–

"साहित्य के प्रति जन–सामान्य में बड़ा प्रेम है। बीजिंग में एक विख्यात लेखिका ने बताया कि हाल में लोक तथा बोध कथाओं की एक पुस्तक साठ हजार छपी और दो महीने में पूरी की पूरी खप गई। हमारे यहाँ अभी तो ऐसी खपत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हिन्दी की अधिकांश पुस्तकों (पाठ्य पुस्तकें छोड़कर) का प्रथम संस्करण एक, दो, पांच हजार से अधिक प्रतियों का नहीं छपता।"[2]

धर्म गुरूओं सें :–

"धर्म गुरूओं की तेजस्विता, मानव – जाति के प्रति अडिग अस्था और लोक कल्याण के लिए कठोर साधना वर्तमान युग के लिए अपेक्षित है। उनके द्वारा ही देश को नई दिशा मिलेगी और स्वस्थ परम्परायें स्थापित होंगी। उज्जवल भविष्य के लिए खरे मानव की महती आवश्यकता है। वह खरे धर्म गुरूओं और धमाचार्यो के द्वारा ही सम्भव होगी।"[3]

अंहिसा सार्वभौम :–

अभी कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र संघ (न्यूयार्क) के भवन के सामने निरस्त्रीकरण की दिशा में दश लाख़ व्यक्तियों प्रदर्शन निष्फल हुआ जबकि प्रदर्शनकारियों में जापान के फ्यूजीई गुरू जी तथा इग्लैण्ड के नोरक्ला बेकर जैसी शान्तिवादी हस्तियाँ थी...... इसमें कोई सन्देह नहीं कि अंहिसा

---

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (मई 1983)
2. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (नवम्बर 1983)
3. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (अक्टूबर 1982)

सर्वभौम की योजना बड़ी मूल्यवान तथा दूरदर्शिता पूर्ण है। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि जिस प्रकार गाँधी के अभाव में अंहिसा निस्तेज हो गई उसी प्रकार प्रभावशाली नेतृत्व के अभाव में आगे चलकर अंहिसा सर्वभौम की योजना भी अधर में लटकीं रह जाय।"[1]

नेक बनो, एक बनो :–

आन्तरिक विग्रह, ईर्ष्या–द्वेष, पदलोलुपता और स्वार्थ ने देश को झकझोर डाला है। पंजाब असम आदि में आग सुलग रही है। ऐसी दिखाई दे रहा है, कि यदि जल्दी ही स्थिति में सुधार नहीं आया तो आग की लपटें समूचे देश को अपनी चपेट में ले लेगी।

इस अन्दरूनी अशान्ति के साथ–साथ देश की सीमायें खतरे से घिरी हैं। इन सारी कठिनाईयों और संकेतों का कारण यह है कि इस संकट से कैसे उबरा जाय। उत्तर स्पष्ट है देश को नेक और एक बनाना होगा। "गरीबी हटाओ" का नारा अब अपना अर्थ खो चुका है। दूसरे नारे भी अब पुराने पड़ गये हैं। अब नया नारा होना चाहिए "नेक बनो एक बनों"। इस मूलमंत्र को बोलकर संतुष्ट हो जाने भर से काम नहीं चलेगा, इस पर अमल भी करना होगा।"[2]

एक नई फिल्म :–

हाल ही में एक नई फिल्म दिखाई जा रही है, "आज का एम.एल.ए. रामअवतार"। फिल्म को हमने भी देखा और अनुभव किया कि आज देश में जो कुछ हो रहा है उसकी झाँकी इस फिल्म में आयी है। फिल्म के अन्त में राजनैतिक भ्रष्टाचार को दूर करने का जो मार्ग बताया गया है, वह सही है।

राजनीति अब आदर्श प्रेरित नहीं रही। उसके दावे कुछ भी हो वह अब एक धंधा बन गई है। चुनाव भी अब अंधा बन गया है। इस फिल्म ने एक और बात सिद्ध कर दी है कि देश का वर्तमान नेता विश्वसनीय नहीं है। उस पर निर्भर करोगे तो कुएँ में गिरोगे।

---

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (जून 1983)
2. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (मार्च 1984)

हम नहीं जानते कि देश में शासन और नेताओं की यह शाख होगी तो देश का प्रशासन किस प्रकार चलेगा।

इतिहास में हम पढ़ते हैं कि एक युग था जब कि मनुष्य पशु का सा जीवन जीता था। असभ्यता के उस युग में आदमी जिसे चाहता था मार डालता था और अपनी पाशविक इच्छा की तृप्ति कर लेता था। लगता है उसी इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही। अबोध, निरअपराध व्यक्ति को गोली से उड़ा देना तथा उसके सीने में खंजर भोंक देने में उसे संकोच नहीं होता।

वहाँ कुछ लोग दुराग्रही हो गये हैं। उनके दुराग्रह नहीं किया जा सकता। वहाँ की धरती में घृणा के बीज बोये जा रहे हैं। उन बीजों को प्रेम की फसल उगाकर निरर्थक किया जा सकता है। इसके लिए पंजाबियों में जितना पुरूषार्थ है उससे अधिक पुरूषार्थ अपेक्षित है.... पुरूषार्थ मारने का नहीं मरने का, तभी वहाँ की आग शांत होगी।"[1]

श्री जैन द्वारा सम्पादित "जीवन साहित्य" की सम्पादकीय टिप्पणियों के सम्बन्ध में श्री दुर्गाशंकर द्विवेदी ने लिखा है....

"उनकी उच्चस्तरीय सम्पादीय टिप्पणियाँ उनके स्वस्थ पत्रकार का एक प्रांजल पक्ष उजागर करती हैं तो उनकी घुमक्कड़ वृत्ति ने यात्रा साहित्य में कई महत्वपूर्ण कृतियों को जोड़ा।"[2]

श्री स्व. शौरीराजन ने "जीवन साहित्य" के विशेषाकों एवं सम्पादन के सम्बन्ध में लिखा है....

"जीवन साहित्य का प्रत्येक विशेषांक अतयंत उपयोगी और बहुमूल्य हैं। ये आपकी सम्पादकीय सुदक्षता के वर्चस्वी जीवन्त संस्मरण हैं। मेरी जानकारी में ऐसे विशिष्ठ और सम्पूर्ण विशेषांक "जीवन साहित्य" को छोड़कर और किसी भी पत्र–पत्रिका ने नहीं निकाले।"[3]

श्री नारायण चतुर्वेदी ने "जीवन साहित्य" की टिप्पणियों को विचारोत्तजेक बताते हुए लिखा है....

---

1. जीवन साहित्य – सम्पादक यशपाल जैन, (अप्रैल 1984)
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 223
3. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 200

उन्होंने अपने कुशल सम्पादन से उसे वास्तव में जीवनोपयोगी साहित्य का वाहक बना दिया। उनकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ बड़ी संतुलित और विचारोत्तेजक होती हैं।"[1]

"जीवन साहित्य" के सम्पादक के सम्बन्ध में श्री काका कालेलकर जी ने लिखा....

"आश्चर्य नहीं किन्तु हिन्दी की अनेकानेक नियतकालिकों का यशपाल जी के पास से साहित्यिक पोषण उत्तम ढंग का मिलता रहता है।"[2]

श्री रामलाल पुरी के मतानुसार....

"जागरूक पत्रकार के रूप में श्री यशपाल जी का जो सम्मान आज हिन्दी जगत में है वह निश्चय ही उसकी समाज सेवी भावनाओं का प्रतिफल है।"[3]

हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डा0 विनय मोहन शर्मा ने यशपाल जी को गाँधीवादी सम्पादक उसी के अनुसार आचरण भी करता है। पत्र के विचारों के साथ पत्रकार सम्पादक का तादात्म्य बहुत कम देखा जाता है।"[4]

श्री जैन की पत्रिका सम्पादन कला की विशेषताएँ:–

"कैसी ही रचना उनके पास पहुँच जाए वह लेखक–लेखिका का दिल नहीं दुखाना चाहते। इसलिए बड़े परिश्रमपूर्वक उस लेख की आत्मा को सुरक्षित रखकर उसकी शब्दावली को परिवर्तित करके उसे नया कलेवर देते हैं और वही लेख जो कूडेदान में फेकनें वाला था, वह सराहनीय और प्रशंसनीय बन जाता है।"[5]

यशपाल जी ने अपनी सम्पादकीय टिप्पणियों से स्वतन्त्रता आन्दोलन के मूल्यों और आदर्शों से पाठक को अवगत कराया है। उनकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ मात्र आदर्शवादी न होकर व्यवहारिक भी हैं। क्षेमचन्द्र सुमन ने लिखा है कि.... मैं "जीवन सुधा" मासिक पत्रिका की सम्पादकीय देखकर श्री जैन की सम्पादन कला का लोहा मान चुका हूँ।

---

1. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 101
2. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 55
3. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 72
4. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ – 132
5. निष्काम साधक – सं. बनारसी दास चतुर्वेदी, (श्रेष्ठ साहित्यकार – देववती शर्मा)

श्री जैन की टिप्पणियों की भाषा सरल और प्रवाह युक्त है तथा सहज बोध गम्य है।

टिप्पणियाँ मानवीय मूल्यों की पोषाक हैं। निष्कर्षतः श्री यशपाल जैन के सम्पादकीय लेखों तथा उनकी सम्पादन कला पर विभिन्न दृष्टि कोणें से अवलोकन करने के उपरान्त हम कह सकते है कि यशपाल जैन के सम्पादकीय लेखों की भाषा प्रभावपूर्ण, सामान्य बोलचाल की भाषा है। किन्तु उसमें मुहावरों और आंचलिक शब्दावली की अभाव है। अंलकार एवं शब्दाडम्बर से उन्होंने अपनी भाषा को मुक्त रखा है। उनकी भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह सपाट शब्दों में निर्भीकता से अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। उनकी टिप्पणियाँ समसामयिक तो हैं ही इसके अतिरिक्त आज के परिवेश पर भी घटित है। श्री जैन की कलम पर गाँधी एवं मानवीय मूल्यों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

सम्भवतः जीवन–साहित्य नहीं अपितु स्वयं यशपाल जी इस पत्रिका के लिए वरदान सिद्ध हुए। उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा इस पत्रिका को हिन्दी साहित्य की एक महान उपलब्धि बना दिया है।

अभिनन्दन ग्रन्थों एवं स्मृति ग्रन्थों का सम्पादन :–

श्री यशपाल जैन ने सर्वप्रथम श्री नाथूराम प्रेमी के अभिनन्दन–ग्रन्थ का सम्पादन सन् 1946 में किया जो टीकमगढ़ में प्रकाशित हुआ। इसके उपरान्त उन्होंने अन्य 15 अभिनन्दन ग्रन्थों का कुशलतापूर्वक सम्पादन किया। उनके द्वारा सम्पादित इन ग्रन्थों की मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है.... अभिनन्दन ग्रन्थ एवं स्मृति ग्रन्थ। इन ग्रन्थों के लिए उन्होंने सर्व श्री हरिभाऊ उपाध्याय, बनारसीदास चतुर्वेदी, काका कालेलकर जैसे साहित्यकारों, महात्मा गाँधी, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, पं0 जवाहर लाल नहेरू, विनाबा भावे जैसे राजनीतिज्ञों को चुना। इसके अतिरिक्त स्वामी मुक्तानन्द, परमहंस, जानकी देवी बजाज आदि महापुरूषों पर भी अभिनन्दन ग्रन्थों का सृजन किया।

श्री शिवचरनदास ने लाला हंसराज गुप्त..... अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन के सम्बन्ध में लिखा है....

"दिल्ली के भूतपूर्व महापौर और प्रसिद्ध समाज सेवी लाला हंसराज गुप्त के अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादन में उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि वे एक योग्य सम्पादक है।"[1]

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने श्री जैन की अभिनन्दन ग्रन्थ सम्पादन कला का मूल्यांकन करते हुए लिखा है। कि प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पूर्ण कार्य दो हस्तलिखित अभिनन्दन ग्रन्थों का सम्पादन करके श्री जैन ने सिद्ध कर दिया है कि उतना कार्य शायद ही किसी अन्य लेखक ने की हो।

वस्तुतः श्री यशपाल जैन के द्वारा सम्पादित पन्द्रह (15) अभिनन्दन ग्रन्थों का सिहांवलोकन करने पर आँखें आश्चर्य से विस्फारित रह जाती है, क्योंकि अभिनन्दन ग्रन्थों के लिए सामग्री जुटाना, सामग्री का वर्गीकरण करना, दर्लभ चित्र का संकलन करना बडी टेढ़ी खीर है। इसके लिए धैर्य, उदारता, संयम की आवश्यकता होती है। सम्पादक पर इसके मुद्रण आदि का भार भी रहता है। कभी–कभी आर्थिक संकट भी उपस्थित हो जाता है। इन सब समस्याओं का समाधान श्री जैन को 15 विशालकाय अभिनन्दन ग्रन्थों के लिए करना पड़ा।

अतः श्री जैन का हिन्दी में अभिनन्दन ग्रन्थों के सम्पादन में एक विशिष्ट स्थान है। वे अभिनन्दन ग्रन्थों में केवल कुशल शिल्पी ही नहीं है अपितु उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ–स्वर्णकार की संज्ञा भी दी जा सकती है।

पुस्तक सम्पादक एवं संकलनः–

श्री यशपाल जैन ने 150 से भी अधिक पुस्तकों का सम्पादन एवं संकलन किया है। सन् 1943 में "अहार" शीर्षक से जैन तीर्थों से सम्बन्धित विवरणों का संकलन किया था, जो मधुकर कार्यालय टीकमगढ़ से प्रकाशित हुआ। श्री जैन द्वारा सम्पादित एवं संकलित पुस्तकों में संस्मरण, जीवनी, कहानियाँ, बालापयोगी पुस्तकें आदि हैं।

---

1. निष्काम साधक – सं. शिवचरन दास, पृष्ठ – 85

राजनीति से दूर शीर्षक से 1957 में श्री जवाहर लाल नेहरू के यात्रा साहित्य शिक्षा विषय सम्बन्धी लेखों का संकलन श्री जैन ने किया था, जो सस्ता साहित्य प्रकाशन (मण्डल (दिल्ली) से प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक के प्रकाशकीय के अंतर्गत लिखा है......

"जैसा कि नाम से स्पष्ट है प्रस्तुत पुस्तक में नेहरू जी के कुछ ऐसे लेखों का संग्रह किया है। जिनका विषय राजनीति नहीं है। इसमें कई एक तो देश विदेश के यात्रा संस्मरण है, जिनमें प्रकृति के कलापूर्ण वर्णन के साथ–साथ वहाँ पर बसने वाले लोगों के स्वभाव, सामाजिक, रीतिरिवाजों आदि का भी उल्लेख है। इनके अतिरिक्त अन्य लेखों में उन्होंने साहित्य के भण्डार की वृद्धि, भाषा की वैज्ञानिकता, समाजहित की दृष्टि से राष्ट्रीय योजना, महिलाओं की शिक्षा, विज्ञान का महत्व आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की है। इन लेखों में हमें लेखक के व्यापक व आदर्शवादी दृष्टिकोण, छोटी से छोटी चीज भी गहराई में जाने की अद्भुत क्षमता, कला प्रेम और विस्तृत अध्ययन एवं अन्वेषण का पता चलता है।"[1]

श्री यशपाल जैन ने संकलन एवं पुस्तक सम्पादन का दायित्व बड़ी कर्तव्यनिष्ठा के साथ सम्पन्न किया है। कुछ पुस्तकों के लिए तो उन्हें संकलनकर्ता, सम्पादक और अनुवादक की तिहरी भूमिका निभानी पड़ी। उसका उदाहरण "गाँधी चिन्तन" शीर्षक पुस्तक है, जिनके मुख्य पृष्ठ पर श्री जैन का नाम अनुवादक के रूप में अंकित है। जिसके प्रकाशकीय में इसे संग्रह बताया है।

"प्रस्तुत पुस्तक में महात्मा गाँधी के चुने लेखों तथा व्याख्यानों का सग्रह किया है। रचना का चुनाव आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से किया गया है। वस्तुतः ये रचनाएँ उस विशाल संग्रह से ली गयी हैं जिसे गाँधी प्ले प्रतिष्ठान ने अंग्रेजी में श्री बी.बी.रमन मूर्ति द्वारा कराया गया है। इस पुस्तक में "नवमान" गुजराती "हरिजन" हिन्दी "यंग इण्डिया" अंग्रेजी से सामग्री ग्रहण की गयी है।"[2]

श्री यशपाल जैन के संकलन एवं पुस्तक सम्पादन की एक अन्य विशेषता यह है कि वे पुस्तक के विभिन्न स्रोतों का उल्लेख स्पष्ट रूप से कर देते हैं। उदाहराणार्थ "राजनीति से दूर पुस्तक की

1. राजनीति से दूर – जवाहरलाल लेहरू (संकलनकर्ता – यशपाल जैन), पृष्ठ – 3–4
2. गाँधी चिन्तन – (संकलनकर्ता एवं सम्पादक – यशपाल जैन), प्रकाशकीय

सामग्री एवं कहानी "हिन्दुस्तान की समस्याएँ", "युनिटी आफ इण्डिया" कुछ समस्याएँ और नेशनल हेरल्ड आदि से ली गई हैं।

सारांशतः रूप में कहा जा सकता है, कि सम्पादक उस बहुमूल्य दायित्व का दूसरा नाम है। जनता के प्रति उसका एक विशेष दायित्व है। सफल सम्पादक उस दायित्व का निर्वाह कुशलता एवं योग्यता के साथ करता है। श्री यशपाल जैन ने अनेक पत्रिकाओं तथा पुस्तकों, अभिनन्दन ग्रथों का सम्पादन किया है, किन्तु उनकी सम्पादन कला सर्वाधिक अभिनन्दन ग्रथों एवं जीवन साहित्य पत्रिका के सम्पादन में दृष्टिगोचर होती है।

उनकी लेखनी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह विकृष्ट सामग्री को भी विशिष्टता समसामयिक, विश्लेषणात्मक एवं मार्ग दर्शक है। संकलनकार के रूप में भी आपने विशिष्ट भूमिका निभाई है। अधिकांशतः जो पुस्तकें आपके द्वारा सम्पादित हुई उनके संकलकर्ता में भी आप का ही विशिष्ट योगदान रहा है। अभिनन्दन ग्रथों के सम्पादन के क्षेत्र में तो उनके नाम की पताका फहरा रही है। पत्रिका सम्पादन हो अथवा पुस्तक–सम्पादन, उनकी सम्पादन कला के मुख्यतः दो छोर है – गाँधीवाद और मानव मूल्य।

अतः हम कह सकते हैं, कि सम्पादक श्री यशपाल जैन में सम्पादक के सभी उच्चकोटि के गुण विद्यमान हैं।

सप्तम अध्याय

यशपाल जी के साहित्य में भाषा–शैली

(1) भाषा–शैली का महत्वः–

"भाषा ऐसे सार्थक शब्दों–समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम में व्यवस्थित होकर मन की बात दूसरे के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होती है। अत एव, भाषा का मूलधार शब्द हैं जिन्हें उपयुक्त रीति से प्रयुक्त करने के कौशल को ही शैली का मूल–तत्व समझना चाहिये, अर्थात् किसी लेखक या कवि की शब्द–योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[1]

साहित्य में शैली अथवा कला–पक्ष और भाव–पक्ष का समान महत्व है। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व प्रायः असम्भव हैं। रूप–गत और भाव–गत सौन्दर्य एक–दूसरे पर निर्भर हैं। इस विषय में सभी विद्वान् प्रायः एक मत नहीं हैं। अंग्रेजी विद्वान् फलाबार्ट ने साहित्य के रूप और भाव–पक्ष दोनों को एक मानते हुए भी विचार का महत्व अधिक स्वीकार किया है। उनका कथन है, कि.....

"रूप और भाव मेरे लिए एक हैं। मैं नहीं जानता एक के बिना दूसरे का क्या अस्तित्व है। भाव जितना सुन्दर होगा, निश्चित रूप से वाक्य भी उतना ही सुन्दर लगेगा।"[2]

दूसरे विद्वान् आर०एल० स्टीवेन्सन ने शैली को ही साहित्यिक कौशल की नींव कहा है....

"रचनात्मक खण्ड या अनुकृति जा एकदम सुखद और तर्क–सम्मत हो, एक परिमार्जित और सारगर्भित (पद) विन्यास जिसे शैली कहा जाता है, वही साहित्यिक कौशल की नींव हैं।"[3]

साहित्य में एक ही पक्ष पर अधिक बल देना उचित नहीं, क्योंकि भाव एवं शैली दोनों की

---

1. साहित्य लोचन – डॉ. श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ – 250
2. "Form and content to me are one. I don't know what either is without the other. The finer the idea, be suit the finer so sounding the sentance." --- Quoted from Novelists on the Novel, Miriam Allott - P. 3
3. "The web, then or the pattern, a web at once sensuous and logical, an elegant and pregnant texture; that is style that is the foundation of the art of literature." — Ibid - P. 319

समन्वित एवं सन्तुलित सम्बद्धात्मकता ही लेखक की सफलता की कसौटी है।

लेखक पर उसके व्यक्तित्व एवं समकालीन युग की भी छाप पड़ती है। उसके अनुरूप उसका अपना एक विशिष्ट ढंग बन जाता है। उसकी एक विंशिष्ट विधि बन जाती है, जिसके अनुसार वह अपनी कृति में अत्यन्त विचरण करता है। फिर भी उसे भाषा–शैली के कुछ सामान्य गुणों को निर्वाह करना पड़ता है, जिनके अभाव में उसकी कृति के कलात्मक–सौष्ठव को आघात पहुँच सकता है।

शैली के अपेक्षित गुण :–

"साहित्यकार जिस भाषा का प्रयोग करे, सामान्यतः वह भाषा प्रचलित, जन–जीवन के अनुकूल, बोधगम्य और सही होनी चाहिये।"[1]

"वह इतनी अधिक स्पष्ट प्रांजल हो कि अर्थ बिना किसी प्रयत्न के पाठक के सम्मुख निकल आये, अर्थ ही नहीं लेखक का नियत अभिप्राय भी स्वयं स्पष्ट हो जाये।"[2]

अर्थात्, उसे किसी प्रकार का क्लिष्ट, दुरूह, अस्पष्ट, विषय एवं सामान्य शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शब्द सन्तुलित, चुस्त, भावानुकूल एवं आवश्यक होने चाहिये। अनावश्यक प्रयोग शैली के प्रवाह और गति को अवरूद्ध कर देगें।

लेखक की नवीनता एवं उसके निजीपन के साथ–साथ शैली सरल, सहज और स्वाभाविक होना चाहिए। शैली की कृत्रिमता ओर दुरूहता, सरलता और सहजता प्रसंगों के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है। कृति स्वाभाविक सौंदर्य के लिए जैसा प्रयोग लेखक आवश्यक समक्षता है, उसी प्रकार की शब्दावली का प्रयोग करता है। कभी–कभी तो लेखक को पात्रों की शिक्षा, संस्कृति एवं मानसिक धरातल के अनुकूल पंडित्यपूर्ण, व्यंग्यात्मक भाषा से लेकर ठेठ प्रादेशिक और ग्राम्य भाषा तक का प्रयोग़ करना पड़ता है। इससे कृति की सरलता एवं प्रभावात्मकता में वृद्धि होती है।

किसी लेखक के साहित्य में भाषा–शैली का विवेचन करने से पूर्व, प्रथमतः तो यह देखना

---

1. "Popular language should be used, it should be agreeable and easily intelligible, it must be correct."
 — Writers on Writing - Walter Allen, P. – 205
3. "The language should be so pellucid that the meaning should be rendered without an effort to the render and not only same proportion of the meaning, but the very sense; no more and no less, which the writer has intended to put in to his word."
 — Anthony Trollope, Novelists on the Novel - Miriam Allott, P. – 315

आवश्यक है कि लेखक ने कौन–सी भाषा का प्रयोग किया है? वह भाषा सरस या मुस्फित है ? अलंकृत है या सहज ? दूसरें, उसने किस शैली को अपनाया है ? यह शैली समाख्यानात्मक है ? या वर्णनात्मक अथवा आत्मकथात्मक है ? लेखक ने पत्र–पद्धति का प्रयोग किया है या डायरी पद्धति का ? और शैली को प्रभाव–पूर्ण एवं कृति को सजीव और प्राणवान बनाने के लिए उसने नाटकीय तत्वों का व्यवहार कहाँ तक किया है ?

(2) यशपाल के साहित्य में भाषा–शैली का वर्गीकरण :–

यशपाल जी ने अपने साहित्य में समान्यता : हिन्दी–भाषा की खड़ी–बोली के प्रचलित रूप को अपनाया है। खड़ी बोली के क्लिष्ट साहित्यिक रूप की अपेक्षा उन्होंने अंग्रेजी संस्कृत, उर्दू और देशज शब्दों से युक्त बोल–चाल की सरल, सहज भाषा का प्रयोग किया है। यशपाल जी का मुख्य उद्देश्य सरसता, मनोरंजकता एवं रोचकता के साथ पाठकों के ह्दय पर अपने विचारों का मनोवांछित प्रभाव डालना ही रहा है। भावों की पूर्ण अभिव्यक्ति के लिये यथास्थान भाषा, अंलकृत भी हैं, सहज भी है, सरस और गुस्फित भी है। कृति की स्वाभाविकता की रक्षा हेतु पात्रानुकूल भाषा के विविध रूपों को भी व्यवहार में लिया गया है। यशपाल जी लेखक होने के नाते अथवा भावाभिव्यंजना को अधिक प्रभावोत्पादक बनाने हेतु भाषा को अलंकृत करने का मोह संवरण नहीं कर सके हैं।

श्री जैन ने गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों–उपन्यास, कहानी, निबन्ध, यात्रावृत्त, संस्मरण, जीवनी, रेडियो रूपक एवं बाल साहित्य को विचार–प्रकाशन का माध्यम चुना है वैसे यशपाल जी ने कविताओं का भी सृजन किया है, जो उनके अंदर छिपे कवि ह्दय का भी बोध कराती है। इन कविताओं की भाषा–शैली की विवेचना पूर्व में अध्याय–7 के प्रथम खण्ड (काव्य) के अर्न्तगत की जा चुकी है। अतः यशपाल जी के द्वारा सृजित गद्य–साहित्य की विभिन्न विधाओं के आधार पर ही उनकी भाषा–शैली की विवेचना अपेक्षित होगी।

कथा–साहित्य में यशपाल जी ने प्रधानतः समाख्याम्यक–शैली का प्रयोग किया है। यहाँ लेखक सर्वज्ञ की भाँति आता है। वह पात्र एवं कथानक से पूर्णतया अवगत होता है। वह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में कथा के साथ–साथ चलता है। यहाँ लेखक कथा की गुत्थियों को सुलझाने के लिए इस शैली के साथ–साथ अंग रूप से नाटकीय–शैली का प्रयोग भी करता है, उदाहरण के लिये, अत्यधिक सजीवता, भावमयता एवं प्रभावात्मकता के लिए पात्रों के आत्म कथन, मानसिक अन्तर्द्वन्दों एवं संवादों की योजना करता है। यहाँ उसकी शैली में भी परिवर्तन होता रहता है– कभी वह भावुक होती है, कभी रोमांटिक और कभी विचार–प्रधान बौडिक–शैली का रूप धारण कर लेती है।

कहानियों और निबन्धों में यशपाल जी ने आत्मकथात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। उनकी अधिकांश कहानियाँ–यथा, 'गुनाह का बोझ, 'मैं मरूंगा नहीं', 'बिगड़ी आकृति', 'अतीत की पूंजी' आदि और निबन्ध–यथा, 'अहिसा के आयाम', 'तट के बन्धन', राष्ट्रीय एकता का अधिष्ठान' आदि शैली में रचे गये हैं।

यशपाल जी ने कथाकार होने के नात निबन्धों में भी विचार–प्रधान गम्भीर शैली के साथ–साथ सरसता एवं रोचकता के लिये तर्क प्रधान उदाहरण मिश्रित शैली का भी प्रयोग किया है। लेखक के अधिकांश निबन्ध विचारत्मक निबन्धों की कोटि के है जिनमें मनुष्य द्वारा स्वयं निर्मित कठिनाईयों का विश्लेषण तार्किकता से परिपूर्ण रोचक शैली में किया गया है। लेखक की अन्योपदेशिक शैली में लिखित कहानियाँ सर्वाधिक हैं और प्रभावोंत्पादक भी हैं, 'नैतिक कथायें ओर 'आदर्श कथायें' संग्रह इस शैली में लिखित कथाओं के ही उदाहरण हैं।

यशपाल जी दोनों ही उपन्यासों–'चट्टान नहीं पघलती' और 'अमृत घट' में सामाजिक समस्याओं को मनोवैज्ञानिक धरातल पर हल करने का प्रयास करते नजर आते हैं। भाषा सरल है परन्तु नाटकीय प्रसंगो को अभाव नजर आता है। उपन्यास प्रायः वर्णनात्मक एवं विचारात्मक शैली में लिखे गये हैं। संस्मरणों एवं जीवनियों के अर्न्तगत् लेखक ने शब्द–चित्र शैली का प्रयोग किया है।

यात्रावृत्त लेखन अपने सर्जनात्मक साहित्य का मुख्य एवं प्रधान अंग रहा है। श्री जैन के यात्रा वृत्तों की भाषा पाठकों के पूर्व स्थल में जाकर सागर की लहरों के समान समा जाती है, अर्थात् उनकी भाषा जन समान्य की प्रसाद गुण सम्पन्न भाषा है। श्री जैन के द्वारा अपनी भाषा में महापुरूषों के कथनों का उदारतापूर्वक प्रयोग किया है, जिसके कारण उनकी भाषा में गाम्भीर्य उत्पन्न हो गया हैं । यशपाल जी के भारतीय यात्रा वृन्तान्तों के अन्तर्गत संवाद शैली और हास्य–विनोद शैली विशेषरूप से उल्लेखनीय है। विदेशी यात्रा–वृत्तान्तों की भाषा काव्यात्मक और प्रभाव युक्त है। विशेषतः जब वे प्रकृति ओर व्यक्ति विशेष का चित्रण करते है, तो उनकी लेखनी जैसे वीणा के तार छेड़ने लगती है। इन वृतांन्तो में मुख्यतः वर्णनात्मक, विचारात्मक और संवादात्मक शैली प्रयुक्त हुई है।

श्री जैन के द्वारा अनूदित साहित्य की भाषा सरल और अभिव्यक्ति स्पष्ट है। यशपाल जी ने अनुवाद के नियमों का पूर्णतया पालन किया है, अर्थात् कहीं पर भी मूल लेखक पर अपने आपको लादने का प्रयत्न नहीं किया है। बाल कथायें परिचयात्मक विवरणात्मक शैली में लिखी गयी है जो नैतिक उपदेशों को अपने भीतर समाहित किये हुये है। कुछ कहानियों में बाल कविताओं का भी प्रयोग किया गया है। यथा–'बेजोड़ हौसंला'[1] आदि में।

रेडियो का भाषा सम्बन्धी सिद्धान्त है–सर्वग्राही, सरल, सुबोध भाषा। इस दृष्टि से श्री जैन के रेडियो–रूपकों की भाषा अत्यधिक सरल, सुबोध सर्वग्राही तथा तत्काल श्रोताओं को प्रभावित करने वाली है।

यशपाल जी के सम्पूर्ण साहित्य को देखकर कहा जा सकता है कि उनके साहित्य में शिल्पगत सौन्दर्य का न तो विशेष क्रम से उत्तरोत्तर विकास ही हुआ है और न ह्रास। जितने भी शिल्पगत प्रयोग हुए है प्रायः एक समान है, यह कहा जा सकता है कि विषय और प्रसंग के अनुकूल भाषा–शैली में परिवर्तन होता रहा है। जिस विषय पर लेकर जैसा प्रभाव वे उत्पन्न करना चाहते

1. जीवन ज्योति – यशपाल जैन, पृष्ठ – 38

है, तदनुरूप शैली का भी निर्माण कर लेतें है। यही उनकी शैली की विशेषता है। श्री यशपाल जैन की शैली को निम्नलिखित रूपों में विभक्त किया जा सकता है:–

(क) सरस, काव्यमयी, अलंकृत उक्ति वैचित्र्य से युक्त भाषा–शैली।

(ख) संवाद शैली ।

(ग) चित्रात्मक शैली।

(क) सरस, काव्यमयी, अंलकृत, उक्ति वैचिन्र्य से युक्त भाषा–शैली:

इस प्रकार की शैली का प्रयोग लेखक विशेषतया भाषा को सँवारने, सजाने अथवा पाठक को आत्यधिक अभिभूत करने के लिये करता है। वह अनेक बार पात्रों के चरित्र को उभारने के लिए ओर अपने विचारों को आत्यधिक प्रभावशाली बनाने के लिए भी इस प्रकार की भाषा की सायास सृष्टि करता है। यह भाषा बोलचाल की सरल भाषा की अपेक्षा साहित्यिक हिन्दी के अधिक निकट पहुँच जाती है।

यशपाल जी ने काव्यमयी भाषा के प्रयोग न किये हों, यह नहीं कहा जा सकता । या तो लेखक होने के नाते सायास और या विषय के अनुरूप सरस काव्यमयी भाषा का प्रयोग यशपाल जी ने भी साहित्य में अधिकांश स्थलों पर किया है। यहाँ तक कि कथा जैसी रचना में भी इस शैली के दर्शन हो जाते है–

"बड़ भाग होगें वे, जिन्होंने इस अनुपम सौंदर्य से भरे लोक को खोज निकाला। तब से अब तक कितने नर–नारियों ने यहाँ के आनंद–रस का पान किया होगा, उसका हिसाब रखना किसके बस की बात है और उसका हिसाब रख भी लिया जाय तो उस आनंद को किस पैमाने से नापा जा सकता है जो उन्हें मिला है?"[1]

1. मुखौटे के पीछे – यशपाल जैन, पृष्ठ – 101 (कथा संग्रह)

लेखक ने इस प्रकार की शैली का प्रयोग एक किशोरी के मुख से करवाया है– अतः यह सरस स्वाभाविक और प्रभावोत्पादक बन गई है। इस प्रकार की सरस काव्यमयी एवं अलंकृत भाषा का उदाहरण यशपाल जी की एक अन्य कथा 'सृष्टि का क्रम' में भी उपलब्ध है। यथा....

"हँसों की जोड़ियाँ सिर ऊँचा करके, राजसी शान के साथ, संरण करती किनारे की ओर आती और खड़े हुये लोगों की ओर देखती। उनकी छोटी–छोटी आँखों में प्यार झलकता था। उनकी गरिमायुक्त चाल को देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानों वे सिंहासन पर बैठकर अपने राज्य का निरीक्षण कर रही हों।"[1]

यशपाल जी ने रोमाण्टिक कहानियों में एवं भावुक प्रसंगो में ही इस प्रकार की शैली का प्रयोग किया है। भाषा को सरस एवं मनोरंजक बनाने के लिए री जैन ने काव्यमयी भाषा का प्रयोग किया है।

देश–विदेश के यात्रा वृन्तान्तों के वर्णन में लेखक की भाषा काव्यात्मक और प्रभावयुक्त है। निम्नलिखित वाक्य उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

1. "नृत्य और संगीत की ध्वनि सागर की लहरों पर अठखेलियाँ करती हैं।"[2]
2. "तिमिर के वृक्ष को चीरकर गाड़ी अलिप्त भाव से जैसे–जैसे आगे बढती गई, विचारों का ताना–बाना भी चलता रहा पता नहीं कब नींद आ गई।"[3]
3. "विचारों के उस भँवर में रात के शेष घंटे पलकों पर निकल गये।"[4]

इसी प्रकार 'उत्तराखण्ड के पथ पर' पुस्तक में एक स्थान पर ग्रामों की स्थिति को उपमा की नवीनता से श्री जैन ने संवारा है–

"कही–कहीं छोटे–छोटे गाँव उस वनश्री के बीच ऐसे जान पड़ते हैं मानों प्रकृति की अंगूठी में नग जड़े हों।"[5]

---

1. मुखौटे के पीछे – यशपाल जैन, पृष्ठ – 60 (कथा संग्रह)
2. पड़ौसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 172
3. पड़ौसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 62
4. रूस में छियालीस दिन – यशपाल जैन, पृष्ठ – 10
5. उत्तराखण्ड के पथ पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 56

लेखक ने प्रकृति के सौंदर्य को आत्यधिक सरस ढंग से रूपायित किया है–

"दूध सी चांदनी छिटकी थी और शुभ्राकाश में गोलाकार चांद अपनी आभा खुले हाथों बिखेर रहा था। सप्तऋषि मुस्करा रहे थे। जीवन का वह अपूर्व अनुभव था।"[1]

इस प्रकार की काव्यात्मक शैली का प्रयोग यथातथ्यता की रक्षा के लिये किया गया है, जिससे शैली स्वााभाविक और सरस बनी रहे। 'चट्‌ान नहीं पिघलती' में कविता की पक्तियों का प्रयोग किया गया है, 'अमृतघट' उपन्यास में भी एक बहन ने कविता पढ़ी है। यह कहा जा सकता है कि कविता की पंक्तियों का वे प्रयोग स्वाभाविक और आकर्षक है। परन्तु जहाँ पर संस्कृत की सूक्तियों श्लोकों का प्रयोग हुआ है, वहाँ पाठक उन स्थलों को छोड़कर उनके कोष्ठक में दिये गये अनुवाद पढ़ने लग जात़ा है। वह उतना आनंद नहीं प्राप्त करता है। ये प्रयोग कथा–प्रवाह की दृष्टि से भी विशेष उचित नहीं जान पड़ते, लेकिन वातावरण सृष्टि के लिये उनका प्रयोग अनुचित नहीं है।

यशपाल जी की यह सरस काव्यमयी भाषा 'तट का बंधन' एवं अन्य कहानियों यथा–'ब्योमबाला, 'दो तट एक धारा' दो तट एक धारा' जीवन सागर पर तैरती तरूणी' आदि में अलंकारों से बोझिल एवं गुम्फित हो गई। यथा....

"मैं समक्ष गई कि आप क्या जानना चाहते हैं। आपके ध्यान में आसमान में उड़ते पंछी है। कितने मुक्त हैं वे। कितने स्वछन्छ। कितने प्रसन्न। आप यही जानना चाहते है, कि क्या मैं व्योमविहारिनी इन पंछियों की तरह बंधनों से मुक्त और स्वछन्द हूँ ?"[2]

इसी प्रकार 'तट का बंधन' कहानी में–

"सौंदर्य की अद्भूत प्रतिभा थी। पर्वतीय परिधान तथा अलंकारों से सज्जित उस रूपसी के अंग–प्रत्यंग से यौवन फूटा पड़ा था। उसके होठो की मंद–मंद मुस्कान उसकी सुंदरता को कई गुना बढ़ा रही थी।"[3]

---

1. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 51
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (व्योमबाला – यशपाल जैन), पृष्ठ – 424
3. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (तट का बंधन – यशपाल जैन), पृष्ठ – 452

'अमृतघट' उपन्यास में संश्लिष्ट वाक्य–रचना एवं कठिन शब्दावली के भी कई स्थलों पर दर्शन होते हैं। यथा–– एक स्थान पर,

"आश्रम का सात्विक वातावरण और सागर–तट की प्राकृतिक सुषमा उसके रोम–रोम में स्फूर्ति भर देती थी। सूर्योदय के समय जल–राशि पर बिछी सुनहरे रंग की आभा को देखता और फिर दिन के फैलते प्रकाश में उसका मन दीप्त हो जाता। पर इस बार यहाँ आकर अचानक भीतर स्फुरण हुआ कि हर आदमी के अंतर में एक अमृत–घट है।"[1]

यशपाल जी के इन वाक्यों में तारतम्य है, प्रवाह है, श्रंखला है। काव्यात्मक होते हुये भी वे उखड़े–उखड़े प्रभाव शून्य नहीं हैं। शब्दाबली क्लिष्ट होते हुए भी संतुलित, चुस्त एवं भावानुकूल हैं।

उत्तम शैली के लिये यह कहा जाता है कि "किसी परिच्छेद का आरम्भ व अन्त नूतन व प्रचलित शब्दावली से होना चाहिए, शब्दावली से होना चाहिए, तभी भाषा सजीव एवं विकरित हो सकती है। एक ही प्रकार की शब्दावली से व्यक्ति ऊब जाता है।"[2]

श्री जैन ने अपने साहित्य में अलंकारों के सर्वथा नवीन प्रयोग किये है। उषमा, मानवीकरण, दृष्टान्त आदि अलंकारों के प्रयोग उन्होंने भाषा के बाह्य रूप को राजाने के लिए ही नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त बनाने के लिए किए हैं। देश–विदेश से सम्बंधित यात्रा–वृतान्तों में इस प्रकार की अलंकारिक भाषा के प्रयोग बरबस ध्यान आकर्षित कर लेते हैं। 'जय अमरनाथ में भ्रांतिमान अलंकार का उदाहरण दृष्यव्य है–

"चारों ओर पहाड़ों पर बर्फ–ही–बर्फ दिखाई देती थी। कहीं बर्फ की मोटी–मोटी लकीरों को देखकर भ्रम होता था कि वे दूध की धाराएं हैं, कहीं नुकीली चोटी को बर्फ से ढँकी देखकर ऐसा लगता था कि किसी ने उस पर चांदी का खोल चढ़ा दिया है।"[3]

इसी प्रकार 'उत्तराखण्ड के पथ पर' में अनेक स्थलों पर मानवीकरण एवं, दृष्टान्त मूलक

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 36–37
2. कथन का – हिन्दी अर्थ (Novelists on the Novel - Mirriam Allott), P. - 321
3. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 68

अलंकृत शैली का प्रयोग किया गया है। मंदाकिनी के रूप परिवर्तन को लेखक ने इस रूप में अभिव्यक्त किया है––

"पर्वतों के योग से उसका रूप क्षण–क्षण पर रहता है। कहीं नव यौवना की भांति उछल–कूद करती है तो कहीं प्रौढ़ा की भांति हो उठती है।"[1]

सरोज के चारित्रिक रूप परिवर्तन को श्री जैन ने इस रूप में अभिव्यक्त किया है––

"जो आज उसके घर में उसकी आँखों के आगे बेसुध सो रही थी। चेहरे पर जिस चिन्ता के भाव लेकर आई थी, वे अब तिरोहित हो गये थे। उनकी जगह हल्की मुस्कराहट ने ले ली थी। उसका बदन अब भर गया था, पर उसके मुँह पर वह माधुर्य नहीं रहा था, जो किशोर वय की एक नारी के मुँह पर होना चाहिए।"[2]

उपर्युक्त उदाहरण में दृष्टान्त मूलक अलंकृत शैली प्रयुक्त हुई है। कई स्थलों पर श्री जैन ने विभिन्न उपमाओं का भी सहारा लिया है, यथा––

"झील के इस किनारे पर पानी से सटे दो पेड़ थे, जो मौन तपस्वी की भांति खड़े दिखाई देते थे।"[3]

उत्प्रैक्षा अलंकार का यह उदाहरण दर्शनीय है–

"रात गाढ़ी हो आई थी। आकाश निर्मल था। उसमें छोटे–बड़े अनगिनत तारे बिछे थे उनका प्रतिबिम्ब झील की लहरों के साथ उठखेलियाँ कर रहा था। विधुत प्रकाश में सारी नगरी जगमगा रही है। उस प्रकाश का अक्स पानी पर पड़ रहा था। ऐसा जान पड़ता था, मानो पानी के भीतर भी कोई नगर बसा हो।"[4]

श्री जैन ने कई स्थलों पर विरोधाभास को भी प्रयुक्त किया है। कुछ उदाहरण स्पष्ट है––

"प्राकृतिक सौदन्र्य की वह खान है। पर– यह 'पर' क्या है, जो वहाँ की धवलता पर एक

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 43
2. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 17
3. सागर के आर–पार – यशपाल जैन, पृष्ठ – 99
4. मुखौटे के पीछे – यशपाल जैन, पृष्ठ – 36

काला धब्बा लगा देती है? वहां की गरीबी और दैन्य, निरक्षरता और गंदगी– ऐसा क्यों है? इनके अनेक कारण है। शायद सबसे बड़ा कारण यह है कि गंदगी और गरीबी के प्रति वहां के मानव की चेतना लुप्त हो गई।"[1]

इसी प्रकार इलिया और उनकी पत्नी के विषय में श्री जैन ने लिखा है––

"इलिया शब्द तोल–तोलकर बोलते थे और बड़े ही धीमें। उनकी सौभ्यता हृदय को पुलकित करने वाली भी ओर उनकी पारदर्शी निरछलता बार–बार हमारी आँखों को अपनी ओर खींचती थी। उनकी पत्नी उच्चकोटि की चित्रकार हैं, पर अंतर था दोंनो में।"[2]

यशपाल जी ने अपने साहित्य में सार्वाधिक मानवीकरण अंलकार का प्रयोग किया है। संभवतः यह प्रयोग विषय को अधिक सजीव बनाने के लिये किया गया है। इस प्रकार के प्रयोग यत्र तत्र कहानियों में भी मिलते है। उन्होंने संस्मरणों के अन्तर्गत भी उपमाओं के नवीन प्रयोग किये है, यथा–देशभक्त–गोपाल गृष्ण गोखले के लिये कहा है––

"सार्वजनिक जीवन में गोखले का उदय धूमकेतु की भाँति हुआ।"[3]

इसीप्रकार,

"पुरूषों में पुरूष–सिंह संसार से उठ गया।"[4]

श्री जैन ने उपमाओं के प्रयोग अधिकार व्यावहारिक जगत से लेकर किए है। उनसे भाषा की सज्जा इतीन अधिक नहीं हुई है, जितनी अधिक कि विषय में प्रभाषोत्पादकत्य की वृद्धि हुई है। इससे विषय यथार्थ के अधिक निकट पहुँच जाता है । जहाँ यशपाल जी कल्पना लोक में विचरण करने लगते है, वहाँ उनकी उपमा यह रूप धारण कर लेती है––

"चारों ओर बर्फ से ढके हुए पर्वत है, जिनके बीच बसी हुई पुरी ऐसी लगती है मानों किसी

---

1. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 112
2. रूस में छियालीस दिन– यशपाल जैन, पृष्ठ – 79
3. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 18
4. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 40

कलाविद ने विभिन्न रंगों से कोई चित्र बना दिया हो। प्रकृति की छटा को देखकर जी नहीं भरता। बाल–सूर्य की किरणें जब इस महान तपोवन के धबल शिखरों पर पड़ती है तो सहज ही विश्वास नहीं होता है कि हम कोई वास्तविक दृश्य देख रहे है। सारा वायुमण्डल स्वर्णिम हो उठता है।"[1]

लेखक यदि यथार्थ चित्रों के तदनुरूप शैली का प्रयोग करता है, तो उस के इन कल्पना चित्रों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यशपाल जी की इस प्रकार की कल्पना के चित्र भी अनेक स्थलों पर उपलब्ध है। परन्तु कुछ स्थलों पर यह अलंकारिक चित्र बलात् ही खींच दिय गये प्रतीत होते है। यथा–

"किनारे के पेड़–पौधों और लताओं का प्रतिबिम्ब झील के पारदर्शी जल में देखकर ऐसा लगता था, मानों झील के भीतर भी बाहर की तरफ एक दुनिया है।"[2]

एक अन्य स्थल पर,

"एक भग्न गिरजा जैसा कमरा है, जिसमें बाध की सहायता से बहुत ही मधुर संगीत सुनाई देता है।"[3]

इनके अतिरिक्त अन्य स्थलों पर स्वाभाविक, सजीवता और प्रभावोत्पादकता है।

इस अलंकार सज्जा के साथ–साथ यशपाल जी ने कुछ स्थलों पर लाक्षणिक वकोक्तियो के भी प्रयोग किये है–यथा,

"प्रकृति की माया समक्ष में नहीं आती है। जहाँ उदार होती, वहां निहाल कर देती है। जहां कुद्ध होती है, वहां क्या मजाल कि हरियाली के नाम पर एक पत्नी भी दिखाई दे जाय।"[4]

"जो होता है, उसका करने वाला तो कोई और होता है, मनुष्य तो मात्र निमिन्त होता है। इस सत्य को अंगीकार करने वाला व्यर्थ ही ऊहपोह में नहीं पड़ता।"[5]

---

1. उत्तराखण्ड के पथ पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 119
2. सागर के आर–पार – यशपाल जैन, पृष्ठ – 98
3. सागर के आर–पार – यशपाल जैन, पृष्ठ – 118
4. उत्तराखण्ड के पथ पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 109
5. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 76

"जो एक बूँद पीता है, नरक में जाता है। लेकिन जो पूरी बोतल पीता है, उसके लिए तो स्वर्ग का रास्ता हर घड़ी खुला रहता है।"[1]

"रामकुमार आप समझ गये न मेरा मतलब। मैं फिर कहता हूँ कुछ नहीं चाहिए। एक नया पैसा भी नहीं। भगवान की दया से अपने घर में सब कुछ है। चतुरसेन—मैं जानता हूँ, आपके विचार बड़े ऊँचे है, लेकिन हवा के बाहव को कौन रोक सकता है? आप निश्चित रहे। इन सबका इंतजाम हो जायेगा।"[2]

इस प्रकार के प्रयोग यशपाल जी साहित्य में मिलें, यह आश्चर्य की बात नहीं। ये प्रयोग भाषा के प्रति उनकी कलात्मक रूचि को परिपुष्ट करते है। यशपाल जी ने विचारगत सौंदर्य में वृद्धि करने के लिए ही विशेष कर भाषा का श्रृंगार किया है। जिस प्रकार सुन्दर नारी साज—श्रृंगार से और भी सुन्दर हो जाती है, उसी प्रकार उनके शैली गत सौंदर्य के योग से विचार भी सुन्दर हो उठे हैं। लेकिन जहां श्री जैन निरी भावुकता या कल्पना में बह गए है, वहां वे सरस काव्यगयी शैली का प्रयोग कर देते है। सूक्ष्म कलात्मक की अपेक्षा, व्यावहारिक जगत से लेकर जो स्थूल प्रयोग किये गये है, वे उनके साहित्य को यथार्थ के समीप पहुँचा देते है। सरस, काव्यमयी, अलंकृत उक्ति वैचित्य से युक्त भाषा—शैली के अतिरिक्त श्री यशपाल जैन के साहित्य में मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों और आत्म विश्लेषण के लिये प्रयुक्त भावात्मक शैली एवं विचार प्रधान, विश्लेषात्मक और बौद्धिक शैली को भी देखा जा सकता है।

मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों और आत्म—विश्लेषण से युक्त भावात्मक शैली—

शैली का दूसरा रूप पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों के चित्र प्रस्तुत करने के लिये भावात्मक शैली के रूप में मिलता है। विशेषकर मनोवैज्ञानिक कहानियों, उपान्यासों में ऐसे स्थलों पर शैली कोमल, राजीव और मर्मस्पर्शी हो गयी है। यह शैली पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने में पूर्णतः समर्थ होती है। व्यतीत के स्वप्न कहानी में नीलिमा गुप्ता की मनः स्थिति——

1. ज्ञान कथाऐं – यशपाल जैन, पृष्ठ – 53
2. रावी के तट पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 145

"वह झटके के साथ उठकर बैइ गई। उसने कागज लिया और छुट्टी की अर्जी लिखने लगी। तभी जैसे उसके अंतर में कोई बोल उठा सिस्टर यह क्या कर रही है। तू यह कैसे भूल रही है कि घृणा से बड़ा कर्तव्य है। तू अपने दिल को क्यों छोटा करती है? यह क्यों नहीं मानती कि चौबीस नम्बर के बिस्तर पर जो पड़ा है, बहरोगी है और तेरा फर्ज है कि रोगी की सेवा करे।"[1]

"ज्वार–भाषा कहानी में लेखक विदेशों में प्रचलित प्रेम पर अपना आत्म–विश्लेषण पात्र के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करता है––

"जिन्दगी छोटी–छोटी चीजों से बनती है, जो व्यक्ति छोटी–छोटी चीजों से सावधान नहीं रहता, वह बड़ी चीजों से कभी सावधान नहीं रह सकता।"[2]

इसी प्रकार निम्न उदाहरण में दृष्टव्य है––

"विनोद के सामने वे सारे दृश्य एक चल–चित्र की भांति धूम गये। उसने एक बार उसकी ओर देखा। कितना परिवर्तन आ गया था। समय की त्रासदी ने उनके चेहरे के सलोनेपन की छीन लिया था। शरीर उसका थोड़ा भारी अवश्य हो गया था, लेकिन चेहरा मुरझा गया था, जैसे वह लुट गयी हो। पर उन सबके सबंध में सोचने का इस समय अवसर कहां था।"[3]

इस चिंतन में विनोद की सरोज के प्रति विश्वास प्रकट होती है। वह चाहकर भी उन परिस्थितियों को टाल नहीं सका, जिनके कारण सरोज आज इस अवस्था में पहुँच गयी है।

"अमृत घट" उपन्यास में यशपाल ने देवयानी के द्वारा प्रमोद के विषय में कहे गये शब्दों को भावात्मक रूप से कुछ इस प्रकार से अभिहित किया है।

"देवयानी ने अवरूद्ध कंठ से कहा, वह तो कई दिन से देश के दौरे पर हैं। हाल ही में उन्होंने यहाँ एक सभा की थी, पर कोई नतीजा नहीं मिलता। ऊपर की देखा–देखी नीचे के लोग भी स्वार्थ

---

1. व्यतीत का स्वप्न – यशपाल जैन, पृष्ठ – 80
2. ज्वार भाटा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 128
3. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 32–33

में डूब गये हैं। नम्बर दो की कमाई से आज घर–घर के सामने मारूति गड़ियाँ खड़ी हो गई हैं।"[1]

इस प्रकार के अन्य चित्र भी विनोद, प्रमोद एवं देवयानी की मानसिक प्रक्रिया में देखे जा सकते है। यहाँ लेखक पात्र के अन्तर्गत का अनुभूति को शब्द चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। पात्र जैसी विकट परिस्थिति में है, उसके लिए लेखक उसी प्रकार की शब्दावली प्रयोग करेगा। पाठक पात्र को कभी विचार करते हुए देखेगा, कभी पात्र तर्क करता हुआ दृष्टिगोचर होता है, कभी विगत् और अगामी परिस्थितियाँ उस पात्र को असमंजस में डाल देगीं और इन सबके साथ जैसे उसकी प्रतिक्रिया में परिवर्तन होता जाता है, लेखक वैसी ही शेली का प्रयोग करता जाता है। यदि पात्र की मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रियाओं में इतना आवेश, ओज और स्फूर्ति है कि वह पाठक की समस्त चेतना को अभिभूत कर लेता है, तो लेखक की सफलता भी असंदिग्ध है। सरोज के अंर्तद्वन्द्व में कितनी सजीवता है– डॉक्टर का घर छोड़कर देने के बाद भी उसके मन में डॉक्टर के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है––

"विनोद बाबू, मुझे इतने दिन आपके साथ रहते हो गये। क्या मुझे अपना दिल चीरकर दिखाना होगा कि उसके भीतर क्या है ? आप डॉक्टर को लिख दें कि फिर से शादी करने की उन्हे मेरी ओर से पूरी छूट है। मैं उनके नाम पर बट्टा नहीं लगाऊँगी। वह अपने घर को आबाद करें, मेरा जीवन तो आपकी और समाज सेवा के लिए समर्पित हो चुका है, उसे मैं बदल नहीं सकूंगी। यदि मैंने उसके लिये प्रयत्न किया तो मैं सौगन्ध खाकर कहती हूं कि मैं आखिरी दम तक नरक की यातना भोगती रहूंगी। आप ज्ञानी हैं अच्छी तरह जानते हैं कि योग–भ्रष्ट साधु की कितनी दुर्दशा होती है। वह दीन–दुनिया कहीं का नहीं रहता। मैं अपने इस जीवन को बरदान मानकर पूरी तरह सुखी संतुष्ट हूं।"[2]

इस प्रकार की भावुक शैली उत्तेजनापूर्ण, आवेशपूर्ण, मर्मस्पर्शी ह्रदय को आकर्षित एवं द्रवित करने वाली, कोमल एवं सरल शब्दाबली को प्रयोग करता है। निबन्धों में मानसिक अर्न्तद्वन्द्वों से

---
1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 147
2. चट्टान नहीं पिघलती – यशपाल जैन, पृष्ठ – 108

परिपूर्ण–भावना–प्रधान शैली का प्रायः अभाव ही है। निबन्ध में चूंकि विचार–तत्व की प्रधानता रहती है अतः वहां पात्र के अन्तर्गत की गुत्थियों का सुलझाने का अवकाश नहीं रहता।

विचार प्रधान, विश्लेषणात्मक एवं बौद्धिक शैली:

यशपाल जी के साहित्य में इस शैली के भी दर्शन होते हैं। यशपाल का मुख्य उद्‌देश्य राजनीतिक जन जीवन के साथ–साथ समाज के विभिन्न पहुलओं पर भी विचार विमर्श करना और उन्हें दिशा निर्देशित करना रहा है। अतएव् प्रसंगो की विवेचना के अनुकूल उनकी शैली में भी परिवर्तन होता रहता है। जहाँ पर उन्होंने सिद्धान्तवादी व्याख्या की है, वहाँ उनकी शैली गम्भीर चिंतन–प्रधान हो गई है। जहाँ कार्यविधि पर टीका–टिप्पणी की है, वहाँ वह शैली आलोचनात्मक हो गयी है। कहीं–कहीं यशपाल ने भाषण शैली के माध्यम से विचारों को सार्वजनिक रूप देने का प्रयास किया है। यशपाल जी ने वैचारिक गम्भीरता को सरस बनाने के लिये परि–सम्वाद, तर्क–वितर्क की पद्धति का भी आश्रय लिया है। यशपाल की तर्क–वितर्क की यह पद्धति (उपन्यासों में) विषद को हल्का नहीं करती, बल्कि रोचकता एवं सरसता के साथ विचार प्रवाह को अक्षुण्ण बनाये रखती है। पाठको को सोचने के विवश कर देती है। यशपाल जी की यह विचार –प्रधान विश्लेषणात्मक एवं बौद्धिक शैली उनके साहित्य में विविध रूपों में उपलब्ध है । इस शैली के कुछ प्रमुख इस प्रकार है–

(1) भाषण–शैली ––

"हमारे धर्म–ग्रन्थों में कहा गया है, कि जो अपराध करता है, वह तो अपराधी होता ही है, जो अपराध में सहायक होता है या अपराध होते देखता है, वह उससे भी अधिक अपराधी है। राजनेता जनता का करोड़ो रूपया हड़प कर गये और भी उनकी वह हरकत रूकी नहीं हैं। उस सम्बन्ध में जनता ने क्या किया? आज भी क्या कर रही है ? यह भूक स्वीकृति है और यही सारे

रोग की जड़ है। बापू ने हमें सिखाया है कि अनाचार–अत्याचार किसी के भी द्वारा हो, उसे सहन मत करो। इसलिए उठो, नया विद्वान लाओ। विश्वास रखो, हृदय से उठकर आने वाली पुकार कभी व्यर्थ नहीं जाती ।"[1]

(2) चिन्तन प्रधान गम्भीर शैली :–

"भारत एक और अखण्ड हैं। उसकी आत्मा अविभाज्य है। ये और इस प्रकार की बातें प्राचीन काल से अबतक कही जा रही हैं। यदि हम सतह से हट कर थोड़ा गहराई में जाकर देखें तो पता चलेगा इन मान्याताओं में बड़ी सच्चाई है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय संस्कृति जो हमारे जीवन का संचालन और नियमन करती है, वह सदा से ही बड़ी उदार रही है।"[2]

(3) आलोचनात्मक शैली :–

"बाहरी दबावों से मनुष्य की जिन्दगी कुण्ठित हो, यह अच्छा नहीं है, पर भोग–विलास का स्वछंद जीवन किसी भी समाज के लिये कल्याणकारी नहीं हो सकता। वासना से मुक्त तो इस संसार में बिरले ही होते हैं, किन्तु जो मन से शरीर से भोग में ही लिप्त रहते हैं, वे अंततोगत्वा अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारते हैं।"[3]

(4) तर्क–वितर्क–प्रधान शैली :–

"आदमी गया और दीपक बाती के लिये रूई ले आया। साधु ने कहा, **"दीपक में बाती डालो"**।

आदमी ने बाती डाल दी।
अब इसमें पानी भरो।' साधु ने कहा।
आदमी ने पानी भर दिया।
साधु बोले, 'अब इसे जलाओ।'
आदमी ने दियासलाई——————————'यह तो जलता नहीं ।'

---

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 130
2. भारत की मिली जुली संस्कृति – यशपाल जैन (निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी), पृष्ठ – 494
3. पड़ोसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 279

साधु ने मुस्कराकर कहा, 'अरे पगले, जब तक दीये में स्नेह (तेल) नहीं पड़ेगा, यह जलेगा कैसे? तुम्हारे दीये में पानी भरा हैं। उसे फेंक दो ओर स्नेह डालो। तभी वह जलेगा ओर प्रकाश देगा।"[1]

(5) व्यंग्यात्मक शैली :–

"महाराज, अभी तो आप हमसे कह रहे थे कि मोह–माया छोड़ो। अब आप ही इतने मोहग्रस्त हो रहे है। शिष्य की याद आते ही आपका क्या हाल हो गया।

स्वामी जी को जैसे कुछ चोट लगी। बोले, 'यह मोह नहीं है।'

'तो क्या हैं?

'कुछ है,' वह बोले, 'तुम इसे समझ नहीं सकते। यह प्रेम है, बड़ा ऊँचा प्रेम है।'

आगे बहस करना बेकार था।"[2]

(ख) संवाद शैली :–

कथासाहित्य, संस्मरण साहित्य एवं यात्रा वृत्तान्तों आदि में श्री जैन ने रोचकता एवं नाटकीयता की वृद्धि के लिए इस शैली का प्रयोग किया है और बोध कथाओं में इस शैली को प्रयुक्त करने का उनका उद्‌देश्य विचार को सरस या रोचक रूप में प्रस्तुत करना है। इस शैली को अत्यधिक प्रभावपूर्ण और सजीव बनाने के लिए यशपाल जी ने संवाद के सभी – गुणो, सजीवता, संक्षिप्तता, अर्थगर्भत्व आदि को दृष्टि में रखते हुये व्यावहारिक भाषा का प्रयोग किया है जिससे पाठक का ध्यान अनायास आकृष्ट हो जाता है।

प्रायः कहा जाता है कि 'प्रसाद' के साहित्य की भाषा जन–जीवन से दूर विशिष्ट स्तर की भाषा है, उसमें कृत्रिमता है, जबकि प्रेमचन्द के साहित्य की भाषा–शैली, उर्दू मिश्रित निकट है,

---

1. ज्ञान कथायें (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 63
2. दिव्य जीवन की झांकियाँ (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 140

क्योंकि उन्होंने बोल–चाल की व्यावहारिक भाषा करते हुये संवाद शैली में यथार्थता का समावेश किया है। उनकी इस शैली के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है––

"कुछ काम करती है ? भारती का अगला प्रश्न था।

जी हाँ, यहाँ काम के बिना गुजारा नहीं।"

"क्या काम करती है ?"

'मेरे रिश्तेदार का एक स्टोर है। उसमें हूँ।'

"मंदिर रोज आती है?"

नहीं, रोज फुरसत कहाँ होती हैं।" इतना कहकर महिला रूक गई।[1]

श्री जैन की संवाद शैली का एक अन्य उदाहरण इस प्रकार से है––

"रमजान ने बताया कि महागुनस की चढ़ाई वैसे बड़ी कठिन है, लेकिन वर्षा में तो वह बहुत ही खतरनाक हो जाती हैं । कभी–कभी बूढ़े या कमजोर आदमी जान से हाथ धो बैठते हैं। टट्टुओं का भी कभी–कभी दम टूट जाता है।

मैने कहा, 'रमजान, जिसको भगवान बचाता है, उसको कोई भी नहीं मार सकता।'

'यह तो है ही, बाबूजी।' रमजान बोला, 'लेकिन हम लोग तो हमेशा देखते हैं कि यहां कितनी मुसीबत होती है।"[2]

लेखक ने कहीं–कहीं पर संवादो में हास्य विनोद शैली का भी प्रयोग किया है यथा––

"वह बिच्छू नहीं था, काले धागे में बंधी उनकी चाबी थी। जेब से कुछ निकालने से वह बाहर गिर पड़ती थी। अब तो हँसी के मारे सब लोट–पोट हो गये। थकान दूर हो गई।"[3]

---

1. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 70
2. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 69
3. उत्तराखण्ड के पथ पर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 107

इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर,

"अब मौसम एक दम साफ था। मुझे मजाक सुझा, मैंने चिल्लाना शुरू किया, 'जय शंभो, जय शंभो। सब लोग जोरों से हंस पड़े, सारा वायुमण्डल हँसी से गूँज उठा। इसी प्रकार विनोद करते और हँसते–हँसते हम शाम को पाँच बजे के लगभग वायुजन पहुँचे।"[1]

श्री जैन ने स्स्मरणों में भी रोचकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से संवादों की सृष्टि कर दी है, जो कई स्थलों पर अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ती है और पाठक संस्मरण में रोचकता की पूर्ण अनुभूति प्राप्त करना है।उदाहरणार्थ––

"मैने विनोद में पूछा, "ये बोलती है?"

वह हँसकर बोले, "जी हाँ, खूब बात करती है। बातचीत में आपने उनकी बातचीत सुनी नहीं। वे बराबर अपनी बात कह रही थी।"

विनोद को जारी रखते हुये मैंने कहा, 'ये कौन सी भाषा बोलती है? रूसी ?"

वह जोर से हँस पड़े। बोल, "नहीं, रूसी नहीं बोलती, उनकी अपनी भाषा है, पर मै समझ आता हूँ।"[2]

लेखक के अपने संवादों में महापुरूषों के कथनों का भी उदारतापूर्वक प्रयोग किया है, जिसके कारण उनकी भाषा में गम्भीर्य उत्पन्न हो जाता है। यथा–एक महापुरूष का कथन––

"जीवन में केवल उन्हीं क्षणों को स्मरण रखूँगा, जो उल्लास–पूरित थे। यह क्षण वास्तव में उनमें से एक था। उसकी शोभा का वर्णन शब्दों द्वारा कर सकतना संभव नहीं है। काफी देर तक हम लोग घूमकर उसका आनंद लेते रहे।"[3]

श्री यशपाल जैन ने संवादो में पात्रों की स्थिति, स्तर का सर्वत्र ध्यान रखते हुए प्रसंगानुकूल

---

1. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 92
2. रूस में छियालीस दिन – यशपाल जैन, पृष्ठ – 107
3. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 74

उनकी शैली में परिवर्तन किया है। शैली की यह विशिष्टता वस्तुस्थिति को स्वाभाविक रूप में व्यंजित करने में विशेष रूप से सफल सिद्ध हुई है। 'अमृत घट' में नेताजी और प्रमोद के मध्य वार्तालाप का यह अंश इसी को दर्शाता है––

"तो आप क्या करेंगे ?" नेताजी उबलकर बोले।

प्रमोद नेताजी के उब़ाल पर हतप्रभ नहीं हुआ। बड़ी गम्भीरता से

उसने कहा,

"राजनीति को अब अंतर्मुखी करना होगा।"

"अंतर्मुखी ?" नेताजी ने उसकी खिल्ली उड़ाते हुये कहा, "आपका मतलब ?"

"जी, मेरा मतलब साफ है," प्रमोद कुछ तेज स्वर में बोला।[1]

लेखक के द्वारा अनेक स्थलों पर तर्क–मिश्रित संवाद–शैली का भी प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है––

"जुलूस के आने पर उन्होंने पूछा, "इस बकरे को आप सब यहाँ क्यों लाये हैं ?"

जबाब मिला, "देवी का भोग चढ़ाने के लिए।"

"देवी को बकरे का भोग आप क्यों चढ़ाते है?"

"इसलिए की वह प्रसन्न हो जाय।"

"बकरे से मनुष्य श्रेष्ठ है न ?"

"जी हां ।"

यदि हम मनुष्य का भोग चढ़ायें तो देवी अधिक प्रसन्न नहीं होगी?"[2]

1. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 122
2. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 40

'जय अमरनाथ में श्री जैन ने भाषा की विविधता को अपनाने का प्रयास किया है। यथा——

"मालक, हाऊ आर यू ?"

उधर से जबाब आया, "क्वाइट बैल"।

और सुधीर चिल्ला उठा– "बोलो, अमरनाथ महाराज की............"

सब लोग चिल्लाये "जय"[1]

जहाँ कहीं लेखक ने अग्रेजी शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर दिया है, वहां तो संवाद प्रवाहमान बने रहते हैं परन्तु जहाँ इनके अर्थ नहीं दिये हैं, पाठक इनके अर्थ का दूढ़ता नजर आता है और संवाद शैली के पूर्ण आनन्द की प्राप्ति से वंचित रह जाता है। कुछ स्थलों पर यशपाल जी ने नाटकीय संवाद शैली को भी प्रयुक्त किया, दो–चार स्थलों को छोड़कर अधिकांशतः ये संवाद सामान्य स्तर के ही प्रतीत होते हैं परन्तु यह भी नहीं कहा जा सकता कि इनकी रचना कर लेखक ने व्यर्थ ही इस शैली का प्रयोग किया है।

एक उदाहरण दृष्टव्य–

"चेतन ने शाकाहारी नाश्ते की मांग करते हुए उससे पूछा,

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

बड़ी आत्मीयता के साथ मुस्कराकर उसने कहा, "मर्सी।"

"वाह, यह नाम तो बड़ा अच्छा है।" चेतन के मुँह से अनायास————————।

मर्सी का चेहरा आरक्त हो गया, उसकी मुस्कराहट और मधुर

बन गई, पर वह अपनी लज्जा समेटकर ——–––।"[2]

निष्कर्षतया यह कहा जा सकता है कि यशपाल जी की संवाद–शैली में भाषा वैविध्य मिलता

---

1. जय अमरनाथ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 64
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (व्योमबाला – यशपाल जैन), पृष्ठ – 423

है। भाषा में पात्रानुकूल परिवर्तन होता रहता है, इसलिए उन्होंने सर्वत्र सरलता, सहजता, सुबोधता और प्रबाह को अक्षुण्ण रखने के लिए मूल के साथ–साथ हिन्दी अनुवाद दे दिया। (जैसे– कृतयुगी, चन्द्रशेखर वेंकट रमन के संस्मरणों[1] एवं अमृत घट उपन्यास आदि में) जहाँ कहीं ऐसे स्थल छूट गये है, जिनके अर्थ लेखक ने नहीं दिये हैं, वहाँ अर्थ ग्रहण करने में कठिनाई होने पर भी प्रभावोत्पन्नता कम नहीं होती । पात्र की विद्वता, स्थिति, स्तर और आयु को सर्वत्र दृष्टि में रखते हुये लेखक ने संवाद शैली में तदनुकूल परिवर्तन कर दिया हैं। प्रसंग और वातावरण के अनुकूल उपयुक्त शब्दावली जुटाने में यशपाल जी को विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता, अतः स्वाभाविक रूप से शैली ओज, उत्तेजना, क्रोधावेग आदि का संचार हो जाता है। इस सबके साथ जब वे पात्र अपनी समस्त भाव–भंगिमाओं सहित बातचीत करते हैं, तो उनके कथन में व्यवहारिकता आ जाती है, क्योंकि लेखक को उनकी सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रतिक्रयाओं को शब्दांकित कर सकने में सफलता प्राप्त हुई है।

(ग) चित्रात्मक शैली :–

श्री यशपाल जैन की चित्रात्मक शैली, प्रभावपूर्ण, आकर्षक समर्थ है। उन्होंने इस शैली का प्रायः दो रूपों में प्रयोग किया है। एक तो शब्द–चित्रों द्वारा पात्र में रूप एवं सौंदर्य को यथातथ्य रूप में उधार कर दिखाने के लिये, दूसरे वाह्य दृश्यों और वस्तुओं के चित्रांकन द्वारा कृति में दृश्य–गुण का समावेश कर उसे सजीव रूप प्रदान करने के लिये।

रूप चित्र :–

(1) "उम्र उसकी कोई बीसेक साल की रही होगी। देह पर रेशम की साड़ी थी। छरहरा बदन था। देखने में अच्छी खासी थी।"[2]

(2) "सौंदर्य की अद्भुत प्रतिभा थी। पर्वतीय परिधान तथा अंलकारों से सज्जित उस रूपसी के अंग–प्रत्यंग से यौवन फूटा पड़ता था। उसके होठों की मंद–मंद मुस्कान उसकी सुंदरता को कोई गुना बढ़ा रही थी।"[3]

---

1. आधुनिक भारत की विभूतियाँ (संस्मरण) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 85 एवं 97
2. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (व्योमबाला – यशपाल जैन), पृष्ठ – 422
3. निष्काम साधक – सं. बनारसीदास चतुर्वेदी (तट का बंधन – यशपाल जैन), पृष्ठ – 452

यहाँ पर लेखक ने रमणी के रूपाकर्षण को अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक रेखाचित्र के रूप में शब्दार्कित किया है।

(3) 'अतीत की पूंजी' कहानी में ग्रांड पा कर यह शब्द चित्र, लेखक ने उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिये इन शब्दों में प्रस्तुत किया है---"मझौला कद, चौड़ा सीना, ऊँचा मस्तक, छोटी–छोटी आँखे, कसे हुए ओठ, सिर पर चाँदी– जैसे सफेद बाल, गठीला बदन, इन ग्रांड पा को देखकर कौन उनकी उम्र का अंदाजा लगा सकता था, फिर भी वह उस बस्ती के बुजुर्गों में से तो थे ही।"[1]

(4) "दुबले–पतले बदन पर घुंघराले बाल और मुँह पर पाउडर तथा लिपिस्टक के बिना। हजार पीछे एक लड़की मुश्किल से मिलेगी।"[2]

इस तरह यशपाल जी ने जिस समय जो प्रभाव उत्पन्न करना चाहा है, उसके अनुरूप अपनी तलिका चलाई है। उनकी तूलिका से निर्मित ये चित्र अत्यन्त आकर्षक, मनोरम एवं प्रभावपूर्ण है। उन्होंने कही सींधी, सहज भाषा को तो कहीं नवीन उपमाओं से युक्त आलंकारिक शैली को अपनाया है। अतीत को सही रूप–रंग देने के लिये भी लेखक के पास शब्दों का भण्डार कम नहीं हैं। जिस प्रकार रंगमंच के पात्र अपने विशिष्ट रूप सौन्दर्य से दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते है, उसी प्रकार का आकर्षण यशपाल जी के इन शब्द चित्रों के व्याप्त हैं।

दृश्यचित्र एवं वस्तु चित्र :–

लेखक के रूप एवं सौंदर्य शब्द चित्रों की तुलना में दृश्य एवं वस्तु शब्द चित्र अधिक प्रभावपूर्ण है। लेखक का दृष्टिकोण मानवीय मूल्यों के प्रति अधिक उदार होने के कारण उसका ध्यान इन चित्रों की संरचना करने में अधिक रमा है जिस कारण ये शब्द चित्र आत्यधिक रोचक, यथार्थ परक एवं संजीव बन गये हैं। यथा––

---

1. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 10
2. पड़ोसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 254

(1) "मौसम सुहावना था सड़क के दोनों ओर धान के खेत बिछे थे, जिनके बीच–बीच मे बाँसों के घरों की बस्तियाँ थीं। अधिकांश वस्तियों में केले के पेड़ों और बाँसों के निकुंजो की हरियाली को देखकर बड़ा अच्छा लगा। खेतों में स्त्री–पुरूष धूप से बचाव के लिए सिर पर बड़े–बड़े टोप लगाकर काम कर रहे थे। उधर भैसें का रंग सफेद होता है।"[1]

(2) 'दो तट एक धारा' में श्री जेन ने अमेरिका के प्रसिद्ध नियाग्रा जल–प्रपात का चित्रण कुछ इस प्रकार से किया है––

"प्रपात के उस ओर एक छोटा सा टापू है, जिसे हरे–भरे वृक्ष और बल्लयिाँ घेरे हुए है। उसके पास ही एक प्रपात और है, जो अमरीका की सीमा में आता ह। कैनेडा के विराटाकार प्रपात की तुलना में वह बहुत छोटा है, पर उसकी भी अपनी शान है। बड़े प्रपात को देखकर जहाँ दिल दहज जाता है, वहाँ छोटा प्रपात दहलते दिल को राहत पहुँचाता है। दोनों प्रपात उग्र और शांत स्वभाव के भाइयों की तरह हैं, वे आगुंतकों को बताते है कि मनुष्य भले ही अपने देश की सीमाएँ बांधे, किन्तु प्रकृति के लिये वे सीमाएँ बेमानी है, उसके लिए तो सारी धरती आकाश की तरह एक और अखण्ड है।"[2]

(3) "यशपाल जी ने साधारण वस्तु चित्रों की भी योजना की है, उन स्थलों पर उनकी शैली सहज, मनोरम और सुखद है। वह उनकी कुशल वर्णन शक्ति और सूक्ष्म दृष्टि की ओर संकेत करती है। कहीं छोटी से छोटी वस्तु का दिग्दर्शन कराने के कारण उन चित्रों में वर्णन शैली प्रधान हो गयी है और कहीं दो चार पंक्तियों में ही लेखक ने सम्पूर्ण चित्र को साकार कर दिया है, यथा ––

"वह सातवें तल्ले पर रहती थी। छोटी सा कमरा था, जिसमें दो पलंग थें, दो कुर्सियां, एक छोटी सी मेज। हम लोग कुर्सियों पर बैठ गये। अपना परिचय देते हुए उन्होंने

1. पड़ोसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 161
2. मुखौटे के पीछे (संग्रह) – यशपाल जैन, पृष्ठ – 41

बताया कि वह कई वर्ष तक दुभाषिये का काम करती रहीं, इसी लिए अग्रेजी बोलने का उन्हें अच्छा अभ्यास हो गया है।"[1]

(4) इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर––

"कमरे में बहुत–से चित्र लगे थे। एक मेज पर लैंप रक्खा था। एक ओर को कुछ ओर पुस्तकें थी, जिनमें डिकिन्स आदि विदेशी लेखकों की कृतियों के अतिरिक्त कुछ दार्शनिक तथा धार्मिक ग्रंथ भी थे।"[2]

(5) इसके विपरीत निम्नकिंत चित्र में इतना विस्तृत विवरण प्रस्तुत करके यशपाल जी ने इसे साकार रूप प्रदान किया है–

"मंदिर का अधिकांश भाग खण्डित हो चुका है। उसकी दीवारों पर अनगिनत मूर्तियां खुदी हुई हैं। बाहरी और अन्दर की दीवारों के जो भाग बचे है, उन पर एक–से–एक बढ़कर मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। इन भित्ति–चित्रों में जीवन का शायद ही कोई अंग छूट हो। अंकोरवाट के प्रसंग धर्म–कथाओं पर आधारित हैं, लेकिन बेयोन के चित्र मानव–हृदय के स्पन्दन से युक्त हैं। उनमें मानवीयता औतप्रौत हैं। मानव के हर्ष, शौक, संघर्ष तथा जीवन की दैनिक घटनाओं की दीवार पर उतार दिया गया है। सम्पूर्ण खमेर–समाज उन भित्तिचित्रों में मूर्तिमान हो उठा हैं। मंदिर में मूर्तियों तथा भित्त–चित्रों में कहीं भी अश्लीलता नहीं है।"[3]

अतः कहा जा सकता है कि लेखक को सभी प्रकार के चित्रांकन में सफलता मिली है। प्रायः चित्रोपमता के सभी गुण यशपाल जी की चित्रण–शैली में व्याप्त हैं। चित्रों के वैविध्य और तदनुरूप परिवर्तित शैली ने उनमें रंग भरे हैं, वह लेखक के समर्थ–समृद्ध ज्ञान, सूक्ष्म दृष्टि और सफल लेखनी की परिचायक है। लेखक ने विषयानुकूल उनमें विस्तार और संक्षेपण करके सही प्रभाव

---

1. रूस में छियालीस दिन – यशपाल जैन, पृष्ठ – 111
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 18
3. पड़ोसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 221

उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। उनके विस्तृत चित्र भी नीरस और बेमेल नहीं है। इनमें भी उतना ही आकर्षण है जितना कि संक्षिप्त चित्रों में। यशपाल जी के इन सभी चित्रों में सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र दृश्य एवं वस्तु चित्र हैं परन्तु रूप एवं सौंदर्य चित्रों की शैली को भी नकारा नहीं जा सकता । एक में यदि यर्थाथता भली भांति रक्षा हुई है तो दूसरी में लेखक का सुरूचिपूर्ण कलात्मक आग्रह विद्यमान हैं। अतः शब्दों ओर वाक्यों में लेखक ने जिन रंग–रेखाओं को प्रयोग किया है, वे नवीन हैं, आकर्षक हैं, उपयुक्त हैं और प्रभावपूर्ण हैं, इसलिए वे चित्र अत्यन्त सार्थक बन पड़े हैं।

शब्द चयनः–

श्री जैन का शब्द चयन बहुत विस्तृत और समृद्ध ज्ञान का परिचायक है। उन्होंने व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करने के लिये यथास्थान अपने साहित्य में अरबी, फारसी, अग्रेंजी, उर्दू और संस्कृत तत्सम् के अनेक प्रचलित, अल्प प्रचलित तथा अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। यशपाल जी ने इन शब्दों के अतिरिक्त लोकक्तियों, मुहावरों एवं सूक्तियों का भी अनेक स्थानों पर प्रयोग किया है।

(क) अंग्रेजी भाषा के शब्द :–

यशपाल जी ने अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में दो प्रकार से किया है । एक तो देवनागरी लिपि में अंग्रेजी शब्दों का पहले प्रयोग करके तत्पश्चात् कोष्ठक में हिन्दी–अनुवाद दे दिया है। दूसरे, विभिन्न महापुरूषों एवं अधुनिक विभूतियों के विचारों को देवनागरी लिपि में अंग्रेजी के कथनों के रूप में, जिनका बाद में हिन्दी अनुवाद भी लेखक द्वारा कर दिया गया है।

(1) प्रथम प्रकार की शब्दावली :–

ऐक्टर (अभिनेता), लॉ (कानून), पार्लियामेन्ट आफ रिलीजन्स (धर्म सम्मेलन), लींग ऑफ

नेशन्स (राष्ट्र संघ), पालिटिक्स (राजनीति), हार्ट (दिल), वाटर (पानी) हिन्दी–नेशनल एण्ड इंटरनेशनल (हिन्दी–राष्ट्रय तथा अंतर्राष्ट्रीय), हिन्दी–एंग्लोबल फिनोमैनन (विश्व परिप्रेक्ष्य में हिन्दी), ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट (प्राच्यसंस्थान), प्रिसीडियम (अध्यक्ष मण्डल), फौरिन लैंग्वेजैज पब्लिशिंग हाउस (विदेशी भाषा प्रकाशन गृह), दिस इज पालिटिक्स (यह राजनीति हैं।), कलेक्टिव फार्म(सामूहिक खेत), रेडस्क्वायर (लाल चौक), हिस्ट्रीम्यूजियम (इतिहास–संग्रहालय), हाउस आफ कल्चर (संस्कृति का गृह), आर्ट गैलरी (कला–भवन), कमिंग आफ क्राइस्ट (हजरत ईसा का आगमन), रिबोल्यूश्न स्क्वायर (क्रांति चौक) जैसे शब्द है।

(2) दूसरी प्रकार की शब्दावली :–

"सर, स्पीक इन इंग्लिश। वी काण्ट अण्डर स्टैण्ड योर हिन्दी"[1] (श्रीमान जी, अंग्रेजी में बोलिये। आपकी हिन्दी हमारी समझ में नहीं आती।), "फादर डाइड नाइन्टीन नाइन्टीन"[2] (1919 में पिता की मृत्यु हो गई), "वाच मैन, व्हाट आव दी नाइट"[3] (पहरूवे, रात के हालचाल बताओ।), "ब्राह्मण, क्रिश्चियन, मुस्लिम,, स्यामी, कम्बाडियन,.......... नो डिफरेन्स, मैन मैन"[4] (ब्राह्मण, ईसाई, मुसलमान, स्यामी, कम्बोडियन...........मेरे लिये कोई अन्तर नहीं, सब इंसान है, इंसान।), "आई नो यू हैव कम विदाउट परमीशन। नैवर माइंड। डोंट टेल एनीबड़ी। आई हैव ओनली फिफटीन मिनिट्स ऐट माई डिस्पोजल।"[5] (मैं जानता हूै, आप लोग बिना आज्ञा के अंदर आये हैं। कोई बात नहीं है। किसी से कहना मत। देखो, मेरे पास कुल पंद्रह मिनट हैं।) "यू नो व्हाट आई मीन ?"[6] (तुम समझे, मेरा क्या मतलब हैं।) "बट व्हेयर इज नान– बाइलेंस टूडे ?"[7] (अहिंसा आज है कहां), "सर, यू आर नॉट ऑडी बिल"[8] (श्रीमान जी, आपकी आवाज सुनायी नहीं दे रही है।), "दे विल डू फार अस"[4] (वे हमारे लिये करेगें), "देयर इज एनफ फार नीट, बट नोट फार ग्रीड"[10] (आवश्यकताओं

1. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 19
2. पड़ोसी देशों में – यशपाल जैन, पृष्ठ – 229
3. दिव्य जीवन की झाँकियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 76
4. दिव्य जीवन की झाँकियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 140
5. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 96
6. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 97
7. आलोक की रेखायें – यशपाल जैन, पृष्ठ – 83
8. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 93
9. आधुनिक भारत की विभूतियाँ – यशपाल जैन, पृष्ठ – 86
10. अमृत घट – यशपाल जैन, पृष्ठ – 121

की पूर्ति के लिए हमारे पास काफी है, लेकिन लालच की भरपाई करने के लिए नहीं।), "हैल्डी हैज नो सोल"[1] (दिल्ली के आत्मा नहीं हैं), "लव सरांउडेड मी हियर"[2] (मैं यहां चारो ओर प्रेम से घिरा रहा।) जैसे कथन हैं।——

इसके अतिरिक्त, यशपाल जी कहीं–कहीं पर स्वतंत्र रूप में भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है– यथा, चार्ट असेम्बली, टैम्परेचर, फैल्ट हैट, कस्टम, पासपोर्ट, लॉज, एयरवेज, इमीप्रेशन आफिस, स्विमिंग पूल, कम्पाउंडर, डिस्पेन्सरी, मिस, ट्रंक, कान्फ्रेंस, फर्स्टक्लास, मिलटरी, पार्लामेंट, स्टैथसकोप, हाई ब्लड प्रेशर, आलराइट, क्वाइट वैल, रिजर्व, प्रिटिंग प्रेस, टेलीग्राम, टी सेट, कमोड आदि।

इसी प्रकार, अंग्रेजी शब्दों के पर्याय देने के पीछे कोई निश्चित पद्धति नहीं है। श्री जैन ने इस दिशा में पूर्ण स्वेच्छाचार बरता है। कहीं–कहीं पर्याप्त परिचित और सरल अंग्रेजी शब्दों के पर्याप्त प्रस्तुत कर दिये गये हैं, उदाहरणतया– वाटर (पानी), हाट (दिल) आदि, और अन्यत्र कठिन शब्दों को बिना अनुवाद दिये चलता कर दिया है, उदाहरणतया– स्टैथस कोप, इमीग्रेशन आफिस, कान्फ्रेंस, असेम्बली आदि। इस दिशा में कोई नियत या तर्कसम्मत विधि यशपाल जी ने नहीं अपनायी है।

(ख) अरबी, फारसी, उर्दू भाषा के शब्द :–

इंसान, पसीना, बेमानी, हौंसला तबाही, दिवालिया, हराम, कुरबानी, इम्तहान, खबरदार, इंसाफ, कमख्त, मजार, मेजबान, खुदाबंद, ख्वाहिश, खुदापरस्ती, नाचीज, दुआ–सलाम, मेहरबानी, फरिश्ता, सूराख बंदगी, रियाया, हुकूमत, रजामंद करार, फरमाइशें, नियामत, रहम दिल, अमल, दर्द खुलेआम, बेहाल, बेबस, बाबा आदम, कानून, दरिया, खून, मुवक्किल, इशारे आदि।

(ग) संस्कृत के तत्सम् शब्द :–

लेखक ने संस्कृत के तत्सम् शब्दों को भी अपनाया है, यथा– श्रेष्ठता, अनर्थकारी, स्वीकार,

1. मेरी जीवनधारा – यशपाल जैन, पृष्ठ – 61
2. सेतु निर्माता – यशपाल जैन, पृष्ठ – 47

ऊर्ध्वगामी, प्रयाण, सनातन अक्षुण्ण प्रतिष्ठापित, वर्चस्य, सृष्टि, परिप्रेक्ष्यों, आक्रांत, सच्चिदानंद, अन्ततोगत्वा, अक्षय, स्पृहणीय, अमोघ, अस्त्र, मनीषा, पुरातन, अनुशासन, पर्व, प्रश्रय, घोतक, मनीषा, कृतार्थ, शाश्वत्, वैभव, उपत्यकाएँ, दिव्यता, चरैवेति, संत्रास, श्वेत, वत्स, शिष्य, अतिथि, उदगम्, क्षितिज, दुर्लभ, शुद्ध समाजम्, रमणीय आदि।

(घ) लोकेक्तियाँ मुहावरे ओर सूक्तियाँ :–

लोकैक्तियों, मुहावरे और सूक्तियों को प्रयोग कराकर श्री यशपाल जैन ने भाषा को सरस एवं रोचक बना दिया है। अधिकांश सूक्तियाँ सीधे व्यावहारिक जीवन से जुड़ी हुयी है और जीवन का मार्ग–दर्शन करती है। लेखक द्वारा जिस किसी स्थल पर मुहावरे और लोकोक्तियों एवं मुहावरों के प्रयोगद्वारा श्री जैन ने विषय को नवीनता प्रदान की है और साथ ही भाषा में संक्षिप्तता और प्रभावात्मकता भी आ गयी है।

लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे ––

निन्यानबे का फेर, चौपट हो जाना, मायाजाल, कानों पर जू न रेंगना, आँखे बँद होना, उतार–चढ़ाव, आग से आग नहीं बुझती, मन मसोस कर रह जाना, खांडे की धार पर चलना, बालबांका न करना, ताना–बाना, आँख –मिचौली, बाग–बाग होना, नाम बड़े दर्शन छोटे, उल्टे बांस बरेली को, रोम–रोम पुलकित होना, दिवाला निकलना, लाल पीला होना, काटो तो खून नहीं, मटियामेट करना, रोंगटे खड़े हो जाना, रंग बदलना, आँखे गीली होना, दुश्मनी मोल लेना, ओखली में सिर देना, हथेली पर सरसों नहीं जमती, प्राण मुँह को आना आदि।

'बौया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खायें।', 'जितनी लम्बी चादर उतने पैर फैलाओ" 'अपनी ढपली अपना राग।' 'विष पियो अमृत दो।', 'खाओ – पिओ मौज करो।', 'जीओ और जीने दो।' 'पाप का घड़ा भरने पर फूट जाता है।', 'सादा जीवन उच्च विचार।', 'दुनिया में देर हो सकती है,

अंधेर नहीं। 'एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।', 'दिन दूनी रात–चौगनी उन्नति करना', 'रोग बढ़ता गया ज्यों–ज्यों दवा की।' 'जहाँ चाह वहाँ राह।', आदि।

सूक्तियाँ–

"कोई भी ऐसा संक्षिप्त वाक्य जिसमें बहुत थोड़े शब्दों में बहुत अधिक भाष भर दिया जाय जैसे– पाणिनि रचित व्याकरण के सूत्र, षटदर्शनों के सूत्र आदि।"[1]

वृहद हिन्दी कोश के अनुसार,

"अर्थ गर्भित वाक्य जिससे दर्शन आदि शास्त्रों की रचना हुई है, ऐसे वाक्यों को सूत्र कहते हैं।"[2]

इसी प्रकार, आदर्श भार्गव हिन्दी शब्द कोश के अनुसार,

"थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो सूत्र कहलाता है।"[3]

श्री यशपाल जैन द्वारा प्रयुक्त की गई संस्कृत सूक्तियाँ निम्नलिखित प्रकार से हैं––

(1) "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय।"

(2) "क्षमा वीरस्य भूषणम्।"

(3) "वसुधेव कुटुम्बकम्।"

(4) "सा विद्याविमुक्तये।"

(5) "असतो मा सद्गमय, तमसो या ज्योतिर्गमया।"

(6) "माता भूमिः पूत्रोड. हं पृथिव्या।"

(7) "हिण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं सुखम्।"

---

1. संक्षिप्त आक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायिका के अनुसार – यशपाल जैन, पृष्ठ – 14
2. वृहद हिन्दी कोश – यशपाल जैन, पृष्ठ – 74
3. आदर्श भार्गव हिन्दी शब्द कोश – यशपाल जैन, पृष्ठ – 669

(8) "ऊँ पूर्वमदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते।"

(9) सर्वेत्र सुखिन : संतु, सर्वे रांतु निरामया।"

(10) "आत्मन : प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।"

(11) तेन व्यक्तेन भुजीथा।"

(12) "कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।" इत्यादि।——

इनके अतिरिक्त लेखक की हिन्दी सूक्तियाँ उनकी डायरियों में बिखरी पड़ी है, जिनका प्रयोग श्री जैन ने अपने साहित्य मे यत्र–तत्र किया हैं सन् 1997 में 'चेतना के स्वर' शीर्षक नामक लेखक की एक नवीनतम पुस्तक का प्रकाशन बुक मैन प्रिण्टस, लक्ष्मी नगर– दिल्ली से हुआ है। जिसमें यशपाल जी के द्वारा प्रतिदिन अपनी डायरी में लिखे गये विचारों को संग्रहित किया गया है। इस संबंध में श्री जैन का कथन है——

"अपनी षष्टिपूर्ति के अवसर पर मैने संकल्प लिया था कि मैं प्रतिदिन डायरी के लेखन के साथ–साथ एक विचार लिखा करूंगा यह क्रम सन् 1972 से लगातार चला आ रहा है। वचनों का बहुत बड़ा भण्डार पड़ा है इन बचनों में कोई क्रमबद्धता नहीं है दिन के अंत में जो भी विचार मन में आया लिख दिया। धर्म, अध्यात्म, साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति, अर्थ आदि–आदि विषय इनमें समाहित है।"[1]

श्री जैन के जो भी विचार पुस्तक में प्रकाशित हुये हैं, उनकी अपनी भाषा शैली है। पाठक इन विचारों को पढ़कर ऊबता नहीं बल्कि एक नई अर्न्तचेतना की अनुभूति प्राप्त करता है। लेखक की इन सूक्तियों के महत्व को ध्यान में रखते हुये इन्हें वर्गीकृत करने का हमारा प्रयास रहा है।

सूक्तियों की विषय–वस्तु के महत्व को ध्यान में रखते हुये श्री यशपाल जैन की प्रमुख सूक्तियों का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है———

---

1. चेतना के स्वर – यशपाल जैन, पृष्ठ – 6

(1) प्रमुख साहित्यिक सूक्तियाँ––

1. पुस्तकालय सरस्वती के मंदिर होते हैं।

2. जो पढ़ते कम है, गुनते अधिक हैं, उनका जीवन उत्तरोत्तर समृद्ध होता जाता है।

3. प्रत्येक लिखित शब्द साहित्यिक नहीं होता।

4. साहित्यकार का सबसे बड़ा दायित्व राष्ट्र–चेतना को जागृत करना है।

5. अपने दैनिक स्वाध्याय के लिए हम ऐसा साहित्य रखें जो हमें विचारों का नवनीत प्रदान करें।

(2) प्रमुख राजनैतिक सूक्तियाँ :–

1. विचारों की क्रान्ति समाज और राष्ट्र को कायाकल्प कर देती है।

2. सत्याग्रह में अनशन का महत्वपूर्ण स्थान है।

3. राजनीति की जबान लम्बी होती है और उसके कान बहरे होते हैं।

4. स्वतन्त्रता की रक्षा तभी हो सकती है जबकि दूसरों की स्वतंत्रता को पूरा आदर दिया जाय।

5. जब तक मतदाता अपने मत का वास्तविक मूल्य नहीं समझेगा और उसका उपयोग नीति की

   प्रतिष्ठा में नहीं करेगा तब तक भ्रष्टाचार दूर नहीं होगा।

6. लोकतन्त्र, लोकशक्ति और लोकनीति से बनता है, बिना लोक के वह मात्र तंत्र रह जाता है।

(3) प्रमुख सामाजिक सूक्तियाँ :–

1. विवाह में जितना आडम्बर और प्रदर्शन किया जाता है उतनी ही उसकी गरिमा और पवित्रता कम

हो जाती है।

2. शराब पीने के बाद आदमी को भलें–बुरे का ज्ञान नहीं रहता । इतना ही नहीं शराबी के मन और

शरीर में ऐसी तंरगे उठती हैं जो आस–पास के वातावरण को भी उद्वेलित कर देती हैं।

3. प्रतिभा बंधे–बंधाये मार्ग पर नहीं चलती, वह नया मार्ग बनाती है, प्रतिभाशाली व्यक्ति इसी से वर्तमान मूल्यों तथा समाज को चुनौती देते दिखायी देते हैं।

4. परिवार में सौमनस्य के लिये, हृदय की विशालता आवश्यक हैं। जहाँ हृदय संकीर्ण होता है, वहाँ

घर विखर जाता है।

(4) प्रमुख मनोवैज्ञानिक सुक्तियाँ :–

1. विकृत विचार ही ईर्ष्या, द्वेष, विग्रह, दम्भ आदि बुराईयों को जन्म देते हैं।
2. व्यक्ति का अंतकरण ज्यों–त्यों निर्मल होता जाता है, उसका आनंद बढ़ता जाता है।
3. अधूरे मन से किया गया काम अधूरा ही रह जाता है।
4. मनुष्यता के लिये बुद्धि और हृदय का सामंजस्य आवश्यक है।
5. जिसका हृदय कठोर होता है वह कभी संत नहीं हो सकता।
6. रोगी का मनोबल जो काम करता है वह चिकित्सा नहीं कर सकती।

---

7. दुनिया का सारा खेल मन से चलता है मन का संयम अत्यावश्यक है।

8. जिसके ह्रदय में मलीनता है वह कभी सच्चे प्रेम का आनंद न स्वयं ले सकता है, न दूसरों को दे सकता है।

(5) प्रमुख दार्शनिक सूक्तियाँ :–

1. धर्म प्रेम का पर्यायवाची है वह करूणा का दूसरा नाम है वह पवित्रता और निश्छलता का द्योतक है।

2. हम सबकों वर्षा की भाँति परोपकारी और सर्व सम्भाव बनना चाहिए।

3. जीवन का चरम लक्ष्य जैस–तैसे जीना नहीं, बल्कि जीवन का प्रत्येक क्षण आनंद के साथ व्यतीत करना है।

4. ऋतुएं इस बात की द्योतक हैं कि इस धरा पर सब कुछ परिवर्तनशील है।

5. साधना के लिए ह्रदय की निर्मलता तथा त्याग और निभकता की आवश्यकता होती है।

6. जीवन का वास्तविक उद्‌देश्य अपने अंतर में झाँकना और अपने को निर्मल बनाना है।

7. हम दूसरों को जीतने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु अपने को नहीं जीतते।

8. जो अपने को नहीं जानता वह किसी को नहीं जानता।

9. मृत्यु शत्रु नहीं मित्र है, वह हमें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

10. अपने दुख का रोने वाला अपने दुख को घटाता नहीं, बढाता है।

11. कर्म तभी अकर्म बनता है जब वह सहज बन जाता है और करने में फलाशक्ति नहीं रहती।

12. संकल्प करके बिना विशेष कारण के उसे छोड़ना बड़ा ही हानिकारक होता है।

13. सबसे बड़ा ज्ञानी वह है जो अनुभव करता है, कि वह कुछ भी नहीं जानता।

14. सुख तो आत्मा की वस्तु है वह अर्थ की साधना से नहीं, आत्मा की आराधना से प्राप्त होता है।

15. बुद्धिमानी इसी में है कि हम इंसान के भीतर बैठे असुर को नहीं सुर को देखें।

(6) प्रमुख नैतिक सूक्तियाँ :–

1. विवेक की घण्टी जिसके सिर पर बजती रहती है वह कभी गलत रास्ते पर नहीं चल सकता।

2. सत्य परायण व्यक्ति अन्याय के सामने कभी नहीं झुकता।

3. चरित्र का मानव के साथ वह संबंध है जो प्रकाश का सूर्य के साथ होता है।

4. महानता के लिये हृदय की विशालता आवश्यक है।

5. बचन न देना उतना बुरा नहीं है जितना बचन देकर उसका निर्वाह न करना।

6. महापुरूष वही है जो प्रत्येक स्थिति में मानसिक संतुलन बनाये रखता है।

7. अच्छा युग वही माना जाता है जिसमें नीति का पलड़ा अनीति से भारी होता है।

8. समुद्र की भाँति आनंद जीवन में भी लहरें उठा करती हैं जो उनके सामने सिर झुका देता है वह डूब जाता है जो उनसे मुकाबला करता है वह जीत जाता है।

9. विनम्रता बहुत बड़ा गुण है जो जितना विनम्र बनता है उतना ही ऊँचा उठता हैं।

10. विनोदी व्यक्ति हर घड़ी फूल की तरह रहता है, लेकिन आवश्यक है कि विनोद शिष्ट हों।

11. व्यापार का घाटा आसानी से पूरा हो जाता है लेकिन जीवन का घाटा सहज ही पूरा नहीं होता।

12. आग से आग शान्त नहीं होती, बैर से बैर समाप्त नहीं होता, लालच से लालच नहीं पिटता, क्रोध को नहीं जीता जा सकता, झूठ को झूठ में नहीं दबाया जा सकता।

13. साहस के आगे पर्वत भी सिर झुका देते है।

(7) प्रमुख राष्ट्रीय–महत्व की सूक्तियाँ ––

1. जो राष्ट्र विचारों को महत्व नहीं देता, वह रसातल को चला जाता है।

2. बिना देशभक्ति के बड़े से बड़े राष्ट्र भी डूब जाते है।

3. राष्ट्रभाषा किसी भी देश की रीढ़ होती है।

(8) प्रमुख आर्थि सूक्तियाँ ––

1. भौतिक आकांक्षा व्यक्ति को सक्रिय रखती है लेकिन वह उसे भटकाती भी है।

(9) प्रमुख धार्मिक सूक्तियाँ

1. जो अपने को नहीं जानता वह धर्म को कदापि नहीं जान सकता।

(10) प्रमुख कला–संस्कृति सम्बन्धी सूक्तियाँ––

1. संगीत जीवन के लिए अनिवार्य है वह रस का संचार करता है, जीवन को समृद्ध करता है।

2. कला निः संदेह जीवन के लिए है।

3. कला का मूल उद्देश्य व्यक्ति को आनंद देना है और उसके जीवन को सुसंस्कृत बनाना है जो कला ऐसा नहीं करती वह चिरंजीवी नहीं हो सकती।

(11) जीवन से सम्बन्धित सूक्तियाँ ––

1. पुस्तकीय शिक्षा ज्ञान–बर्द्वन कर सकती है, लेकिन जीवन की शाला में प्राप्त शिक्षा मनुष्य को सच्चे अर्थों में शिक्षित करती है।

2. कर्तव्य में अधिकार छिपा है कर्तव्य करो अधिकार अपने आप मिल जायेगा।

3. बुद्धिमानी अधिक से अधिक बोलने में नहीं हैं। कम से कम शब्दो में अधिक से अधिक कहने में है।

---

4. यदि हम छोटी से छोटी चीजों में रस लेना सीख लें तो बड़ी चीजें अपने आप मधुर हो उठेंगी।

5. काम को व्यवस्थित रूप से किया जाय तो वह भारी नहीं पड़ता।

6. तन्हाई को योगी सहन कर सकता है सामान्य व्यक्ति को तो वह पागल बना देती है।

7. जीवन के उदान्त क्षणों को जो उपयोग कर लेता है वह धन्य हो जाता है।

8. हमारा चेहरा जैसा होता है आइने में वैसी आकृति उभरती है। संसार भी हमें वैसा ही दीखता है जैसे हम है।

अतः यशपाल जी के साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं के सामान्य एवं विशिष्ट शब्दों को लक्ष्य कर कहा जा सकता है कि वे सभी शब्द उनके गहन अध्ययन एवं व्यवहार–ज्ञान को प्रमाणित करने में समर्थ है। लेखक ने जिन मुहावरों, सूक्तियों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग किया है उनका प्रभाव सतसई के दोहों के समान तीखी एवं गहरी मार करने वाले है, लेकिन कुछ सूक्तियों में बिखराव और कसाब का अभाव खटकता है, जो नाम मात्र के लिये सूक्तियां है जैसे–सामाजिक सूक्तियों के अंतर्गत कही गई निम्नलिखित सूक्ति––

"शराब पीने के बाद आदमी को भले–बुरे का ज्ञान नहीं रहता। इतना ही नहीं शराबी के मन और शरीर में ऐसी तंरगे उठती है जो आस–पास के वातावरण को भी उद्वेलित करती है।"

लेखक ने वातावरण की रक्षा के लिये, पात्रों के स्वाभाविक रूप को प्रदर्शित करने और वस्तु सत्य की यथातथ्य रक्षा के हेतु विभिन्न भाषाओं के शब्दों का यथास्थान खुलकर प्रयोग किया है, इसीलिये उनका शब्द चयन अत्यंत विस्तृत है। श्री जैन ने शब्दों के रूप में भाषा को नवीनता प्रदान कर उसे सामान्य स्तर की, जन जीवन के अनुकूल, व्यावहारिक और रोचक बनाने का प्रयास किया है। उनका यह प्रयास सराहनीय है क्योंकि यो ता श्री यशपाल जैन ने अपने साहित्य में परिष्कृत खड़ी बोली का व्यवहार किया है, लेकिन विभिन्न भाषाओं के सम्मिश्रण ने उनकी भाषा को जो रूप

प्रदान किया है उससे वह जन–जीवन के अधिक निकट आ जाती है। यशपाल जी ने शब्द की उपयोगिता और भाव के स्पष्टीकरण के लिये विभिन्न शब्दों को प्रयुक्त करने की इस विधि में स्वछन्दता बरतने से कहीं–कहीं अर्थ बोध में बाधा उत्पन्न कर समुचित प्रभावोत्पन्नता को क्षति पहुँचाई हैं। लेखक की भाषा सामान्यतः व्याकरण सम्मत है। जहां व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध प्रयोग मिलते है, वहाँ लेख्क व्याकरण सम्बंधी अज्ञान न होकर प्रायः अन्यकारण होता है। अतः इन्हें देखकर यह नहीं कहा जा सकता है कि श्री जैन की भाषा–शैली शिथिल और अशक्त है। इस प्रकार के प्रयोग उनके साहित्य में प्रायः नगण्य हैं।

निष्कर्ष :–

यशपाल जी के साहित्य में भाषा–शैली के विविध रूप उपलब्ध है। उन्होंने अपने साहित्य में परिष्कृत खड़ी बोली का प्रयोग करने के साथ–साथ अन्य भाषाओं के सम्भव रूपों का यथास्थान प्रयोग किया है। काव्यात्मक शैली की सरस अभिव्यक्ति से लेकर विचार–प्रधान गंभीर शैली तक के समस्त रूप उनके साहित्य में वर्तमान है। उनकी अंलकार–सज्जा विशेषकर उपमाओं के नवीन प्रयोग अनायास ही पाठक का ध्यान आकर्षित कर लेते है। यथार्थ जगत् से अपने उपमानों का ग्रहण लेखक की भाषा के प्रति कलात्मक रूचि और यर्थाथवादी मनोवृत्ति की ओर संकेत करता है। यशपाल जी की यह अंलकृत शब्दावली देखकर यह तो नहीं कहा जा सकता है कि यशपाल जी ने भाषा को सजाने–सँवारने का प्रयास नहीं किया है। नवीन उपमाओं को जुटाने के प्रति उनका विशेष मोह दिखाई देता है। यशपाल जी मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित लेखक है, सम्भवतः इसी कारण उनका ध्यान भाषा को सहज और सरस बनाने के साथ–साथ यर्थाथ और व्यावहारिक रूप देने की ओर अधिक रहा है, इसीलिये, उनकी अलंकृत शब्दावली वस्तुजगत से ग्रहण की हुई है, उसमें लेखक की कपोल–कल्पना या वायवीय उड़ान नहीं है, उसमें चमत्कार नहीं, केवल यथार्थ रूप में भावों की प्रेषणीयता है।

विचार–प्रधान, बौद्धिक शैली को भी लेखक ने अनेक स्थलों पर ग्रहण किया है। व्यंग्य प्रधान–शैली को लेखक ने बोध कथाओं के अन्तर्गत विशेष रूप से प्रयोग किया है। व्यंग्य के तीखे, पैने, मीठे, सभी आयुधों को लेखक ने यथास्थान अपनी साहित्यिक शैली में ग्रहण कर उनका सदुपयोग किया है। इस सबके साथ श्री जैन की संवाद शैली का वैविध्य और चित्रोपमता उनकी कलात्मक रूचि को प्रमाणित कर सकने में समर्थ है। इन सब में उनकी वैविध्यपूर्ण शैली और चित्रों को नवीन रंग देने की क्षमता के प्रमाण व्याप्त है। यशपाल जी को हृदय–चित्रों के अंकन में भी पर्याप्त सफलता मिली है। उनकी चित्रात्मकता में चित्र की साकार करने के सभी गुण विद्यमान है, उसके लिये तदनुरूप शब्दावली का चुनाव यशपाल जी के विस्तृत और गहन अध्ययन का घोतक हैं।
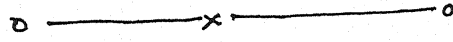
अध्याय – अष्टम्

उपसंहार :– यशपाल जैन का हिन्दी साहित्य प्रदेय

श्री यशपाल जैन जैसे समर्थ साहित्यकार ने हिन्दी–साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा से न केवल परम्परागत् मार्ग को प्रशस्त किया, बल्कि उनका आगमन हिन्दी–साहित्य के लिये एक नवीन दिशा–ज्ञान का द्योतक है। अपने अध्ययन काल से ही इस व्यक्ति ने साहित्य–मंदिर के आलोकित द्वार पर बैठ कर साधना आरम्भ कर दी। कहा जाता है कि साधना के पूर्ण होने पर ही वरदान मिलता है, लेकिन यशपाल जी को तो जैसे यह वरदान पहले से प्राप्त था। उनकी लेखनी ने जब से चलना आरम्भ किया, तब से आज तक निर्णय गति से चल रही है। मार्ग की प्रतिकूल बाधाओं ने उनकी गति को शिथिल कर अवरूद्ध नहीं किया। राजनीति में यशपाल जी की कोई विशेष रूचि नहीं रही, परन्तु फिर भी कुछ साहित्य पुस्तकों में राजनीतिक वातावरण की झलक स्पष्ट दिखायी देती है। जीवन के अनुभूति तथ्यों, अहिंसा और मानवीय–मूल्यों ने उनकी जीवन–दृष्टि को जिस रूप में ढाला है, उसी का प्रतिफलित रूप उनके साहित्य मे उपलब्ध है।

आधुनिक साहित्यकारों की जिस श्रेणी में श्री यशपाल जैन की गणना की जानी है, वह श्रेणी आदर्शोन्मुख–यथार्थवादी साहित्यकारों की है, जो प्रेमचन्द्र की ही परम्परा को परिपुष्ट करती हैं। श्री जैन का साहित्य भी तुलनात्मक दृष्टि से कम महत्व का नहीं है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबन्ध, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, यात्रा–वृत्तान्त, कविताएँ, रेडियो–रूपक, बाल–साहित्य आदि समस्त उपादानों से हिन्दी–साहित्य की श्री वृद्धि की है। इसके अतिरिक्त संकलित, सम्पादित और अनूदित–साहित्य के क्षेत्र में भी इनकी लेखनी ने हिन्दी–साहित्य को प्रचुर मात्रा में योगदान दिया है। यशपाल जी प्रेमचंद की परम्परा को परिपृष्ट करने वाले, आगे बढ़ाने वाले, यशस्वी, प्रतिभा सम्पन्न कलाकार है तथा उनका साहित्य भी स्थायी मूल्य–परक है।

प्रेमचन्द्र ने जिस निधि से साहित्य को समृद्ध किया था, उस निधि के योगदान में यशपाल जी पीछे नहीं हैं। उन्होंने भी हिन्दी–साहित्य की विभिन्न विधाओं के अन्तर्गत साहित्य–सर्जना द्वारा विपुल–राशि देकर प्रेमचन्द्र की ही परम्परा को परिपुष्ट किया है। श्री जैन की लेखनी एक सीमा में बद्ध हैं, वह आदर्श की चौखट के भीतर रहकर ही समाज का पर्यवेक्षण करती है।

यशपाल जी की जीवन–दृष्टि गांधीवाद और मानवतावाद के चिंतन से प्रभावित है, परन्तु साथ ही उसमें अपनी बात मनवाने का आग्रह भी है। इन्होंने जीवन–मूल्यों का निर्धारण करते हुये, जीवन की कुत्सित वृत्तियों कीा आलोचना और असाधारण एवं आश्चर्यजनक सम्भवो के वर्णन से आगे बढ़कर जीवन का समग्र रूप में देखने का प्रयत्न किया है। श्री यशपाल जैन ने मानव को मानव रूप में देखा, उसके कोमल रूप के अन्दर के पशु को पहचाना, उनके हाड़–मांस के अंदर स्थित ह्रदय नामक कोमल वस्तु का परिचय पाया, उसकी वीभत्सा से घृणा करते हुए भी उसकी बल हीनता पर सहानुभूति दिखायी और उसकी दिव्यता की उपासना की।

श्री यशपाल जैन के रचनासंसार पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप है। उनकी कथनी और करनी में अंतर नहीं है। जैसा वे सोचते है या जिन आदशों को वे आधुनिक जीवन–बोध के अनुकूल समझतें है और व्यावहारिक जीवन में जिनको उपादेय समझते है, उन्हीं को साहित्यक कृतियों में निरूपित करते है।

लेखक के जीवन में अनेक बार अर्थाभाव के क्षण भी आये, परन्तु उन्होंने इन कटु क्षणों को अपनी प्रतिभा और परिश्रम के द्वारा मिठास में परिवर्तित कर दिया। धनाभाव के कारण श्री जैन को अनेक कठिनाईयों का सामना करना ही पड़ा, उनकी पारिवारिक समस्याओं ने भी उनकों अनिश्चित काल तक परिस्थितियों के चक्र–व्यूह में उलझायें रखा। एक और अदस्य साहसिक प्रवृति, दूसरी ओर आदर्शजी से प्रेम–सम्पर्क, विवाह, दिल्ली पुनरागमन आदि विलक्षण बातों के अद्‌भुत संयोग ने इस व्यक्ति को असाधारण बना दिया। आज उनके असाधारण व्यक्तित्व ने ही उन्हें लोकप्रिय

साहित्यकार बना दिया है। विधार्थी काल के समय से ही आप साहित्यक उड़ाने भरने लगे थे। जब उन्हें वास्तविक कार्यशीलता का अवसर मिला, तो उन्होंने अपने विगत् जीवन की स्मृतियों को एक सामाजिक उपन्यास में संजोया। दुर्भाग्य से यह प्रथम औपन्यासिक कृति आपके मित्र द्वारा खो दी गई। इसके उपरांत सन् 1938 में पहला कहानी–संग्रह 'नव–प्रसून' प्रकाशित हुआ।

यशपाल जी के कहानी–साहित्य का मूल्यांकन करने और निश्चित परम्परा से श्री यशपाल जैन का संबंध जोड़ने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि उन्होंने किस उद्देश्य से अपने कहानी–साहित्य की सृष्टि की है। समाज का मुख्य अंग होने के नाते श्री जैन ने अपने जीवन में या आस–पास जो अन्तविरोध देखा है, उसे लक्षित करने के लिये ही अपने कहानी–साहित्य की सृष्टि की है। यशपाल जी की सामाजिक कहानियाँ यर्थाथतः समस्या प्रधान है, जिनमें मानव–जीवन में व्याप्त तनाव को ही लेखक ने कथ्य रूप में प्रस्तुत किया है। मनोवैज्ञानिक कहानियों के अन्तर्गत श्री जैन की दार्शनिक विचारधारा, मनोविज्ञान का रूप ग्रहण कर लेती है, जो प्रायः पाठकों के लिये दुरूह और बौद्धिक हो जाती है। बोध–कथाओं के वर्णन में यशपाल जी को पूर्ण–रूपेण सफलता प्राप्त हुई है। ये कथा–ये थोड़े में बहुत कुछ कहने की कला अपने अंदर समेटे हुये है, इनका गम्भीर प्रभाव सतसैया के दोहे के समान होता है। श्री जैन ने जिस समय कहानी लेखन आरम्भ किया उस समय हिन्दी–साहित्य में भड़कीली कहानियों की भरमार हो रही थी। मानवता की पुनः स्थापना का प्रश्न चिंतकों के सामने था। ऐसे समय में श्री जैन ने अपनी कहानियों के माध्यम से मानवतावाद की स्थापना को प्रयास किया। अनुभूति की सच्चाई और नैतिक उद्देश्य इनकी कहानियों की विशेषता है। प्रेमचन्द्र के समान ही यशपाल जी ने लोक–कल्याण की भावना से कहानी लेखन का क्षेत्र अपनाया।

यशपाल जी ने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के ताने–बाने से कथानक को चुना है। 'अमृत घट' उपन्यास में नाटकीय प्रसंगों का प्रायः अभाव दृष्टिगोचर होता है। उपन्यास में लेखक

ने देश की वर्तमान दुरवस्था के लिये सत्ता और अर्थ को जिम्मेवार ठहराया है। यशपाल जी का मानना है कि जब तक मानव का अंतर निर्मल नहीं होता तब तक देश का वास्तविक अभ्युदय असंभव है। अपने साहित्य सृजन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुये लेखक ने लिखा है——

"साहित्य का मुख्य ध्येय मानव—जीवन का उत्कर्ष और मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना होनी चाहिये।"[1]

उपर्युक्त उदाहरण से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि यशपाल जी ने साहित्य के लिये विचार प्रतिपादन को महत्व दिया है। समस्याओं का भी उन्होंने निकट से अध्ययन किया है इसलिये उनके उपन्यासों में चित्रित पात्र विशिष्ट दृष्टि से परिचालित है। 'अमृत घट' उपन्यास का मुख्य पात्र प्रमोद पूर्णतः गांधीवादी विचारधारा का अनुयायी है, वह अपने देश की उन्नति के लिये अनवरत् रूप से जुटा रहता है। उसका दृढ़ विश्वास है कि रात्रि के बाद अवश्य भोर आयेगी। यशपाल जी ने इस पात्र के माध्यम से उपन्यास पाठकों की सुप्त चेतना को जाग्रत करने का सफल प्रयास किया है। 'चट्टान नहीं पिघलती' मर्मस्पर्शी उपन्यास में भी यशपाल जी ने इसी प्रकार के पात्रों को गढ़ा है और उनका चारित्रिक विकास किया है।

यात्रा—वृत्तान्त लेखन में श्री यशपाल जैन को विशेष सफलता और ख्याति की प्राप्ति हुई है। हिन्दी—जगत को इनका यात्रा—सम्बन्धी साहित्य तो एक अमूल्य देन मानी जा सकती है। देश—विदेश में जो भ्रमण इन्होंने किया है, उसका सुन्दर वृत्तान्त इनकी यात्रा सम्बन्धी रचनाओं में है। इन पुस्तकों को पढ़कर पाठक भारत के विभिन्न भागों तथा देश—विदेश की यात्रा का आनंद घर बैठे प्राप्त कर सकता है। 'पड़ोसी देशों में पुस्तक का उ0प्र0 राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है। यशपाल जी ने भारत के लगभग सभी भागों में घूमनें के अतिरिक्त अनेकों देशों में प्रवास किया। इन प्रवासों के दौरान उन्होंने वहां जो देखा है, उसे अपने देशवासियों को देने में उदारता से काम लिया। लेखक का दृष्टिकोण मानवीय है, यह दृष्टिकोण उनके प्रवास तथा

1. मानवता के रजत कण (दे शब्द) — यशपाल जैन, पृष्ठ — 7

साहित्य में स्पष्ट परिलक्षित होता है। श्री जैन के चित्रण बड़े ही सजीव व प्रभावशाली होते है। डा0 लक्ष्मीमल सिंघवी के अनुसार ––

मैं यशपाल जी के यात्रा–साहित्य को हिन्दी साहित्य की उत्कृष्ट उपलब्धि मानता हूँ। इनमें मनोरम वृत्तान्त, बहुआयामी कलात्मक चित्रांकन और व्याख्या का सजीव, सकरूण, सस्पंद, मानवीय अनुभूतियों और अनुभवों का व्यापक संदर्भो और मनुष्य जीवन की अन्तर्भूत मार्मिक समानताओं का बेजोड़ समन्वय और संतुलन हुआ।"[1]

संभवतः देश–विदेश भ्रमण का इतना सौभाग्य भारत के बहुत कम लेखकों को ही प्राप्त हुआ है। इसी कारण यशपाल जी को सौलानी नाम से भी संबोधित किया जात है। वर्तमान समय में हिन्दी के यात्रा–वृत्तान्त लेखकों में श्री जैन का स्थान सर्वोपरि हैं। आज यदि कहानी, उपन्यास और यात्रा तृत्तान्त के क्षेत्र में यशपाल जी ने पर्याप्त ख्याति प्राप्त की है, तो एक निबन्धकार के रूप में भी यशपाल जी का योगदान नगण्य नहीं है। उनके निबंधों पर विहंगम दृष्टि डालने के पश्चात् कहा जा सकता है कि यशपाल जी एक सफल यात्रा–वृन्तान्त लेखक होने के साथ–साथ सफल निबन्धकार भी है। आपके अधिकांश निबन्ध विचारात्मक कोटि के है, जिनके भारतीय संस्कृ ति के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। यशपाल जी की निबन्ध–सृष्टि पर दृष्टिपात करके कहा जा सकता है कि आधुनिक युग के निबन्धकारों में यशपाल जी का नाम जोड़ देने से यह विकास की एक ओर सीढ़ी का निर्माण कर देता है।

श्री जैन को अनेक महापुरूषों के निकट सम्पर्क में आने का अवसर भी प्राप्त हुआ, उनके कुछ संस्मरण 'आलोक की रेखायें', 'राष्ट्र की विभूतियाँ, 'सेतु निर्माता, 'दिव्य जीवन का झांकियां, आदि पुस्तकों में प्रकाशित हुये हैं। सेतु निर्माता में लेखक ने विदेशी विद्वानों लेखकों, सामाजिक–कार्यकताओं, इतिहासज्ञों, भाषाविदों के बड़े ही रोचक जीवन्त आकर्षक चित्र खीचें है। इन संस्मरणों का आधार भी यथार्थ है, कल्पना से ये और अधिक सुदृढ़ हो गये है। श्री जैन के जीवनी–साहित्य में

1. निष्काम साधक – सं. पं. बनारसीदास चतुर्वेदी (अध्यक्षीय – डा. लक्ष्मीमल सिंघवी), पृष्ठ – 8

भक्ति–भाव की बहुलता है। प्रायः जीवनी नायक के अन्तः और बाह्य व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने में लेखक को सफलता प्राप्त हुयी है और तात्विक दृष्टि से भी ये सफल कृतियां है।

यशपाल जी अनुवादक के रूप में भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। व्यक्तिगत रूप से स्टीफेन ज्विग के तीन उपन्यासों 'विराट', 'जिदंगी दाँव पर' और 'अपरिचिता का पत्र' का उन्होंने हिन्दी रूपान्तर किया है। जीवन–साहित्य तथा सस्ता साहित्य कें तत्वाधान में प्रकाशित गांधी, नेहरू, डा0 राजेन्द्र प्रसाद आदि के साहित्य को भी अनुवाद के द्वारा उन्होंने संवारा है। अभिनंदन ग्रंथ सम्पादक के रूप में इसका नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है, अब तक यशपाल जी के द्वारा अनेको अभिनंदन ग्रन्थों का सम्पादन एवं संकलन किया जा चुका है।

श्री जैन की कविताओं मानवतावाद एवं राष्ट्रीयता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, उनमें मन और उसकी बदलती स्थितियों का विशेष रूप से चित्रण हुआ है । उपदेशात्मकता उनकी कविताओं का अतिरिक्त गुण है। रेडियों–रूपक–साहित्य को नाट्य–सिद्धान्तों की कसौटी पर कसने पर यह ज्ञात होता है कि ये शिथिल होते हुये भी उद्देश्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन एवं सामाजिक समस्याओं का यह साहित्य एक दर्पण है, जिसमें युवा पीढ़ी अपने राष्ट्र का भविष्य देखते हुये अपना पथ निर्धारित कर सकती है। श्री जैन का बाल–साहित्य सरल भाषा और सुबोध शैली में लिखा गया है। भले ही यह बाल–साहित्य बाल पाठकों की संख्या में वृद्धि करनें अक्षम रहा है, परन्तु बालकों में जिज्ञासा उत्पन्न करने के साथ–साथ उनके मानसिक विकास में अवश्य सक्षम रहा है।

भाषा–शैली के आधार पर यशपाल जी के साहित्य को आँकने पर भी उनका महत्व किसी भी दृष्टि से न्यून नहीं होता। यशपाल जी ने सहज, सरस और सरल भाषा का प्रयोग करके शैली के सभी सम्भव विधानों को साहित्य में स्थान दिया है। उन्होंने यदि एक ओर रस–अंलकार युक्त सरस काव्यमयी मार्मिक शैली का प्रयोग किया है तो दूसरी ओर गम्भीर चिंतन–प्रधान तर्क और

वाद–विवाद से परिपूर्ण शैली का भी प्रयोग किया है। समुचित प्रभाव उत्पन्न करने के लिये वातावरण की योजना भी अत्यन्त सुखद और मनोरम है। यदि कहा जाय सम्पूर्ण यात्रा–साहित्य में यशपाल जी को वातावरण निर्माण में विशेष सफलता मिली है, तो अनुपयुक्त न होगा। वातावरण को सही रंग रूप देने के लिये यशपाल जी की शब्दावली अत्यन्त समर्थ और सशक्त है। संवाद शैली की दृष्टि से यशपाल जी के साहित्य को आंका जाय, तो कहानी ओर संस्मरण साहित्य तो उस पर खरा उतरता है, लेकिन उपन्यासों में कहीं–कहीं श्री जैन अपने बौधिक आग्रह के कारण कथा प्रवाह को अवरूद्ध कर देते है। सामाजिक व राजनीतिक अव्यवस्था का उद्घाटन करने में संवाद अत्यंत अरोचक हो गये है। इसी ने उनकी कथा के शिल्प–गत सौंदर्य को आघात पहुँचाया है। लम्बे–लम्बे विचारभिव्यक्ति प्रधान, आलोचनात्मक कथोपकथनों ने अन्य संवादो के सौदंर्य को भी दबा दिया है। जीवन की वास्तविकताओं से अवगत् कराने के लिये यशपाल जी ने संवादों की योजना की है, उनमें उन्हें विशेष सफलता मिली है।

यशपाल जी ने कहानियों के रचना विधान के लिये आत्म कथात्मक, अन्योपदेशिक, मार्मिक नाटकीय आदि सभी शैलियों को प्रयोग किया है। इनमें सबसे अधिक मुखर अन्योपदेशिक शैली में रचित बोध–कथायें है। लेखक ने इस अस्त्र का प्रयोग अपने समस्त साहित्य में बड़ी निर्भीकता से किया है। यात्रा–वर्णनों में समाज की पुरानी व रूढ़ि जर्जर परम्पराओं अन्धविश्वासों ओर निहित स्वार्थो पर प्रत्यक्ष प्रहार और अप्रत्यक्ष व्यंग्य से भी यशपाल जी नहीं चुके हैं । श्री जैन ने कहीं मिथ्याविश्वास पर, कहीं भद्र समाज पर और कहीं समाज की आर्थिक विषमताओं पर कटाक्ष किया है, यहाँ तक कि माननीय नेताओं को भी यशपाल जी के अस्त्र का शिकार होना पड़ा है।

इन सबके अतिरिक्त शैली के रूप में यशपाल जी ने हिन्दी–साहित्य को जो नवीनता दी है, वह है उनकी मानसिक अंर्तद्वन्द्वों और आत्मविश्लेषण से युक्त भावात्मक शैली। यह शैली विषय में प्रभावात्मकता भी वृद्धि करने में समर्थ हैं । भाषा के प्रति श्री यशपाल जैन के कलात्मक रूचि होने

के भी संकेत मिलते है। यशपाल जी का शब्द भण्डार भी उनके समृद्ध ज्ञान का द्योतक है। उन्होंने, अरबी, फारसी, उर्दू के शब्दों, संस्कृत के तत्सम् शब्दों एवं लोकक्तियों, मुहावरों सूक्तियों को यथा स्थान अपने साहित्य में प्रयुक्त किया है। श्री जैन का यह भाषा वैविध्य शब्दाडम्बर की शैली की नवीनता और मात्र भावाभिव्यक्ति का साधन है, साध्य नहीं। जीवन का सम्पूर्ण एवं सारगर्भित चित्र प्रस्तुत करने के लिये उनके पास एक सूक्ष्मदर्शी की सबल कलम है, जिससे वह मानव–जीवन का जीता–जागता व अर्थपूर्ण चित्र प्रस्तुत कर सकने में समर्थ हैं। कभी–कभी ऐसा आभास होता है कि यशपाल जी के साहित्य की विषय निष्ठता ने उसके शैलीगत वैशिष्ट्य पर अपना प्रभुत्व कर लिया है, लेकिन उसके निजी सौंदर्य पर दृष्टि जाती है, तो लगता है कि वह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। विचारों की नवीनता के साथ–साथ शैली की नवीनता भी लेखक की अनुपम देन है।

सम्पूर्ण दृष्टि से यशपाल जी के साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् हिन्दी साहित्यकारों में उनका स्थान भी निर्धारित करना कठिन नहीं रह जाता है। वस्तु शिल्प की दृष्टि से जो कुछ भी श्री यशपाल जैन ने हिन्दी–साहित्य को दिया है, उससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा एवं नवीन विचार प्रणाली का दिग्दर्शन तो होता है, साथ ही वह उन्हें वरिष्ठ साहित्यकारों की श्रेणी में ला बिठाती है। यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये, तो यह स्पष्ट है कि अपने क्षेत्र में वे अग्रणी है। यह बात दूसरी है कि उनका स्थान प्रेमचंद, जैनेन्द्र, अज्ञेय के बाद आता है।

मानवीय मूल्यों पर अडिग आस्था रखकर निस्पृह–भाव से सेवा करने वालों में उनका शीर्ष स्थान है। वर्तमान युग में जब मूल्यों का संकट उपस्थित हो गया है, यह काम आसान नहीं है कि व्यक्ति जो चाहे, वह कहे और जो चाहे वह लिखे पर श्री यशपाल जैन ने वह रास्ता आरम्भ से ही चुना है और अब भी उसी रास्ते पर निर्भीकता पूर्वक चलते रहे है– यह यशपाल जी के ही साहस की बात है, अन्य साहित्यकार इस तुलना में किंचित पिछड़ ही जाते है।

इस प्रकार, अन्ततः यही कहा जायेगा कि यशपाल जी के साहित्य में विस्तार तथा उसकी

गहराई और विविधता ने हिन्दी–साहित्य के अंग–प्रत्यंग को परिपुष्टि किया है। अपनी विकास–यात्रा पर चलकर दूसरों के लिये दशा–निर्देश का कार्य किया है, कुरीतियों ओर सामाजिक विषमताओं का चित्रण करने के उपरान्त एक नवीन मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत दिया है।

o———×———o
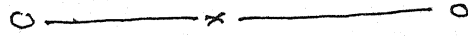
परिशिष्ट (अ)

श्री यशपाल जैन का साहित्य

	पुस्तक का नाम	प्रकाशन तिथि	विषय	प्रकाशक
1.	जय अमरनाथ	1955	यात्रा–वृतांत	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
2.	उत्तराखण्ड के पथ पर	1957	"	" " " "
3.	कोणार्क	1957	"	" " " "
4.	अमरनाथ	1958	"	" " " "
5.	रूस में छियालीस दिन	1960	"	" " " "
6.	जगन्नाथपुरी	1960	"	" " " "
7	अजंता–एलोरा	1961	"	" " " "
8.	गोमुख	1961	"	" " " "
9.	पड़ोसी देशों में	1965	"	" " " "
10.	सागर के आर–पार	1992	"	" " " "
11.	निराश्रिता	1938	उपन्यास	"जीवन सुधा" दिल्ली में धारावाहिक प्रका.
12.	चट्टान नहीं पिघलती	1993	"	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
13.	अमृत घट	1997	"	" " " "
14.	मेरी जीवन धारा	1987	आत्मकथा	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
15.	विराट	1983	(तीसरी बार)	" " " "
			अनूदित उपन्यास	
16.	जिंदगी दाँव पर	––	"	" " " "
17.	नव प्रसून	1938	कहानी संग्रह	एस. चांद एण्ड कं., दिल्ली
18.	मैं मरूँगा नहीं	1951	"	हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
19.	सिंहासन–बत्तीसी (भाग 1)	1957	"	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
20.	सिंहासन–बत्तीसी (भाग 2)	1957	"	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

21.	बैताल पच्चीसी (भाग 1)	1960	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
22.	बैताल पच्चीसी (भाग 2)	1960	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
23.	एक थी चिड़िया	1960	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
24.	सेवा करे सो मेवा पाये	1960	कहानी संग्रह	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
25.	दायरे और इंसान	1977	,,	आलेश प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली
26.	जीवन–ज्योति की कथाएं	1978	,,	पराग प्रकाशन, दिल्ली
27.	मुखौटे के पीछे	1982	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
28.	प्रेरक कथायें	1982	बोध–कथाएं	सुबोध प्रकाशन, नई दिल्ली
29.	ज्ञान कथायें	1982	,,	सुबोध प्रकाशन, नई दिल्ली
30.	बोध कथायें	1982	,,	सुबोध प्रकाशन, नई दिल्ली
31.	हमारी बोध कथायें	1982	,,	सुबोध प्रकाशन, नई दिल्ली
32.	नैतिक कथाएं	1986	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
33.	अमर कथाएं	1993	(तीसरी बार) ,,	,, ,,
34.	आदर्श कथाएं	1995	(दूसरी बार) '	,, ,,
35.	युग बोध	1987	कविता–संग्रह	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
36.	दिव्य जीवन की झांकियां	1965	कथा, कहानियां तथा संस्मरण	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
37.	सेतु निर्माता	1975	संस्मरण	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
38.	राष्ट्र की विभूतियां	1977	,,	रसभारती, मुरादाबाद
39.	आलोक की रेखाएं	1977	,,	सरन ब्रदर्स, आगरा
40.	आधुनिक भारत की विभूतियां	1991	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
41.	समन्वय सेतु	––	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
42.	तीर्थंकर महावीर	1957	जीवनी	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
43.	साबरमती का संत	1966	,,	हिन्दी पाकेट बुक्स, दिल्ली
44.	भागवान के प्यारे	––	,,	,, ,,

45.	सबजन एक समान	1972	रेडियोरूपक	सर्वसेवा संघ प्रकाशन, दिल्ली
46.	सबजन हिताय	1987	,,	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
47.	रावी के तट पर	1987	,,	,, ,,
48.	हारिये न हिम्मत	1961	जीवन निर्माण संबंधी	,, ,,
49.	सच्ची दौलत	1963	,,	,, ,,
50.	अहिंसा की कहानी	1965	अहिंसा के विकास का विवेचन	,, ,,
51.	गांधी का चिंतन	——	गांधी विचार संग्रह	,, ,,
52.	सफलता की कुंजी	1989	दिशासूचक विचार संग्रह	,, ,,
53.	जीवन ज्योति	1990	,,	,, ,,
54.	मानवता के रक्त कण	1994	जीवन मूल्यों की कृति	,, ,,
55.	चेतना के स्वर	1997	विचार संग्रह	बुक मैन प्रिन्टर्स, लक्ष्मीनगर, दिल्ली

परिशिष्ट (ब)

हिन्दी एवं अंग्रेजी के सहायक ग्रन्थ

	पुस्तक		लेखक
1.	हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास	–	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
2.	कहानी का रचना विधान	–	डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा
3.	साहित्यिक निबन्ध	–	डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ
4.	हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ	–	डॉ. जयकिशन दास
5.	साहित्य विविधा	–	डॉ. रमेश चन्द्र लवानियां
6.	साहित्यालोचन	–	बाबू श्यामसुन्दर दास
7.	काव्यशास्त्र	–	डॉ. भागीरथ मिश्र
8.	समीक्षा के सिद्धान्त	–	डॉ. सत्येन्द्र
9.	काव्य के रूप	–	गुलाबराय
10.	हिन्दी के रेखाचित्र	–	डॉ. हरवंश लाल शर्मा
11.	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त	–	डॉ. गोवित्द त्रिगुणायत
12.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	–	डॉ. गंगा सहाय 'प्रेमी' एवं हरीश अग्रवाल
13.	समीक्षा शास्त्र	–	पं. सीताराम चतुर्वेदी
14.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	–	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
15.	हिन्दी निबन्धकार	–	जगन्नाथ 'नलिन'
16.	हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	–	शिवदान सिंह चौहान
17.	प्रतिनिधि हिन्दी निबन्धकार	–	डॉ. हरिमोहन
18.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	–	डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा एवं रामनिवास गुप्ता
19.	हिन्दी गद्य साहित्य	–	डॉ. रामचन्द्र तिवारी
20.	पत्रिका सम्पादन कला	–	डॉ. रामचन्द्र तिवारी
21.	समाचार सम्पादन और पृष्ठ सज्जा	–	डॉ. रमेश कुमार जैन

22. पत्र और पत्रकार – कमलापति त्रिपाठी, पुरुषोत्तम दास टंडन
23. अनुवाद कला : कुछ विचार – आनंद प्रकाश सेमानी, वेद प्रकाश
24. रचनात्मक साहित्य के अनुवाद की कुछ समस्यायें – भीष्म साहनी
25. चिंतामणि (भाग 1) – आचार्य शुक्ल
26. भारतीय काव्य शास्त्र के प्रतिमान – डॉ. जगदीश प्रसाद कौशिक
27. आधुनिक काव्य – डॉ. सुधाकर
28. हिन्दी बाल साहित्य : एक अध्ययन (शोध प्रबंध) – हरिकृष्ण देवसरे
29. बाल साहित्य : रचना और समीक्षा – बालशौरि रेड्डी
30. बालक और आदमी – पाल हेजर्ड
31. वृहद् हिन्दी कोश – (–)
32. संक्षिप्त आक्सफोर्ड हिन्दी साहित्य परिचायिका – गंगाराम गर्ग
33. हिन्दी साहित्य कोश – (–)
34. आदर्श भार्गव हिन्दी शब्द कोश – (–)
35. काव्यांजलि – (–)
36. कथा प्रसून – (आगरा वि.वि., प्रकाशन सं.–85)
37. हिन्दी गद्य विविध – (आगरा वि.वि., प्रकाशन सं.–81)
38. मयूर एकांकी संग्रह – (आगरा वि.वि., प्रकाशन सं.–82)
39. Novel and the 'people' – Fox Ralph
40. The English Novel – Priestly, J.B.
41. An Introduction to the study of literature – Hudson, William Henary
42. Novelists on the Novel – Allott Miriam
43. Social Psychology – Allport
44. The Short story – Albright, E.M.
45. Writers on writing – Allen walter
46. वन माइटी टोरेंट – एडगर जानसन
47. ए प्रेक्टिकल संस्कृत डिक्शनरी – डॉ. मैकडोनल

सहायक पत्र–पत्रिकायें एवं अभिनन्दन ग्रन्थ

	पत्र/पत्रिका/अभिनंदन ग्रन्थ		प्रयुक्त संस्करण
1.	जीवन साहित्य (मासिक)	–	(फरवरी–1978, जनवरी, फरवरी, सितम्बर, अक्टूबर, दिसम्बर–1982, मई, जून, नवम्बर–1983, मार्च, अप्रैल–1984)
2.	राजस्थान "पत्रिका" (सहज काव्य)	–	(जनवरी – 1988)
3.	अणुव्रत	–	(अगस्त – 1988)
4.	प्रकर	–	(अक्टूबर – 1988)
5.	शिवानंद वाणी	–	(जुलाई, सितम्बर – 1988)
6.	प्रेमचंद ने कहा था	–	(–)
7.	गांधी मार्ग	–	(मई, जून–1988)
8.	निष्काम साधक (श्री यशपाल जैन अभिनंदन ग्रन्थ)	–	(सितम्बर – 1984)